इस्लाही ख़ुतबात

4

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

इस्लाही ख़ुतबात
(4)

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक

मुहम्मद इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०
422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6
फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	इस्लाही ख़ुतबात जिल्द (4)
ख़िताब	मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	जुलाई 2001
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

मुख़्तसर फ़ेहरिस्त

तफ़सीली फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

(31) मां बाप की ख़िदमत जन्नत का ज़रिया

क्र.स.	क्या?	कहां?

(32) ग़ीबत

ज़बान का एक बड़ा गुनाह

(33) सोने के आदाब

(34) अल्लाह के साथ ताल्लुक़ का आसान तरीक़ा

(35) ज़बान की हिफ़ाज़त कीजिये

(36) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और बैतुल्लाह की तामीर

(37) वक़्त की क़द्र करें

(38) इस्लाम और इन्सानी हुक़ूक़

(39) शबे बरात की हक़ीक़त

بسم الله الرحمن الرحيم

औलाद की इस्लाह व तरबियत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَا اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ.

(سورة التحريم:٦)

آمنت بالله صدق الله مولانا العظيم، وصدق رسوله النبى الكريم ونحن على ذلك من الشاهدين والشاكرين، والحمد لله رب العالمين.

अ़ल्लामा नववी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने आगे इस किताब "रियाज़ुस्सालिहीन" में एक नया बाब क़ायम फ़रमाया है, जिसके ज़रिये यह बयान करना मक़्सूद है कि इन्सान के ज़िम्मे सिर्फ़ ख़ुद अपनी इस्लाह ही वाजिब नहीं है, बल्कि अपने घर वालों, अपने बीवी बच्चों और अपने मातहत जितने भी अफ़राद हैं, उनकी इस्लाह करना, उनको दीन की तरफ़ लाने की कोशिश करना, उनको फ़राइज़ व वाजिबात की अदायगी की ताकीद करना, और गुनाहों से बचने की ताकीद करना भी इन्सान के ज़िम्मे फ़र्ज़ है, इस मक़्सद के तहत यह बाब क़ायम फ़रमाया है, और इसमें कुछ आयाते क़ुरआनी और कुछ अहादीसे नबवी नक़ल की हैं।

ख़िताब का प्यारा उन्वान

यह आयत जो अभी मैंने आपके सामने तिलावत की, यह हक़ीक़त

में इस बाब का बुनियादी उन्वान है, इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने तमाम मुसलमानों को ख़िताब करते हुए फ़रमायाः

"يَآاَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا"

यानी ऐ ईमान वालो! आपने देखा होगा कि कुरआने करीम में अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों से ख़िताब करने के लिये जगह जगह "या अय्युहल्–लज़ी–न आमनू" के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल फ़रमाये हैं। हमारे हज़रत डाक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि यह "या अय्युहल्–लज़ी–न आमनू" का उन्वान जो अल्लाह तआ़ला मुसलमानों से ख़िताब करते हुए इस्तेमाल फ़रमाते हैं, यह बड़ा प्यारा उन्वान है, यानी ऐ ईमान वालो, ऐ वे लोगो जो ईमान लाये। इस ख़िताब में बड़ा प्यार है, इसलिये कि ख़िताब का एक तरीक़ा यह है कि मुख़ातब का नाम लेकर ख़िताब किया जाये, ऐ फ़लां! और ख़िताब का दूसरा तरीक़ा यह होता है कि मुख़ातब को उस रिश्ते का हवाला देकर ख़िताब किया जाये जो ख़िताब करने वाले का उससे क़ायम है, जैसे एक बाप अपने बेटे को बुलाये तो इसका एक तरीक़ा तो यह है कि उस बेटे का नाम लेकर उसको पुकारे कि ऐ फ़लां! और दूसरा तरीक़ा यह है कि उसको "बेटा" कह कर पुकारे कि ऐ बेटे! ज़ाहिर है कि बेटा कह कर पुकारने में जो प्यार, जो शफ़्क़त और जो मुहब्बत है, और सुनने के लिये इसमें जो लुत्फ़ है, वह प्यार और लुत्फ़ नाम लेकर पुकारने में नहीं है।

लफ़्ज़ "बेटा" एक शफ़्क़त भरा ख़िताब

शैख़ुल इस्लाम हज़रत मौलाना शब्बीर अहमद साहिब उस्मानी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि इतने बड़े आ़लिम और फ़क़ीह थे, हमने तो उनको उस वक़्त देखा था जब पाकिस्तान में तो क्या, सारी दुनिया में इल्म व फ़ज़्ल के एतिबार से उनका कोई सानी नहीं था। सारी दुनिया में उनके इल्म व फ़ज़्ल का लोहा माना जाता था, कोई उनको "शैख़ुल इस्लाम" कह कर मुख़ातब करता, कोई उनको "अ़ल्लामा" कह कर मुख़ातब करता, बड़े ताज़ीमी अल्क़ाब उनके लिये इस्तेमाल किये जाते

थे, कभी कभी वह हमारे घर तश्रीफ़ लाते थे, उस वक़्त हमारी दादी ज़िन्दा थीं, हमारी दादी साहिबा रिश्ते में हज़रत अ़ल्लामा की मुमानी लगती थीं, इसलिये वह उनको "बेटा" कह कर पुकारती थीं, और उनको दुआ देती थीं कि "बेटा! जीते रहो" जब हम उनके मुंह से ये अल्फ़ाज़ इतने बड़े अ़ल्लामा के लिये सुनते, जिन्हें दुनिया "शैख़ुल इस्लाम" के लक़ब से पुकार रही थी तो उस वक़्त हमें बड़ा अचंभा महसूस होता था, लेकिन अ़ल्लामा उस्मानी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि मैं हज़रत मुफ़्ती साहिब (मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि) के घर में दो मक़सद से आता हूं।

एक यह कि हज़रत मुफ़्ती साहिब से मुलाक़ात, दूसरे यह कि इस वक़्त रूए ज़मीन पर मुझे "बेटा" कहने वाला सिवाये इन ख़ातून के कोई और नहीं है, सिर्फ़ यह ख़ातून मुझे बेटा कह कर पुकारती हैं, इसलिये मैं बेटा का लफ़्ज़ सुनने के लिये आता हूं, उसके सुनने में जो लुत्फ़ और प्यार महसूस होता है वह मुझे कोई और लक़ब सुनने में महसूस नहीं होता।

हक़ीक़त यह है कि इसकी क़द्र उस शख़्स को होती है जो इसके कहने वाले के जज़्बे से वाक़िफ़ हो, वह इसको जानता है कि मुझे यह जो "बेटा" कह कर पुकारा जा रहा है, यह कितनी बड़ी नेमत है, एक वक़्त आता है जब इन्सान यह लफ़्ज़ सुनने को तरस जाता है।

चुनांचे हज़रत डाक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि अल्लाह तआ़ला "या अय्युहल्–लज़ी–न आमनू" का ख़िताब करके उस रिश्ते का हवाला देते हैं जो हर ईमान वाले को अल्लाह तआ़ला के साथ है, यह ऐसा ही है जैसे कोई बाप अपने बेटे को "बेटा" कह कर पुकारे, और इस लफ़्ज़ को इस्तेमाल करने का मक़सद यह होता है कि आगे जो बात बाप कह रहा है वह शफ़क़त, मुहब्बत और ख़ैर–ख़्वाही से भरी हुई है। इसी तरह अल्लाह तआ़ला भी क़ुरआने करीम में जगह जगह इन अल्फ़ाज़ से मुसलमानों को ख़िताब फ़रमा रहे हैं। उन्ही जगहों में से एक जगह यह है। चुनांचे फ़रमायाः

आयत का तर्जुमा

يَآاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَامَلٰۤئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ۝

ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को भी आग से बचाओ, वह आग कैसी है? आगे उसकी सिफ़त बयान फ़रमाई कि उस आग का ईंधन लकड़ियां और कोयले नहीं है, बल्कि उस आग का ईंधन इन्सान और पत्थर होंगे, और उस आग के ऊपर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ऐसे फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो बड़े ग़लीज़ और कड़वे मिज़ाज वाले हैं, सख़्त मिज़ाज हैं और अल्लह तआ़ला उनको जिस बात का हुक्म देते हैं, वे उस हुक्म की कभी ना–फ़रमानी नहीं करते, और वही काम करते हैं जिसका उन्हें हुक्म दिया जाता है।

ज़ाती अ़मल नजात के लिये काफ़ी नहीं

इस आयत से अल्लाह तआ़ला ने यह फ़रमा दिया कि बात सिर्फ़ यहां तक ख़त्म नहीं होती कि बस अपने आपको आग से बचा कर बैठ जाओ, और इससे मुत्मइन हो जाओ कि बस मेरा काम हो गया, बल्कि अपने घर वालों और बाल बच्चों को भी आग से बचाना ज़रूरी है। आज यह मन्ज़र कस्रत से नज़र आता है कि आदमी अपनी ज़ात में बड़ा दीनदार है, नमाज़ों का पाबन्द है, पहली सफ़ में हाज़िर हो रहा है, रोज़े रख रहा है, ज़कात अदा कर रहा है, अल्लाह के रास्ते में माल ख़र्च कर रहा है, और जितने अवामिर (अह्काम)व नवाही (मना की गई चीज़ें) हैं, उन पर अ़मल करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन उसके घर को देखो, उसकी औलाद को देखो, बीवी बच्चों को देखो तो उनमें और उसमें ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है, यह कहीं जा रहा है, वे कहीं जा रहे हैं, इसका रुख़ मश्रिक़ की तरफ़ है, उनका रुख़ मग़्रिब की तरफ़ है, उनमें न नमाज़ की फ़िक्र है, न फ़राइज़े दीनिया को बजा लाने का एह्सास है, और न गुनाहों को गुनाह समझने की फ़िक्र है, बस गुनाहों के सैलाब में बीवी बच्चे बह रहे हैं, और यह साहिब इस पर मुत्मइन हैं कि मैं पहली सफ़ में हाज़िर होता हूं, और जमाअ़त के

साथ नमाज़ अदा करता हूं। ख़ूब समझ लें, जब तक अपने घर वालों को आग से बचाने की फ़िक्र न हो, ख़ुद इन्सान की अपनी नजात नहीं हो सकती, इन्सान यह कह कर जान नहीं बचा सकता कि मैं तो ख़ुद अपने अ़मल का मालिक था, अगर औलाद दूसरी तरफ़ जा रही थी तो मैं क्या करता, इसलिये कि उनको बचाना भी तुम्हारे फ़राइज़ में शामिल था, जब तुमने इसमें कोताही की तो अब आख़िरत में तुमसे सवाल होगा।

अगर औलाद न माने तो!

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अपने आपको और अपने घर वालों को आग से बचाओ, हक़ीक़त में इसमें एक शुबह के जवाब की तरफ़ इशारा फ़रमाया जो शुबह आम तौर पर हमारे दिलों में पैदा होता है, वह शुबह यह है कि आज जब लोगों से यह कहा जाता है कि अपनी औलाद को भी दीन की तालीम दो, कुछ दीन की बातें उनको सिखाओ, उनको दीन की तरफ़ लाओ, गुनाहों से बचाने की फ़िक्र करो, तो इसके जवाब में आ़म तौर पर कस्रत से लोग यह कहते हैं कि हमने औलाद को दीन की तरफ़ लाने की बड़ी कोशिश की, मगर क्या करें कि माहौल और मुआ़शरा इतना ख़राब है कि बीवी बच्चों को बहुत समझाया, मगर वे मानते नहीं हैं और ज़माने की ख़राबी से मुतास्सिर होकर उन्हों ने दूसरा रास्ता इख़्तियार कर लिया है, और उस रास्ते पर जा रहे हैं, और रास्ता बदलने के लिये तैयार नहीं हैं। अब उनका अ़मल उनके साथ है हमारा अ़मल हमारे साथ है, अब हम क्या करें। और दलील यह पेश करते हैं कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का बेटा भी तो आख़िर काफ़िर रहा, और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम उसको तूफ़ान से न बचा सके, इसी तरह हमने बहुत कोशिश कर ली है, वे नहीं मानते तो हम क्या करें?

दुनियावी आग से किस तरह बचाते हो?

चुनांचे क़ुरआने करीम ने इस आयत में "आग" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करके इस इश्काल और शुबहे का जवाब दिया है। वह यह है

कि यह बात वैसे उसूली तौर पर तो ठीक है कि अगर मां बाप ने औलाद को बेदीनी से बचाने की अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश कर ली है तो इन्शा अल्लाह मां बाप फिर ज़िम्मेदारी से बरी हो जायेंगे, और औलाद के किये का वबाल औलाद पर पड़ेगा। लेकिन देखना यह है कि मां बाप ने औलाद को बेदीनी से बचाने की कोशिश किस हद तक की है? और किस दर्जे तक की है? कुरआने करीम ने "आग" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करके इस बात की तरफ़ इशारा कर दिया कि मां बाप को अपनी औलाद को गुनाहों से इस तरह बचाना चाहिये जिस तरह उनको आग से बचाते हैं।

फ़र्ज़ करें कि एक बहुत बड़ी ख़तरनाक आग सुलग रही है, जिस आग के बारे में यक़ीन है कि अगर कोई शख़्स उस आग के अन्दर दाख़िल किया गया तो ज़िन्दा नहीं बचेगा, अब आपका नादान बच्चा उस आग को ख़ुशमन्ज़र और ख़ूबसूरत समझ कर उसकी तरफ़ बढ़ रहा है, अब बताओ तुम उस वक़्त क्या करोगे? क्या तुम इस पर बस करोगे कि दूर से बैठ कर बच्चे को नसीहत करना शुरू कर दो कि बेटा! उस आग में मत जाना, यह बड़ी ख़तरनाक चीज़ होती है अगर जाओगे तो तुम जल जाओगे, और मर जाओगे? क्या कोई मां बाप सिर्फ़ ज़बानी नसीहत पर बस करेगा? और इस नसीहत के बावजूद अगर बच्चा उस आग में चला जाये तो क्या वे मां बाप यह कह कर अपनी ज़िम्मेदारी से बरी हो जायेंगे कि हमने तो इसको समझा दिया था। अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया था। इसने नहीं माना और ख़ुद ही अपनी मर्ज़ी से आग में कूद गया तो मैं क्या करूं? दुनिया में कोई मां बाप ऐसा नहीं करेंगे, अगर वे उस बच्चे के हक़ीक़ी मां बाप हैं तो उस बच्चे को आग की तरफ़ बढ़ता हुआ देख कर उनकी नींद हराम हो जायेगी, उनकी ज़िन्दगी हराम हो जायेगी, और जब तक उस बच्चे को गोद में उठा कर उस आग से दूर नहीं ले जायेंगे, उस वक़्त तक उनको चैन नहीं आयेगा।

अल्लाह तआला यह फ़रमा रहे हैं कि जब तुम अपने बच्चे को

दुनिया की मामूली सी आग से बचाने के लिये सिर्फ़ ज़बानी जमा ख़र्च पर बस नहीं करते तो जहन्नम की वह आग जिसकी हद्द व निहायत नहीं, और जिसका तसव्वुर नहीं किया जा सकता, उस आग से बच्चे को बचाने के लिये ज़बानी जमा ख़र्च को काफ़ी क्यों समझते हो? इसलिये यह समझना कि हमने उन्हें समझा कर अपना फ़रीज़ा अदा कर लिया, यह बात आसानी से कहने की नहीं है।

आज दीन के अ़लावा हर चीज़ की फ़िक्र है

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के बेटे की जो मिसाल दी जाती है कि उनका बेटा काफ़िर रहा, वह उसको आग से नहीं बचा सके, यह बात दुरुस्त नहीं, इसलिये कि यह भी तो देखो कि उन्हों ने उसको सही रास्ते पर लाने की नौ सौ साल तक लगातार कोशिश की, उसके बावजूद जब वह रास्त पर नहीं आया तो अब उनके ऊपर कोई मुतालबा और मुवाख़ज़ा (पकड़) नहीं। लेकिन हमारा हाल यह है कि एक दो मर्तबा कहा और फिर फ़ारिग़ होकर बैठ गये कि हमने तो कह दिया, हालांकि होना यह चाहिये कि उनको गुनाहों से उसी तरह बचाओ जिस तरह उनको हक़ीक़ी आग से बचाते हो, अगर इस तरह नहीं बचा रहे हो तो इसका मतलब यह है कि फ़रीज़ा अदा नहीं हो रहा है। आज तो यह नज़र आ रहा है कि औलाद के बारे में हर चीज़ की फ़िक्र है, जैसे यह तो फ़िक्र है कि बच्चे की तालीम अच्छी हो, उसका कैरियर अच्छा बने, यह फ़िक्र है कि मुआ़शरे में उसका मक़ाम अच्छा हो, यह फ़िक्र तो है कि उसके खाने पीने और पहनने का इन्तिज़ाम अच्छा हो जाये, लेकिन दीन की फ़िक्र नहीं।

थोड़ा सा बेदीन हो गया है

हमारे एक जानने वाले थे जो अच्छे ख़ासे पढ़े लिखे थे, दीनदार और तहज्जुद गुज़ार थे, उनके लड़के ने नई अंग्रेज़ी तालीम हासिल की, जिसके नतीजे में उसको कहीं अच्छी नौकरी मिल गयी, एक दिन वह बड़ी ख़ुशी के साथ बताने लगे कि माशा-अल्लाह हमारे बेटे ने

इतना पढ़ लिया, अब उनको नौकरी मिल गयी और मुआशरे में उसको बड़ा मक़ाम हासिल हो गया, हां थोड़ा सा बेदीन तो हो गया, लेकिन मुआशरे में उसका कैरियर बड़ा शानदार बन गया है।

अब अन्दाज़ा लगाइये कि उन साहिब ने इस बात को इस तरह बयान किया कि "वह बच्चा ज़रा सा बेदीन हो गया तो हो गया, मगर उसका कैरियर बड़ा शानदार बन गया" मालूम हुआ कि बेदीन होना कोई बड़ी बात नहीं है, बस ज़रा सी गड़-बड़ी हो गयी है, हालांकि वह साहिब खुद बड़े दीनदार और तहज्जुद गुज़ार आदमी थे।

"जान" तो निकल गयी है

हमारे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि एक वाक़िआ सुनाया करते थे कि एक शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया, लेकिन लोग उसको ज़िन्दा समझ रहे थे, चुनांचे लोगों ने डाक्टर को बुलाया, ताकि मुआयना करे कि इसको क्या बीमारी है? यह कोई हर्कत क्यों नहीं कर रहा है, चुनांचे डाक्टर साहिब ने मुआयना करने के बाद बताया कि यह बिल्कुल ठीक ठाक आदमी है, सर से लेकर पांव तक तमाम आज़ा (अंग) ठीक हैं, बस ज़रा सी जान निकल गयी है।

बिल्कुल इसी तरह उन साहिब ने अपने बेटे के बारे में कहा कि "माशा-अल्लाह उसका कैरियर तो बड़ा शानदार बन गया है, बस ज़रा सा बेदीन हो गया है" गोया कि " बेदीन" होना कोई ऐसी बात नहीं जिससे बड़ा नुक़्स पैदा होता हो।

नई नस्ल की हालत

आज हमारा यह हाल है कि और हर चीज़ की फ़िक्र है मगर दीन की तरफ़ तवज्जोह नहीं, भाई! अगर यह दीन इतनी ही ना-क़ाबिले तवज्जोह चीज़ थी तो फिर आपने नमाज़ पढ़ने की और तहज्जुद गुज़ारी की और मस्जिदों में जाने की तक्लीफ़ क्यों फ़रमाई? आपने अपने बेटे की तरह कैरियर बना लिया होता, शुरू से इस बात की फ़िक्र नहीं कि बच्चे को दीन की तालीम सिखाई जाये, आज यह हाल

है कि पैदा होते ही बच्चे को ऐसी नर्सरी में भेज दिया जाता है जहां उसको कुत्ता बिल्ली सिखाया जाता है, लेकिन अल्लाह का नमा नहीं सिखाया जाता, दीन की बातें नहीं सिखाई जातीं, इस वक़्त तक वह नस्ल तैयार होकर हमारे सामने आ चुकी है, और उसने सत्ता की डोर संभाल ली है, ज़िन्दगी की बाग डोर उसके हाथों में आ गयी है, जिसने पैदा होते ही स्कूल कालेज की तरफ़ रुख़ किया, और उनके अन्दर नाज़रा कुरआन शरीफ़ पढ़ने की भी अहलियत मौजूद नहीं, नमाज़ पढ़ना नहीं आता, अगर इस वक़्त पूरे मुआशरे (समाज) का जायज़ा लेकर देखा जाये तो शायद अक्सरियत ऐसे लोगों की मिले जो कुरआन शरीफ़ नाज़रा नहीं पढ़ सकते, जिन्हें नमाज़ सही तरीक़े से पढ़नी नहीं आती, वजह इसकी यह है कि बच्चे के पैदा होते ही मां बाप ने यह फ़िक्र तो की कि उसको कौन से इंग्लिश मीडियम स्कूल में दाख़िल किया जाये लेकन दीन की तरफ़ ध्यान और फ़िक्र नहीं।

आज औलाद मां बाप के सर पर सवार हैं

याद रखो! अल्लाह तबारक व तआला की एक सुन्नत है, जो हदीस शरीफ़ में बयान की गयी है कि जो शख़्स किसी मख़्लूक़ को राज़ी करने के लिये अल्लाह को नाराज़ करे तो अल्लाह तआला उसी मख़्लूक़ को उस पर मुसल्लत फ़रमा देते हैं। जैसे एक शख़्स ने एक मख़्लूक़ को राज़ी करने के लिये गुनाह किया, और गुनाह करके अल्लाह तआला को नाराज़ किया, तो आख़िर कार अल्लाह तआला उसी मख़्लूक़ को उस पर मुसल्लत फ़रमा देते हैं, तजुर्बा करके देखो।

आज हमारी सूरते हाल यह है कि अपनी औलाद और बच्चों को राज़ी करने की ख़ातिर यह सोचते हैं कि उनका कैरियर अच्छा हो जाये, उनकी आमदनी अच्छी हो जाये और मुआशरे में उनका एक मक़ाम बन जाये, इन तमाम कामों की वजह से उनको दीन न सिखाया, और दीन न सिखा कर अल्लाह तआला को नाराज़ किया, उसका नतीजा यह हुआ कि वही औलाद जिसको राज़ी करने की फ़िक्र थी वही औलाद मां बाप के सर पर मुसल्लत हो जाती है। आज आप ख़ुद

मुआशरे के अन्दर देख लें कि किस तरह औलाद अपने मां बाप की ना फ़रमानी कर रही है। और मां बाप के लिये अज़ाब बनी हुयी है, वजह इसकी यह है कि मां बाप ने उनको सिर्फ़ इसलिये बेदीनी के माहौल में भेज दिया ताकि उनको अच्छा खाना मयस्सर आ जाये, और अच्छी नौकरी मिल जाये, और उनको ऐसे बेदीनी के माहौल में आज़ाद छोड़ दिया जिसमें मां बाप की इज़्ज़त और अज़्मत का कोई ख़ाना नहीं है, जिसमें मां बाप के हुक्म की इताअ़त का भी कोई ख़ाना नहीं है, वह अगर कल को अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशात के मुताबिक़ फ़ैसले करता है, तो अब मां बाप बैठे रो रहे हैं, कि हमने तो इस मक़सद के लिये तालीम दिलायी थी, मगर उसने यह कर लिया, अरे बात असल में यह है कि तुमने उसको ऐसे रास्ते पर चलाया, जिसके नतीजे में वह तुम्हारे सरों पर मुसल्लत हो, तुम उनको जिस क़िस्म की तालीम दिलवा रहे हो, और जिस रास्ते पर लेजा रहे हो, उस तालीम की तहज़ीब तो यह है कि जब मां बाप बूढ़े हो जायें तो अब वे घर में रखने के लायक़ नहीं, उनको नर्सिंगहोम (Nursing Home) में दाख़िल कर दिया जाता है और फिर साहिबज़ादे पलट कर भी नहीं देखते कि वहां मां बाप किस हाल में हैं, और किस चीज़ की उनको ज़रूरत है।

बाप "नर्सिंग होम" में

पश्चिमी देशों के बारे में तो ऐसे वाक़िआत बहुत सुनते थे कि बूढ़ा बाप "नर्सिंग होम" में पड़ा है, वहां उस बाप का इन्तिक़ाल हो गया, वहां के मैनेजर ने साहिबज़ादे को फ़ोन किया कि जनाब! आपके वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो गया है, तो जवाब में साहिबज़ादे ने कहा कि मुझे बड़ा अफ़्सोस है कि उनका इन्तिक़ाल हो गया। अब आप मेहरबानी फ़रमा कर उनकी तज्हीज़ व तक्फ़ीन (अंतिम संसकार) का इन्तिज़ाम कर दें। और मेहरबानी फ़रमा कर बिल मुझे भेज दीजिये मैं बिल की अदायगी कर दूंगा। वहां के बारे में तो यह बात सुनी थी लेकिन अभी कुछ दिन पहले मुझे एक साहिब ने बताया कि यहां कराची में भी एक "नर्सिंग होम" क़ायम हो गया है, जहां बूढ़ों की रिहाइश का

इन्तिज़ाम है, उसमें भी यही वाक़िआ पेश आया कि एक साहिब का वहां इन्तिक़ाल हो गया। उसके बेटे को इत्तिला दी गयी, बेटे साहिब ने पहले तो आने का वादा कर लिया, लेकिन बाद में माज़िरत करते हुए कहा कि मुझे फ़लां मीटिंग में जाना है इसलिये आप ही उनके कफ़न दफ़न का बन्दोबस्त कर दें, मैं नहीं आ सकूंगा। यह वह औलाद है जिसको राज़ी करने की ख़ातिर तुमने ख़ुदा को नाराज़ किया, इसलिये वह अब तुम्हारे ऊपर मुसल्लत कर दी गयी। जैसाकि हदीस में साफ़ मौजूद है कि जिस मख़्लूक़ को राज़ी करने के लिये ख़ुदा को नाराज़ करोगे अल्लाह तआ़ला उसी मख़्लूक़ को तुम्हारे ऊपर मुसल्लत कर देंगे।

जैसा करोगे वैसा भरोगे

जब वह औलाद सर पर मुसल्लत हो गयी तो अब मां बाप रो रहे हैं कि औलाद दूसरे रास्ते पर जा रही है, अरे जब तुमने शुरू ही से उसको ऐसे रास्ते पर डाला, जिसके ज़रिये उसका ज़ेहन बदल जाये, उसका ख़्याल बदल जाये, उसकी सोच बदल जाये तो उसका अन्जाम यही होना था:

अन्दरूने क़अ्रे दरिया तख़्ता बन्दम करदा ई
बाज़ मी गोई कि दामन तर मकुन होशियार बाश

"पहले मेरे हाथ पांव बांध कर मुझे समुंदर के अन्दर डुबो दिया, उसके बाद कहते हो कि होशियार! दामन तर मत करना। भाई: अगर तुमने पहले उसे कुछ कुरआन शरीफ़ पढ़ाया होता, उसको कुछ हदीस नबवी सिखाई होती, वह हदीस सिखाई होती जिसमें रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि आदमी जब दुनिया से चला जाता है तो तीन चीज़ें उसके लिये कार-आमद होती हैं, एक इल्म है जिसे वह छोड़ गया, जिस से लोग नफ़ा उठा रहे हैं। कोई आदमी कोई किताब लिख गया और लोग उससे फ़ायदा उठा रहे हैं, या कोई आदमी इल्मे दीन पढ़ाता था, अब उसके शागिर्द आगे इल्म पढ़ा रहे हैं, इससे उस मरने वाले शख़्स को भी फ़ायदा पहुंचता रहता

है। या कोई सदक़ा–ए–जारिया छोड़ गया, जैसे कोई मस्जिद बना दी, कोई मदरसा बना दिया, कोई शिफ़ाख़ाना बना दिया, कोई कुआं बना दिया, और लोग उससे फ़ायदा उठा रहे हैं। ऐसे अ़मल का सवाब मरने के बाद भी जारी रहता है। और तीसरी चीज़ नेक औलाद है, जो वह छोड़ गया, वह उसके हक़ में दुआयें करे, तो उसका अ़मल मरने के बाद भी जारी रहता है, क्योंकि मां बाप की तरबियत के नतीजे में औलाद जो कुछ कर रही है, वह सब मां बाप के नामा–ए–आमाल में लिखा जा रहा है। अगर यह हदीस पढ़ाई होती तो आज बाप का यह अन्जाम न होता। लेकिन चूंकि इस रास्ते पर चलाया ही नहीं, इसलिये इसका बुरा अन्जाम आंखों के सामने है।

हज़राते अंबिया और औलाद की फ़िक्र

भाई! औलाद को दीन की तरफ़ लाने की फ़िक्र इतनी ही लाज़मी है जितनी अपनी इस्लाह की फ़िक्र लाज़िम है, औलाद को सिर्फ़ ज़बानी समझाना काफ़ी नहीं। जब तक उसकी फ़िक्र उसकी तड़प इस तरह न हो जिस तरह अगर धहकती हुयी आग की तरफ़ बच्चा बढ़ रहा हो, और आप लपक कर जब तक उठा न लेंगे, उस वक़्त तक आपको चैन नहीं आयेगा। इसी तरह की तड़प यहां भी होनी ज़रूरी है। पूरा क़ुरआने करीम इस हुक्म की ताकीद से भरा हुआ है, चुनांचे अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम के वाक़िआत का ज़िक्र फ़रमाते हुये अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं कि:

"وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ" (سورة مريم)

"यानी हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया करते थे। हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के बारे में फ़रमाया कि जब उनका इन्तिक़ाल होने लगा तो अपनी सारी औलाद और बेटों को जमा किया। कोई शख़्स अपनी औलाद को इस फ़िक्र के लिये जमा करता है कि मेरे मरने के बाद तुम्हारा क्या होगा? किस तरह कमाओगे? लेकिन हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम अपनी औलाद को जमा कर रहे हैं और यह पूछ रहे हैं कि बताओ! मेरे मरने

के बाद तुम किस की इबादत करोगे? उनको अगर फ़िक्र है तो इबादत की फ़िक्र है। बस! अपनी औलाद, अपने घर वालों के बारे में इस फ़िक्र को पैदा करने की ज़रूरत है। (सूरः बक़रः १३३)

क़ियामत के दिन मातहतों के बारे में सवाल होगा

बात सिर्फ़ अहल व अ़याल (घर वालों और बाल बच्चों) की हद तक महदूद नहीं, बल्कि जितने मातहत हैं, जिन पर इन्सान अपना असर डाल सकता है। जैसे एक शख़्स किसी जगह अफ़्सर है और कुछ लोग उसके मातहत काम कर रहे हैं। क़ियामत के दिन उस शख़्स से सवाल होगा कि तुमने अपने मातहतों को दीन पर लाने की कोशिश की थी? एक उस्ताद है उसके मातहत बहुत से शागिर्द पढ़ते हैं, क़ियामत के दिन उस उस्ताद से सवाल होगा कि तुमने अपने शागिर्दों को सीधे रास्ते पर लाने के सिलसिले में क्या काम किया? एक उजरत पर काम कराने वाला है उसके मातहत बहुत से मज़दूर मेहनत मज़दूरी करते हैं, क़ियामत के दिन उस उजरत पर काम कराने वाले से सवाल होगा कि तुमने अपने मातहतों को दीन पर लाने के सिलसिले में क्या कोशिश की थी? जैसाकि हदीस शरीफ़ में है किः

"كلكم راع وكلكم مسئول عن رعيته" (جامع الاصول)

"यानी तुम में से हर शख़्स राअ़ी और निगहबान है, और उससे उसकी रअ़िय्यत के बारे में सवाल होगा"।

ये गुनाह हक़ीक़त में आग हैं

यह आयत जो मैंने शुरू में तिलावत की इस आयत के तहत मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने यह जो फ़रमाया कि ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को आग से बचाओ, यह इस तरह कहा जा रहा है जैसे कि आग सामने नज़र आ रही है। हालांकि इस वक़्त कोई आग भड़कती हुयी नज़र नहीं आ रही है, बात असल में यह है कि ये जितने गुनाह होते हुये नज़र आ रहे हैं ये सब हक़ीक़त में आग हैं। चाहे देखने में ये गुनाह

लज़ीज़ और अच्छे लगने वाले मालूम हो रहे हों, लेकिन हक़ीक़त में ये सब आग हैं। और यह दुनिया जो गुनाहों से भरी हुयी है, वह इन गुनाहों की वजह से जहन्नम बनी हुयी है। लेकिन हक़ीक़त में गुनाहों से मानूस होकर हमारी हिस मिट गयी है, इसलिये गुनाहों की ज़ुल्मत (अंधेरे) और आग महसूस नहीं होती। वर्ना जिन लोगों को अल्लाह तआला सही हिस अता फ़रमाते हैं और ईमान का नूर अता फ़रमाते हैं उनको ये गुनाह हक़ीक़त में आग की शक्ल में नज़र आते हैं या ज़ुल्मत (अंधेरे) की शक्ल में नज़र आते हैं।

हराम के एक लुक़्मे का नतीजा

दारुल उलूम देवबन्द के सद्र मुदर्रिस, हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के उस्ताद हज़रत मौलाना मुहम्मद याकूब साहिब नानौतवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा एक शख़्स की दावत पर उसके घर खाना खाने चला गया, अभी सिर्फ़ एक ही लुक़्मा खाया था कि यह एहसास हो गया कि खाने में कुछ गड़बड़ है, शायद यह हलाल की आमदनी नहीं है, जब तह्क़ीक़ की तो मालूम हुआ कि हक़ीक़त में हलाल आमदनी नहीं थी, लेकिन वह हराम आमदनी का लुक़्मा ना-दानिस्ता तौर पर हलक़ के अन्दर चला गया। हज़रत मौलाना फ़रमाते थे कि मैंने उस पर तौबा इस्तिग़फ़ार की लेकिन इसके बावजूद दो महीने तक उस हराम लुक़्मे की ज़ुलमत (अंधेरा) महसूस होती रही, और दो महीने तक बार बार यह ख़्याल और वस्वसा आता रहा कि फ़लां गुनाह कर लो, और गुनाह के जज़्बात दिल में पैदा होते रहे। अल्लाह तआ़ला जिन लोगों के दिलों को पाक, रोशन और साफ़ फ़रमाते हैं उन्हें इन गुनाहों की ज़ुल्मत का एहसास होता है। हम लोग चूंकि इन गुनाहों से मानूस हो गये हैं इसलिये हमें मालूम नहीं होता।

अन्धेरे के आ़दी हो गये हैं

हम लोग यहां शहरों में बिजली के आ़दी हो गये हैं, हर वक़्त शहर बिजली से जगमगा रहा है, अब अगर चन्द मिनट के लिये बिजली चली जाये तो तबीयत पर भारी गुज़रता है, इसलिये कि निगाहें बिजली

की रोशनी और उसकी राहत की आदी हैं, जब वह राहत छिन जाती है तो सख़्त तक्लीफ़ होती है, और वह ज़ुल्मत बुरी लगती है, लेकिन बहुत से देहात ऐसे हैं कि वहां के लोगों ने बिजली की शक्ल तक नहीं देखी, वहां हमेशा अन्धेरा रहता है। कभी बिजली के कुम्कुमे वहां जलते ही नहीं हैं उनको कभी अन्धेरे की तक्लीफ़ नहीं होती, इसलिये कि उन्हों ने बिजली के कुम्कुमों की रोशनी देखी ही नहीं। लेकिन जिसने यह रोशनी देखी है, उससे जब यह रोशनी छिन जाती है, तो उसको तक्लीफ़ होती है।

यही हमारी मिसाल है कि हम सुबह व शाम गुनाह करते रहते हैं और इन गुनाहों की ज़ुल्मत के आदी हो गये हैं, इसलिये ज़ुल्मत का एहसास नहीं होता, अल्लाह तआला हमें ईमान का नूर अता फ़रमाये, तक़्वे का नूर अता फ़रमाये, तब हमें मालूम होगा कि इन गुनाहों के अन्दर कितनी ज़ुल्मत है, हज़रत वालिद साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि ये गुनाह हक़ीक़त में आग ही हैं, इसी लिये क़ुरआने करीम ने फ़रमाया कि:

"اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا"

(سورة النسآء:١٠)

"यानी जो लोग यतीमों का माल ज़ुल्म करके खाते हैं, वे हक़ीक़त में अपने पेटों में आग खा रहे हैं, इस आयत के तहत अक्सर मुफ़स्सिरीन ने यह फ़रमाया कि यह मजाज़ और इस्तिआरा है कि आग खा रहे हैं, यानी हराम खा रहे हैं। जिसका अन्जाम आख़िर कार जहन्नम की आग की शक्ल में उनके सामने आयेगा, लेकिन बाज़ मुफ़स्सिरीन ने बयान फ़रमाया कि यह मजाज़ और इस्तिआरा नहीं है बल्कि यह हक़ीक़त है, यानी वे हराम का जो लुक़्मा खा रहे हैं, वह वाक़ई आग है, लेकिन इस वक़्त बेहिसी की वजह से आग मालूम नहीं हो रही हैं। इसलिये जितने गुनाह हमारे चारों तरफ़ फैले हुये हैं, वे हक़ीक़त में आग हैं, हक़ीक़त में दोज़ख़ के अंगारे हैं। लेकिन हमें अपनी बेहिसी की वजह से नज़र नहीं आते।

अल्लाह वालों को गुनाह नज़र आते हैं

अल्लाह तआला जिन लोगों को बातिनी रोशनी अता फ़रमाते हैं, उनको इनकी हक़ीक़त नज़र आती है। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के बारे में सही और मोतबर रिवायतों में है कि जिस वक़्त कोई आदमी वुज़ू कर रहा होता, या गुस्ल कर रहा होता तो आप उसके बहते हुये पानी में गुनाहों की शक्लें देख लेते थे कि ये फ़लां फ़लां गुनाह बहते हुये जा रहे हैं।

एक बुज़ुर्ग थे जब वह अपने घर से बाहर निकलते तो चेहरे पर कपड़ा डाल लेते थे। किसी शख़्स ने उन बुज़ुर्ग से पूछा कि हज़रत! आप जब भी बाहर निकलते हैं तो चेहरे पर कपड़ा डाल कर निकलते हैं इसकी क्या वजह है? उन बुज़ुर्ग ने जवाब में फ़रमाया कि मैं कपड़ा उठा कर बाहर निकलने पर क़ादिर नहीं, इसलिये कि जब मैं बाहर निकलता हूं तो किसी इन्सान की शक्ल नज़र नहीं आती, बल्कि ऐसा नज़र आता है कि कोई कुत्ता है कोई सुअर है, कोई भेड़िया है, कोई गधा है, और मुझे इन्सानों की शक्लें इन सूरतों में नज़र नहीं आती हैं। इसकी वजह यह है कि गुनाह इन शक्लों की सूरत इख़्तियार करके सामने आ जाते हैं। बहर हाल! चूंकि इन गुनाहें की हक़ीक़त हम पर ज़ाहिर नहीं है, इसलिये हम इन गुनाहों को लज़्ज़त और राहत का ज़रिया समझते हैं। लेकिन हक़ीक़त में वह गन्दगी है, हक़ीक़त में वह नजासत (नापाकी) है, हक़ीक़त में वह आग है, हक़ीक़त में वह ज़ुल्मत है।

यह दुनिया गुनाहों की आग से भरी हुई है

हज़रत वालिद साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि यह दुनिया जो गुनाहों की आग से भरी हुयी है, इसकी मिसाल बिल्कुल ऐसी है जैसे किसी कमरे में गैस भर गयी हो, अब वह गैस हक़ीक़त में आग है, सिर्फ़ दिया सलाई लगाने की देर है, एक दिया सलाई दिखाओगे तो पूरा कमरा आग से दहक जायेगा, इसी तरह ये बद आमालियां, ये गुनाह जो मुआशरे के अन्दर फैले हुये हैं, हक़ीक़त में

आग हैं, सिर्फ़ एक सूर फूंकने की देर है, जब सूर फूंका जायेगा तो यह मुआशरा आग से दहक जायेगा, हमारे ये बुरे आमाल भी हक़ीक़त में जहन्नम है, इनसे अपने आपको भी बचाओ, और अपने अह्ल व अयाल (घर वालों) को भी बचाओ।

पहले ख़ुद नमाज़ की पाबन्दी करो

अ़ल्लामा नववी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने दूसरी आयत यह बयान फ़रमाई है कि:

"وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا" (طٰہٰ:١٣٢)

यानी अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो, और ख़ुद भी इस नमाज़ की पाबन्दी करो, इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने अ़जीब तरतीब रखी है, बज़ाहिर यह होना चाहिये था कि पहले ख़ुद नमाज़ क़ायम करो और फिर अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो, लेकिन यहां तरतीब उलट दी है कि पहले अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो, और फिर ख़ुद भी इसकी पाबन्दी करो, इस तरतीब में इस बात की तरफ़ इशारा फ़रमा दिया कि तुम्हारा अपने घर वालों को या औलाद को नमाज़ का हुक्म देना उस वक़्त तक असरदार और फ़ायदेमन्द नहीं होगा, जब तक तुम उनसे ज़्यादा पाबन्दी नहीं करोगे, अब ज़बान से तो तुमने उनको कह दिया कि नमाज़ पढ़ो लेकिन ख़ुद अपने अन्दर नमाज़ की पाबन्दी नहीं है, तो इस सूरत में उनको नमाज़ के लिये कहना बिल्कुल बेकार जायेगा। इसलिये अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म देने का एक लाज़मी हिस्सा यह है कि उनसे ज़्यादा पाबन्दी ख़ुद करो, और उनके लिये एक मिसाल और नमूना बनो।

बच्चों के साथ झूठ मत बोलो

हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने एक औ़रत ने अपने बच्चे को गोद में लेने के लिये बुलाया, बच्चा आने में तरद्दुद कर रहा था, तो उस औ़रत ने कहा! तुम हमारे पास आओ, हम तुम्हें कुछ चीज़ देंगे। अब वह बच्चा आ गया, आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस औ़रत से पूछा कि तुमने

बच्चे को यह जो कहा कि हमारे पास आओ हम तुम्हें कुछ चीज़ देंगे, तो क्या तुम्हारी वाक़ई कुछ देने की नियत थी? उस औरत ने जवाब दिया कि या रसूलल्लाह! मेरे पास एक खजूर थी और यह खजूर इसको देने की नियत थी। आपने फ़रमाया कि अगर देने की नियत न होती तो यह तुम्हारी तरफ़ से बहुत बड़ा झूठ होता, और गुनाह होता। इसलिये कि तुम बच्चे से झूठा वादा कर रही हो, गोया उसके दिल में बचपन से यह बात डाल रही हो कि झूठ बोलना और वादा ख़िलाफ़ी करना कोई ऐसी बुरी बात नहीं होती। इसलिये इस आयत में इस बात की तरफ़ इशारा फ़रमाया कि बीवी बच्चों को जो भी हुक्म दो पहले ख़ुद उस पर अ़मल करो, और उसकी पाबन्दी दूसरों से ज़्यादा करो।

बच्चों को तरबियत देने का अन्दाज़

आगे अ़ल्लामा नववी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि हदीसें लाये हैं।

"عن ابی هريرة رضى الله تعالى عنه قال: اخذ الحسن بن على رضى الله عنهما تمرة من تمر الصدقة فجعلها فی فيه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: كخ كخ، ارم بها، اما علمت انا لا نأكل الصدقة" (جامع الاصول)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत फ़ातिमा और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के साहिबज़ादे हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु जबकि अभी बच्चे थे। एक मर्तबा सदके की खजूरों में से एक खजूर उठा कर अपने मुंह में रख ली, जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देखा तो फ़ौरन फ़रमायाः "कख़ कख़" अ़र्बी में यह लफ़्ज़ ऐसा है जैसे हमारी ज़बान में "थू थू" कहते हैं, यानी अगर बच्चा कोई चीज़ मुंह में डाल ले, और उसकी बुराई के इज़्हार के साथ वह चीज़ उसके मुंह से निकलवाना मक़्सूद हो तो यह लफ़्ज़ इस्तेमाल किया जाता है। बहर हाल! हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "कख़ कख़" यानी उसको मुंह से निकाल कर फेंक दो, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हम यानी हाशिम की औलाद सदके का माल नहीं खाते।

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम के नवासे हैं। और ऐसे महबूब नवासे हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिदे नबवी में खुतबा दे रहे थे, उस वक़्त हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु मस्जिद में दाख़िल हो गये। तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मिंबर से उतरे, और आगे बढ़ कर उनको गोद में उठा लिया। और बाज़ मर्तबा ऐसा भी होता कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ रहे हैं और यह हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु आपके कन्धे पर सवार हो गये और जब आप सज्दे में जाने लगे तो आपने उनको एक हाथ से पकड़ कर नीचे उतार दिया, और कभी ऐसा भी होता कि आप उनको गोद में लेते और फ़रमाते किः

"مبخلة ومجبنة"

यानी यह औलाद ऐसी है कि इन्सान को बख़ील भी बना देती है, और बुज़्दिल (डरपोक) भी बना देती है। इसलिये कि इन्सान औलाद की वजह से कभी कभी बख़ील बन जाता है, और कभी कभी बुज़्दिल बन जाता है। एक तरफ़ तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु से इतनी मुहब्बत है, दूसरी तरफ़ जब उन्हों ने नादानी में एक खजूर भी मुंह में रख ली तो आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह गवारा न हुआ कि वह उस खजूर को खायें। मगर चूंकि उनको पहले से इस चीज़ की तरबियत देनी थी, इसलिये फ़ौरन वह खजूर मुंह से निकलवाई, और फ़रमाया कि यह हमारे खाने की चीज़ नहीं है।

बच्चों से मुहब्बत की हद

इस हदीस में इस बात की तरफ़ इशारा फ़रमा दिया कि बच्चे की तरबियत छोटी छोटी चीज़ों से शुरू होती है। इसी से उसका ज़ेहन बनता है, इसी से उसकी ज़िन्दगी बनती है। यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत है। आज कल यह अ़जीब मन्ज़र देखने में आता है कि मां बाप के अन्दर बच्चों को ग़लत बातों पर टोकने का रिवाज ही ख़त्म हो गया है। आज से पहले भी मां बाप

बच्चों से मुहब्बत करते थे, लेकिन वे अक्ल और तदबीर के साथ मुहब्बत करते थे। लेकिन आज यह मुहब्बत और लाड इस दर्जा तक पहुंच चुका है कि बच्चे कितने ही ग़लत काम करते रहें, ग़लत हर्कतें करते रहें, लेकिन मां बाप उन ग़लतियों पर टोकते ही नहीं, मां बाप यह समझते हैं कि ये नादान बच्चे हैं इनको हर क़िस्म की छूट है, इनकी रोक टोक करने की ज़रूरत नहीं। अरे भाई! यह सोचो कि अगर वे बच्चे नादान हैं मगर तुम तो नादान नहीं हो, तुम्हारा फ़र्ज़ है कि उनको तरबियत दो, अगर कोई बच्चा अदब के ख़िलाफ़, तमीज़ के ख़िलाफ़ या शरीअत के ख़िलाफ़ कोई ग़लत काम कर रहा है तो उसको बताना मां बाप के ज़िम्मे फ़र्ज़ है, इसलिये कि वह बच्चा इसी तरह बद तमीज़ बन कर बड़ा हो गया तो उसका वबाल तुम्हारे ऊपर है कि तुमने उसको शुरू से इसकी आदत नहीं डाली। बहर हाल! इस हदीस को यहां लाने का मक़सद यह है कि बच्चों की छोटी छोटी हर्कतों को भी निगाह में रखो।

हज़रत शैख़ुल हदीस रह० का एक वाक़िआ

शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने "आप बीती" में अपना एक क़िस्सा लिखा है कि जब मैं छोटा बच्चा था तो मां बाप ने मेरे लिये एक छोटा सा ख़ूबसूरत तकिया बना दिया था, जैसा कि आ़म तौर पर बच्चों के लिये बनाया जाता है, मुझे उस तकिये से बहुत मुहब्बत थी, और हर वक़्त मैं उसको अपने साथ रखता था। एक दिन मेरे वालिद साहिब लेटना चाह रहे थे, उनको तकिये की ज़रूरत पेश आयी तो मैंने वालिद साहिब से कहा कि: अब्बा जी! मेरा तकिया ले लीजिये, यह कह कर मैंने अपना तकिया उनको इस तरह पेश किया जिस तरह कि मैंने अपना दिल निकाल कर बाप को दे दिया, लेकिन जिस वक़्त वह तकिया मैंने उकनो पेश किया, उसी वक़्त वालिद साहिब ने मुझे एक चपत रसीद किया और कहा कि अभी से तू इस तकिये को अपना तकिया कहता है, मक़सद यह था कि तकिया तो हक़ीक़त में बाप की अ़ता (देन) है, इसलिये

इसको अपनी तरफ़ मंसूब करना या अपना क़रार देना ग़लत है। हज़रत शैख़ुल हदीस रहमतुल्लाहि अ़लैहि लिखते हैं कि उस वक़्त तो मुझे बहुत बुरा लगा कि मैंने अपना दिल निकाल कर बाप को दे दिया था, इसके जवाब में बाप ने एक चपत लगा दिया, लेकिन आज समझ में आया कि कितनी बारीक बात पर उस वक़्त वालिद साहिब ने तंबीह फ़रमाई थी। और उसके बाद ज़ेहन का रुख़ बदल गया। इस क़िस्म की छोटी छोटी बातों पर मां बाप को नज़र रखनी पड़ती है, तब जाकर बच्चे की तरबियत सही होती है, और बच्चा सही तौर पर उभर कर सामने आता है।

खाना खाने का एक अदब

"عن ابی حفص عمربن ابی سلمة عبد الله بن عبد الاسد ربیب رسول الله صلی الله علیه وسلم قال: کنت غلامًا فی حجر رسول الله صلی الله علیه وسلم، وکانت یدی تطیش فی الصحفة، فقال لی رسول الله صلی الله علیه وسلم: یا غلام سم الله، وکل بیمینك، وکل مما یلیك، فمازالت تلك طعمتی بعد. (جامع الاصول)

हज़रत उमर बिन अबू सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सौतेले बेटे हैं। हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा जो उम्मुल मोमिनीन हैं, उनके पिछले शौहर से यह साहिबज़ादे पैदा हुए थे। जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से निकाह फ़रमाया तो यह उनके साथ ही हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आये थे, इसलिये यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के रबीब यानी सौतेले बेटे थे, आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इनसे बड़ी मुहब्बत व शफ़्क़त फ़र्माया करते थे, और इनके साथ बड़ी बे–तकल्लुफ़ी की बातें किया करते थे। वह फ़रमाते हैं कि जिस वक़्त मैं छोटा बच्चा था और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के प्रवरिश में था, एक दिन खाना खाते हुए मेरा हाथ प्याले में इधर से उधर हर्कत कर रहा था, यानी कभी एक तरफ़ से लुक़्मा उठाया कभी दूसरी तरफ़ से

लुक़्मा उठाया और कभी तीसरी तरफ़ से लुक़्मा उठाया। जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे इस तरह करते हुए देखा तो फ़रमाया ऐ लड़के! खाना खाते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ो और दाहिने हाथ से खाओ, और बर्तन का जो हिस्सा तुम्हारे सामने है वहां से खाओ, इधर उधर से हाथ बढ़ा कर खाना ठीक नहीं है, आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस तरह की छोटी छोटी बातों को देख कर उस पर तंबीह फ़रमाते और सही अदब सिखाते।

ये इस्लामी आदाब हैं

एक और सहाबी हज़रत अकराश बिन ज़ुवैब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि मैं एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, जब खाना सामने आया तो मैंने यह हर्कत शुरू की कि एक निवाला इधर से लिया, और दूसरा निवाला उधर से ले लिया। और इस तरह बर्तन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों से खाना शुरू कर दिया। आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया ऐ अकराश! एक जगह से खाओ, इसलिये कि खाना एक जैसा है, इधर उधर से खाने से बद तहज़ीबी भी मालूम होती है, और बद सलीक़ी ज़ाहिर होती है। इसलिये एक जगह से खाओ, हज़रत अकराश फ़रमाते हैं कि मैंने एक जगह से खाना शुरू कर दिया। जब खाने से फ़ारिग़ हुए तो एक बड़ा थाल लाया गया जिस में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की खजूरें बिखरी हुयी थीं। जैसे मशहूर है कि दूध का जला हुआ छाछ को भी फूंक फूंक कर पीता है। चूंकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझ से फ़रमा चुके थे कि एक जगह से खाओ, इसलिये मैंने वे खजूरें एक जगह से खानी शुरू कर दीं। और आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभी एक तरफ़ से खजूर उठाते कभी दूसरी तरफ़ से उठाते, और मुझे जब एक तरफ़ से खाते हुए देखा तो आपने फ़रमाया कि ऐ अकराश! तुम जहां से चाहो खाओ, इसलिये कि ये मुख़्तलिफ़ क़िस्म की खजूरें हैं। अब अगर एक तरफ़ से खाते रहे, फिर दिल तुम्हारा दूसरी क़िस्म की खजूर खाने को चाह रहा

है तो हाथ बढ़ा कर वहां से खजूर उठा कर खालो। (मिश्कात शरीफ़)

गोया कि इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह अदब सिखाया कि अगर एक ही क़िस्म की चीज़ है तो फिर सिर्फ़ अपनी तरफ़ से खाओ, और अगर मुख़्तलिफ़ क़िस्म की चीज़ें हैं तो दूसरी तरफ़ से भी खा सकते हो। अपनी औलाद और अपने सहाबा की इन छोटी छोटी बातों पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की निगाह थी। ये सारे आदाब खुद भी सीखने के हैं और अपने घर वालों को भी सिखाने के हैं, ये इस्लामी आदाब हैं जिन से इस्लामी मुआशरा मुम्ताज़ होता है।

"عن عمروبن شعيب عن ابيه عن جده رضى الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: مروا اولادكم بالصلاة وهم ابناء سبع واضربوهم عليها، وهم ابناء عشر، وفرقوا بينهم فى المضاجع" (جامع الاصول)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अपनी औलाद को नमाज़ का हुक्म दो जब वे सात साल के हो जायें, यानी सात साल के बच्चे को नमाज़ पढ़ने की ताकीद करना शुरू करो, अगरचे उसके ज़िम्मे नमाज़ फ़र्ज़ नहीं हुयी, लेकिन उसको आदी बनाने के लिये सात साल की उमर से ताकीद करना शुरू कर दो, और जब दस साल की उमर हो जाये, और फिर भी नमाज़ न पढ़े तो उसको नमाज़ न पढ़ने पर मारो, और दस साल की उमर में बच्चों के बिस्तर अलग अलग कर दो, एक बिस्तर में दो बच्चों को न सुलाओ।

सात साल से पहले तालीम

इस हदीस में पहला हुक्म यह दिया कि सात साल की उमर से नमाज़ की ताकीद शुरू कर दो, इससे मालूम हुआ कि सात साल से पहले उसको किसी चीज़ का मुकल्लफ़ करना मुनासिब नहीं। हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि इस हदीस से यह बात मालूम होती है कि जब तक

बच्चे की उमर सात साल तक न पहुंच जाये, उस पर कोई बोझ न डालना चाहिये, जैसे कि बाज़ लोग सात साल से पहले रोज़े रखवाने की फ़िक्र शुरू कर देते हैं, हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि इसके बहुत मुख़ालिफ़ थे, हज़रत फ़रमाया करते थे कि अल्लाह मियां तो सात साल से पहले नमाज़ पढ़ाने को नहीं कह रहे हैं, मगर तुम सात साल से पहले उसको रोज़े रखवाने की फ़िक्र में हो, यह ठीक नहीं। इसी तरह सात साल से पहले नमाज़ की ताकीद की कोशिश भी दुरुस्त नहीं। इसी लिये कहा गया है कि सात साल से कम उमर के बच्चे को मस्जिद में लाना ठीक नहीं। लेकिन कभी कभार उसको इस शर्त के साथ मस्जिद में ला सकते हैं कि वह मस्जिद को गन्दगी वग़ैरह से गन्दा नहीं करेगा। ताकि वह थोड़ा थोड़ा मानूस हो जाये। लेकिन सात साल से पहले उस पर बाक़ायदा बोझ डालना दुरुस्त नहीं।

घर की तालीम दे दो

बल्कि हमारे बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि सात साल से पहले तालीम का बोझ डालना भी मुनासिब नहीं। सात साल से पहले खेल कूद के अन्दर उसको पढ़ा दो, लेकिन बाक़ायदा उस पर तालीम का बोझ डालना और बाक़ायदा उसको तालिबे इल्म बना देना ठीक नहीं। आज कल हमारे यहां यह वबा है कि बच्चा तीन साल का हुआ तो उसको पढ़ाने की फ़िक्र शुरू हो गयी, यह ग़लत है। सही तरीक़ा यह है कि जब वह तीन साल का हो जाये तो उसको घर की तालीम दे दो। उसको अल्लाह व रसूल का कलिमा सिखा दो, उसको कुछ दीन की बातें समझा दो, और यह काम घर में रख कर जितना कर सकते हो, कर लो। उसको मुकल्लफ़ करके बाक़ायदा नर्सरी में भेजना और नियमित तालिब इल्म बना देना दुरुस्त नहीं।

क़ारी फ़तह मुहम्मद सहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

हमारे बुज़ुर्ग हज़रत मौलाना क़ारी फ़तह मुहम्मद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि, अल्लाह तआ़ला उनके दरजात बुलन्द फ़रमाये,

आमीन। कुरआने करीम का ज़िन्दा मोजिज़ा थे, जिन लोगों ने उनकी ज़ियारत की है उनको मालूम होगा कि सारी ज़िन्दगी कुरआने करीम के अन्दर गुज़ारी, और हदीस में जो यह दुआ आती है कि या अल्लाह! कुरआने करीम को मेरी रग में शामिल कर दीजिये। मेरे ख़ून में शामिल कर दीजिये, मेरे जिस्म में जमा दीजिये, मेरी रूह में जमा दीजिये। ऐसा मालुम होता है कि हदीस की यह दुआ उनके हक़ में पूरी तरह कुबूल हो गयी कि कुरआने करीम उनके रग व पै में शामिल था।

क़ारी साहिब कुरआन की तालीम के मामले में बड़े सख़्त थे, जब कोई बच्चा उनके पास आता तो उसको बहुत एह्तिमाम के साथ पढ़ाते थे, और उसको पढ़ने की बहुत ताकीद करते थे, लेकिन साथ साथ यह भी फ़रमाते थे कि जब तक बच्चे की उमर सात साल न हो जाये, उस वक़्त तक उस पर तालीम का बाक़ायदा बोझ डालना दुरुस्त नहीं, इसलिये कि इससे उसकी बढ़ोतरी और फूलना फलना रुक जाता है, और इसी ऊपर ज़िक्र हुई हदीस से इस्तिदलाल फ़रमाते थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बच्चों को नमाज़ का हुक्म देने के लिये सात साल उमर की क़ैद लगायी है।

जब बच्चा सात साल का हो जाये तो फिर रफ़्ता रफ़्ता उस पर तालीम का बोझ डाला जाये। यहां तक कि जब बच्चा दस साल का हो जाये तो उस वक़्त आपने न सिर्फ़ तादीबन (अदब सिखाने और सज़ा देने के लिये) मारने की इजाज़त दी बल्कि मारने का हुक्म दिया, कि अब अगर वह नमाज़ न पढ़े तो उसको मारो।

बच्चों को मारने की हद

यह बात भी समझ लेनी चाहिये कि उस्ताद के लिये या मां बाप के लिये बच्चे को इस हद तक मारना जायज़ है जिस से बच्चे के जिस्म पर मार का निशान न पड़े। आज कल यह जो बेहिसाब मारने की रीत है यह किसी तरह भी जायज़ नहीं। जैसा कि हमारे यहां कुरआने करीम के मक्तबों में मार पिटाई का रिवाज है। और कभी कभी उस मार पिटाई में ख़ून निकल आता है, ज़ख़्म हो जाता है, या निशान पड़

जाता है, यह अ़मल इतना बड़ा गुनाह है कि हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि मुझे समझ में नहीं आता कि इस गुनाह की माफ़ी की क्या शक्ल होगी? इसलिये कि इस गुनाह की माफ़ी किस से मांगे? अगर उस बच्चे से माफ़ी मांगे तो वह ना–बालिग़ बच्चा माफ़ करने का अह्ल नहीं है, इसलिये कि अगर ना–बालिग़ बच्चा माफ़ भी कर दे तो भी शर्अ़न उसकी माफ़ी का एतिबार नहीं, इसलिये हज़रते वाला फ़रमाया करते थे कि उसकी माफ़ी का कोई रास्ता समझ में नहीं आता, इतना ख़तरनाक गुनाह है। इसलिये उस्ताद और मां बाप को चाहिये कि वे बच्चे को इस तरह न मारें कि उससे ज़ख़्म हो जाये या निशान पड़ जाये, लेकिन ज़रूरत के तहत जहां मारना लाज़मी हो जाये, सिर्फ़ उस वक़्त मारने की इजाज़त दी गयी है।

बच्चों को मारने का तरीक़ा

इसलिये हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने एक अ़जीब नुस्ख़ा बताया है, और ऐसा नुस्ख़ा वही बता सकते थे, याद रखने का है। फ़रमाते थे कि जब कभी औलाद को मारने की ज़रूरत महसूस हो, या उस पर गुस्सा करने की ज़रूरत महसूस हो तो जिस वक़्त गुस्सा आ रहा हो उस वक़्त न मारो, बल्कि गुस्सा ठन्डा हो जाये तो उस वक़्त बनावटी गुस्सा पैदा करके मार लो, इसलिये कि जिस वक़्त तबई गुस्से के वक़्त अगर मारोगे या गुस्सा करोगे तो फिर हद पर क़ायम नहीं रहोगे, बल्कि हद से बढ़ जाओगे, और चूंकि ज़रूरत से मारना है, इसलिये बनावटी गुस्सा पैदा करके मार लो, ताकि असल मक़्सद भी हासिल हो जाये, और हद से गुज़रना भी न पड़े।

और फ़रमाया करते थे कि मैंने सारी उमर इस पर अ़मल किया कि तबई गुस्से के वक़्त न किसी को मारा और न डांटा, फिर जब गुस्स ठन्डा हो जाता तो उसको बुला कर बनावटी क़िस्म का गुस्सा पैदा करके वह मक़्सद हासिल कर लेता। ताकि हदों से बढ़ना न हो

जाये। क्योंकि ग़ुस्सा एक ऐसी चीज़ है कि इसमें इन्सान अक्सर व बेश्तर हद पर क़ायम नहीं रहता।

बच्चों को तरबियत देने का तरीक़ा

इसी लिये हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि एक उसूल बयान फ़रमाया करते थे। जो अगरचे कुल्ली उसूल तो नहीं है, इसलिये कि हालात अलग भी हो सकते हैं, लेकिन अक्सर व बेश्तर इस उसूल पर अ़मल किया जा सकता है कि जिस वक़्त कोई शख़्स ग़लत काम कर रहा हो, ठीक उस वक़्त में उसको सज़ा देना मुनासिब नहीं होता, बल्कि वक़्त पर टोकने से कभी कभी नुक़्सान होता है, इसलिये बाद में उसको समझा दो, या सज़ा देनी हो तो सज़ा दे दो। दूसरे यह कि हर हर काम पर बार बार टोकते रहना ठीक नहीं होता। बल्कि एक मर्तबा बिठा कर समझा दो कि फ़लां वक़्त तुमने यह ग़लत काम किया, फ़लां वक़्त यह ग़लत काम किया और फिर एक मर्तबा जो सज़ा देनी है दे दो। वाक़िआ़ यह है कि ग़ुस्सा हर इन्सान की फ़ित्रत में दाख़िल है, और यह ऐसा जज़्बा है कि जब एक मर्तबा शुरू हो जाये तो कभी कभी इन्सान इसमें बेक़ाबू हो जाता है और फिर हदों पर क़ायम रहना मुम्किन नहीं रहता, इसलिये इसका बेह्तरीन इलाज वही है, जो हमारे हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने तज्वीज़ फ़रमाया। बहर हाल! इससे मालूम हुआ कि अगर ज़रूरत मह्सूस हो तो कभी कभी मारना चाहिये, आज कल इसमें कमी ज़्यादती है। अगर मारेंगे तो हद से गुज़र जायेंगे, या फिर बिल्कुल मारना छोड़ दिया है, और यह समझते हैं कि बच्चे को कभी नहीं मारना चाहिये, ये दोनों बातें ग़लत हैं वह ज़्यादती है, और यह कमी है, एतिदाल (दरमियान) का अकेला रास्ता वह है जो नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बयान फ़रमा दिया।

तुम में से हर शख़्स निगरां है

आख़िर में वही हदीस लाये हैं जो पीछे कई मर्तबा आ चुकी है।

"وعن ابن عمر رضی اللّٰہ عنہما قال: سمعت رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ

وسلم يقول: كلكم راع و كلكم مسئول عن رعيته، الامام راع ومسئول عن رعيته، والرجل راع فى اهله ومسئول عن رعيته، والمرأة راعيةفى بيت زوجها ومسئولة عن رعيتها، والخادم راع في مال سيده ومسئول عن رعيته، فكلكم راع ومسئول عن رعيته" (جامع الاصول)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवयात है, फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना फ़रमाते हैं कि तुम में से हर शख़्स राई है, निगहबान है, ज़िम्मेदार है, और हर शख़्स से क़ियामत के दिन उसकी ज़िम्मेदारी और निगहबानी के बारे में सवाल होगा। इमाम यानी हाकिम ज़िम्मेदार है, और उससे उसकी रिअ़य्यत के बारे में आख़िरत में सवाल होगा कि तुमने उनके साथ कैसा बर्ताव किया? उनकी कैसी तरबियत की? और उनके हुक़ूक़ का कितना ख़्याल रखा? और मर्द अपने घर वालों का, बीवी बच्चों का निगरां और निगहबान है, क़ियामत के दिन उससे सवाल होगा कि बीवी बच्चे जो तुम्हारे सुपुर्द किये गये थे उनकी कैसी तरबियत की, उनके हुक़ूक़ किस तरह अदा किये? औरत अपने शौहर के घर की निगहबान है, जो चीज़ उसकी निगहबानी में दी गयी है उसके बारे में उससे क़ियामत के दिन सवाल होगा कि तुमने उसकी किस तरह निगहबानी की? और नौकर अपने आक़ा के माल में निगहबान है, यानी अगर आक़ा ने पैसे दिये हैं तो वे पैसे उसके लिये अमानत है वह उसका ज़िम्मेदार है, और आख़िरत के दिन उससे उसके बारे में सवाल होगा कि तुमने उस अमानत का हक़ किस तरह अदा किया?

इसलिये तुम में से हर शख़्स किसी न किसी हैसियत से राअ़ी है और जिस चीज़ की निगहबानी उसके सुपुर्द की गयी है, क़ियामत के दिन उससे उसके बारे में सवाल होगा।

अपने मातहतों की फ़िक्र करें

इस हदीस को आख़िर में लाने की मन्शा यह है कि बात सिर्फ़ बाप और औलाद की हद तक महदूद नहीं, बल्कि ज़िन्दगी के जितने

शोबे हैं, उन सब में इन्सान के मातहत कुछ लोग होते हैं, जैसे घर के अन्दर उसके मातहत बीवी बच्चे हैं, दफ़्तर में उसके मातहत कुछ अफ़राद काम करते होंगे, अगर कोई दुकानदार है, तो उस दुकान में उसके मातहत कोई आदमी काम करता होगा, अगर किसी शख़्स ने फ़ैक्ट्री लगायी है, तो उस फ़ैक्ट्री में उसके मातहत कुछ स्टाफ़ काम करता होगा, ये सब उसके मातहत और ताबे हैं इसलिये इन सब को दीन की बात पहुंचाना और उनको दीन की तरफ़ लाने की कोशिश करना इन्सान के ज़िम्मे ज़रूरी है। यह न समझे कि मैं अपनी ज़ात या अपने घर की हद तक ज़िम्मेदार हूं, बल्कि जो लोग तुम्हारे हाथ के नीचे और मातहत हैं, उनको जब तुम दीन की बात बताओगे तो तुम्हारी बात का बहुत ज़्यादा असर होगा, और उस असर को वे लोग कुबूल करेंगे। और अगर तुमने उनको दीन की बात नहीं बताई तो इसमें तुम्हारा कुसूर है। और अगर वे दीन पर अ़मल नहीं कर रहे हैं तो इसमें तुम्हारा कुसूर है कि तुमने उनको दीन की तरफ़ मुतवज्जह नहीं किया। इसलिये जहां कहीं जिस शख़्स के मातहत कुछ लोग काम करने वाले मौजूद हैं उन तक दीन की बातें पहुंचाने की फ़िक्र करें।

सिर्फ़ दस मिनट निकाल लें

इसमें शक नहीं कि आज कल ज़िन्दगियां मस्रूफ़ हो गयी हैं, वक़्त महदूद हो गये हैं, लेकिन हर शख़्स इतना तो कर सकता है कि चौबीस घन्टे में से पांच दस मिनट रोज़ाना इस काम के लिये निकाल ले कि अपने मातहतों को दीन की बात सुनायेगा। जैसे कोई किताब पढ़ कर सुना दे, कोई वाज़ (तक़रीर) पढ़ कर सुना दे, एक हदीस का तर्जुमा सुना दे, जिसके ज़रिये दीन की बात उनके कान में पड़ती रहे। यह काम तो हर शख़्स कर सकता है, अगर हर शख़्स इस काम की पाबन्दी कर ले तो इन्शा-अल्लाह इस हदीस पर अ़मल करने की सआ़दत हासिल हो जायेगी। अल्लाह तआ़ला मुझे भी और आप सब को भी इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

मां बाप की ख़िदमत

जन्नत का ज़रिया

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا۔ اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔

"وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّ بِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ، وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ، وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ" (النسآء: ٣٦)

آمنت باللّٰه صدق اللّٰه مولانا العظيم، وصدق رسوله النبى الكريم، ونحن على ذلك من الشاهدين والشاكرين والحمد للّٰه رب العالمين.

बन्दों के हुक़ूक़ का बयान

अ़ल्लामा नववी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने एक नया बाब क़ायम फ़रमाया है, जो मां बाप के साथ हुस्ने सुलूक और सिला रहमी के बयान में है। जैसा कि मैंने पहले अ़र्ज़ किया था कि ये अबवाब जो इस किताब "रियाज़ुस् सालिहीन" में चल रहे हैं, इनका ताल्लुक़ बन्दों के हुक़ूक़ से है। बाज़ बन्दों के हुक़ूक़ का बयान गुज़र चुका है, उन हुक़ूक़ के बारे में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इरशादात आप सुन चुके हैं, इस नये बाब में मां बाप के साथ अच्छे सुलूक और रिश्तेदारों के हुक़ूक़ की अदायगी के बारे में आयतें और हदीसें लाये हैं, सब से पहली हदीस यह है कि:

अफ़्ज़ल अ़मल कौन सा?

"عن ابی عبد الرحمٰن عبد اللّٰہ بن مسعود رضی اللّٰہ عنہ، قال سئلت النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم: ای العمل احب الی اللّٰہ؟ قال: الصلاۃ علیٰ وقتہا،قلت: ثم ای؟ قال: بر الوالدین، قلت: ثم ای؟ قال: الجہاد فی سبیل اللّٰہ"

(صحیح بخاری شریف)

"हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि मैंने नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा कि अल्लाह तआ़ला को सब से ज़्यादा महबूब अ़मल कौन सा है? आपने फ़रमाया कि सब से ज़्यादा महबूब अ़मल यह है कि नमाज़ अपने वक़्त पर अदा की जाये, मैंने फिर पूछा कि नमाज़ के बाद सब से ज़्यादा महबूब अ़मल कौन सा है? आपने जवाब में फ़रमाया कि मां बाप के साथ अच्छा सुलूक, मैंने पूछा कि मां बाप के साथ अच्छे सुलूक के बाद तीसरे नम्बर पर महबूब अ़मल कौन सा है? तो आपने जवाब में फ़रमाया कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना"।

इस हदीस में तरतीब इस तरह बयान की गयी है कि सब से अफ़्ज़ल और पसन्दीदा अ़मल वक़्त पर नमाज़ पढ़ने को क़रार दिया गया, दूसरे नम्बर पर मां बाप के साथ अच्छे सुलूक को और तीसरे नम्बर पर अल्लाह के रास्ते में जिहाद को।

नेक कामों की हिर्स

यहां दो बातें समझने की हैं, एक यह कि अगर हदीसों का जायज़ा लिया जाये तो यह नज़र आता है कि बहुत से सहाबा-ए-किराम ने मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से यह पूछा कि सब से अफ़्ज़ल अ़मल कौन सा है? इससे सहाबा-ए-किराम की यह फ़िक्र और यह हिर्स ज़ाहिर होती है कि वे यह चाहते हैं कि जो अ़मल अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सब से ज़्यादा महबूब और अफ़्ज़ल हो उसको अन्जाम देने की कोशिश की जाये, और वह अ़मल हमारी ज़िन्दगियों में आ जाये, इसलिये कि हर वक़्त दिल व दिमाग़ पर आख़िरत की फ़िक्र तारी थी, वे तो यह चाहते थे कि आख़िरत में किसी

तरह अल्लाह तआला का नज़दीकी और उसकी रिज़ा हासिल हो जाये, इसलिये हर वक़्त यह मालूम करने की फ़िक्र में रहते थे कि किस अ़मल में क्या अज्र व सवाब है, और वह हमें हासिल हो जाये।

आज हम लोग फ़ज़ाइल की हदीसों में पढ़ते रहते हैं कि फ़लां अ़मल में यह फ़ज़ीलत है, फ़लां अ़मल में यह फ़ज़ीलत है, पढ़ते भी हैं, सुनते भी हैं। लेकिन उसके बाद जैसा कि उसका हक़ है ऐसा अ़मल का जज़्बा पैदा नहीं होता। हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का हाल यह था कि छोटे से छोटा अ़मल जिसके बारे में यह मालूम हो जाये कि यह सवाब का काम है बस उसकी तरफ़ दौड़ते थे।

अफ़्सोस! मैंने तो बहुत से "क़ीरात" ज़ाया कर दिये

एक मर्तबा हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सामने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यह हदीस सुनाई कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की नमाज़े जनाज़ा में शरीक हो, तो उसको एक क़ीरात अज्र मिलेगा। "क़ीरात" उस ज़माने में एक पैमाना था, जिसके ज़रिये सोने चांदी का वज़न किया जाता था। और जो शख़्स नमाज़े जनाज़ा के बाद उसके पीछे चले उसको दो क़ीरात मिलेंगे, और जो शख़्स उसकी तद्फ़ीन में भी शामिल हो उसको तीन क़ीरात अज्र मिलेंगे। वैसे तो "क़ीरात" एक छोटा सा पैमाना है, लेकिन एक दूसरी हदीस में आता है कि जन्नत का "क़ीरात" उहद पहाड़ से भी बड़ा है।

जब यह हदीस हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सुनाई तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़ौरन अफ़्सोस का इज़्हार करते हुए फ़रमाया कि मैंने यह हदीस पहले नहीं सुनी, जिसकी वजह से हमने बहुत से क़ीरात ज़ाया कर दिये। मक़्सद यह था कि मुझे यह मालूम नहीं था कि नमाज़े जनाज़ा के पीछे चलने और तद्फ़ीन में शिर्कत की ऐसी फ़ज़ीलत है, अगर पहले से मुझे मालूम होता तो मैं इसका एहतिमाम करता, और एहतिमाम न करने की वजह से मेरे बहुत से "क़ीरात" ज़ाया हो गये। हालांकि हज़रत अ़ब्दुल्लाह

बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वह सहाबी हैं जिनका मश्ग़ला ही नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों पर अमल और आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना था, जिनके नामा–ए–आमाल में नेकियों का ज़ख़ीरा मौजूद है, लेकिन उसके बावजूद जब एक नया अमल मालूम हुआ तो इस पर अफ़्सोस हो रहा है कि मैंने क्यों अब तक यह अमल इख़्तियार नहीं किया था। तमाम सहाबा–ए–किराम का यही हाल नज़र आता है कि हर वक़्त इसी फ़िक्र में हैं कि ज़रा सी कोई नेकी करने का मौक़ा मिल जाये जिस से अल्लाह तआला के यहां अज्र व सवाब में इज़ाफ़ा हो और अल्लाह तआला की रिज़ा हासिल हो।

सवाल एक, जवाब मुख़्तलिफ़

इसीलिये बार बार सहाबा–ए–किराम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछते थे कि या रसूलल्लाह! सब से अफ़्ज़ल अमल कौन सा है? रिवायात में यह नज़र आता है कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ सहाबा–ए–किराम को मुख़्तलिफ़ जवाब दिये। जैसे इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया कि सब से अफ़्ज़ल अमल वक़्त पर नमाज़ पढ़ना है, एक हदीस पीछे गुज़र चुकी है कि एक सहाबी के इस सवाल के जवाब में आपने इरशाद फ़रमाया कि सब से अफ़्ज़ल अमल यह है कि तुम्हारी ज़बान अल्लाह के ज़िक्र से तर रहे, यानी हर वक़्त तुम्हारी ज़बान पर अल्लाह का ज़िक्र जारी हो, चलते फिरते, उठते बैठते, हर हालत में तुम्हारी ज़बान अल्लाह के ज़िक्र से तर रहे, यह अमल अल्लाह तआला को सब से ज़्यादा महबूब है। एक रिवायत में आता है कि एक सहाबी ने यह सवाल किया कि या रसूलल्लाह! सब से अफ़्ज़ल अमल कौन सा है? आपने फ़रमाया कि सब से अफ़्ज़ल अमल मां बाप की इताअत और उनके साथ अच्छा सुलूक है, किसी सहाबी ने पूछा कि या रसूलल्लाह! सब से अफ़्ज़ल अमल कौन सा है? आपने जवाब दिया कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना सब से अफ़्ज़ल अमल है। ग़र्ज़ यह कि

मुख़्तलिफ़ सहाबा–ए–किराम को आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ जवाबात अ़ता फ़रमाये, बज़ाहिर अगरचे इन जवाबों में तज़ाद (इख़्तिलाफ़) नज़र आता है लेकिन हक़ीक़त में इख़्तिलाफ़ नहीं।

हर शख़्स का अफ़ज़ल अ़मल अलग है

बात असल में यह है कि हर आदमी के हालात के लिहाज़ से अफ़ज़ल अ़मल बदलता रहता है, किसी शख़्स के लिये नमाज़ पढ़ना सब से अफ़ज़ल अ़मल है, किसी शख़्स के लिये मां बाप की इताअ़त सब से अफ़ज़ल अ़मल है, हालात के लिहाज़ से और आदमियों के लिहाज़ से फ़र्क़ पड़ जाता है। जैसे बाज़ सहाबा–ए–किराम के बारे में आपको पहले से मालूम था कि नमाज़ की तो वैसे भी पाबन्दी करते हैं, उनके सामने नमाज़ की ज़्यादा फ़ज़ीलत बयान करने की ज़रूरत नहीं, लेकिन मां बाप के हुक़ूक़ में कोताही हो रही है, तो अब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया कि तुम्हारे हक़ में सब से अफ़ज़ल अ़मल मां बाप की इताअ़त है, किसी सहाबी का इबादत की तरफ़ तो ज़्यादा ध्यान था, मगर जिहाद की तरफ़ इतनी रग़बत नहीं थी, उनके हक़ में फ़रमाया कि तुम्हारे लिये सब से अफ़ज़ल अ़मल अल्लाह के रास्ते में जिहाद है, किसी सहाबी को आपने देखा कि वह इबादत भी कर रहे हैं, जिहाद भी कर रहे हैं, लेकिन अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ तवज्जोह नहीं है, उनको फ़रमाया कि तुम्हारे हक़ में सब से अफ़ज़ल अ़मल अल्लाह का ज़िक्र है। इसलिये मुख़्तलिफ़ सहाबा–ए–किराम को उनके हालात के लिहाज़ से आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ जवाब दिये। लेकिन ये सब फ़ज़ीलत वाले आमाल हैं, यानी वक़्त पर नमाज़ पढ़ना, मां बाप की इताअ़त करना, अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना, हर वक़्त अल्लाह का ज़िक्र करना वग़ैरह, लेकिन लोगों के हालात के लिहाज़ से फ़ज़ीलत बदलती रहती है।

नमाज़ की अफ़ज़लियत

इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अफ़ज़ल आमाल की तरतीब यह बयान फ़रमाई है कि सब से अफ़ज़ल अमल वक़्त पर नमाज़ पढ़ना, सिर्फ़ पढ़ना नहीं बल्कि वक़्त का लिहाज़ करके नमाज़ पढ़ना, कभी कभी इन्सान वक़्त का ध्यान नहीं करता, और वक़्त गुज़ार देता है, और यह सोचता है कि नमाज़ क़ज़ा हो गयी तो होने दो, यह इन्सान के लिये किसी तरह भी मुनासिब नहीं, बल्कि वक़्त के अंदर नमाज़ अदा करने की फ़िक्र करे, कुरआन करीम की आयत है:

"فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ" (الماعون:٤)

यानी उन नमाज़ियों पर अफ़्सोस है जो अपनी नमाज़ की तरफ़ से ग़फ़्लत में हैं। नमाज़ का वक़्त आया और चला गया। नमाज़ अदा करने की तरफ़ ध्यान नहीं दिया, यहां तक कि नमाज़ क़ज़ा हो गयी। एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

"الذی تفوته صلاة العصر کانما وترا هله وماله"

यानी जिस शख़्स की असर की नमाज़ फ़ौत हो गयी वक़्त गुज़र गया और नमाज़ नहीं पढ़ी, वह ऐसा है जैसा उसके घर वाले लुट गये और सारा माल लुट गया, जिस तरह वह शख़्स तंगदस्त और बद हाल है इसी तरह वह शख़्स भी बद हाल है जिसकी एक असर की नमाज़ क़ज़ा हो गयी हो, इसलिये नमाज़ का क़ज़ा करना बड़ी संगीन बात है, और इस पर बड़ी सख़्त वईदें आई हैं, इसलिये नमाज़ का भी ध्यान होना चाहिये, और नमाज़ के वक़्त का भी ध्यान होना चाहिये।

जिहाद की अफ़ज़लियत

इस हदीस में दूसरे नम्बर पर अफ़ज़ल अमल "मां बाप के साथ अच्छे सुलूक" को क़रार दिया, और तीसरे नम्बर पर अल्लाह के रास्ते में जिहाद, गोया कि मां बाप की इताअत और उनके साथ अच्छे सुलूक को जिहाद जैसी इबादत पर फ़ौक़ियत अता फ़रमाई है, हालांकि आप जानते हैं कि जिहाद इतनी बड़ी इबादत है, और उसके इतने फ़ज़ाइल

हैं कि हदीस में आता है कि जो शख़्स अल्लाह के रास्ते में जिहाद करे और उस जिहाद में शहीद हो जाये तो अल्लाह तआला उसको दुनिया से इस तरह गुनाहों से पाक साफ़ करके ले जाते हैं जिस तरह कि आज मां के पेट से पैदा हुआ है। (बुख़ारी शरीफ़)

एक हदीस में है कि जब एक इन्सान मरने के बाद अल्लाह तआला के मक़ामाते क़ुर्ब का मुशाहदा करेगा, और जन्नत का मुशाहदा करेगा तो उसके दिल में कभी दुनिया में वापस आने की ख़्वाहिश पैदा नहीं होगी, कि दुनिया में वापस जाऊं, इसलिये कि दुनिया की हक़ीक़त खुल कर उसके सामने आ जायेगी, कि यह दुनिया उस जन्नत के मुक़ाबले में कितनी बे–हक़ीक़त, कितनी ना पायदार और कितनी गन्दी चीज़ थी, जो जन्नत उसको मिल गयी है। लेकिन वह शख़्स जो जिहाद करते हुए अल्लाह के रास्ते में शहीद हो चुका हो, वह तमन्ना करेगा कि काश मुझे दोबारा दुनिया में भेज दिया जाये, और वहां जाकर दोबारा जिहाद करूं, और फिर अल्लाह के रास्ते में शहीद हो जाऊं।

इसी लिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरे दिल की ख़्वाहिश यह है कि मैं अल्लाह के रास्ते में जिहाद करूं, और शहीद हो जाऊं, फिर मुझे ज़िन्दा किया जाये, फिर शहीद हो जाऊं, फिर ज़िन्दा किया जाये, फिर शहीद हो जाऊं। तो जन्नत में जाने के बाद कोई अल्लाह का बन्दा दुनिया में वापस आने की ख़्वाहिश नहीं करेगा सिवाये शहीद के कि वह इस बात की ख़्वाहिश करेगा, जिहाद की इतनी बड़ी फ़ज़ीलत है। (बुख़ारी शरीफ़)

मां बाप का हक़

लेकिन मां बाप की इताअ़त और उनके साथ अच्छे सुलूक को जिहाद पर भी मुक़द्दम रखा है, इसलिये बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जितने बन्दों के हुक़ूक़ है, उनमें सब से मुक़द्दम हक़ मां बाप का है, इससे ज़्यादा एहतिराम के लायक़ हक़ दुनिया में किसी और का नहीं है, क्योंकि अल्लाह तआला ने उनके साथ अच्छे सुलूक का इतना अज्र

रखा है कि हदीस शरीफ़ में आता है कि अगर कोई शख़्स एक मर्तबा अपने मां बाप को मुहब्बत की निगाह से देखे तो उसके बदले में अल्लाह तआ़ला उसको एक हज और उमरे के बराबर सवाब अ़ता फ़रमाते हैं।

बे ग़र्ज़ मुहब्बत

याद रखिये! इस दुनिया में जितनी मुहब्बतें और ताल्लुक़ात हैं, उन तमाम मुहब्बतों और ताल्लुक़ात में इन्सान की कोई न कोई ग़र्ज़ ज़रूर जुड़ी हुई है, इस दुनिया में बे ग़र्ज़ मुहब्बत नहीं मिलेगी, सिवाये मां बाप की मुहब्बत के, यानी मां बाप की अपनी औलाद के साथ जो मुहब्बत होती है वह बे ग़र्ज़ होती है, उस मुहब्बत में अपना कोई मफ़ाद और कोई ग़र्ज़ शामिल नहीं, इसके अ़लावा कोई मुहब्बत बे ग़र्ज़ नहीं, जैसे शौहर बीवी से मुहब्बत करे तो उसमें ग़र्ज़ शामिल है, बीवी शौहर से मुहब्बत करे उसमें ग़र्ज़ है, भाई भाई से मुहब्बत करे, या एक दोस्त दूसरे दोस्त से मुहब्बत करे, ग़र्ज़ यह कि जितने ताल्लुक़ात हैं सब के अन्दर ग़र्ज़ शामिल है, इन सब में कोई न कोई ग़र्ज़ मौजूद होती है, लेकिन एक मुहब्बत ग़र्ज़ से पाक है, वह मां बाप की मुहब्बत है, यानी मां बाप अपनी औलाद से जो मुहब्बत करते हैं उसमें उनकी ज़ात की कोई ग़र्ज़ शामिल नहीं होती, उनका जज़्बा तो होता है कि अपनी जान भी चली जाये लेकिन औलाद को फ़ायदा पहुंच जाये, इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने हुक़ूक़ में उनका दर्जा सब से ज़्यादा रखा, और अल्लाह के रास्ते में जिहाद पर भी इसको मुक़द्दम फ़रमाया।

मां बाप की ख़िदमत

हदीस शरीफ़ में आता है कि एक सहाबी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, और आकर अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरा दिल चाहता है कि मैं अल्लाह के रास्ते में जिहाद करूं, और जिहाद से मेरा मक़्सद सिर्फ़ यह है कि अल्लाह तआ़ला मुझ से राज़ी हो जायें, और उस पर मुझे अज्र व सवाब अ़ता फ़रमायें, सिर्फ़ इसी ग़र्ज़ के लिये जिहाद में जाना चाहता हूं। हुज़ूरे

अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क्या तुम वाक़ई सवाब हासिल करना चाहते हो? उन्हों ने जवाब दिया, हां! या रसूलल्लाह, मैं सिर्फ़ सवाब हासिल करना चाहता हूं, आपने फ़रमाया कि क्या तुम्हारे मां बाप ज़िन्दा हैं? उन्हों ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरे मां बाप ज़िन्दा हैं, आपने फ़रमाया कि जाओ और जाकर उनकी ख़िदमत करो, इसलिये कि अगर तुम्हें अज्र हासिल करना है तो फिर मां बाप की ख़िदमत करके तुम्हें जो अज्र हासिल होगा वह अज्र जिहाद से भी हासिल नहीं होगा। एक रिवायत में यह अल्फ़ाज़ हैं कि:

"ففيهما فجاهد" (بخاری شرف)

यानी जाकर उनकी ख़िदमत करके जिहाद करो, इन रिवायतों में मां बाप की ख़िदमत को जिहाद से भी ज़्यादा फ़ौक़ियत अता फ़रमाई।

अपना शौक़ पूरा करने का नाम दीन नहीं

हमारे हज़रत डा० अब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि एक बात फ़रमाया करते थे। यह बात हमेशा याद रखने की है। फ़रमाते थे कि भाई! अपना शौक़ पूरा करने का नाम दीन नहीं, बल्कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इत्तिबा का नाम दीन है, यह देखो कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल की तरफ़ से इस वक़्त क्या तक़ाज़ा है? बस! उस तक़ाज़े को पूरा करो, इसका नाम दीन है इसका नाम दीन नहीं कि मुझे फ़लां चीज़ का शौक़ हो गया है, उस शौक़ को पूरा कर रहा हूं। जैसे किसी को इस बात का शौक़ हो गया कि मैं हमेशा पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ूं, किसी को इस बात का शौक़ हो गया कि मैं जिहाद पर जाऊं, किसी को इस बात का शौक़ हो गया कि मैं तबलीग़ व दावत के काम में निकलूं, अगरचे ये सब दीन के काम हैं और बाइसे अज्र व सवाब हैं, लेकिन यह देखो कि इस वक़्त का तक़ाज़ा क्या है? जैसे घर के अन्दर मां बाप बीमार हैं और उन्हें तुम्हारी ख़िदमत की ज़रूरत है, लेकिन तुम्हें इस बात का शौक़ लगा हुआ है कि पहली सफ़ में जाकर नमाज़ पढ़ूं, और मां बाप इतने बीमार

हैं कि हर्कत करने के क़ाबिल नहीं, अब उस वक़्त में तुम्हारे लिये अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तकाज़ा यह है कि सफ़े अव्वल की नमाज़ छोड़ो और मां बाप की ख़िदमत अन्जाम दो और उनके साथ अच्छा सुलूक करो, और नमाज़ घर के अन्दर तन्हा पढ़ लो, अब अगर उस वक़्त तुमने मां बाप को इस हाल में छोड़ दिया कि वे हर्कत करने के क़ाबिल नहीं, और अपना शौक़ पूरा करने के लिये मस्जिद में चले गये और सफ़े अव्वल में जाकर शामिल हो गये तो यह दीन की इत्तिबा न हुई बल्कि अपना शौक़ पूरा करना होगा।

यह हुक्म इस सूरत में है कि जब मस्जिद कहीं दूर है, मस्जिद में आने जाने में वक़्त लगेगा, और मां बाप की हालत ऐसी है कि उनको तक्लीफ़ होगी। लेकिन अगर मस्जिद घर के बिल्कुल क़रीब है और मां बाप की हालत ऐसी है कि उनको बेटे के थोड़ी देर क़े दूर रहने से तक्लीफ़ न होगी, या कोई और ख़िदमत करने वाला मौजूद है तो इस सूरत में उसको मस्जिद में जाकर जमाअ़त ही से नमाज़ अदा करनी चाहिये।

यह दीन नहीं है

हमारे हज़रत मौलाना मसीहुल्लाह ख़ां साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने इसकी एक मिसाल दी, फ़रमाया कि फ़र्ज़ किरें कि एक वीराने जंगल में एक शख़्स और सिर्फ़ उसकी बीवी है। और कोई शख़्स क़रीब में मौजूद नहीं, इस हालत में नमाज़ का वक़्त हो गया और मस्जिद आबादी के अन्दर फ़ासले पर है, अब यह शख़्स अपनी बीवी से कहता है कि चूंकि नमाज़ का वक़्त हो गया है इसलिये मैं तो मस्जिद में जाकर जमाअ़त से नमाज़ अदा करूंगा, उसकी बीवी कहती है कि इस वीराने जंगल के अन्दर मैं तन्हा हूं, कोई पास नहीं, अब अगर तुम नमाज़ के लिये दूर आबादी में चले गये तो इस वीराने में ख़ौफ़ की वजह से मेरी जान निकल जायेगी। लेकिन शौहर कहता है कि जमाअ़त से पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने की बड़ी फ़ज़ीलत है, मैं तो पहली सफ़ में जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करूंगा। और इस

फ़ज़ीलत को मैं हासिल करूंगा, चाहे कुछ हो जाये। हज़रत ने फ़रमाया कि यह दीन न हुआ, यह तो सफ़े अव्वल में नमाज़ पढ़ने का शौक़ हो गया, उस शौक़ को पूरा कर रहा है, इसलिये कि उस वक़्त दीन का तक़ाज़ा यह है कि जमाअ़त की नमाज़ छोड़ दो, और वहीं तन्हा नमाज़ पढ़ो, अगर ऐसा नहीं करोगे तो फिर अपना शौक़ पूरा करना हो जायेगा। और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इताअ़त न होगी।

या जैसे घर में मां बाप बीमार हैं, बीवी बच्चे बीमार हैं, और उनको आपकी ख़िदमत की ज़रूरत है, लेकिन आपको तब्लीग़ में जाने का शौक़ हो गया, और आपने कहा कि मैं तब्लीग़ में जाता हूं, देखिये वैसे तब्लीग़ में जाना बड़ा सवाब का काम है, लेकिन इस हालत में जब कि मां बाप या बीवी बच्चों को तुम्हारी ख़िदमत की ज़रूरत है और तुम्हारी ख़िदमत के बग़ैर उनका काम नहीं चलेगा, तो इस हालत में यह अपना शौक़ पूरा करना होगा, यह दीन का तक़ाज़ा न होगा, और दीन अपना शौक़ पूरा करने का नाम नहीं, बल्कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हुक्म मानने का नाम दीन है, जिस वक़्त जिस काम का तक़ाज़ा है, उस वक़्त उसको अन्जाम दो।

आपने इस हदीस में देखा कि एक सहाबी आये, और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैं जिहाद में जाना चाहता हूं, लेकिन आपने उनको मना फ़रमा दिया और फ़रमाया कि तुम्हारे लिये हुक्म यह है कि जाकर मां बाप की ख़िदमत करो।

हज़रत उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अ़न्हु

हज़रत उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अ़न्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में मौजूद हैं, और मुसलमान हैं, और वह चाहते भी हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपकी ज़ियारत करूं, और आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत वह सआ़दत और ख़ुश नसीबी है कि शायद इस रूए ज़मीन पर इससे बड़ी सआ़दत और ख़ुश

नसीबी कोई और नहीं होगी, और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस दुनिया से तश्रीफ़ ले जायें तो फिर आपके जाने के बाद यह शर्फ़ हासिल नहीं हो सकता, लेकिन हज़रत उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर होना चाहता हूं लेकिन मेरी वालिदा बीमार हैं, और उनको मेरी ख़िदमत की ज़रूरत है, आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको हाज़िर होने से मना फ़रमा दिया, और यह फ़रमा दिया कि तुम यहां मेरी ज़ियारत और मुलाक़ात के लिये मत आओ, बल्कि वालिदा (मां) की ख़िदमत करो। (मुस्लिम शरीफ़)

भला बताइये! कैसा भी ईमान वाला हो, उसके दिल में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत का कितना शौक़ होगा। और जब आप इस दुनिया में तश्रीफ़ रखते थे, उस वक़्त आप से मुलाक़ात और आपकी ज़ियारत के शौक़ का क्या आ़लम होगा, जब कि आज यह हालत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के उम्मती आपके रौज़ा-ए-अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत के लिये कितने बेताब और बेचैन रहते हैं, कि एक मर्तबा हाज़री हो जाये, और रौज़ा-ए-अक़्दस की ज़ियारत हो जाये, लेकिन आपकी ज़ियारत का शौक़, उसकी बेचैनी और बेताबी को मां की ख़िदमत पर क़ुरबान कर दिया, आपने हुक्म फ़रमा दिया कि मां की ख़िदमत करो, और मेरी ज़ियारत और मुलाक़ात की सआ़दत छोड़ दो। चुनांचे हज़रत उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने आपके हुक्म पर इस सआ़दत को छोड़ दिया, जिसके नतीजे में "सहाबी होने" का मक़ाम छूट गया। इसलिये कि "सहाबी बनने" का दर्जा आपकी मुलाक़ात और ज़ियारत पर मौक़ूफ़ है और "सहाबी" वह मक़ाम है कि कोई शख़्स विलायत और बुज़ुर्गी के चाहे कितने बड़े मक़ाम पर पहुंच जाये, मगर वह किसी "सहाबी" के गर्द तक नहीं पहुंच सकता।

"सहाबियत" का मक़ाम

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अ़लैहि तब्ए़ ताबिई़न

में से हैं। मश्हूर बुज़ुर्ग, फ़कीह, मुहद्दिस गुज़रे हैं। एक मर्तबा एक शख़्स ने उनसे अजीब सवाल किया, सवाल यह किया कि हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु अफ़ज़ल हैं या हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह्मतुल्लाहि अलैहि अफ़्ज़ल हैं? सवाल करने वाले शख़्स ने यह सवाल इस तरह तरतीब दिया कि सहाबा–ए–किराम में से उन सहाबी का इन्तिख़ाब किया जिनके बारे में लोगों ने तरह तरह की मुख़्तलिफ़ बातें मश्हूर कर रखी हैं, और अह्ले सुन्नत का यह अक़ीदा है कि जब हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की लड़ाई हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई तो उस लड़ाई में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हक़ पर थे, और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से इज्तिहादी ग़लती हुई थी, इस अक़ीदे पर तक़रीबन सारी उम्मत मुत्तफ़िक़ है। बहर हाल! सहाबा–ए–किराम में से तो उन सहाबी को लिया जिनकी शख़्सियत इख़्तिलाफ़ी (विवादित) रही है, और दूसरी तरफ़ सवाल में हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह्मतुल्लाहि अलैहि का इन्तिख़ाब किया जिनको अद्ल व इन्साफ़ और तक़्वे तहारत वग़ैरह में "उमरे सानी" (दूसरे उमर फ़ारूक़) कहा जाता है। और यह दूसरी सदी हिजरी के मुजद्दिद हैं, अल्लाह तआ़ला ने उनको बहुत ऊंचा मक़ाम अ़ता फ़रमाया था। बहर हाल! हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने इस सवाल के जवाब में फ़रमाया कि भाई! तुम यह पूछ रहे हो कि हज़रत मुआ़विया अफ़्ज़ल हैं या हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ अफ़्ज़ल हैं? अरे! हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु तो दरकिनार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ जिहाद करते हुए जो मिट्टी हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु की नाक में गयी थी, वह मिट्टी भी हज़ार उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ से अफ़्ज़ल है। इसलिये कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत की बदौलत अल्लाह तआ़ला ने "सहाबियत" का जो मक़ाम हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु को अ़ता फ़रमाया था, सारी ज़िन्दगी इन्सान कोशिश करता रहे, तब भी "सहाबियत" का वह मक़ाम हासिल नहीं कर सकता।

मां की ख़िदमत करते रहो

बहर हाल! हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को यह फ़रमा दिया कि हमारी ज़ियारत की ज़रूरत नहीं, और "सहाबियत" का मक़ाम हासिल करने की ज़रूरत नहीं, बल्कि मां की ख़िदमत करो। अगर हम जैसा ना वाक़िफ़ होता तो यह कहता कि यह "सहाबियत" की दौलत बाद में मिलने वाली नहीं, अगर मां बीमार है तो क्या हुआ, किसी न किसी ज़रूरत के तहत घर से बाहर निकलना होता ही है इसलिये ज़रूरत के तहत घर से चले जाओ, और जाकर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत करके वापस आ जाओ, मगर वहां तो अपना शौक़ पूरा करना मक़्सद नहीं था, अपनी ज़ाती ख़्वाहिश पूरी नहीं करनी थी, बल्कि वहां तो सिर्फ़ अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इताअ़त का शौक़ था। इसलिये आपकी ज़ियारत को छोड़ दिया और घर में मां की ख़िदमत में लगे रहे, यहां तक कि हुज़ूर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का विसाल हो गया, और हज़रत उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अ़न्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत न कर सके।

मां की ख़िदमत का सिला

फिर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को मां की ख़िदमत का यह सिला अ़ता फ़रमाया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु से फ़रमाया कि ऐ उमर! किसी ज़माने में "क़र्न" यानी यमन के इलाक़े से एक आदमी मदीना आयेगा। जिसकी ये सिफ़तें, यह हुलिया होगा, जब यह आदमी तुम्हें मिल जाये तो ऐ उमर! अपने हक़ में उनसे दुआ़ कराना, इसलिये कि अल्लाह तआ़ला उनकी दुआ़यें क़ुबूल फ़रमायेंगे।

चुनांचे रिवायात में आता है कि जब यमन से कोई क़ाफ़िला मदीना तैयबा आता तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु जाकर उनसे सवाल करते कि इस क़ाफ़िले में उवैस क़रनी नामी कोई शख़्स है? जब एक

मर्तबा क़ाफ़िला आया और आपको मालूम हो गया कि इसमें उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अन्हु तश्रीफ़ लाये हैं तो आप बहुत ख़ुश हुए, जाकर उनसे मुलाक़ात की और उनका नाम पूछा और जो हुलिया नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बताया था, वह हुलिया भी मौजूद था। तो फिर आपने उनसे दरख़्वास्त की कि आप मेरे हक़ में दुआ फ़रमायें, हज़रत उवैस क़रनी ने सवाल किया कि आप मुझसे दुआ कराने क्यों तश्रीफ़ लाये? इस पर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझे यह वसिय्यत फ़रमाई थी कि जब "क़र्न" से यह साहिब आयें तो उनसे अपने हक़ में दुआ कराना, अल्लाह तआ़ला उनकी दुआ क़ुबूल फ़रमायेंगे। जब हज़रत उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह सुना कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया था तो उनकी आंखों में आंसू आ गये, कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझे यह निस्बत अ़ता फ़रमाई।

देखिये! हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे बड़े मर्तबे वाले सहाबी से यह कहा जा रहा है कि अपने हक़ में दुआ कराओ, यह चीज़ उनको किस तरह हासिल हुयी, यह चीज़ उनको वालिदा की ख़िदमत और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इताअ़त की बदौलत हासिल हुयी। उन्हों ने यह देखा कि मेरे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझे जिस काम का हुक्म दिया है, अब मैं उस पर अ़मल करूंगा चाहे कुछ भी हो जाये। (मुस्लिम शरीफ़)

सहाबा की जांनिसारी

कौन सहाबी ऐसा था जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जांनिसार और जान फ़िदा करने वाला न हो, मैंने एक मज़्मून में एक बात लिखी थी और वह बात सही लिखी थी कि हर सहाबी का यह हाल था कि अगर कोई शख़्स अपनी जान देकर किसी दूसरे की ज़िन्दगी में इज़ाफ़ा करने के क़ाबिल होता तो तमाम सहाबा-ए-किराम सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की

ज़िन्दगी के एक सांस के ऊपर अपनी सारी जानें निछावर करने के लिये तैयार हो जाते। वे सहाबा इतने फ़िदाकार थे कि उनका तो यह हाल था कि वे किसी वक़्त यह नहीं चाहते थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जलवा-ए-अन्वर निगाहों से रूपोश हो, यहां तक कि जंग के मैदान में भी यह बात गवारा नहीं थी। हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अ़न्हु जिनको उहद की जंग में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने मुबारक हाथ से तलवार अ़ता फ़रमाई थी, चुनांचे जब दुश्मनों की तरफ़ मुक़ाबले के लिये निकले तो उस वक़्त दुश्मनों की तरफ़ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर तीरों की बौछार आ रही थी, उस वक़्त हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अ़न्हु तीरों की तरफ़ पुश्त करके और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ चेहरा करके खड़े हो गये, और सारे तीर अपनी पुश्त पर रोकने लगे, और सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बचाने के लिये सारे तीर अपनी पुश्त पर लेने लगे। सीने पर इसलिये न लिये कि अगर तीरों को अपने सीने पर सामने से रोकें तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ पुश्त होती, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जलवा-ए-अन्वर नज़रों से ओझल हो जाता। इसलिये जंग की हालत में भी यह एह्तियात है कि पुश्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ न हो, बल्कि पुश्त तीरों की तरफ़ रहे, और चेहरा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ हो।

बहर हाल! सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम जो अपना एक एक लम्हा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में गुज़ारने के लिये बेचैन थे लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन सहाबा में से किसी को शाम भेज दिया, किसी को यमन भेज दिया किसी को मिस्र भेज दिया, और यह हुक्म दिया कि वहां जाकर मेरे दीन का पैग़ाम पहुंचाओ, जब यह हुक्म आ गया तो अब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में रहने का

शौक़ कुरबान कर दिया, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म को पूरा करने को मुक़द्दम रखा, और मदीना तैयबा से रवाना हो गये।

हमारे हज़रते वाला एक अ़जीब बात बयान फ़रमाया करते थे, याद रखने के क़ाबिल है। वह यह कि दीन वक़्त के तक़ाज़े पर अ़मल करने का नाम है। यह देखो कि इस वक़्त का क्या तक़ाज़ा है? वह काम अन्जाम दो, इसलिये अगर वक़्त का तक़ाज़ा मां बाप की ख़िदमत है, फिर जिहाद भी उसके आगे बे हक़ीक़त है, तब्लीग़ भी उसके आगे बे हक़ीक़त है, फिर नमाज़ जमाअ़त के साथ भी उसके आगे बे हक़ीक़त है, चाहे इन सब इबादतों के अपने फ़ज़ाइल कितने ही ज़्यादा हों, इसलिये हमेशा इस बात को मद्देनज़र रखना चाहिये।

मां बाप की ख़िदमत करने की अहमियत

मां बाप की ख़िदमत के बारे में अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बयान फ़रमा दिया कि मां बाप की ख़िदमत सारी इबादतों पर मुक़द्दम है, चुनांचे कुरआने करीम में मां बाप की ख़िदमत के बारे में एक दो नहीं बल्कि बहुत सी आयतें नाज़िल फ़रमायीं, चुनांचे एक आयत में इरशाद फ़रमाया कि:

"وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا" (العنكبوت:٨)

"यानी हमने इन्सान को मां बाप के साथ अच्छाई करने की नसीहत की कि मां बाप के साथ अच्छाई का मामला करो। और एक दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाया कि:

"وَقَضٰى رَبُّكَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا" (الاسراء:٢٣)

यानी एक यह कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो, और दूसरे यह कि मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो। देखिये इस आयत में अल्लाह तआ़ला के साथ तौहीद, और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक गोया कि तौहीद के बाद इन्सान का सब से बड़ा फ़रीज़ा यह है कि वह मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करे।

जब मां बाप बूढ़े हो जायें तो फिर

फिर उसके आगे क्या ख़ूबसूरत अन्दाज़ में अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि:

"اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَا اَوْكِلَا هُمَا" (الاسراء: ٢٣)

"यानी अगर तुम्हारी ज़िन्दगी में तुम्हारे मां बाप बुढ़ापे को पहुंच जायें, तो उन मां बाप को कभी "उफ़" भी मत कहना, और बुढ़ापे का ज़िक्र इसलिये किया कि जब मां बाप बूढ़े हो जाते हैं तो बुढ़ापे के असर से कभी कभी ज़ेहन नॉरमल नहीं रहता, और इसकी वजह से कभी कभी ग़लत सलत बातों पर इसरार भी करते हैं, इसलिये ख़ास तौर पर बुढ़ापे का ज़िक्र किया है कि चाहे मां बाप वे बातें कह रहे हैं कि जो तुम्हारे ख़्याल में ग़लत और नाहक़ ही क्यों न हों, लेकिन तुम्हारा काम यह है कि "उफ़" भी मत कहो, और उनसे झिड़क कर बात मत करना, और उनसे हमेशा इज़्ज़त के साथ बात करना। और आगे फ़रमाया कि:

"وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْ حَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِيْ صَغِيْرًا" (الاسراء:٢٤)

और उनके सामने अपने आपको ज़लील करके रखना, और यह दुआ मांगते रहना कि या अल्लाह! इनके ऊपर रह्मत फ़रमाइये, जिस तरह इन्हों ने मुझे बचपन में पाला था। बुढ़ापे के अन्दर अगर मां बाप के मिज़ाज में ज़रा सा चिड़चिड़ा पन पैदा हो गया तो उससे घबरा कर "उफ़" मत कहो, इसका ख़ास तौर पर ज़िक्र फ़रमाया।

नसीहत भरा वाक़िआ

मैंने एक किताब में एक क़िस्सा पढ़ा था, मालूम नहीं कि सच्चा है या झूठा, लेकिन बड़ा नसीहत भरा वाक़िआ है, वह यह कि एक साहिब बूढ़े हो गये, उन्हों ने बेटे को आला तालीम दिला कर फ़ाज़िल बना दिया, एक दिन घर के सेहन में बाप बैठे हुये थे, इतने में एक कौआ घर की दीवार पर आकर बैठ गया तो बाप ने बेटे से पूछा कि बेटा! यह क्या चीज़ है? बेटे ने कहा अब्बा जान यह कौआ है, थोड़ी देर बाद

फिर बाप ने पूछा बेटा यह क्या चीज़ है? उसने कहा अब्बा जान! यह कौआ है, फिर जब थोड़ी देर गुज़र गयी तो बाप ने पूछा कि बेटे यह क्या है? बेटे ने कहाः अब्बा जान! अभी तो आपको बताया था कि यह कौआ है, थोड़ी देर गुज़रने के बाद फिर बाप ने पूछा कि बेटाः यह क्या है? अब बेटे के लहजे में तब्दीली आ गयी और उसने झिड़क कर कहा कि अब्बा जान! कौआ है कौआ। फिर थोड़ी देर बाद बाप ने पूछा कि बेटा! यह क्या है? अब बेटे से न रहा गया, उसने कहा कि आप हर वक़्त एक बात पूछते रहते हैं हज़ार मर्तबा कह दिया कि यह कौआ है? आपकी समझ में नहीं आती। बहर हाल, इस तरह बेटे ने बाप को डांटना शुरू कर दिया, थोड़ी देर के बाद बाप अपने कमरे में उठ कर गया और एक पुरानी डायरी निकाल लाय, और उस डायरी का एक पेज खोल कर बेटे को दिखाते हुए कहा कि बेटा! यह ज़रा पढ़ना, क्या लिखा है? चुनांचे उसने पढ़ा तो उसमें लिखा था कि आज मेरा छोटा बेटा सेहन में बैठा हुआ था और मैं भी बैठा हुआ था, इतने एक कौआ आ गया, तो बेटे ने मुझ से 25 मर्तबा पूछा कि अब्बा जान यह क्या है? तो मैंने 25 मर्तबा उसको जवाब दिया कि बेटा, यह कौआ है, और इस अदा पर मुझे बड़ा प्यार आया। उसके पढ़ने के बाद बाप ने कहा! बेटा देखोः बाप और बेटे में यह फ़र्क़ है, जब तुम बच्चे थे तो तुमने मुझ से 25 मर्तबा पूछा, और मैंने 25 मर्तबा बिल्कुल इत्मीनान से न सिर्फ़ जवाब दिया बल्कि मैंने इस बात का इज़्हार किया कि मुझे उसकी इस अदा पर बड़ा प्यार आया, आज जब मैंने तुमसे सिर्फ़ 5 मर्तबा पूछा तो तुम्हें इतना ग़ुस्सा आ गया।

मां बाप के साथ अच्छा सुलूक

बहर हाल! अल्लाह तआ़ला यह फ़रमाते हैं कि यह बात याद रखो! कि बुढ़ापे की उमर तक पहुंचने के बाद मां बाप के अन्दर थोड़ा सा चिड़चिड़ापन भी पैदा हो जायेगा, उनकी बहुत सी बातें नागवार भी मालूम होंगी। लेकिन उस वक़्त तुम यह याद रखना कि तुम्हारे बचपन

में इससे कहीं ज़्यादा नागवार बातें तुम्हारे मां बाप ने बर्दाश्त की हैं, इसलिये तुम्हें भी उनकी नागवार बातों को बरदाश्त करना है, यहां तक कि अगर मां बाप काफ़िर भी हों तो उनके बारे में भी कुरआने करीम ने फ़रमायाः

"وَاِنْ جَاهَدَاكَ عَلٰى اَنْ تُشْرِكَ بِىْ مَالَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِى الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا" (سورة لقمان:١٥)

यानी अगर तुम्हारे मां बाप काफ़िर मुशरिक हों, तो फिर शिर्क में तो उनकी इताअ़त मत करना लेकिन आ़म ज़िन्दगी के अन्दर उनके साथ अच्छा सुलूक फिर भी ज़रूरी है, इसलिये कि अगरचे वे काफ़िर है, लेकिन तुम्हारा बाप है। तो मां बाप की इताअ़त और उनके साथ अच्छे सुलूक की इतनी ताकीद फ़रमाई है। आजकी दुनिया हर मामले में उल्टी जा रही है, अब तो बाक़ायदा इस बात की तरबियत दी जा रही है कि मां बाप की इताअ़त, उनका एहतिराम, उनकी अ़ज़्मत का नक़्श औलाद के दिलों से मिटाया जाये। और बाक़ायदा इसकी तरबियत हो रही है, और यह कहा जाता है कि मां बाप भी इन्सान हैं, और हम भी इन्सान हैं, हम में और उनमें क्या फ़र्क़ है, उनका हम पर क्या हक़ है।

जब इन्सान दीन से दूर हो जाता है, और अल्लाह और अल्लाह के रसूल की इताअ़त का जज़्बा ठंडा पड़ जाता है, और आख़िरत की फ़िक्र ख़त्म हो जाती है तो उस वक़्त इस क़िस्म की बातें पैदा हो जाती हैं, अल्लाह तआ़ला इससे हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाये, आमीन।

मां बाप की ना फ़रमानी का वबाल

बहर हाल! यह अ़र्ज़ करना था कि मां बाप की इताअ़त वाजिब है अगर मां बाप किसी काम का हुक्म दें तो वह काम करना औलाद के ज़िम्मे शरअ़न फ़र्ज़ हो जाता है, और बिल्कुल ऐसा फ़र्ज़ हो जाता है जैसा कि नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है, बशर्ते कि मां बाप जिस काम का हुक्म दे रहे हैं, वह शरअ़न जायज़ हो। और अगर औलाद वह काम न करे तो यह ऐसा गुनाह है, जैसा कि नमाज़ छोड़ देना गुनाह है, इसी को

"उक़ूक़ुल वालिदैन" कहा जाता है, यानी मां बाप की ना फ़रमानी। और बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि मां बाप की ना फ़रमानी का वबाल यह होता है कि मरते वक़्त कलिमा नसीब नहीं होता।

इबरतनाक वाक़िआ

एक शख़्स का वाक़िआ लिखा है कि उस की मौत का वक़्त आ गया, और आख़री वक़्त है, सब लोग यह कोशिश कर रहे हैं कि ज़बान से कलिमा पढ़ ले, मगर ज़बान पर कलिमा जारी नहीं होता, चुनांचे लोग एक बुज़ुर्ग को लाये, और उनसे पूछा कि इसका क्या हल निकाला जाये, इसकी ज़बान पर कलिमा जारी नहीं हो रहा है, उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि अगर इसकी मां या बाप ज़िन्दा हों तो उनसे इसके लिये माफ़ी मांगो, ऐसा मालूम होता है कि इसने मां बाप की ना फ़रमानी की है, उसके नतीजे में इस पर यह वबाल आया है, और जब तक उनकी तरफ़ से माफ़ी नहीं होगी, उस वक़्त तक इसकी ज़बान पर कलिमा जारी नहीं होगा। इससे अन्दाज़ा लगाइये कि मां बाप की ना फ़रमानी करना और उनका दिल दुखाना कितनी ख़तरनाक और वबाल की चीज़ है। हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हर हर क़दम पर अपनी तालीमात में मां बाप का एहतिराम और उनके साथ अच्छे सुलूक का लिहाज़ रखा। जो सहाबी आप से मश्विरा करने आते तो आप उनको अच्छे सुलूक का मश्विरा देते।

इल्म के लिये मां बाप की इजाज़त

हमारे यहां दारुल उलूम में बाज़ मर्तबा बाज़ तालिब इल्म दाख़िले के लिये आते हैं, उनको पढ़ने का शौक़ है। आ़लिम बनने और दरसे निज़ामी पढ़ कर फ़राग़त हासिल करने का शौक़ है, लेकिन जब उनसे पूछा जाता है कि मां बाप की इजाज़त से आये हो? तो मालूम होता है कि मां बाप की इजाज़त के बग़ैर आये हैं, और वे यह कहते हैं कि हम क्या करें मां बाप हमें इजाज़त नहीं दे रहे थे, इसलिये हम बग़ैर इजाज़त के चले आये हैं। मैं उनसे कहता हूं कि याद रखें, मौलवी बनना कोई फ़र्ज़ नहीं, मां बाप की इताअ़त करना फ़र्ज़ है, हां! अगर मां

बाप इतना इल्म हासिल करने से रोक दें जिस से इन्सान एक मुसलमान जैसी ज़िन्दगी गुज़ार कसे, जैसे नमाज़ का तरीक़ा सीखने से रोकें, तो इस सूरत में मां बाप की इताअत नहीं, लेकिन मौलवी बनना (पूरे दीन का इल्म हासिल करना) फ़र्ज़ व वाजिब नहीं, इसलिये जब तक मां बाप इसकी इजाज़त न दें उस वक़्त तक वह न करे, और अगर इजाज़त के बग़ैर मौलवी बनने में लगेगा तो वही बात होगी जो हमारे हज़रते वाला फ़रमाया करते थे कि अपना शौक़ पूरा करना होगा, यह दीन का काम नहीं होगा। अल्लाह तआला हम सब को इसकी हक़ीक़त समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, आमीन।

जन्नत हासिल करने का आसान रास्ता

याद रखो! जब तक मां बाप ज़िन्दा हैं तो वे इतनी बड़ी नेमत हैं कि इस रूए ज़मीन पर इन्सान के लिये इससे बड़ी नेमत कोई और नहीं, जैसा कि हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर मां बाप को मुहब्बत और प्यार की नज़र से देख लो तो एक हज और एक उमरे का सवाब है। इसी लिये एक दूसरी हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मरदूद हो वह शख़्स जो अपने मां बाप को बुढ़ापे की हालत में पाये, फिर वह उनकी ख़िदमत करके अपने गुनाह माफ़ न करा ले। इसलिये अगर मां बाप बूढ़े हैं तो जन्नत हासिल करना इतना आसान है जिसकी कोई हद नहीं, बस ज़रा सी उनकी ख़िदमत कर लोगे तो उनके दिल से दुआ निकल जायेगी, और तुम्हारी आख़िरत संवर जायेगी। बहाने बहाने से तुम जन्नत कमा सकते हो। बहर हाल! मां बाप जब तक ज़िन्दा हों उनको नेमत समझ कर उनकी क़दर करें, इसलिये कि जब मां बाप उठ जाते हैं तो उस वक़्त हसरत होती है कि हमने ज़िन्दगी के अन्दर उनकी कोई क़दर न की, उनके साथ अच्छा सुलूक करके जन्नत न कमा ली, बाद में अफ़्सोस होता है।

मां बाप की वफ़ात के बाद तलाफ़ी की सूरत

ज़्यादातर यह होता है कि मां बाप के मरने के बाद औलाद को

इस बात का एहसास होता है कि हमने कितनी बड़ी नेमत खो दी और हमने उसका हक़ अदा न किया, उसके लिये भी अल्लाह तआला ने एक रास्ता रखा है। फ़रमाया कि अगर किसी ने मां बाप के हुक़ूक़ में कोताही की हो, और उनसे फ़ायदा न उठाया हो, तो उसकी तलाफ़ी के दो रास्ते हैं, एक उनके लिये ईसाले सवाब की कस्रत करना, जितना हो सके उनको सवाब पहुंचायें। सदक़ा देकर हो, या नवाफ़िल पढ़ कर हो, या कुरआन की तिलावत के ज़रिये हो, इसके ज़रिये उसकी तलाफ़ी हो जाती है, दूसरे यह कि मां बाप के अ़ज़ीज़, रिश्तेदार और दोस्त व अहबाब हैं, उनके साथ अच्छा सुलूक करे और उनके साथ भी ऐसा ही सुलूक करे जैसा बाप के साथ करना चाहिये, उसके नतीजे में अल्लाह तआ़ला उस कोताही की तलाफ़ी फ़रमा देते हैं। अल्लाह तआ़ला मुझे और आप सब को इसकी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

मां के तीन हक़ बाप का एक हक़

"عن ابی ہریرۃ رضی اللہ عنہ قال: جاء رجل الیٰ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فقال: یا رسول اللہ من احق الناس بحسن صحبتی؟ قال امك، قال: ثم من؟ قال امك، قال: ثم من؟ قال امك، قال:ثم من؟ قال ابوك" (جامع الاصول)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, और आकर पूछा कि या रसूलल्लाह! सारी दुनिया के इन्सानों में सब से ज़्यादा मेरे अच्छे सुलूक का मुस्तहिक़ कौन है? किस के साथ मैं सब से ज़्यादा अच्छा सुलूक करूं? आपने फ़रमायाः तुम्हारी मां, यानी सारे इन्सानों में सब से ज़्यादा तुम्हारे अच्छे सुलूक की मुस्तहिक़ तुम्हारी मां है, उन साहिब ने फिर सवाल किया कि उसके बाद कौन है? आपने 'दोबारा जवाब दियाः तुम्हारी मां, उन साहिब ने फिर सवाल किया कि उसके बाद कौन है? आपने फिर जवाब दियाः तुम्हारी मां, उन साहिब ने फिर सवाल किया कि उसके बाद कौन है? तो चौथे नम्बर पर फ़रमायाः तुम्हार बाप।

तीन मर्तबा मां का नाम लिया आख़िर में चौथे नम्बर पर बाप का नाम लिया। इसलिए उलमा-ए-किराम ने इस हदीस से दलील पकड़ते हुए फ़रमाया कि मां का हक़ अच्छे सुलूक में बाप से भी ज़्यादा है, मां के तीन हक़ हैं और बाप का एक हक़ है। इसलिए कि बच्चे की परवरिश के लिए मां जितनी परेशानियां झेलती है बाप उसका चौथाई भी नहीं झेलता। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तीन हिस्से मां के बयान फ़रमाए और एक हिस्सा बाप का बयान फ़रमाया।

बाप की ताज़ीम, मां की ख़िदमत

इसलिये बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि अगर कोई हदिया या तोहफ़ा देना हो तो मां को ज़्यादा देना चाहिये, बुज़ुर्गों ने यह भी फ़रमाया कि दो चीज़ें अलग अलग हैं, एक है "ताज़ीम" इसमें तो बाप का हक़ मां पर मुक़द्दम है, और दूसरी चीज़ है "अच्छा सुलूक" और "ख़िदमत" इसमें मां का हक़ बाप पर मुक़द्दम है। "ताज़ीम" का मतलब यह है कि दिल में उसकी अज़्मत ज़्यादा हो, उसकी तरफ़ पांव फैला कर न बैठे, उसके सिरहाने न बैठे, या जो ताज़ीम के आदाब हैं, उसमें बाप का हक़ मुक़द्दम है, लेकिन जहां तक ख़िदमत का ताल्लुक़ है, उसमें मां का हक़ मुक़द्दम है, और बाप के मुक़ाबले में तीन चौथाई ज़्यादा है।

अल्लाह तआ़ला ने क़ुदरती तौर पर मां के अन्दर यह बात रखी है कि मां के साथ औलाद की बेतकल्लुफ़ी ज़्यादा होती है, बहुत सी बातें बेटा खुल कर बाप से नहीं कह सकता, लेकिन मां के सामने वह कह देता है, तो शरीअ़त ने इसका भी लिहाज़ रखा है, चुनांचे हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़त्हुल बारी में बुज़ुर्गों का बयान किया हुआ यह उसूल लिखा है कि औलाद बाप की ताज़ीम ज़्यादा करे और मां की ख़िदमत ज़्यादा करे, इस उसूल के ज़रिये हदीसों के दरमियान भी ततबीक़ (जोड़ और मुवाफ़क़त) हो जाती है।

मां की ख़िदमत का नतीजा

बहर हाल! मां की ख़िदमत वह चीज़ है जो इन्सान को कहां से कहां तक पहुंचा देती है, जैसा कि आपने हज़रत उवैस क़रनी

रज़ियल्लाहु अन्हु के वाकिए में देखा। और बहुत से बुज़ुर्गों का यही हाल ज़िक्र किया गया है। जैसे इमाम ग़ज़ाली रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के बारे में यह बात मशहूर है कि एक मुद्दत तक सिर्फ़ मां की ख़िदमत में मश्ग़ूल रहने की वजह से इल्म हासिल नहीं कर सके, लेकिन बाद में जब उनकी ख़िदमत से फ़ारिग़ हो गये तो अल्लाह तआ़ला ने इल्म के अन्दर बुहत ऊंचा मक़ाम अ़ता फ़रमाया। इसलिये इस ख़िदमत को ग़नीमत समझना चाहिये।

"وعن عبد الله بن عمروبن العاص رضى الله عنهما قال: اقبل رجل الى نبى الله صلى الله عليه وسلم، قال: ابايعك على الهجرة والجهاد ابتغى الاجر من الله تعالىٰ، فقال:هل من والديك احد حى؟ قال: نعم، بل كلاهما، قال: فتبتغى الاجر من الله تعالىٰ؟ قال: نعم، قال: فارجع الىٰ والديك فاحسن صحبتهما" (مسند احمد)

वापस जाकर उनके साथ अच्छा सुलूक करो

यह हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर अल–आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत है, फ़रमाते हैं कि एक शख़्स हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह, मैं आपके पास दो चीज़ों पर बैअ़त करने आया हूं, एक हिज्रत पर और एक जिहाद पर, यानी अपना वतन छोड़ कर मदीना तैयबा में रहने के लिये हिज्रत के इरादे से आया हूं, और आपके साथ जिहाद करने की नियत से आया हूं, और अपने अल्लाह तआ़ला से अज्र व सवाब का तलबगार हूं, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उससे पूछा कि क्या तुम्हारे मां बाप में से कोई ज़िन्दा है? उस शख़्स ने जवाब दिया कि हां, बल्कि मां और बाप दोनों ज़िन्दा हैं, आपने फ़रमाया कि क्या तुम वाक़ई अज्र व सवाब चाहते हो? उसने जवाब दिया कि जी हां या रसूलल्लाह! आपने जवाब दिया कि मेरे साथ जिहाद करने के बजाये तुम अपने मां बाप के पास वापस जाओ, और उनके साथ अच्छा सुलूक करो।

जाकर मां बाप को हंसाओ

देखिये! इस हदीस में अपने साथ जिहाद करने की फ़ज़ीलत को मां बाप के साथ अच्छे सुलूक पर क़ुरबान फ़रमा दिया, और उनको वापस फ़रमा दिया। एक रिवायत में आता है कि एक मर्तबा जिहाद की तैयारी हो रही थी, एक साहिब हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैं जिहाद में शरीक होने के लिये आया हूं, और फ़ख़्र के तौर पर बयान किया कि मैं जिहाद में शिर्कत करने का इतना सच्चा तालिब हूं कि जिहाद में शिर्कत के लिये अपने मां बाप को रोता हुआ छोड़ कर आया हूं। मतलब यह था कि मेरे मां बाप मुझे नहीं छोड़ रहे थे, और मुझे जिहाद में शिर्कत की इजाज़त नहीं दे रहे थे, लेकिन इसके बावजूद मैं उनको इस हालत में छोड़ कर आया हूं कि वे मेरी जुदाई की वजह से रो रहे थे, तो आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस शख़्स से फ़रमायाः

"ارجع فاضحكهما كما ابكيتهما" (مسند احمد)

वापस जाओ और उनको जिस तरह रोता हुआ छोड़ा था अब जाकर उनको हंसाओ और उनको राज़ी करो, तुम्हें मेरे साथ जिहाद पर जाने की इजाज़त नहीं।

दीन "हदों की हिफ़ाज़त" का नाम है

यह है हदों की हिफ़ाज़त, इसी लिये हमारे हज़रत रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि दीन नाम है "हदों की हिफ़ाज़त" का, यह कोई दीन नहीं कि जब जिहाद की फ़ज़ीलत सुन ली तो सब कुछ छोड़ छाड़ कर जिहाद के लिये रवाना हो गये, बल्कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्मों की रियायत करते हुए हर मौक़े पर काम करना होता है। मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि आज कल लोग "एक बाग" हो गये हैं, जैसे अगर घोड़े की एक बाग हो तो वह सिर्फ़ एक ही तरफ़ चलेगा, दूसरी तरफ़ ध्यान भी नहीं देगा, इसी

तरह लोग भी एक बाग हो गये हैं, यानी जब यह सुन लिया कि फ़लां काम बड़ी फ़ज़ीलत वाला है बस उसकी तरफ़ दौड़ पड़े, और यह नहीं देखा कि हमारे ज़िम्मे और क्या हुकूक़ वाजिब हैं, और दूसरे कामें की क्या हद है?

अल्लाह वालों की सोहबत

और यह "हदों की हिफ़ाज़त" की बात आदतन उस वक़्त तक हासिल नहीं होती, जब तक किसी अल्लाह वाले की सोहबत मयस्सर न आये, ज़बान से मैंने भी कह दिया और आपने सुन भी लिया, किताबों में भी यह बात लिखी है, लेकिन किस मौके पर अ़मल का क्या तरीक़ा इख़्तियार करना है, और किस मौके पर किस चीज़ को तरजीह देनी है, यह बात किसी कामिल शैख़ की सोहबत के बग़ैर हासिल नहीं होती, और आदमी कमी ज़्यादती ही में मुब्तला रहता है। शैख़े कामिल ही बताता है कि इस वक़्त क्या काम करना है, वह बताता है कि इस वक़्त मेरे लिये क्या चीज़ बेह्तर है और क्या चीज़ बेह्तर नहीं। हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के पास इस्लाह के लिये लोग आते तो आप बहुत से लोगों के वज़ीफ़े छुड़ा देते और दूसरे कामों पर लगा देते, इसलिये कि वह जानते थे कि अगर यह इस काम पर लगा रहेगा तो हदों की हिफ़ाज़त नहीं करेगा।

शरीअ़त, सुन्नत, तरीक़त

हमारे हज़रत डा० अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि "हुकूक़" तमाम के तमाम शरीअ़त है। यानी शरीअ़त हुकूक़ का नाम है, अल्लाह के हुकूक़, और बन्दों के हुकूक़ और "हुदूद" तमाम की तमाम सुन्नत है, यानी सुन्नत से यह पता चलता है कि किस हक़ की क्या हद है। अल्लाह के हुकूक़ की हद कहां तक है और बंदों के हुकूक़ की हद कहां तक है। और हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतें यह बताती हैं कि किस हक़ पर किस हद तक अ़मल किया जायेगा। और "हदों की हिफ़ाज़त" तमाम की तमाम

तरीक़त है, यानी तरीक़त जिसको तसव्वुफ़ और सुलूक कहा जाता है, इन हदों की हिफ़ाज़त का नाम है, यानी वे हदें जो सुन्नत से साबित हैं, उनकी हिफ़ाज़त तसव्वुफ़ और सुलूक के ज़रिये होती है। ख़ुलासा यह है कि "शरीअ़त" तमाम तर हुकूक़, सुन्नत तमाम तर हुदूद और तरीक़त तमाम तर "हदों की हिफ़ाज़त" बस! अगर ये तीन चीज़ें हासिल हो जायें तो फिर किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, लेकिन आ़दतन ये चीज़ें उस वक़्त तक हासिल नहीं होतीं, जब तक इन्सान किसी अल्लाह वाले के सामने रगड़े न खाये, और शैख़े कामिल के हुज़ूर अपने आप को पामाल न करे।

क़ाल रा गुज़ार साहिबे हाल शो
पेशे मर्दे कामिल पामाल शो

जब तक आदमी किसी मर्दे कामिल के सामने अपने आप को पामाल नहीं करेगा, उस वक़्त तक यह बात हासिल नहीं होगी। बल्कि कमी ज़्यादती ही में मुब्तला रहेगा। कभी उधर झुक गया कभी इधर झुक गया, सारे तसव्वुफ़ का मक़सद ही यह है कि इन्सान को कमी व ज़्यादती से बचाये और उसको एतिदाल (दरमियानी राह) पर लाये, और उसको यह बातये कि किस वक़्त दीन का क्या तक़ाज़ा है। अल्लाह तआ़ला मुझे और आप सब को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

ग़ीबत

ज़बान का एक बड़ा गुनाह

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا۔ اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

وَلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا، اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ، وَاتَّقُوا اللّٰهَ، اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ. (سورة الحجرات:١٢)

آمنت بالله صدق الله مولانا العظيم، وصدق رسوله النبى الكريم ونحن علىٰ ذلك من الشاهدين والشاكرين والحمد لله رب العالمين.

"ग़ीबत" एक संगीन गुनाह

इमाम नववी रहमतुल्लाहि अलैहि उन गुनाहों का बयान फ़रमा रहे हैं जो इस ज़बान से ज़ाहिर होते हैं, और सब से पहले उस गुनाह को ज़िक्र फ़रमाया जिसका रिवाज बहुत ज़्यादा हो चुका है, वह है ग़ीबत का गुनाह, यह ऐसी मुसीबत है जो हमारी मज्लिसों पर और हमारे मुआशरे पर छा गयी है, कोई मज्लिस इससे ख़ाली नहीं, कोई गुफ़्तगू इससे ख़ाली नहीं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस पर बड़ी सख़्त वओदें बयान फ़रमाई हैं, और क़ुरआने करीम ने ग़ीबत के लिये इतने संगीन अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये हैं कि शायद किसी और गुनाह के लिये इतने संगीन अल्फ़ाज़ इस्तेमाल नहीं किये गये। चुनांचे फ़रमाया कि:

"وَلَا يَغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا، اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ"

"यानी एक दूसरे की ग़ीबत मत करो (क्योंकि यह ऐसा बुरा अ़मल है जैसे अपने मुर्दार भाई का गोश्त खाना) क्या तुम में से कोई इसको पसन्द करता है कि अपने मुर्दार भाई का गोश्त खाये? तुम इसको बहुत बुरा समझते हो" इसलिये जब तुम इस अ़मल को बुरा समझते हो तो ग़ीबत को भी बुरा समझो। इसमें ज़रा ग़ौर करें कि इसमें ग़ीबत की कितनी बुराई बयान फ़रमाई है, एक तो इन्सान का गोश्त खाना, और आदम ख़ोर बन जाना ही कितनी बुराई की बात है, और इन्सान भी कौन सा? अपना भाई? और भाई भी ज़िन्दा नहीं, बल्कि मुर्दा, अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना जितना संगीन है, उतना ही दूसरे की ग़ीबत करना संगीन और ख़तरनाक है।

"ग़ीबत" की तारीफ़

ग़ीबत के क्या मायने हैं? ग़ीबत के मायने हैं! दूसरे की पीठ पीछे बुराई बयान करना, चाहे वह बुराई सही हो, वह उसके अन्दर पाई जा रही हो, ग़लत न हो, फिर भी अगर बयान करोगे तो वह ग़ीबत में शुमार होगा, हदीस में आता है कि एक सहाबी ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सवाल किया, या रसूलल्लाह! ग़ीबत क्या होती है? तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमायाः

"ذکرك اخاك بما يكره"

यानी अपने भाई का उसके पीठ पीछे ऐसे अन्दाज़ में ज़िक्र करना जिसको वह ना पसन्द करता हो, यानी अगर उसको पता चले कि मेरा ज़िक्र इस तरह उस मज्लिस में किया गया था, तो उसको तक्लीफ़ हो, और वह उसको बुरा समझे, तो यह ग़ीबत है, उन सहाबी ने फिर सवाल किया किः

"ان کان فی اخی ما اقول"

अगर मेरे भाई के अन्दर वह ख़राबी हक़ीक़त में मौजूद है जो मैं बयान कर रहा हूं, तो आपने जवाब में फ़रमाया कि अगर वह ख़राबी हक़ीक़त में मौजूद है तब यह ग़ीबत है, और अगर वह ख़राबी उसके

अन्दर मौजूद नहीं है, और तुम उसकी तरफ़ झूठी निस्बत कर रहे हो, तो फिर यह ग़ीबत नहीं, फिर तो यह बुहतान बन जायेगा, और दोहरा गुनाह हो जायेगा। (अबू दाऊद शरीफ़)

अब ज़रा हमारी महफ़िलों और मज्लिसों की तरफ़ नज़र डाल कर देखिये कि किस क़दर इसका रिवाज हो चुका है, और दिन रात इस गुनाह के अन्दर मुब्तला हैं। अल्लाह तआला हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाये, आमीन। बाज़ लोग इसको दुरुस्त बनाने के लिये यह कहते हैं कि मैं ग़ीबत नहीं कर रहा हूं, मैं तो उसके मुंह पर यह बात कह सकता हूं। मक़्सद यह है कि जब मैं यह बात उसके मुंह पर कह सकता हूं तो मेरे लिये यह ग़ीबत करना जायज़ है, याद रखो, चाहे तुम वह बात उसके मुंह पर कह सकते हो, या न कह सकते हो, वह हर हालत में ग़ीबत है। पस अगर तुम किसी का बुराई से ज़िक्र कर रहे हो तो यह ग़ीबत के अन्दर दाख़िल है और यह बड़ा गुनाह है।

"ग़ीबत" बड़ा गुनाह है

और यह ऐसा ही बड़ा गुनाह है जैसे शराब पीना, डाका डालना, बदकारी करना, बड़े गुनाहों में दाख़िल हैं। दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं, वे भी हरामे क़तई हैं, यह भी हरामे क़तई है, बल्कि ग़ीबत का गुनाह इस लिहाज़ से उन गुनाहों से ज़्यादा संगीन है कि ग़ीबत का ताल्लुक़ बन्दों के हुक़ूक़ से है, और बन्दों के हुक़ूक़ का मामला यह है कि जब तक बन्दा उसको माफ़ न कर दे उस वक़्त तक वह गुनाह माफ़ नहीं होगा, दूसरे गुनाह सिर्फ़ तौबा से माफ़ हो सकते हैं लेकिन यह गुनाह तौबा से भी माफ़ नहीं होगा, इससे इस गुनाह की संगीनी का अन्दाज़ा किया जा सकता है, ख़ुदा के लिये इसका एहतिमाम करें कि न ग़ीबत करें न ग़ीबत सुनें, और जिस मज्लिस में ग़ीबत हो रही हो, उसमें गुफ़्तगू बदलने की कोशिश करें, कोई दूसरा मौज़ू छेड़ दें, अगर उस गुफ़्तगू का रुख़ नहीं बदल सकते, तो फिर उस मज्लिस से उठ कर चले आयें, इसलिये कि ग़ीबत करना भी हराम है, और ग़ीबत सुनना भी हराम है।

ये लोग अपने चेहरे नोचेंगे

"عن انس بن مالك رضى الله تعالىٰ عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم،لما عرج بى مررت بقوم لهم اظفار من نحاس يخمشون بها وجوههم وصدورهم فقلت، من هؤلاء يا جبريل؟ قال هؤلاء الذين ياكلون لحوم الناس ويقعون فى اعراضهم. (ابوداؤد شريف)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ख़ास ख़ादिम थे, दस साल तक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत की, वह रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिस रात मेराज में मुझे ऊपर ले जाया गया, तो वहां मेरा गुज़र ऐसे लोगों पर हुआ, जो अपने नाख़ुनों से अपने चेहरे नोच रहे थे, मैंने जिबरील अ़लैहिस्सलाम से पूछा कि ये कौन हैं? उन्हों ने जवाब में फ़रमाया कि ये वे लोग हैं जो लोगों का गोश्त खाते थे, और लोगों की आबरुओं पर हमले किया करते थे।

"ग़ीबत" ज़िना से बद्तर है

चूंकि इस गुनाह को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से सहाबा–ए–किराम के सामने पेश फ़रमाया, उन सब को पेशे नज़र रखना चाहिये, ताकि हमारे दिलों में इसकी बुराई और ख़राबी बैठ जाये, अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से इसकी बुराई हमारे दिलों में बिठा दे, और इस बुराई और ख़राबी से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन। इस हदीस के अन्दर आपने देखा कि आख़िरत में उनका यह अन्जाम होगा कि अपने चेहरे नोच रहे होंगे। और एक रिवायत में जो सनद के एतिबार से बहुत मज़्बूत नहीं है, मगर मायने के एतिबार से सही है, वह यह कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ग़ीबत का गुनाह ज़िना के गुनाह से भी बुरा है, और वजह इसकी यह बयान फ़रमाई कि ख़ुदा न करे अगर कोई ज़िना में मुब्तला हो जाये तो जब कभी नदामत और शरमिन्दगी होगी, और तौबा कर लेगा तो इन्शा–अल्लाह माफ़ हो

जायेगा, लेकिन ग़ीबत का गुनाह उस वक़्त तक माफ़ नहीं होगा जब तक वह शख़्स माफ़ न कर दे जिसकी ग़ीबत और बे-इज़्ज़ती की गयी है, इतना ख़तरनाक गुनाह है। (मज्मउज़् ज़वायद)

ग़ीबत करने वाले को जन्नत से रोक दिया जायेगा

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो लोग ग़ीबत करने वाले होंगे, उन्हों ने बज़ाहिर दुनिया में बड़े अच्छे आमाल किये होंगे, नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे, इबादतें कीं, लेकिन जिस वक़्त वे लोग पुल सिरात पर से गुज़रेंगे, आप हज़रात जानते हैं कि पुल सिरात एक पुल है जो जहन्नम के ऊपर से गुज़रता है, हर इन्सान को उसके ऊपर से गुज़रना है, अब जो शख़्स जन्नती है, वह उस पुल को पार करके जन्नत में पहुंच जायेगा, और अल्लाह बचाये, जिसको जहन्नम में जाना है, उसको उसी पुल के ऊपर से नीचे खींच लिया जायेगा, और जहन्नम में डाल दिया जायेगा। लेकिन ग़ीबत करने वालों को पुल के ऊपर जाने से रोक दिया जायेगा, और उनसे कहा जायेगा कि तुम आगे नहीं बढ़ सकते, जब तक इस ग़ीबत का कफ़्फ़ारा न अदा कर दोगे, यानी जिसकी ग़ीबत की है उससे माफ़ी न मांग लोगे, और वह तुम्हें माफ़ न कर दे, उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते।

बद्तरीन सूद ग़ीबत है

एक हदीस में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यहां तक फ़रमाया कि सूद इतना ज़ब्रदस्त गुनाह है कि उसके अन्दर बहुत सी ख़राबियां हैं, और बहुत से गुनाहों का मज्मूआ़ है, और इसका अदना गुनाह ऐसा है, (ख़ुदा अपनी पनाह में रखे) जैसे कोई शख़्स अपनी मां के साथ बदकारी करे, देखिये, सूद पर इतनी सख़्त वओ़द आयी है, कि ऐसी वओ़द और किसी गुनाह पर नहीं आयी, फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सब से बद्तरीन सूद यह है कि कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई की आबरू पर हम्ला करे, कितनी सख़्त वओ़द बयान फ़रमाई। (अबू दाऊद शरीफ़)

ग़ीबत, मुर्दार भाई का गोश्त खाना है

एक रिवायत में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में दो औ़रतें थीं, उन्हों ने रोज़ा रखा, और रोज़े की हालत में दोनों औ़रतें आपस में बात चीत करने में मश्ग़ूल हो गयीं, जिसके नतीजे में ग़ीबत तक पहुंच गयीं, किसी का ज़िक्र शुरू हुआ तो उसकी ग़ीबत भी शुरू हो गयी, थोड़ी देर बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक साहिब आये और आकर बताया कि या रसूलल्लाह उन दोनों औ़रतों ने रोज़ा रखा था, मगर उनकी हालत बहुत ख़राब हो रही है और प्यास की वजह से उनकी जान लबों पर आ रही है, और वे औ़रतें मरने के क़रीब हैं, आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बज़ाहिर "वही" के ज़रिये यह मालूम हो गया होगा कि उन औ़रतों ने ग़ीबत की है। चुनांचे आपने हुक्म फ़रमाया कि उन औ़रतों को मेरे पास लाओ, जब उन औ़रतों को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाया गया तो आपने देखा कि हक़ीक़त में वे लबे-दम आयी हुयी हैं, फिर आपने हुक्म दिया कि एक बड़ा प्याला लाओ, चुनांचे प्याला आया तो आपने उनमें से एक से फ़रमाया कि तुम इस प्याले में क़ै (उल्टी) करो, जब उसने क़ै करनी शुरू की तो क़ै के ज़रिये अन्दर से पीप और ख़ून और गोश्त के टुकड़े ख़ारिज हुये, फिर दूसरी औ़रत से फ़रमाया कि तुम क़ै करो, जब उसने क़ै की तो उसमें भी ख़ून और पीप और गोश्त के टुकड़े ख़ारिज हुये, यहां तक कि वह प्याला भर गया। फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह तुम्हारे उन बहनों भाईयों का ख़ून और पीप और गोश्त है जो तुम दोनों ने रोज़े की हालत में खाया था।

तुम दोनों ने रोज़े की हालत में जायज़ खाने से तो परहेज़ कर लिया, जो हराम खाना था, यानी दूसरे मुसलमान भाई का ख़ून और गोश्त खाना उसको तुमने नहीं छोड़ा, जिसके नतीजे में तुम दोनों के पेटों में ये चीज़ें भर गयी थीं, इसकी वजह से तुम दोनों की यह हालत हुयी, उसके बाद फ़रमाया कि आइनदा कभी ग़ीबत का जुर्म मत

करना। गोया कि उस मौके पर अल्लाह तआ़ला ने ग़ीबत की सूरते मिसाली दिखा दी कि ग़ीबत का यह अन्जाम होता है।

बात असल में यह है कि हम लोगों का ज़ौक़ ख़राब हो गया है, हमारी हिस मिट चुकी है, जिसकी वजह से गुनाह की बुराई और ख़राबी दिल से जाती रही है। लेकिन जिन लोगों को अल्लाह तआ़ला सही हिस अ़ता फ़रमाते हैं, और सही ज़ौक़ अ़ता फ़रमाते हैं उनको इसका मुशाहदा भी करा देते हैं।

ग़ीबत करने पर इब्रतनाक ख़्वाब

चुनांचे एक ताबिई़ जिनका नाम रबई़ है। वह अपना वाक़िआ़ बयान करते हैं कि एक मर्तबा मैं एक मज्लिस में पहुंचा। मैंने देखा कि लोग बैठे हुये बातें कर रहे हैं, मैं भी उस मज्लिस में बैठ गया, अब बातें करने के दौरान किसी आदमी की ग़ीबत शुरू हो गयी, मुझे यह बात बुरी लगी कि हम यहां मज्लिस में बैठ कर ग़ीबत करें, चुनांचे मैं उस मज्लिस से उठ कर चला गया, इसलिये कि अगर किसी मज्लिस में ग़ीबत हो रही हो तो आदमी को चाहिये कि उसको रोके, और अगर रोकने की ताक़त न हो तो कम से कम उस गुफ़्तगू में शरीक न हो, बल्कि उठ कर चला जाये। चुनांचे मैं चला गया, थोड़ी देर बाद ख़्याल आया कि अब उस मज्लिस में ग़ीबत का मौज़ू ख़त्म हो गया होगा, इसलिये मैं दोबारा उस मज्लिस में जाकर उनके साथ बैठ गया, अब थोड़ी देर इधर उधर की बातें होती रहीं, लेकिन थोड़ी देर के बाद फिर ग़ीबत शुरू हो गयी, लेकिन मेरी हिम्मत कमज़ोर पड़ गयी, और मैं उस मज्लिस से उठ न सका, और जो ग़ीबत वे लोग कर रहे थे, पहले तो उसको सुनता रहा और फिर मैंने ख़ुद भी ग़ीबत के एक दो जुम्ले कह दिये।

जब उस मज्लिस से उठ कर घर वापस आया और रात को सोया तो ख़्वाब में एक इन्तिहाई काले रंग के आदमी को देखा, जो एक तश्त में मेरे पास गोश्त लेकर आया। जब मैंने ग़ौर से देखा तो मालूम हुआ कि वह सुअर का गोश्त है और वह काले रंग का आदमी मुझ से यह

कह रहा है कि यह सुअर का गोश्त खाओ, मैंने कहा, मैं मुसलमान आदमी हूं, सुअर का गोश्त कैसे खाऊं? उसने कहा कि नहीं, यह तुम्हें खाना पड़ेगा, और फिर ज़बरदस्ती उसने गोश्त के टुकड़े उठा कर मेरे मुंह में ठूंसने शुरू कर दिये, अब मैं मना करता जा रहा हूं, और वह ठूंसता जा रहा है, यहां तक कि मुझे मतली और कै आने लगी, मगर वह ठूंसता जा रहा था, फिर इसी शदीद तक्लीफ़ की हालत में मेरी नींद खुल गयी, जब जागने के बाद मैंने खाने के वक़्त खाना खाया तो ख़्वाब में जो सुअर के गोश्त का बदबूदार और ख़राब ज़ायक़ा था, वह ज़ायक़ा मुझे अपने खाने में महसूस हुआ, और तीस दिन तक मेरा यह हाल रहा कि जिस वक़्त भी मैं खाना खाता, तो हर खाने में उस सुअर के गोश्त का बद्तरीन ज़ायक़ा मेरे खाने में शामिल हो जाता। और इस वाक़िए से अल्लाह तआला ने इस पर मुतनब्बह फ़रमाया कि ज़रा सी देर जो मैंने ग़ीबत कर ली थी, उसका बुरा ज़ायक़ा तीस दिन तक महसूस करता रहा। अल्लाह तआला हम सब की हिफ़ाज़त फ़रमाये, आमीन।

हराम खाने का अंधेरा

बात असल में यह है कि इस माहौल की ख़राबी की वजह से हमारी हिस ख़राब हो गयी है, इसलिये गुनाह का गुनाह होना महसूस नहीं होता। हज़रत मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहिब नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि एक मर्तबा एक जगह दावत में खाने के एक दो लुक़्मे खा लिये थे। वह खाना कुछ मुश्तबह सा था, उसके हराम होने का कुछ शुबह था। बाद में फ़रमाते हैं कि मैंने एक या दो लुक़्मे जो खा लिये तो उसका अंधेरा महीनों तक दिल में महसूस होता रहा, और बार बार बुरे ख़्यालात दिल में आते रहे, गुनाह करने के जज़्बे दिल में पैदा होते रहे, और गुनाह की तरफ़ रग़बत होती रही।

गुनाह का असर एक यह भी है कि उसकी वजह से दिल में ज़ुल्मत (अंधेरा) पैदा हो जाता है उस ज़ुल्मत के नतीजे में दूसरे गुनाह

करने के तक़ाज़े पैदा होते हैं, और उनकी तरफ़ आदमी बढ़ने लगता है, और गुनाहों का शौक़ पैदा हो जाता है। अल्लाह तआला हम लोगों की हिस को दुरुस्त फ़रमा दे, आमीन। बहर हाल यह ग़ीबत का गुनाह बड़ा ख़तरनाक गुनाह है, जिसको अल्लाह तआला सही समझ अता फ़रमा दे वही जान सकता है कि मैं यह क्या कर रहा हूं, इससे अन्दाज़ा करें कि यह ग़ीबत कितना बड़ा गुनाह है।

ग़ीबत की इजाज़त के मौक़े

लेकिन एक बात ज़रा समझ लीजिये वह यह कि ग़ीबत की तारीफ़ तो मैंने आपको बता दी थी कि किसी का पीठ पीछे इस तरह ज़िक्र करना कि अगर उसे मालूम हो जाये कि मेरा इस तरह ज़िक्र किया गया है, तो उसको नागवार हो, चाहे बात सही की जा रही हो, यह है ग़ीबत, लेकिन शरीअ़त ने हर चीज़ की रियायत रखी है, इन्सान की फ़ित्रत की भी रियायत की है, इन्सान की जायज़ ज़रूरियात का भी लिहाज़ रखा है, इसलिये ग़ीबत से चन्द चीज़ों को अलग कर दिया है, अगरचे बज़ाहिर वे ग़ीबत हैं, लेकिन शरअ़न जायज़ हैं।

दूसरे को बुराई से बचाने के लिये ग़ीबत करना

जैसे एक शख़्स ऐसा काम कर रहा है, जिस से दूसरे को नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा है अब अगर उस दूसरे को उसके बारे में न बताया गया तो वह उसके हाथों से नुक़्सान का शिकार हो जायेगा। उस वक़्त अगर आप उस दूसरे शख़्स को बता दें कि फ़लां शख़्स से होशियार रहना तो ऐसा करना जायज़ है। यह बात ख़ुद हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सिखा दी, हर बात बयान करके दुनिया से तशरीफ़ ले गये। चुनांचे हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में बैठी हुयी थी और एक साहिब हमारी तरफ़ सामने से आ रहे थे, अभी वह साहिब रास्ते ही में थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस शख़्स की तरफ़ इशारा करके मुझ से फ़रमाया कि:

"بئس اخو العشيرة"

यह शख़्स अपने क़बीले का बुरा आदमी है। हज़रत आयशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैं ज़रा संभल कर बैठ गयी कि यह बुरा आदमी है, ज़रा होशियार रहना चाहिये, जब वह शख़्स मज्लिस में आकर बैठ गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी आदत के मुताबिक़ नर्म अन्दाज़ में गुफ़्तगू फ़रमाई, उसके बाद वह शख़्स चला गया तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि या रसूलल्लाह! आपने फ़रमाया कि यह शख़्स बुरा आदमी है, लेकिन जब वह आपके पास बैठ गया तो आप उसके साथ बहुत नर्मी से और मीठे अन्दाज़ में गुफ़्तगू करते रहे, यह क्या बात है? आपने जवाब में फ़रमाया कि देखो, वह बद्तरीन शख़्स है जिसकी बुराई के ख़ौफ़ से लोग उसको छोड़ दें, यानी इस आदमी में तबीयत के लिहाज़ से फ़साद है, अगर इसके साथ नरमी का मामला न किया जाये तो फ़ितना फ़साद खड़ा कर सकता है। इसलिये मैंने अपनी आदत के मुताबिक़ उसके साथ नरमी का मामला किया। (तिर्मीज़ी शरीफ़)

उलमा-ए-किराम ने इस हदीस की शरह में लिखा है कि इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहले से जो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को बता दिया कि यह बुरा आदमी है, बज़ाहिर तो यह ग़ीबत है, इसलिये कि उसके पीठ पीछे बुराई की जा रही है, लेकिन यह ग़ीबत इसलिये जायज़ हुयी कि उसके ज़रिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक़्सद यह था कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को मुतनब्बह कर दिया जाये कि आइन्दा वह उसके किसी फ़साद का शिकार न हो जायें। इसलिये किसी शख़्स को दूसरे के ज़ुल्म से बचाने के लिये उसके पीठ पीछे उसकी बुराई बयान कर दी जाये तो यह ग़ीबत में दाख़िल नहीं, ऐसा करना जायज़ है।

अगर दूसरे की जान का ख़तरा हो

बल्कि बाज़ सूरतों में उसकी बुराई बयान करना वाजिब है, जैसे एक आदमी को आपने देखा कि वह दूसरे पर हमला करने और उसकी जान लेने की तैयारी कर रहा है, तो ऐसी सूरत में उस दूसरे शख़्स को

बताना वाजिब है कि तुम्हारी जान ख़तरे में है ताकि वह अपना बचाओ कर सके, इसलिये ऐसे मौके पर ग़ीबत जायज़ हो जाती है।

खुलेआम गुनाह करने वाले की ग़ीबत

एक हदीस है, जिसका सही मतलब लोग नहीं समझते, और वह यह कि एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

"لا غيبة لفاسق ولا مجاهر" (جامع الاصول)

वह यह कि "फ़ासिक़ की ग़ीबत ग़ीबत नहीं" इसका मतलब बाज़ लोग यह समझते हैं कि जो शख़्स किसी बड़े गुनाह के अन्दर मुब्तला है तो उसकी जो चाहो ग़ीबत करते रहो, वह जायज़ है, या जो बिद्अ़तों में मुब्तला है, तो उसकी ग़ीबत जायज़ है। हालांकि इस क़ौल का यह मतलब नहीं, बल्कि इसका मतलब यह है कि जो शख़्स खुलेआम बुराइयों और गुनाहों के अन्दर मुब्तला है, जैसे एक शख़्स खुल्लम खुल्ला शराब पीता है, अब अगर कोई उसके पीछे यह कहे कि वह शख़्स शराब पीता है तो यह ग़ीबत नहीं, इसलिये कि वह तो ख़ुद ही ऐलान कर रहा है कि मैं शराब पीता हूं, अब अगर उसके पीछे उसके शराब पीने का तज़्किरा किया जायेगा तो उसको नागवारी नहीं होगी, इसलिये कि वह तो ख़ुद ऐलानिया लोगों के सामने पीता है, इसलिये यह ग़ीबत में दाख़िल न होगा।

यह भी ग़ीबत में दाख़िल है

लेकिन जो काम वह दूसरों पर ज़ाहिर करना नहीं चाहता, अगर उसका तज़्किरा आप लोगों के सामने करेंगे तो वह ग़ीबत में दाख़िल होगा। जैसे वह खुल्लम खुल्ला शराब तो पीता है, खुल्लम खुल्ला सूद तो खाता है लेकिन कोई गुनाह ऐसा है जो वह छुप कर करता है, और लोगों के सामने वह ज़ाहिर नहीं करना चाहता, और वह गुनाह ऐसा है कि उसका नुक़्सान दूसरे को नहीं पहुंच सकता। तो अब उसकी ग़ीबत करना और उस गुनाह का तज़्किरा करना जायज़ नहीं। इसलिये जिस गुनाह और बुराई का काम वह खुल्लम खुल्ला कर रहा हो उसका

तज़्किरा ग़ीबत में दाख़िल नहीं वर्ना ग़ीबत में दाख़िल है। यह मतलब है इस क़ौल का कि "फ़ासिक़ की ग़ीबत ग़ीबत नहीं"।

फ़ासिक़ व फ़ाजिर की ग़ीबत जायज़ नहीं

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि एक मज्लिस में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साहिबज़ादे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मौजूद थे, उसी मज्लिस में किसी शख़्स ने हज्जाज बिन यूसुफ़ की बुराइयां शुरू कर दीं तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने टोका और फ़रमाया कि "देखो यह जो तुम उनकी बुराईयां बयान कर रहे हो, यह ग़ीबत है, और यह मत समझना कि अगर हज्जाज बिन यूसुफ़ की गर्दन पर सैकड़ों इन्सानों का ख़ून है तो अब उसकी ग़ीबत हलाल हो गयी, हालांकि उसकी ग़ीबत हलाल नहीं हुई बल्कि अल्लाह तआ़ला जहां हज्जाज बिन यूसुफ़ से उन सैकड़ों इन्सानों के ख़ून का हिसाब लेंगे जो उसकी गर्दन पर हैं तो वहां उस ग़ीबत का भी हिसाब लेंगे जो तुम उसके पीछे कर रहे हो। अल्लाह तआ़ला महफ़ूज़ रखे, आमीन।

इसलिये यह मत समझो कि फ़लां शख़्स फ़ासिक़ व फ़ाजिर (बुरा) और बिद्अ़ती है, उसकी जितनी चाहो ग़ीबत कर लो, बल्कि उसकी ग़ीबत करने से बचना वाजिब है।

ज़ालिम के ज़ुल्म का ज़िक्र ग़ीबत नहीं

एक और मौक़े पर भी ग़ीबत को शरीअ़त ने जायज़ क़रार दिया है। वह यह कि एक शख़्स ने तुम पर ज़ुल्म किया और अब उस ज़ुल्म का ज़िक्र किसी दूसरे से करते हो कि मेरे साथ यह ज़ुल्म हुआ है, और यह ज़्यादती हुयी है, यह ग़ीबत नहीं इसमें गुनाह नहीं। चाहे वह शख़्स जिसके सामने तुम उस ज़ुल्म का ज़िक्र कर रहे हो उस ज़ुल्म की तलाफ़ी कर सकता हो, चाहे तलाफ़ी न कर सकता हो। जैसे एक शख़्स ने तुम्हारी चोरी कर ली, अब जाकर थाने में इत्तिला दो कि फ़लां शख़्स ने चोरी कर ली है तो अब अगरचे यह उसके पीठ पीछे उसका तज़्किरा है, लेकिन ग़ीबत में दाख़िल नहीं, इसलिये कि तुम्हें नुक़सान

पहुंचाया गया, तुम पर ज़ुल्म किया गया और अब तुमने उस ज़ुल्म के ख़िलाफ़ जाकर शिकायत की। वह तुम्हारे ज़ुल्म की तलाफ़ी कर सकते हैं तो यह ग़ीबत में दाख़िल नहीं।

लेकिन अगर उस चोरी का तज़्किरा ऐसे शख़्स के सामने किया जा रहा है जो उस ज़ुल्म की तलाफ़ी नहीं कर सकता जैसे चोरी के वाक़िए के बाद कुछ लोग तुम्हारे पास आये तो तुमने उनके सामने तज़्किरा कर दिया कि आज रात फ़लां शख़्स ने हमारे साथ यह ज़्यादती कर दी तो यह बयान करने में कोई गुनाह नहीं, यह ग़ीबत में दाख़िल नहीं।

देखिये: शरीअ़त हमारी फ़ित्रत की कितनी रियायत रखती है, इन्सान की फ़ित्रत यह है कि जब उसके साथ ज़ुल्म हो जाये तो कम से कम वह अपने ग़म का दुखड़ा रोकर अपने दिल की तसल्ली कर सकता है। चाहे दूसरा शख़्स उसकी तलाफ़ी कर सकता हो, या न कर सकता हो। इसलिये शरीअ़त ने इजाज़त दे दी कि इसकी इजाज़त है।

"لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ" (سورة نساء:١٤٨)

वैसे तो अल्लाह तआ़ला इस बात को पसन्द नहीं फ़रमाते कि बुराई का तज़्किरा किया जाये लेकिन जिस शख़्स पर ज़ुल्म हुआ वह अपना ज़ुल्म दूसरों के सामने बयान कर सकता है। यह ग़ीबत में दाख़िल नहीं, बल्कि जायज़ है। बहर हाल! ये जगहें अलग हैं जिन्हें ग़ीबत से अल्लाह तआ़ला ने निकाल दिया है, इसमें ग़ीबत का गुनाह नहीं लेकिन इनके अ़लावा हम लोग मज्लिस में बैठ कर क़िस्सा बयान करने के तौर पर, वक़्त गुज़ारी के तौर पर, मज्लिस जमाने के तौर पर दूसरों का ज़िक्र शुरू कर देते हैं, यह सब ग़ीबत के अन्दर दाख़िल है। ख़ुदा के लिये अपनी जानों पर रहम करके इसका दर्वाज़ा बन्द करने की कोशिश करें। और ज़रा इस ज़बान को क़ाबू में लायें। इसको थोड़ा सा लगाम लगायें, अल्लाह तआ़ला हम सब को इससे बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

ग़ीबत से बचने के लिये इरादा और हिम्मत

ग़ीबत का तज़्किरा मैंने आपके सामने कर दिया और आपने सुन लिया। लेकिन सिर्फ़ कहने सुनने से बात नहीं बनती, जब तक पक्का अहद और इरादा न किया जाये, हिम्मत न की जाये और क़दम आगे न बढ़ाया जाये। पक्का इरादा कर लो कि आजके बाद इस ज़बान से कोई ग़ीबत का कलिमा नहीं निकलेगा इन्शा-अल्लाह। और अगर कभी ग़लती हो जाये तो फ़ौरन तौबा कर लो, और सही इलाज इसका यह है कि जिसकी ग़ीबत की है, उससे माफ़ी मांग लो, कि मैंने तुम्हारी ग़ीबत की है, मुझे माफ़ कर दो, अल्लाह के कुछ बन्दे यह काम करते हैं।

ग़ीबत से बचने का इलाज

हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि बाज़ लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं कि मैंने आपकी ग़ीबत की थी, मुझे माफ़ कर दीजिये, मैं उनसे कहता हूं कि मैं तुम्हें माफ़ कर दूंगा, लेकिन एक शर्त है, वह यह कि पहले यह बाता दो कि क्या ग़ीबत की थी? ताकि मुझे पता चले कि मेरे पीछे क्या कहा जाता है।

कहती है तुझे ख़ल्क़े ख़ुदा ग़ायबाना क्या?

अगर बता दोगे तो मैं माफ़ कर दूंगा। फिर फ़रमाया कि मैं इस हिक्मत से पूछता हूं कि हो सकता है कि जो बात मेरे बारे में कही हो वह दुरुस्त हो, और वाक़ई मेरे अन्दर वह ग़लती मौजूद हो, और पूछने से वह ग़लती सामने आ जायेगी तो अल्लाह तआला मुझे उससे बचने की तौफ़ीक़ दे देंगे, इसलिये मैं पूछता हूं।

इसलिये अगर ग़ीबत कभी हो जाये तो उसका इलाज यह है कि उससे कह दो कि मैंने आपकी ग़ीबत की है, उस वक़्त आपके दिल पर आरे तो चलेंगे, अपनी ज़बान से यह कहना तो बड़ा मुश्किल काम है, लेकिन इलाज यही है, दो चार मर्तबा अगर यह इलाज कर लिया जाये तो इन्शा-अल्लाह आइन्दा के लिये सबक़ हो जायेगा। बुज़ुर्गों ने इससे बचने के दूसरे इलाज भी ज़िक्र फ़रमाये हैं, जैसे हज़रत हसन बसरी

रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि जब दूसरे का तज़्किरा ज़बान पर आने लगे तो उस वक़्त फ़ौरन अपने ऐबों का ख़्याल करो, कोई इन्सान ऐसा नहीं है जो ऐब से ख़ाली हो, और यह ख़्याल लाओ कि ख़ुद मेरे अन्दर तो फ़लां बुराई है, मैं दूसरों की क्या बुराई बयान करूं, और उस अ़ज़ाब का ध्यान करो जिसका बयान अभी हुआ कि एक कलिमा अगर ज़बान से निकाल दूंगा, लेकिन उसका अन्जाम कितना बुरा है, इसके साथ साथ अल्लाह तआ़ला से दुआ़ मांगे कि या अल्लाह! इस बला से नजात अ़ता फ़रमा दीजिये। जब कभी मज्लिस में कोई तज़्किरा आने लगे तो फ़ौरन अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू कर लो, या अल्लाह यह तज़्किरा मज्लिस में आ रहा है, मुझे बचा लीजिये, मैं कहीं इसके अंदर मुब्तला न हो जाऊं।

ग़ीबत का कफ़्फ़ारा

लेकिन बाज़ रिवायतों में है, जो अगरचे हैं तो कमज़ोर, लेकिन मायने के एतिबार से सही हैं। कि अगर किसी की ग़ीबत हो गयी है तो उस ग़ीबत का कफ़्फ़रा यह है कि उसके लिये ख़ूब दुआ़यें करो, इस्तिग़फ़ार करो। जैसे फ़र्ज़ करें कि आज किसी को ग़फ़लत से तंबीह हुयी कि हक़ीक़त में आज तक हम बड़ी सख़्त ग़लती के अन्दर मुब्तला रहे, मालूम नहीं किन किन लोगों की ग़ीबत कर ली। अब आइन्दा इन्शा–अल्लाह किसी की ग़ीबत नहीं करेंगे। लेकिन अब तक जिनकी ग़ीबत की है, उनको कहां कहां तक याद करें और उनसे कैसे माफ़ी मांगे? कहां कहां जायें? इसलिये अब उनके लिये दुआ़ और इस्तिग़फ़ार कर लो। (मिश्कात शरीफ़)

हुक़ूक़ की तलाफ़ी की सूरत

हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि और मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने तो यह किया था कि एक ख़त लिख कर सबको भिजवा दिया, उस ख़त में यह लिखा था कि ज़िन्दगी में मालूम नहीं आपके कितने हुक़ूक़ बर्बाद हुये होंगे, कितनी ग़लतियां

हुयी होंगी, मैं मुख़्तसर तौर से आप से माफ़ी मांगता हूं कि अल्लाह के लिये मुझे माफ़ कर दीजिये। यह ख़त अपने तमाम ताल्लुक़ात वालों को भिजवा दिया, उम्मीद है कि अल्लाह तआला इसके ज़रिये उन हुकूक़ को माफ़ करा देंगे।

लेकिन मान लें कि ऐसे लोगों के हुकूक़ ज़ाया किये हैं जिनसे अब रुजू करना मुम्किन नहीं, या तो उनका इन्तिक़ाल हो चुका है। या किसी ऐसी जगह चले गये हैं कि उनका पता मालूम करना मुम्किन नहीं, तो ऐसी सूरत के लिये हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जिसकी ग़ीबत की गयी थी या जिनके हुकूक़ ज़या किये थे उनके हक़ में ख़ूब दुआ करो कि या अल्लाह! मैंने उसकी जो ग़ीबत की थी उसको उसके हक़ में तरक़्क़ी–ए–दरजात का सबब बना दीजिये और उसको दीन व दुनिया की तरक़्क़ी अता फ़रमाइये और उसके हक़ में ख़ूब इस्तिग़फ़ार करो तो यह भी उसकी तलाफ़ी की एक शक्ल है।

अगर हम भी अपने ताल्लुक़ात वालों को इस क़िस्म का ख़त लिख कर भेज दें तो क्या इससे हमारी शान घट जायेगी? या बे इज़्ज़ती हो जायेगी? क्या बईद है कि इसके ज़रिये से अल्लाह तआला हमारी माफ़ी का सामान कर दें।

माफ़ करने कराने की फ़ज़ीलत

हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर कोई अल्लाह का बन्दा किसी दूसरे से माफ़ी मांगे और सच्चे दिल से मांगे अब अगर सामने वाला यह देख कर कि यह मुझ से माफ़ी मांग रहा है नादिम और शरमिन्दा हो रहा है उसको माफ़ कर दे तो अल्लाह तआला उस माफ़ करने वाले को उस दिन माफ़ करेगा जिस दिन उसको माफ़ी की सब से ज़्यादा हाजत होगी। और अगर एक शख़्स नादिम होकर माफ़ी मांग रहा है लेकिन यह शख़्स माफ़ी देने से इन्कार कर रहा है कि मैं माफ़ नहीं करूंगा तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मैं उसको उस दिन माफ़ नहीं करूंगा जिस दिन उसको माफ़ी की सब से ज़्यादा ज़रूरत

होगी। जब तू मेरे बन्दों को माफ़ नहीं करता तो तुझे कैसे माफ़ किया जाये।

इसलिये यह बड़ा ख़तरनाक मामला है। इसलिये अगर किसी शख़्स ने नदामत के साथ दूसरे से माफ़ी मांग ली तो उसने अपना फ़रीज़ा अदा कर लिया, उससे बरी हो गया, चाहे दूसरा शख़्स माफ़ करे या न करे। इसलिये हुक़ूक़ की माफ़ी मांग कर हर वक़्त तैयार रहना है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का माफ़ी मांगना

अरे हम और आप किस गिन्ती और किस लाइन में हैं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक मर्तबा मस्जिदे नबवी में खड़े हो गये, और तमाम सहाबा-ए-किराम को ख़िताब करते हुये फ़रमायाः आज मैं अपने आपको तुम्हारे हवाले करता हूं, अगर किसी शख़्स को मुझ से तक्लीफ़ पहुंची हो, या मैंने किसी की जानी, माली किसी भी एतिबार से हक़ तल्फ़ी की हो तो आज मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूं, अगर बदला लेना चाहते हो तो बदला ले लो, और अगर मुझे माफ़ करना चाहते हो तो माफ़ कर दो, ताकि कल क़ियामत के दिन तुम्हारा कोई हक़ मेरे ऊपर बाक़ी न रहे।

बताइये! सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वह मुह्सिने आज़म और पेशवा-ए-आज़म जिनके एक सांस के बदले सहाब-ए-किराम अपनी जानें क़ुरबान करने के लिये तैयार थे, वह फ़रमा रहे हैं कि अगर मैंने किसी को मारा हो या तक्लीफ़ पहुंचाई हो तो वह मुझ से बदला ले ले, चुनांचे एक सहाबी खड़े हो गये, और कहा कि या रसूलल्लाह! आपने एक मर्तबा मेरी कमर पर मारा था, मैं उसका बदला लेना चाहता हूं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किसी नागवारी का इज़्हार नहीं फ़रमाया, बल्कि फ़रमाया किः आ जाओ और बदला ले लो, कमर पर मार लो, जब वह सहाबी कमर के पीछे आ गये तो उन्हों ने फ़रमाया कि या रसूलल्लाह जिस वक़्त आपने मुझे मारा था, उस वक़्त मेरी कमर नंगी थी, और इस वक़्त आपकी कमर पर

कपड़ा है, अगर मैं इसी हालत में बदला लूंगा तो बदला पूरा नहीं होगा, हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस वक़्त चादर ओढ़े हुए थे, आपने फ़रमाया कि मैं चादर उठा देता हूं, चुनांचे जिस वक़्त आपने चादर उठाई तो उन सहाबी ने आगे बढ़ कर उस नुबुव्वत की मुहर को चूम लिया जो आपकी पुश्त पर थी, और फिर उन सहाबी ने फ़रमाया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह गुस्ताख़ी मैंने सिर्फ़ इसलिये की ताकि मुझे इस मुहरे नुबुव्वत का बोसा लेने का मौक़ा मिल जाये, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे माफ़ फ़रमा दें। (मुज़्मउज़् ज़वायद)

बहर हाल, इस तरह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने आप को सहाबा-ए-किराम के सामने पेश कर दिया। अब हम और आप किस शुमार व क़तार में हैं। अगर हम भी अपने ताल्लुक़ात वालों को यह लिख कर भेज दें तो इससे हमारा क्या बिगड़ जायेगा। शायद इसके ज़रिये से अल्लाह तआला हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दें, और इत्तिबा-ए-सुन्नत की नियत से जब यह काम करें तो इस सुन्नत की बर्कत से अल्लाह तआला हमारा बेड़ा पार फ़र्मा दें। अल्लाह तआला हम सब को इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, आमीन।

इस्लाम का एक उसूल

देखिये: इस्लाम का एक उसूल है जो हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया, वह यह कि ईमान का तक़ाज़ा यह है कि अपने लिये भी वही पसन्द करो जो दूसरे के लिये पसन्द करते हो, और दूसरों के लिये भी वही पसन्द करो जो अपने लिये पसन्द करते हो। और जो अपने लिये ना पसन्द हो वह दूसरों के लिये भी ना पसन्द करो। अच्छा यह बताओ कि अगर कोई शख़्स इस तरह पीठ पीछे बुराई से तुम्हारा ज़िक्र करे तो उस वक़्त तुम्हारे दिल पर क्या गुज़रेगी? तुम उसको अच्छा समझोगे या बुरा समझोगे? अगर तुम उसको बुरा समझते हो, और अपने लिये उसको पसन्द नहीं करते तो

फिर क्या वजह है कि उसको तुम अपने भाई के लिये पसन्द करो? यह दोहरे मेयार बनाना कि अपने लिये कुछ और पैमाना है और दूसरे के लिये कुछ और पैमाना है। इसी का नाम मुनाफ़क़त (दोगलापन) है। गोया कि ग़ीबत के अन्दर मुनाफ़क़त भी दाख़िल है। जब इन बातों को सोचोगे और इस गुनाह पर जो अ़ज़ाब दिया जायेगा उसको सोचोगे तो इन्शा-अल्लाह ग़ीबत करने के जज़्बे में कमी आयेगी।

ग़ीबत से बचने का आसान रास्ता

हमारे हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि तो यहां तक फ़रमाते हैं कि ग़ीबत से बचने का आसान रास्ता यह है कि दूसरे का ज़िक्र करो ही नहीं, न अच्छाई से ज़िक्र करो, और न बुराई से ज़िक्र करो, क्योंकि यह शैतान बड़ा ख़बीस है, इसलिये कि जब तुम किसी का ज़िक्र अच्छाई से करोगे कि फ़लां शख़्स बड़ा अच्छा आदमी है, उसके अन्दर यह अच्छाई है, तो दिमाग़ में यह बात रहेगी कि मैं तो उसकी ग़ीबत तो नहीं कर रहा बल्कि अच्छाई से उसका ज़िक्र कर रहा हूं, लेकिन फिर यह होगा कि उसकी अच्छाइयां बयान करते करते शैतान कोई जुम्ला दर्मियान में ऐसा डाल देगा जिस से वह अच्छाई बुराई के अन्दर तब्दील हो जायेगी, जैसे वह कहेगा कि फ़लां शख़्स है तो बड़ा अच्छा आदमी, मगर उसके अन्दर फ़लां ख़राबी है। यह लफ़्ज़ "मगर" आकर सारा काम ख़राब कर देगा, इसका नतीजा यह होगा कि गुफ़्तगू का रुख़ ग़ीबत की तरफ़ मुन्तक़िल हो जायेगा। इसलिये हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि दूसरों का ज़िक्र करो ही नहीं, इसलिये कि दूसरे का ज़िक्र करने की ज़रूरत ही किया है, न अच्छाई से करो और न बुराई से करो, और अगर किसी का ज़िक्र अच्छाई से कर रहे हो तो फिर ज़रा कमर कस के बैठो, ताकि शैतान ग़लत रास्ते पर न डाले।

अपनी बुराइयों पर नज़र करो

अरे भाई! दूसरों की बुराई क्यों करते हो, अपनी तरफ़ निगाह करो, अपने ऐबों का ख़्याल करो, अगर दूसरे के अन्दर कोई बुराई है तो उस

बुराई का अज़ाब तुम्हें नहीं मिलेगा। उस बुराई का अज़ाब और सवाब वह जाने, और उसका अल्लाह जाने, तुम्हें तुम्हारे आमाल का सिला मिलना है, उसकी फ़िक्र करो:

तुझको पराई क्या पड़ी अपनी नबेड़ तू

अपनी तरफ़ ध्यान करो, अपने ऐबों को देखो, दूसरे के ऐबों का ख़्याल इन्सान को उसी वक़्त आता है जब इन्सान अपने आप से और अपनी बुराइयों से बे-ख़बर होता है, लेकिन जब अपने ऐबों का ध्यान होता है उस वक़्त कभी दूसरे की बुराई की तरफ़ ख़्याल नहीं जाता, दूसरे की बुराई की तरफ़ उसकी ज़बान ही नहीं उठ सकती। बहादुर शाह ज़फ़र मरहूम ने बड़े अच्छे शेर कहे हैं। फ़रमाते हैं:

थे जब अपनी बुराइयों से बे-ख़बर
रहे ढूंडते औरों के ऐब व हुनर।
पड़ी जब अपनी बुराई पर जो नज़र
तो निगाह में कोई बुरा न रहा।

अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से अपने ऐबों का ख़्याल और ध्यान हमारे दिलों में पैदा फ़रमा दे, आमीन। यह सारा फ़साद इससे पैदा होता है कि अपनी तरफ़ ध्यान नहीं है, यह ख़्याल नहीं है कि मुझे अपनी क़ब्र में जाकर सोना है, इसका ख़्याल नहीं कि मुझे अल्लाह तआला के सामने जवाब देना है, मगर कभी इसकी बुराई हो रही है, कभी उसकी बुराई हो रही है, इसके अन्दर फ़लां ऐब है, उसके अन्दर फ़लां ऐब है। बस दिन रात इसके अन्दर फंसे हुए हैं। ख़ुदा के लिये इससे नजात हासिल करने की कोशिश करें।

बात-चीत का रुख़ बदल दो

जिन हालात में जिस मुआशरे से हम लोग गुज़र रहे हैं, इसके अन्दर यह काम है तो मुश्किल, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन अगर इससे बचना इन्सान के इख़्तियार से बाहर होता तो अल्लाह तआला इसको हराम न करते, इसलिये इससे बचना इन्सान के इख़्तियार में है, जब कभी मज्लिस के अन्दर बात-चीत का मौज़ू तब्दील हो, तो उसको

वापस ले आओ, और अगर कभी ग़ीबत के अन्दर मुब्तला हो जाओ तो फ़ौरन इस्तिग़फ़ार करो, और आइन्दा बचने के लिये दोबारा इरादे को ताज़ा करो।

"ग़ीबत" तमाम ख़राबियों की जड़ है

याद रखो, यह ग़ीबत ऐसी चीज़ है जो फ़साद पैदा करने वाली है, झगड़े इसके ज़रिये पैदा होते हैं, आपसी ना इत्तिफ़ाक़ियां इससे पैदा होती हैं, और समाज में इस वक़्त जो बिगाड़ नज़र आ रहा है, इसमें बहुत बड़ा दख़ल इस ग़ीबत का है। अगर कोई शख़्स शराब पीता हो, (ख़ुदा अपनी पनाह में रखे) तो जो शख़्स ज़रा भी दीन से ताल्लुक़ रखने वाला है, वह उसको बहुत बुरी निगाह से देखेगा, और उसको बुरा समझेगा, और यह सोचेगा कि यह शख़्स बुरी लत के अन्दर मुब्तला है, और जो शख़्स मुब्तला हो, वह ख़ुद यह सोचेगा कि मुझ से बड़ी ग़लती हो रही है, मैं एक बड़े गुनाह के अन्दर मुब्तला हूं। लेकिन एक शख़्स ग़ीबत कर रहा है तो उसके बारे में इतनी बुराई का एहसास दिल में पैदा नहीं होगा, और न ख़ुद ग़ीबत करने वाला यह समझता है कि मैं किसी बड़े गुनाह के अन्दर मुब्तला हूं। और इसका मतलब यह है कि इस गुनाह की बुराई दिलों में बैठी हुयी नहीं, और इसकी हक़ीक़त का पूरे तरीक़े से एतिक़ाद नहीं है, वर्ना दोनों गुनाहों में कोई फ़र्क़ नहीं है, अगर उसको बुरा समझ रहे हैं, तो इसको भी बुरा समझना चाहिये, इसलिये इसकी बुराई दिलों में पैदा करो कि यह ख़तरनाक बीमारी है।

इशारे के ज़रिये ग़ीबत करना

एक बार उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने मौजूद थीं, बातों बातों में उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा का ज़िक्र आ गया, अब बशरी तक़ाज़े की वजह से सौकनों के अन्दर आपस में ज़रा सी खींच तान हुआ करती है, हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा का

क़द ज़रा छोटा था। तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उनका ज़िक्र करते हुए हाथ से इशारा कर दिया कि वह छोटे क़द वाली ठिगनी हैं। ज़बान से यह नहीं का कि वह ठिगनी हैं। बल्कि हाथ से इशारा कर दिया तो नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमायाः ऐ आयशा! आज तुमने एक ऐसा अमल किया कि अगर इस अमल की बू और इसका ज़हर समुन्दर में डाल दिया जाये तो पूरे समुन्दर को बदबूदार ज़हरीला बना दे। अब आप अन्दाज़ा लगायें कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग़ीबत के मामूली इशारे की कितनी बुराई बयान फ़रमाई है, और फ़रमाया कि कोई शख़्स मुझे सारी दुनिया की दौलत लाकर दे दे तो भी मैं किसी की नक़ल उतारने को तैयार नहीं, जिसमें दूसरे का मज़ाक़ उड़ाना हो, जिसमें उसकी बुराई का पहलू निकलता हो।

(तिर्मीज़ी शरीफ़)

ग़ीबत से बचने की पाबन्दी करें

अब तो नक़ल उतारना फ़ुनूने लतीफ़ा के अन्दर दाख़िल है, और वह शख़्स तारीफ़ व तौसीफ़ के कलिमात का मुस्तहिक़ होता है जिसको दूसरे की नक़ल उतारने का फ़न आता हो, हालांकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह फ़रमा रहे हैं कि कोई शख़्स सारी दुनिया की दौलत भी लाकर दे दे तब भी मैं नक़ल उतारने को तैयार नहीं, इससे आप अन्दाज़ा कर सकते हैं कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कितने एहतिमाम से इन बातों से रोका है। मगर हम लोगों को मालूम नहीं क्या हो गया है कि हम शराब पीने को बुरा समझेंगे, ज़िनाकारी को बुरा समझेंगे, लेकिन ग़ीबत को बुरा नहीं समझते, इसको मां का दूध समझा हुआ है। कोई मज्लिस इससे ख़ाली नहीं, ख़ुदा के लिये इससे बचने की पाबन्दी करें।

ग़ीबत से बचने का तरीक़ा

इससे बचने का तरीक़ा यह है कि इसकी बुराई ज़ेहन में बिठा

के अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करें कि या अल्लाह! यह ग़ीबत बड़ा संगीन गुनाह है, मैं इससे बचना चाहता हूं लेकिन मज्लिसों में दोस्त व अहबाब और अ़ज़ीज़ व रिश्तेदारों से बातें करते हुए ग़ीबत की बातें भी हो जाती हैं। ऐ अल्लाह! मैं अपनी तरफ़ से इस बात का अ़ज़्म (पक्का इरादा) कर रहा हूं कि आइन्दा ग़ीबत नहीं करूंगा। लेकिन इस अ़ज़्म पर क़ायम और साबित रहना आपकी तौफ़ीक़ के बग़ैर मुम्किन नहीं, ऐ अल्लाह! अपनी रह्मत से मुझे इसकी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, ऐ अल्लाह! मुझे हिम्मत अ़ता फ़रमा, हौसला अ़ता फ़रमा दीजिये। अ़ज़्म करके यह दुआ़ कर लें। यह काम आज ही कर लें।

ग़ीबत से बचने का अ़हद करें

देखो कि जब तक इन्सान किसी काम का अ़ज़्म (अ़हद) और इरादा नहीं कर लेता, उस वक़्त तक दुनिया में कोई काम नहीं हो सकता, और दूसरी तरफ़ शैतान हर अच्छे काम को टलाता रहता है। अच्छा यह काम कल से शुरू करेंगे। जब कल आयी तो कोई उज़्र पेश आ गया, अब कहा कि अच्छा कल से शुरू करेंगे, और कल फिर आती ही नहीं, जो काम करना हो वह अभी कर लो, इसलिये कि जिस काम को टला दिया, वह टल गया।

देखिये! अगर किसी को रोज़गार न मिल रहा हो तो वह रोज़गार के लिये बेचैन होगा या नहीं? किसी पर अगर क़र्ज़ा हो तो वह क़र्ज़ा अदा करने के लिये बेचैन होगा या नहीं? अगर कोई बीमार है तो वह शिफ़ा हासिल करने तक बेचैन है या नहीं? तो फिर क्या वजह है कि हमारे अन्दर इस बात की बेचैनी क्यों नहीं कि हमसे यह बुरी आ़दत नहीं छूट रही है? बेचैनी पैदा करके दो रक्अ़त "सलातुल हाजः" पढ़ कर अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करो कि या अल्लाह मैं इस बुराई से बचना चाहता हुं। अपनी रह्मत से इस बुराई से बचा लीजिये, और हमें इस्तिक़ामत (अपने इस इरादे पर जमे रहना) अ़ता फ़रमा दीजिये। दुआ़ करने के बाद इस बात का इरादा करके अपने ऊपर पाबन्दी लगा लें।

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि अगर इससे

काम न चले तो अपने ऊपर जुर्माना मुक़र्रर कर लो, जैसे यह इरादा करें कि जब कभी ग़ीबत होगी तो दो रक्अ़त नफ़िल पढ़ूंगा। या इतनी रक़म सदक़ा करूंगा, इस तरह करने से धीरे धीरे इन्शा–अल्लाह इससे नजात हो जायेगी। और इस बीमारी से नजात हासिल करनी है, और इसकी बेचैनी ऐसी ही पैदा करनी है जैसे बीमार आदमी इलाज कराने के लिये बेचैन होता है। इसलिये कि यह भी एक बीमारी है, और बहुत ख़तरनाक बीमारी है, और जिस्मानी बीमारी से ज़्यादा ख़तरनाक है, इसलिये कि यह बीमारी जहन्नम की तरफ़ लेजा रही है। इसलिये ख़ुद भी इससे बचें, और अपने घर वालों को भी इससे बचायें। इसलिये कि ख़ास तौर से औ़रतों के अन्दर यह वबा बहुत ज़्यादा आ़म है, जहां पर औ़रतें बैठीं, बस किसी न किसी का ज़िक्र शुरू हो गया, और उसमें ग़ीबतें शुरू हो गयीं, और औ़रतें इस पर अ़मल कर लें, और इस गुनाह से बच जायें, तो घरानों की इस्लाह हो जाये। अल्लाह तआ़ला मुझे भी अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये और आपको भी अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

"चुग़ली" एक संगीन गुनाह

एक और गुनाह जो ग़ीबत से मिलता जुलता है, और इतना ही संगीन है। बल्कि इससे ज्यादा संगीन है, वह है "चुग़ली" अ़र्बी ज़बान में इसको "नमीमा" कहते हैं। उर्दू ज़बान में "नमीमा" का तर्जुमा चुग़ली से किया जाता है। लेकिन इसका यह सही तर्जुमा नहीं है। इसलिये कि "नमीमा" की हक़ीक़त यह है कि किसी शख़्स की कोई बुराई दूसरे के सामने इस नियत से की जाये, ताकि सुनने वाला उसको कोई तक्लीफ़ पहुंचाये, और यह शख़्स ख़ुश हो कि अच्छा हुआ उसको यह तक्लीफ़ पहुंची, यह है नमीमा की तारीफ़, और इसमें ज़रूरी नहीं है कि जो बुराई उसने बयान की हो वह हक़ीक़त में उसके अन्दर मौजूद हो, चाहे वह बुराई उसके अन्दर मौजूद हो या न हो, लेकिन तुमने सिर्फ़ इस वजह से उसको बयान किया ताकि दूसरा शख़्स उसको तक्लीफ़ पहुंचाये। यह "नमीमा" है।

"चुग़ली" ग़ीबत से बदतर है

कुरआन व हदीस में इसकी बहुत ज़्यादा मज़म्मत और बुराई बयान की गयी है। और यह ग़ीबत से भी ज़्यादा सख़्त इस वजह से है कि ग़ीबत में नियत का बुरा होना ज़रूरी नहीं कि जिसकी मैं ग़ीबत कर रहा हूं उसको कोई तक्लीफ़ और सदमा पहुंचे, लेकिन नमीमा में बद नियती का होना भी ज़रूरी है, इसलिये यह नमीमा दो गुनाहों का मज्मूआ है, एक तो इसमें ग़ीबत है, दूसरे यह कि दूसरे मुसलमान को तक्लीफ़ पहुंचाने की ख़्वाहिश और नियत भी है, इसलिये इसमें डबल गुनाह है, और इसलिये कुरआने करीम और हदीस में इस पर बड़ी सख़्त वओदें आयी हैं, चुनांचे फ़रमाया किः

"هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيْمٍ" (سورة القلم:١١)

काफ़िरों की सिफ़त बयान करते हुए फ़रमाया कि ये उस शख़्स की तरह चलते हैं, जो दूसरों के ऊपर ताने देता है, और चुग़लियां लगाता फिरता है, हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया किः

"لايدخل الجنة قتات" (بخاری شریف)

"क़त्तात" यानी चुग़ल ख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा, "क़त्तात" भी चुग़ल ख़ोर को कहते हैं।

क़ब्र के अज़ाब के दो सबब

और एक हदीस मशहूर है कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ तशरीफ़ लेजा रहे थे, रास्ते में एक जगह पर देखा कि दो क़ब्रें बनी हुई हैं। जब आप उन क़ब्रों के क़रीब पहुंचे तो आपने उनकी तरफ़ इशारा करते हुए सहाबा-ए-किराम से फ़रमाया किः

"انهما ليعذ بان"

इन दोनों क़ब्रों पर अज़ाब हो रहा है, अल्लाह तआला ने हुज़ूरे

अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर अ़ज़ाबे क़ब्र ज़ाहिर फ़रमा दिया था। यह अ़ज़ाबे क़ब्र ऐसी चीज़ है कि एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब क़ब्र के अन्दर अ़ज़ाब होता है तो अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल व करम और रह्मत से उस अ़ज़ाब की आवाज़ें हम लोगों से छुपा ली हैं, वर्ना अगर इस अ़ज़ाब की आवाज़ें हम लोग सुनने लगें तो कोई इन्सान ज़िन्दा न रह सके, और ज़िन्दगी में कोई काम न कर सके, इसलिये यह उसकी रह्मत है कि उन्हों ने उसको छुपा लिया है, लेकिन अल्लाह तआ़ला कभी कभी अपने किसी बन्दे पर इसको ज़ाहिर भी फ़रमा देते हैं। बहर हाल! हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ज़ाहिर हुआ कि उन दोनों पर अ़ज़ाब हो रहा है? फिर फ़रमायाः

इनको ऐसी दो बातों की वजह से अ़ज़ाब हो रहा है कि उन बातों से बचना उनके लिये कुछ मुश्किल नहीं था, अगर ये लोग चाहते तो आसानी से बच सकते थे, लेकिन ये बचे नहीं उसकी वजह से यह अ़ज़ाब हो रहा है। एक यह कि इनमें से एक साहिब पेशाब की छींटों से नहीं बचते थे, एह्तियात नहीं करते थे। जैसे ऐसी जगह पेशाब कर दिया कि जिसकी वजह से जिस्म पर छींटें आ गयीं। ख़ास तौर से उस ज़माने में ऊंट बकरियां चराने का बहुत रिवाज था। और हर वक़्त इन जानवरों के साथ रहना होता था। जिसकी वजह से अक्सर उनकी छींटें पड़ जाती थीं। उससे इहितयात न करने की वजह से अ़ज़ाब हो रहा है। (मुस्नद अह्मद)

पेशाब की छींटों से बचिये

यह बड़ी फ़िक्र की बात है, अल्हम्दु लिल्लाह हमारे यहां इस्लाम में पाकी के आदाब तफ़्सील के साथ सिखाये हैं कि किस तरह पाकी करनी चाहिये, लेकिन आज मग़्रिबी तहज़ीब के ज़ेरे असर ज़ाहिरी सफ़ाई सुथराई का तो बड़ा एह्तिमाम है, लेकिन शरीअ़त की पाकी के अह्काम की तरफ़ ध्यान नहीं। लैट्रिन ऐसे तरीक़ों से बनायी जाती हैं

कि उनमें छींटों से एहतियात नहीं होती।

और एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:

"استنزهوا عن البول، فان عامة عذاب القبر فيه" (سنن دارقطنی)

यानी पेशाब से बचो, इसलिये कि अक्सर क़ब्र का अ़ज़ाब पेशाब की वजह से होता है, पेशाब की छींटों का जिस्म पर लग जाना, कपड़ों पर लग जाने की वजह से क़ब्र का अ़ज़ाब होता है, इसलिये इसमें बड़ी एहतियात की ज़रूरत होती है।

"चुग़ली" से बचिये

और दूसरे साहिब को इसलिये अ़ज़ाब हो रहा है कि वह दूसरों की चुग़ली बहुत किया करते थे। इसकी वजह से क़ब्र में अ़ज़ाब हो रहा है। चूंकि इसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने चुग़ली को क़ब्र के अ़ज़ाब का सबब क़रार दिया इसलिये यह चुग़ली का अ़मल ग़ीबत से भी ज़्यादा सख़्त है। इसलिये कि इसमें बुरी नियत से दूसरों के सामने बुराई बयान करता है, ताकि दूसरा शख़्स उसको तक्लीफ़ पहुंचाये।

राज़ खोलना चुग़ली है

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि "अह्याउल उलूम" में फ़रमाते हैं कि दूसरों का कोई राज़ ज़ाहिर कर देना भी चुग़ली के अन्दर दाख़िल है। एक आदमी यह नहीं चाहता कि मेरी यह बात दूसरों पर ज़ाहिर हो, वह बात अच्छी हो या बुरी हो, इससे बहस नहीं। जैसे एक मालदार आदमी है, और वह अपनी दौलत दूसरों से छुपाना चाहता है और वह यह नहीं चाहता कि दूसरों को यह मालूम हो कि मेरे पास इतनी दौलत है, अब आपने किसी तरह सुनगुन लगा कर पता लगा लिया कि उसके पास इतनी दौलत है। अब हर शख़्स से यह कहते फिर रहे हैं कि उसके पास इतनी दौलत है। यह जो उसका राज़ ज़ाहिर कर दिया, यह चुग़ली के अन्दर दाख़िल है और हराम है।

या जैसे एक शख़्स ने अपने घरेलू मामले के अन्दर कोई प्लान या

मन्सूबा बना रखा है। आपने किसी तरह पता चला कर दूसरों के समाने बयान करना शुरू कर दिया, यह चुग़ली है। इसी तरह किसी क़िस्म का राज़ हो, उसकी इजाज़त के बग़ैर दूसरों पर ज़ाहिर करना चुग़ली के अन्दर दाख़िल है। एक हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:

"المجالس بالامانة" (ابوداؤد شریف)

मज्लिसों के अन्दर जो बात की जाती है वह भी अमानत है। जैसे किसी शख़्स ने आपको राज़दार समझ कर मज्लिस में आपसे एक बात कही अब वह बात जाकर आप दूसरों से नक़ल कर रहे हैं तो यह अमानत में ख़ियानत है। और यह भी चुग़ली के अन्दर दाख़िल है।

ज़बान के दो अहम गुनाह

बहर हाल ज़बान के गुनाहों में से आज दो अहम गुनाहों का बयान करना मक़्सूद था। ये दोनों गुनाह बड़े ज़बरदस्त और संगीन हैं। इनकी संगीनी आपने हदीसों के अन्दर सुनीं, लेकिन जितने ये संगीन हैं आज इनकी तरफ़ से उतनी ही बे परवाई और ग़फ़लत है। मज्लिसें इनसे भरी हुयी हैं, घर इनसे भरे हुये हैं, ज़बान कैंची की तरह चल रही है, रुकने का नाम नहीं लेती। ख़ुदा के लिये इसको लगाम दो और इसको क़ाबू करो, और इसको अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म के मुताबिक़ चलाने की फ़िक्र करो, वर्ना इसका अन्जाम यह है कि इसकी वजह से घर के घर तबाह हो रहे हैं। आपस में ना इत्तिफ़ाक़ियां हो रही हैं। फ़ितने हैं, दुश्मनियां हैं। ख़ुदा जाने कितने गुनाहों और फ़ितनों का ज़रिया है, और आख़िरत में तो इसकी वजह से जो अ़ज़ाब होने वाला है वह अपनी जगह है। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल और रह्मत से इसकी बुराई और ख़राबी समझने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, और इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

وآخردعوانا ان الحمد للہ رب العالمین

सोने के आदाब

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْماً كَثِيْرًا كَثِيْرًا۔ اَمَّا بَعْدُ:

सोते वक़्त की लम्बी दुआ

"عن البراء بن عازب رضی اللہ عنهما قال: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا اوىٰ الى فراشه نام على شقه الايمن، ثم قال:اللهم اسلمت نفسى اليك،ووجهت وجهى اليك، وفوضت امرى اليك، والجأت ظهرى اليك، رغبة ورهبة اليك، لا ملجأ ولا منجأمنك الااليك، آمنت بكتابك الذى انزلت وبنبيك الذى ارسلت" (بخاری شریف)

इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सोते वक़्त की दुआ सिखाई है, और सोने का तरीक़ा बताया है। कि जब बिस्तर पर जाओ तो किस तरह लेटो, किस तरह सोओ, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़्क़तें और रह्मतें इस उम्मत के लिये देखें कि एक एक चीज़ का तरीक़ा बता रहे हैं। जिस तरह मां बाप अपने बच्चे को एक एक चीज़ सिखाते हैं। इसी तरह नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक एक बात इस उम्मत को सिखाई है। एक और हदीस में इन्हीं सहाबी से रिवायत है कि:

"قال: قال لى رسول الله صلى الله عليه وسلم: اذا اتيت مضجعك فتوضأ وضوءك للصلاة، ثم اضطجع علىٰ شقك الايمن وقل" وذكر نحوه" (بخاری)

सोते वक़्त वुज़ू कर लें

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से फ़रमाया कि जब तुम

बिस्तर पर सोने के लिये जाने लगो तो वैसा ही वुज़ू कर लो जैसा कि नमाज़ के लिये वुज़ू किया जाता है। यह भी नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत है, कि आदमी वुज़ू करके सोये। अगर कोई शख़्स वुज़ू के बग़ैर सो जाये तो कोई गुनाह नहीं। इसलिये कि सोने के वास्ते वुज़ू करना कोई फ़र्ज़ नहीं, लेकिन सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सोने का अदब यह बताया कि सोने से पहले वुज़ू कर लो।

ये आदाब मुहब्बत का हक़ हैं

ये आदाब और मुस्तहब्बात जो सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाये हैं। ये अगरचे फ़र्ज़ व वाजिब तो नहीं, लेकिन इनके अन्वार व बरकतें बेशुमार हैं। हमारे हज़रत डा० अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि फ़राइज़ व वाजिबात अल्लाह जल्ल जलालुहू की अ़ज़्मत का हक़ हैं, और ये आदाब व मुस्तहब्बात अल्लाह जल्ल जलालुहू की मुहब्बत का हक़ हैं, और सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ मुहब्बत का हक़ हैं। जो आदाब आपने तल्क़ीन फ़रमाये हैं इन्सान को चाहिये कि उन आदाब को इख़्तियार करे, यह तो अल्लाह की रह्मत है कि उन्हों ने यह फ़रमा दिया कि अगर इनको इख़्तियार नहीं करोगे तो कोई गुनाह नहीं देंगे, वर्ना ये आदाब व मुस्तहब्बात अदा कराना मक़्सूद है। एक मोमिन बन्दा वे तमाम आदाब और मुस्तहब्बात बजा लाये जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कर गये, इसलिये जहां तक हो सके इनको इख़्तियार करना चाहिये।

दाहिनी करवट पर लेटें

बहर हाल! सोने से पहले वुज़ू करना अदब है, अब अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अह्काम की हिक्मत की इन्तिहा को कौन पहुंच सकता है। ख़ुदा मालूम इस हुक्म में क्या क्या अन्वार व बरकतें पौशीदा हैं। इसके बाद सोने का तरीक़ा बता दिया कि दायीं करवट पर लेटो, यह भी आदाब में है कि इन्सान जब

सोने के लिये बिस्तर पर लेटे तो पहले दायीं करवट पर लेटे, बाद में अगर ज़रूरत हो तो करवट बदल दे, वह अदब के ख़िलाफ़ नहीं है। और लेट कर यह अल्फ़ाज़ ज़बान से अदा करो, और अल्लाह तआला से राबता और ताल्लुक़ क़ायम करो, और अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करो, और यह दुआ पढ़ो:

"اللهم اسلمت نفسی الیك ووجهت وجهی الیك، و فوضت امری الیك، والجأت ظهری الیك، رغبةً ورهبةً الیك، لا ملجأ ولا منجأ الاالیك، آمنت بکتابك الذی انزلت، ونبیك الذی ارسلت"

अल्लाहुम्-म अस्लम्तु नफ़्सी इलै-क व वज्जह्तु वज्ही इलै-क व फ़व्वज़्तु अम्री इलै-क व अल्जअ्तु ज़ह्री इलै-क रग़्बतंव्-व रह्-बतन् इलै-क ला मल्ज-अ वला मन्ज-अ मिन्-क इल्ला इलै-क आमन्तु बि-किताबि-कल्लज़ी अन्ज़ल्-त व नबिय्यि-कल्लज़ी अर्सल्-त,

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान तुझे सौंप दी और अपना रुख़ तेरी तरफ़ कर दिया और अपना मामला तेरे सुपुर्द कर दिया, और अपनी पीठ तेरी तरफ़ रख दी, तेरी रग़बत और ख़ौफ़ से तुझ से, तेरे सिवा कोई ठिकाना और पनाह नहीं, तेरी इस किताब पर ईमान लाया जो तूने उतारी, और नबी पर जिसको तूने भेजा।

दिन के मामलात अल्लाह के सुपुर्द कर दो

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस दुआ में ऐसे अजीब व ग़रीब अल्फ़ाज़ लाये हैं कि आदमी इन अल्फ़ाज़ पर क़ुरबान हो जाये, फ़रमाया कि ऐ अल्लाह! मैंने अपने नफ़्स को आपके ताबे बना दिया, इसका तर्जुमा यह भी कर सकते हैं कि ऐ अल्लाह! मैंने अपने नफ़्स को आपके हवाले कर दिया, और मैंने अपना रुख़ आपकी तरफ़ कर दिया, और ऐ अल्लाह! मैंने अपने सारे मामलात आपको सौंप दिये।

मतलब यह है कि सारा दिन दौड़ धूप में लगा रहा। कभी रिज़्क़ की तलाश में, कभी नौकरी की तलाश में, कभी तिजारत में, कभी उधोग में, और कभी किसी और धन्धे में लगा रहा, यहां तक कि दिन ख़त्म हो गया। सारी कार्रवाइयां करके घर पहुंच गया, और अब सोने के लिये

लेटने लगा। और इन्सान की फ़ितरत है कि जब वह रात को सोने के लिये बिस्तर पर लेटता है, तो जो कुछ दिन में हालात गुज़रे हैं, उसके ख़्यालात दिल पर छा जाते हैं। और उसको यह फ़िक्र और तश्वीश लाहिक़ होती है कि खुदा जाने कल क्या होगा? जो काम अधूरा छोड़ कर आया हूं, उसका क्या बनेगा? दुकान छोड़ कर आया हूं कहीं रात को चोरी न हो जाये। ये सब अन्देशे और तश्वीशें रात को सोते वक़्त इन्सान को होते हैं, और यह अन्देशे दिल को सताते हैं, इसलिये दुआ कर लो कि या अल्लाह दिन में जो काम मुझ से हो सके मैं करता रहा, अब तो ये सारे मामलात मैंने आपके सुपुर्द कर दिये हैं। दिन में जो कुछ कर सकता था वह कर लिया, अब मेरे बस में इसके सिवा कुछ नहीं कि आप ही की तरफ़ रुजू करूं, और आप ही से मांगूं, कि या अल्लाह! जो मामलात मैंने किये हैं उनको अन्जाम तक पहुंचा दीजिये।

सुकून और राहत का ज़रिया "सौंपना" है

यही "सौंपना" है और इसी का नाम तवक्कुल है कि अपने करने का जो काम था वह कर लिया, अपने बस में जितना था वह कर गुज़रे, और उसके बाद अल्लाह के हवाले कर दिया कि या अल्लाह अब आपके हवाले है। इस दुआ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सिखा दिया कि अब तुम सोने के लिये जा रहे हो तो इन ख़्यालात और परेशानियों को दिल से निकाल दो, और अल्लाह के हवाले कर दो।

सुपुर्दम बतो माया-ए-ख़ेश रा
तू दानी हिसाबे कमो बेश रा

सुपुर्दगी और "तफ़्वीज़" (यानी सौंपना) के लुत्फ़ और इसके कैफ़ के मज़े का अन्दाज़ा इन्सान को उस वक़्त तक नहीं होता, जब तक यह सुपुर्दगी और तफ़्वीज़ की हालत और कैफ़ियत इन्सान पर गुज़रती नहीं। याद रखो दुनिया में आफ़ियत, इत्मीनान और सुकून का कोई रास्ता सुपुर्दगी और तवक्कुल के बग़ैर हासिल नहीं हो सकता। बस इन्सान अपना सारा मामला अल्लाह तआ़ला के सुपुर्द कर दे, हर काम

के लिये दौड़ धूप की एक हद होती है, उस हद से आगे इन्सान कुछ नहीं कर सकता। एक मुसलमान और काफ़िर में यही फ़र्क़ है कि एक काफ़िर एक काम के लिये दौड़ धूप करता है, मेहनत करता है, कोशिश करता है, जिद्दोजोहद करता है और फिर सारा भरोसा उसी कोशिश पर करता है। जिसका नतीजा यह होता है कि हर वक़्त तश्वीशों और अन्देशों में मुब्तला रहता है, और जिस शख़्स को अल्लाह तआ़ला "तवक्कुल" और "सुपुर्दगी" की नेमत अ़ता फ़रमाते हैं वह अल्लाह मियां से कहता है कि या अल्लाह! मेरे बस में इतना काम था, जो मैंने कर लिया, अब आगे आपके हवाले है और आपका जो फ़ैसला है उस पर मैं राज़ी हूं। याद रखो, जब इन्सान के अन्दर यह "तफ़्वीज़" यानी सुपुर्दगी की सिफ़त पैदा होती है तो दुनिया के अन्दर उसको ना–क़ाबिले बर्दाश्त परेशानी नहीं आती। बहर हाल, सोते वक़्त यह दुआ़ कर लो कि या अल्लाह, मैंने तमाम मामलात आपके सुपुर्द और आपके हवाले कर दिये।

पनाह की जगह एक ही है

आगे फ़रमायाः

"والجأت ظهری الیك، رغبةً ورهبةً الیك، لا ملجأ ولا منجأ منك الا الیك"

और मैंने अपने आपको आपकी पनाह हासिल करने वाला बना दिया, यानी मैंने आपकी पनाह पकड़ी, आपकी पनाह में आ गया, और अब सारी दुनिया के वसायल और अस्बाब सब से ख़ुद को अलग कर लिया, अब सिवाये आपके मेरा कोई सहारा नहीं, और इस हालत में हूं कि आपकी तरफ़ रग़बत भी है। आपकी रह्मत की उम्मीद भी है कि आप रह्मत का मामला फ़रमायेंगे, लेकिन साथ में ख़ौफ़ भी है। यानी बुरे आमाल का डर भी है कि कहीं ऐसा न हो कि किसी बात पर पकड़ हो जाये, इस हालत में मैं लेट रहा हूं। आगे क्या अ़जीब व ग़रीब जुम्ला फ़रमायाः

"لا ملجأ ولا منجأ منك الا الیك"

कि आपसे बच कर जाने की कोई और जगह सिवाये आपके नहीं

है कि खुदा न करे अगर आपका क़हर आ जाये, या आपका अ़ज़ाब आ जाये तो हम बच कर कहां जायें। इसलिये कि कोई और पनाह की जगह नहीं, फिर लौट कर आपके ही पास आना पड़ेगा कि ऐ अल्लाह अपने ग़ज़ब और क़हर से बचा लीजिये।

तीर चलाने वाले के पहलू में बैठ जाओ

एक बुज़ुर्ग ने एक मर्तबा फ़रमाया कि यह तसव्वुर करो कि एक ज़बरदस्त क़ुव्वत है, और उसके हाथ में कमान है, और यह पूरा आसमान उस कमान का दायरा है, और ज़मीन उसकी तांत है, और हादसे और मुसीबतें उस कमान से चलने वाले तीर हैं। अब यह देखो कि इन हादसों के तीरों से बचने का रास्ता क्या है? कहां जायें? फिर ख़ुद ही उन बुज़ुर्ग ने जवाब दिया कि इन तीरों से बचने का तरीक़ा यह है कि ख़ुद उसी तीर चलाने वाले के पास जाकर खड़ा हो जाये, इन तीरों से बचने का कोई और रास्ता नहीं है, यही मफ़्हूम है इन अल्फ़ाज़ का कि:

"لا ملجأ ولامنجأ منك الا اليك"

एक नादान बच्चे से सबक़ लो

मेरे एक भाई हैं उनका एक पोता है। एक दिन उन्हों ने देखा कि उस पोते की मां उस पोते को किसी बात पर मार रही हैं, लेकिन अ़जीब मन्ज़र यह देखा कि मां जितना मारती जा रही है बच्चा उसी मां की गोद में चढ़ता जा रहा है। बजाये इसके कि वह वहां से भागे, वह तो और गोद के अन्दर घुस रहा है, और मां से लिपटा जा रहा है। यह बच्चा ऐसा क्यों कर रहा है? इसलिये कि वह बच्चा जानता है कि उस मां की पिटाई से बचने का रास्ता मां ही के पास है, और इसी मां ही के पास जाकर क़रार और सुकून मिलेगा, इस मां की गोद के अ़लावा कोई और सुकून और क़रार की जगह भी नहीं है। उस नादान बच्चे को तो इतनी समझ है, वह जानता है कि कहीं और क़रार नहीं मिलेगा।

यही समझ और शऊर नबी करीम सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम हमारे अन्दर भी पैदा करना चाहते हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से कोई मुसीबत और तक्लीफ़ आई है, तो पनाह भी उसी के पास है, उसी से मांगो कि या अल्लाह इस मुसीबत और तक्लीफ़ को दूर फ़रमा दीजिये, आपके अ़लावा कोई पनाह की जगह भी नहीं, इसलिये आप ही से आपके अ़ज़ाब से पनाह मांगते हैं।

सीधे जन्नत में जाओगे

आगे फ़रमायाः

"آمنت بكتابك الذى انزلت ونبيك الذى ارسلت"

यानी मैं ईमान लाया आपकी किताब पर जो आपने नाज़िल की, और आपके नबी पर जो आपने भेजा, यानी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० पर, और फिर फ़रमाया कि ये कलिमात सोने से पहले कहो, और ये कलिमात तुम्हारी आख़री गुफ़्तगू हो, उसके बाद कोई और बात न करो, बल्कि सो जाओ।

हमारे हज़रत डा० साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि रात को सोते वक़्त चन्द काम कर लिया करो। एक तो दिन भर के गुनाहों से तौबा कर लिया करो। बल्कि सारे पिछले गुनाहों से तौबा कर लिया करो। और वुज़ू कर लिया करो। और यह ऊपर ज़िक्र हुई दुआ़ पढ़ लिया करो, इस दुआ़ के ज़रिये ईमान की तज्दीद हो गयी। अब उसके बाद दाहिनी करवट पर सो जाओ, इसका नतीजा यह होगा कि सारी नींद इबादत बन गयी। और अगर इस हालत में रात को सोते वक़्त मौत आ गयी तो इन्शा-अल्लाह सीधे जन्नत में जाओगे, अल्लाह ने चाहा तो कोई रुकावट न होगी।

सोते वक़्त की मुख़्तसर दुआ़

"وعن حذيفة رضى الله تعالىٰ عنه قال: كان النبى صلى الله عليه وسلم اذا اخذ مضجعه من الليل وضع يده تحت خده ثم يقول: اللهم باسمك اموت واحيا" واذا استيقظ قال "الحمد لله الذى احيانا بعد ما اماتنا واليه النشور"

(بخارى شريف)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। फ़रमाते हैं कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब रात के वक़्त सोते वक़्त अपने बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाते, तो अपना हाथ अपने रुख़्सार (गाल) के नीचे रख लेते थे, और फिर यह दुआ पढ़ते:

"اللهم باسمك اموت واحيا"

"अल्लाहुम्-म बिइस्मि-क अमूतु व अह्या"

ऐ अल्लाह! मैं आपके नाम से मरता हूं और आपके नाम से जीता हूं।

नींद एक छोटी मौत है

इससे पहले जो हदीस गुज़री उसमें लम्बी दुआ थी, और इस हदीस में मुख़्तसर दुआ मन्क़ूल है। बहर हाल, सोते वक़्त दोनों दुआयें पढ़ना साबित है, इसलिये कभी एक दुआ पढ़ ली जाये, और कभी दूसरी दुआ पढ़ ली जाये, अगर दोनों दुआओं को जमा कर लिया जाये तो और भी अच्छा है, और यह दूसरी दुआ तो बहुत ही मुख़्तसर है, इसको याद रखना भी आसान है, इस मुख़्तसर दुआ में सोते वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बात की तरफ़ तवज्जोह दिला दी कि नींद भी एक छोटी मौत है। इसलिये कि नींद में इन्सान दुनिया और उसकी चीज़ों से बेख़बर हो जाता है। जैसा कि मुर्दा बेख़बर होता है। इसलिये इस छोटी मौत के वक़्त उस बड़ी मौत का एहसास किया जाये। उसको याद किया जाये। यह छोटी नींद तो मुझे रोज़ाना आती है और आ़म तौर पर मैं इससे बेदार हो जाता हूं, लेकिन एक नींद आने वाली है, जिस से बेदारी क़ियामत के दिन होगी, उसका ख़्याल किया जाये। उसको याद किया जाये, और अल्लाह तआ़ला से उसके बारे में मदद मांगी जाये। कि ऐ अल्लाह! मैं आप ही के नाम पर मरता हूं और जीता हूं।

नींद से जागने की दुआ

और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सोने से बेदार होते (जागते) थे तो यह दुआ पढ़ते थे:

"الحمد لله الذی احیانا بعد ما اماتنا والیه النشور"

"अल्हम्दु लिल्लाहिल्–लज़ी अह्याना बअ्–द मा अमा–तना व इलैहिन्–नुशूर"

यानी ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है कि आपने हमें मौत के बाद ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाई, और आख़िर कार उसकी तरफ़ एक दिन लौट कर जाना है। यानी आज यह मौत आयी वह छोटी मौत थी, इससे बेदारी हो गयी, ज़िन्दगी की तरफ़ वापसी हो गयी, लेकिन आख़िर कार एक ऐसी नींद आने वाली है, जिसके बाद वापसी अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ होगी, इस दुनिया की तरफ़ नहीं होगी।

मौत को कस्रत से याद करो

क़दम क़दम पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दो बातें सिखा रहे हैं। एक अल्लाह के साथ ताल्लुक़, और अल्लाह की तरफ़ रुजू। यानी क़दम क़दम पर अल्लाह तआ़ला को याद करो, क़दम क़दम पर अल्लाह का ज़िक्र करो, और दूसरे आख़िरत की तरफ़ तवज्जोह दिलाई जा रही है कि ज़िन्दगी और मौत अल्लाह तआ़ला के हाथ में है, इसलिये कि जब रोज़ाना इन्सान सोते वक़्त और जागते वक़्त यह दुआ़यें पढ़ेगा तो उसको एक न एक दिन मौत और मौत के बाद पेश आने वाले वाक़िआ़त का ध्यान ज़रूर आयेगा। कब तक यह ध्यान और ख़्याल नहीं आयेगा, कब तक ग़फ़लत में मुब्तला रहेगा। इसलिये ये दुआ़यें आख़िरत की फ़िक्र पैदा करने के लिये बड़ी अक्सीर हैं। हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

"اکثروا ذکرها ذم اللذات الموت" (ترمذی شریف)

यानी उस चीज़ का ज़िक्र कस्रत से करो जो तमाम लज़्ज़तों को ख़त्म कर देने वाली है यानी मौत। इसलिये कि मौत को याद करने से मौत के बाद अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर हाज़िर होने का एहसास ख़ुद बख़ुद पैदा होता है। हमारी ज़िन्दगियों में जो ख़राबियां आ गयी हैं, वे ग़फ़लत की वजह से आयी हैं। मौत से ग़फ़लत है, अल्लाह तआ़ला के

सामने जवाब देही के एहसास से ग़फ़लत है, अगर यह ग़फ़लत दूर हो जाये, और यह बात ख़्याल में बैठ जाये कि एक दिन अल्लाह तआला के सामने पेश होना है, तो फिर इन्सान अपने हर क़ौल और फ़ेल को सोच सोच कर करेगा। कि कोई काम अल्लाह तआला की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ न हो जाये। इसलिये इन दुआओं को ख़ुद भी याद करना चाहिये और अपने बच्चों को भी बचपन ही में याद करा देना चाहिये।

उल्टा लेटना पसन्दीदा नहीं

"عن بعیش بن طحفة الغفاری رضی اللہ تعالیٰ عنہما قال قال ابی:بینما انامضطجع فی المسجد علیٰ بطنی اذا رجل یحرکنی برجله فقال: ان هذه ضجعة یبغضهااللہ قال:فنظرت فاذا رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم"

(ابوداؤد شریف)

हज़रत बअ़ीश बिन तह्फ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद माजिद ने मुझे यह वाक़िआ सुनाया कि मैं एक दिन मस्जिद में पेट के बल उल्टा लेटा हुआ था, अचानक मैंने देखा कि कोई शख़्स अपने पांव से मुझे हर्कत दे रहा है, और साथ साथ यह कह रहा है कि यह लेटने का वह तरीक़ा है जिसे अल्लाह तआला ना पसन्द फ़रमाते हैं, जब मैंने मुड़ कर देखा तो वह कहने वाले शख़्स हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम थे। गोया कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस तरीक़े से लेटने को पसन्द नहीं फ़रमाया, यहां तक कि पांव से हर्कत देकर उनको इस पर तंबीह फ़रमाई, इससे मालूम हुआ कि बिला ज़रूरत पेट के बल उल्टा लेटना मक्रूह है और अल्लाह तआला को भी ना पसन्द है, और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भी ना पसन्द है।

वह मज्लिस हस्रत का सबब होगी

"وعن ابی هریرة رضی اللہ عنه عن رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم قال: من قعد مقعدًا لم یذکراللہ تعالیٰ فیه، کانت علیه من اللہ ترة، ومن اضطجع مضجعًا لا یذکر اللہ فیه کانت علیه من اللہ ترة" (ابوداؤد شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया, जो शख़्स किसी ऐसी मज्लिस में बैठे जिसमें अल्लाह को याद न किया गया हो, अल्लाह का ज़िक्र उस मज्लिस में न आया हो, न अल्लाह का नाम लिया गया हो, तो आख़िरत में वह मज्लिस उसके लिये हस्रत का सबब बनेगी। यानी जब आख़िरत में पहुंचेगा, उस वक़्त हस्रत करेगा कि काश! मैं उस मज्लिस में न बैठा होता, जिसमें अल्लाह का नाम नहीं लिया गया, इसलिये फ़रमाया कि मुसलमान की कोई मज्लिस अल्लाह के ज़िक्र से ख़ाली न होनी चाहिये।

हमारी मज्लिसों का हाल

अब ज़रा हम लोग अपने गरेबान में मुंह डाल कर देखें, अपने हालात का जायज़ा लेकर देखें कि हमारी कितनी मज्लिसें, कितनी महफ़िलें ग़फ़लत की नज़र हो जाती हैं, और उनमें अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र, अल्लाह का नाम, या अल्लाह के दीन का कोई तज़्किरा उनमें नहीं होता। सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि क़ियामत के दिन ऐसी तमाम मज्लिसें वबाल और हस्रत का ज़रिया होंगी। हमारे यहां मज्लिसें जमाने का सिलसिला चल पड़ा है, इसी मज्लिसें जमाने ही को मक़्सद बनाकर लोग बैठ जाते हैं, और फ़ुज़ूल बातें करने के लिये बाक़ायदा महफ़िल जमाई जाती है, जिसका मक़्सद गप–शप करना होता है, यह गप–शप की मज्लिस बिल्कुल फ़ुज़ूल, बेकार और बेमक़्सद और समय को ज़ाया करने वाली बात है, और जब मक़्सद सही नहीं होता बल्कि सिर्फ़ वक़्त गुज़ारी मक़्सूद होती है, तो ज़ाहिर है कि ऐसी मज्लिस में अल्लाह तबारक व तआ़ला और अल्लाह के दीन से ग़फ़लत तो होगी, और इसका नतीजा यह होगा कि उस मज्लिस में कभी किसी की ग़ीबत होगी, कभी झूठ होगा, कभी किसी का दिल दुखाना होगा। किसी का अपमान होगा, किसी का मज़ाक़ उड़ाया जायेगा। ये सारे काम उस मज्लिस में होंगे। इसलिये कि जब अल्लाह तआ़ला से ग़ाफ़िल हो गये, तो उस ग़फ़लत के नतीजे

में वह मज्लिस बहुत से गुनाहों का मज्मूआ बन जायेगी, इस बात को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि जिस मज्लिस में अल्लाह का ज़िक्र न किया जाये तो वह मज्लिस क़ियामत के दिन हस्रत का सबब बनेगी, हाय हमने वह वक़्त ज़ाया कर दिया, क्योंकि आख़िरत में तो एक एक लम्हे की क़ीमत होगी, एक एक नेकी की क़ीमत होगी। जब इन्सान का हिसाब व किताब होगा, उस वक़्त तमन्ना करेगा कि काश! एक नेकी मेरे नामा-ए-आमाल में बढ़ जाती। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो हम पर मां बाप से ज़्यादा शफ़ीक़ और मेहरबान हैं, वह इस तरफ़ तवज्जोह दिला रहे हैं कि इसके पहले कि वह हस्रत का वक़्त आये, अभी से इस बात का ध्यान कर लो कि ये मज्लिसें हस्रत बनने वाली हैं।

तफ़रीह व दिल्लगी की बातें करना जायज़ है

लेकिन एक बात अर्ज़ कर दूं कि इसका मतलब यह नहीं है कि आदमी बस खुश्क और खुरदुरा होकर रह जाये, और किसी से हंसी मज़ाक़ और शगुफ़्तगी की बात न करे, यह मक़्सद हरगिज़ नहीं, क्योंकि हुज़ूर नबी-ए-करीम सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मन्क़ूल है कि हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम आपके पास बैठते तो कभी आपसे तफ़रीह व मज़ाक़ की बातें भी किया करते थे, बल्कि खुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:

"روحوا القلوب ساعة فساعة" (كنزالعمال)

यानी कभी कभी अपने दिलों को आराम और राहत दिया करो। इसलिये कभी कभी हंसना बोलना और मज़ाक़ व दिल्लगी की बातें करने में कुछ हर्ज नहीं, यहां तक कि सहाबा-ए-किराम फ़रमाते हैं कि कभी कभी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में बैठे होते तो ज़माना-ए-जाहिलिय्यत (इस्लाम से पहले) के वाक़िआत भी कभी कभी बयान करते कि हम ज़माना-ए-जाहिलिय्यत में ऐसी ऐसी हरकतें किया करते थे, और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सुनते रहते, और कभी कभी तबस्सुम भी फ़रमाते थे। लेकिन उन मज्लिसों में इस बात का एहतिमाम था कि कोई गुनाह का काम न हो, ग़ीबत और दिल दुखाना न हो। दूसरे यह कि इन मज्लिसों के बावजूद दिल की लौ अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ लगी हुई है, अल्लाह के ज़िक्र से वह मज्लिस ख़ाली नहीं थी, जैसे उस मज्लिस में जाहिलिय्यत के ज़माने का ज़िक्र किया, और फिर इस पर अल्लाह का शुक्र अदा किया कि अल्लाह का शुक्र है कि उसने हमें इस ज़लालत और गुमराही और अंधेरे से निकाल दिया। इसलिये यह तरीक़ा था हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा-ए-किराम का, वे इसके मिस्दाक़ थे कि:

"दस्त बकार व दिल बयार"

कि हाथ अपने काम में मश्गूल है, ज़बान से दूसरी बातें निकल रही हैं, और दिल की लौ भी अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ लगी हुई है।

हुज़ूरे पाक की जामे शान

यह बात कहने को तो आसान है, लेकिन मश्क़ से यह चीज़ हासिल होती है। हज़रत मौलाना थानवी रह्मतुल्लाहि अलैहि का यह इरशाद मैंने अपने शैख़ हज़रत डा० साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि से कई बार सुना कि "यह बात समझ में नहीं आती थी कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वह ज़ाते बाला सिफ़ात जिसका हर आन अल्लाह जल्ल शानुहू से राबता क़ायम है, "वही" आ रही है, फ़रिश्ते नाज़िल हो रहे हैं, और अल्लाह तआला के साथ गुफ़्तगू का शर्फ़ हासिल हो रहा है, ऐसे बुलन्द मक़ामात पर जो हस्ती फ़ायज़ है, वह अपने घर वालों और बीवी बच्चों के साथ दिल्लगी कैसे कर लेते हैं? वह अपने घर वालों से दुनिया की बातें कैसे कर लेते हैं? जब्कि हर वक़्त हुज़ूरी का यह आलम है, मगर रात के वक़्त हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को ग्यारह औरतों की कहानी सुना रहे हैं कि ग्यारह औरतें थीं। उन औरतों ने यह मुआहदा किया कि हर औरत अपने

शौहर की कैफ़ियत बयान करे कि उसका शौहर कैसा है? अब हर औरत ने अपने शौहर का पूरा हाल बयान किया कि मेरा शौहर ऐसा है, अब यह सारा वाक़िआ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को सुना रहे हैं। (शमाइले तिर्मिज़ी)

बहर हाल! हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि यह बात पहले समझ में नहीं आती थी कि जिस ज़ाते ग्रामी का अल्लाह तआ़ला से इस दर्जा ताल्लुक़ क़ायम हो वह हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा और दूसरी पाक बीवियों के साथ हंसी और दिल्लगी की बातें कर लेते हैं? लेकिन बाद में फ़रमाया कि अल्हम्दु लिल्लाह, अब समझ में आ गया कि ये दोनों बातें एक साथ जमा हो सकती हैं, कि दिल्लगी भी हो रही है, और अल्लाह तबारक व तआ़ला के साथ ताल्लुक़ भी क़ायम है। इसलिये कि वह दिल्लगी और हंसी मज़ाक़ भी हक़ीक़त में अल्लाह तआ़ला के लिये हो रही है। और दिल में यह ख़्याल है कि मेरे ऊपर अल्लाह तआ़ला ने इनका यह हक़ वाजिब किया है कि इनका दिल ख़ुश करूं। इस हक़ की वजह से यह दिल्लगी हो रही है। तो अल्लाह तबारक व तआ़ला के साथ राबता भी क़ायम है, और इस दिल्लगी की वजह से वह राबता न टूटता है और न कमज़ोर होता है। उसमें कोई नुक़्स नहीं आता, बल्कि उस ताल्लुक़ में और ज़्यादा इज़ाफ़ा होता है।

मुहब्बत के इज़्हार पर अज्र व सवाब

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह्मतुल्लाहि अ़लैहि से किसी ने पूछा कि हज़रत! अगर मियां बीवी आपस में बातें करते हैं, और एक दूसरे से मुहब्बत का इज़्हार करते हैं, तो उस वक़्त उनके ज़ेहनों में इस बात का तसव्वुर भी नहीं होता कि यह अल्लाह का हुक्म है, इस वास्ते कर रहा हूं। तो क्या इस पर भी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अज्र मिलता है? इमाम अबू हनीफ़ा रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि हां, अल्लाह तआ़ला इस पर भी अज्र अ़ता फ़रमाते हैं, और जब एक मर्तबा दिल में यह इरादा कर लिया कि मैं इन तमाम ताल्लुक़ात का हक़ अल्लाह के लिये अदा कर रहा हूं। अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ अदा कर रहा हूं

तो अगर हर हर बार में इस बात का ध्यान और ख़्याल भी न हो, तो जब एक बार जो नियत करली गई है, इन्शा–अल्लाह वह भी काफ़ी है।

हर काम अल्लाह की रिज़ा की ख़ातिर करो

इसलिये हमारे हज़रत डा० अब्दुल हई रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़र्माया करते थे कि जब तुम सुबह को जागो, तो नमाज़ के बाद तिलावते कुरआन और ज़िक्र व अज़्कार और मामूलात से फ़ारिग़ होने के बाद एक मर्तबा अल्लाह से यह अ़हद कर लो कि:

"ان صلاتی ونسکی ومحیای ومماتی لله رب العالمین" (سورة انعام:١٦٢)

ऐ अल्लाह! आज दिन भर मैं जो काम करूंगा, वह आपकी रिज़ा की ख़ातिर करूंगा। कमाऊंगा तो आपकी रिज़ा की ख़ातिर, घर में जाऊंगा तो आपकी रिज़ा की ख़ातिर, बच्चों से बात करूंगा तो आपकी रिज़ा की ख़ातिर, ये सब काम मैं इसलिये करूंगा कि उनके हुकूक़ आपने मेरे साथ वाबस्ता कर दिये हैं। और जब एक मर्तबा यह नियत कर ली तो अब ये दुनिया के काम नहीं हैं, बल्कि ये सब दीन के काम हैं, और अल्लाह की रिज़ा के काम हैं। इन कामों से अल्लाह तआ़ला से ताल्लुक़ ख़त्म नहीं होता, बल्कि वह ताल्लुक़ और ज़्यादा मज़बूत हो जाता है।

हज़रत मज्ज़ूब और अल्लाह की याद

हज़रत हकीमुल रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के जो तर्बियत याफ़्ता हज़रात थे, अल्लाह तआ़ला ने उनको भी यही सिफ़त अ़ता फ़रमाई थी। चुनांचे मैंने अपने वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि से कई बार यह वाकिआ़ सुना कि हज़रत ख़्वाजा अ़ज़ीज़ुल हसन साहिब मज्ज़ूब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि जो हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के बड़े ख़ुलफ़ा में से थे। एक मर्तबा वह और हम लोग अमृतसर में हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद हसन साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के मदरसे में जमा हो गये, उस वक़्त आम का मौसम था, रात को खाने के बाद सब लोग मिल कर आम खाते रहे, और आपस में बे–तकल्लुफ़ी की बातें भी होती रहीं, हज़रत मज्ज़ूब

साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि चूंकि शायर भी थे इसलिये उन्हों ने बहुत से शेर सुनाये, तक़रीबन एक घन्टा इसी तरह गुज़र गया कि शेर व शायरी और हंसी मज़ाक़ की बातें होती रहीं, उसके बाद हज़रत मज्ज़ूब साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि ने हमसे अचानक यह सवाल किया कि देखो, हम सब एक घन्टे से ये बातें वग़ैरह कर रहे हैं। यह बताओ कि तुम में से किस किस को अल्लाह तआला के ज़िक्र और याद से ग़फ़लत हुई? हमने कहा कि हम सब एक घन्टे से इन्हीं बातों में ख़ुश–गप्पियों में लगे हुए हैं। इसलिये सब ही अल्लाह के ज़िक्र से ग़फ़लत में हैं, इस पर हज़रत ख़्वाजा साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि अल्लाह का फ़ज़्ल व करम है कि मुझे इस पूरे अर्से (समय) में अल्लाह की याद और उसके ज़िक्र से ग़फ़लत नहीं हुई। देखिये, हंसी मज़ाक़ भी हो रहा है, दिल्लगी की बातें भी हो रही हैं, शेर भी सुनाये जा रहे हैं, और शेर भी सादा अन्दाज़ में नहीं, बल्कि तरन्नुम के साथ शेर सुनाये जा रहे हैं, कभी कभी शेर व शयरी में घन्टों गुज़ार देते थे, लेकिन वह फ़रमा रहे हैं कि अल्हम्दु लिल्लाह मुझे अल्लाह की याद से ग़फ़लत नहीं हुई, इस पूरी मुद्दत में दिल अल्लाह तआला की तरफ़ लगा रहा।

यह कैफ़ियत मश्क़ के बग़ैर हासिल नहीं हो सकती, जब अल्लाह तआला अपनी रह्मत से इस कैफ़ियत का कोई हिस्सा हम लोगों को अता फ़रमा दे, उस वक़्त मालूम होगा कि यह कितनी बड़ी नेमत है।

दिल की सूई अल्लाह की तरफ़

मैंने अपने वालिद साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि का एक ख़त देखा जो हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अलैहि के नाम लिखा था, हज़रत वालिद साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि ने उस ख़त में लिखा था कि "हज़रत मैं अपने दिल की यह कैफ़ियत मह्सूस करता हूं कि जिस तरह क़ुतुबनुमा की सूई हमेशा उत्तर की तरफ़ रहती है, इसी तरह अब मेरे दिल की यह कैफ़ियत हो गयी है कि चाहे कहीं पर भी काम कर रहा हूं, चाहे मदरसे में रहूं या घर में हूं या दुकान पर हूं या बाज़ार में हूं, लेकिन हमेशा ऐसा मह्सूस होता है कि दिल की सूई "थाना भवन"

की तरफ़ है"।

अब हम लोग इस कैफ़ियत को उस वक़्त तक क्या समझ सकते हैं जब तक अल्लाह तबारक व तआला अपने फ़ज़्ल से हम लोगों को अता न फ़रमा दे। लेकिन कोशिश और मश्क़ से यह चीज़ हासिल हो जाती है कि चलते फिरते, उठते बैठते इन्सान अल्लाह तआला का ज़िक्र करता रहे, अल्लाह तआला के सामने हाज़री का एहसास होता रहे, तो फिर आहिस्ता आहिस्ता यह कैफ़ियत हासिल हो जाती है कि ज़बान से दिल्लगी की बातें हो रही हैं, मगर दिल की सूई अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ लगी हुई है, अल्लाह तआला यह कैफ़ियत अता फ़रमा दे, आमीन।

दिल अल्लाह तआला ने अपने लिये बनाया है

ये सारी दुआयें जो हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तल्क़ीन फ़रमा रहे हैं, इन सब का असल मक़्सूद यह है कि जिस किसी काम में तुम लगे हुए हो, जिस हालत में भी तुम हो, मगर तुम्हारा दिल अल्लाह तआला की तरफ़ लगा हुआ हो। यह दिल अल्लाह तआला ने अपने लिये बनाया है। दूसरे जितने आज़ा (अंग) हैं, आंख, नाक, कान, ज़बान वग़ैरह ये सब दुनियावी कामों के लिय हैं कि इनके ज़रिये दुनियावी मक़ासिद हासिल करते चले जाओ, लेकिन यह दिल अल्लाह तबारक व तआला ने ख़ालिस तौर पर अपने लिये बनाया है, ताकि इसके अन्दर अल्लाह की तजल्ली हो, उसकी मुहब्बत से यह भरा हो, उसके ज़िक्र से यह आबाद हो, इस बात को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हदीस में इन अल्फ़ाज़ के ज़रिये इरशाद फ़रमाया कि "अफ़्ज़ल अमल यह है कि इन्सान की ज़बान अल्लाह के ज़िक्र से तर रहे" इसी ज़बान को अल्लाह तआला ने दिल में उतरने का ज़ीना बनाया है, इसलिये जब ज़बान से ज़िक्र करते रहोगे तो इन्शा-अल्लाह उस ज़िक्र को दिल के अन्दर उतार देंगे, और तरीक़त, तसव्वुफ़ व सुलूक का मक़्सद भी यही है कि दिल में अल्लाह तआला की याद, अल्लाह तआला की मुहब्बत इस तरह समा जाये कि

यह अल्लाह जल्ल जलालुहू की तजल्ली का मक़ाम बान जाये।

मज्लिस की दुआ और कफ़्फ़ारा

बहर हाल, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस हदीस में फ़रमाया कि जो शख़्स ऐसी मज्लिस में बैठे जिसमें अल्लाह का ज़िक्र न हो, तो वह मज्लिस क़ियामत के दिन हस्रत का सबब बनेगी, और इसी लिये सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर क़ुरबान जाइये कि वह हम जैसे ग़ाफ़िलों के लिये, कमज़ोरों के लिये और आसानी पसन्दों के लिये आसान आसान नुस्ख़े बता गये, चुनांचे आपने हमें यह नुस्ख़ा बता दिया कि जब किसी मज्लिस से उठने लगो तो यह कलिमात कह लो:

"سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين". (ابوداؤد شریف)

"सुब्हा–न रब्बि–क रब्बिल इज़्ज़ति अम्मा यसिफ़ू–न व सलामुन अलल् मुर्सली–न वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ–लमी–न"

इसका नतीजा यह होगा कि अगर मज्लिस अब तक अल्लाह के ज़िक्र से ख़ाली थी, तो अब अल्लाह के ज़िक्र से आबाद हो गयी। अब इस मज्लिस के बारे में यह नहीं कहा जायेगा कि इसमें अल्लाह का ज़िक्र नहीं हुआ, बल्कि ज़िक्र हो गया, अगरचे आख़िर में हुआ, और दूसरे यह कि मज्लिस में जो कमी कोताही हुई उसके लिये यह कलिमात कफ़्फ़रा हो जायेंगे, इन्शा–अल्लाह। और दूसरा कलिमा यह पढ़े:

"سبحانك اللهم وبحمدك اشهدان لا اله الا انت، استغفرك واتوب اليك"

(ابوداؤد شریف)

"सुब्ह–न कल्लाहुम्म व बिहम्दि–क अश्हदु अल्ला इला–ह इल्ला अन–त अस्तग्फ़िरु–क व अतूबु इलै–क"

बहर हाल, ये दोनों कलिमात अगर मज्लिस से उठने से पहले पढ़ लोगे तो इन्शा–अल्लाह फिर क़ियामत के दिन वह मज्लिस हस्रत का सबब नहीं बनेगी, और उस मज्लिस में जो कमी व कोताही या छोटे

गुनाह हुए हैं, वे इन्शा-अल्लाह माफ़ हो जायेंगे। लेकिन जो कबीरा (बड़े) गुनाह किये हैं तो वे इसके ज़रिये माफ़ नहीं होंगे। जब तक आदमी तौबा न कर ले। इसलिये इन मज्लिसों में इसका ख़ास एहतिमाम करें कि उनमें झूठ न हो, ग़ीबत न हो, दिल दुखाना न हो, और जितने कबीरा (बड़े) गुनाह हैं उनसे परहेज़ हो, कम से कम इसका एहतिमाम कर लें।

सोने को इबादत बना लो

इस हदीस में अगला जुम्ला यह इरशाद फ़रमाया किः

"ومن اضطجع مضجعًا لا يذكر الله تعالىٰ فيه كانت عليه من الله ترة"

यानी जो शख़्स किसी ऐसे बिस्तर पर लेटे कि उस लेटने के सारे अर्से (समय) में एक मर्तबा भी अल्लाह का नाम न ले तो वह लेटना भी क़ियामत के दिन उसके लिये हस्रत का ज़रिया बनेगा कि उस दिन मैं लेटा था, लेकिन मैंने उसमें अल्लाह का ज़िक्र नहीं किया। इसलिये कि न सोते वक़्त दुआ पढ़ी और न जागने के वक़्त दुआ पढ़ी, इसी लिये आप सल्ल० ने फ़रमाया कि सोने से पहले भी ज़िक्र कर लो, और आख़िर में भी ज़िक्र कर लो, और हक़ीक़त में मोमिन की पहचान यही है कि वह ज़िक्र करके सोये, इसलिये कि एक काफ़िर भी सोता है और एक मोमिन भी सोता है, लेकिन काफ़िर ग़फ़्लत में सोता है, अल्लाह को याद किये बग़ैर सोता है। और मोमिन अल्लाह तआ़ला की याद और उसके ज़िक्र के साथ सोता है। इसलिये सारा सोना उसके लिये इबादत बन जाता है।

अगर तुम बेह्तरीन मख़्लूक़ हो

यही वे तरीक़े हैं जो हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमें सिखा गये, और हमें जानवरों से मुम्ताज़ कर दिया, काफ़िरों से मुम्ताज़ कर दिया। आख़िर गधे घोड़े भी सोते हैं, कौन सा जानवर ऐसा है जो नहीं सोता होगा, लेकिन अगर तुम अपने आपको बेह्तरीन मख़्लुक़ कहते हो तो फिर सोते वक़्त और जागते वक़्त अपने

ख़ालिक़ को याद करना न भूलो। इसलिये ये दुआयें हमें तल्क़ीन फ़रमा दीं। अल्लाह तआ़ला हमें इन दुआ़ओं का पाबन्द बना दे, और इनके अन्वार व बरकतें हम सब को अ़ता फ़रमा दे, आमीन।

ऐसी मज्लिस मुर्दार गधा है

"عن ابی هريرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله عليه وسلم: ما من قوم يقومون من مجلس ولا يذكرون الله تعالیٰ فيه الا قاموا عن مثل جيفة حمار، وكان لهم حسرة" (ابوداؤد شريف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो क़ौम किसी ऐसी मज्लिस से उठे जिसमें अल्लाह का ज़िक्र नहीं है। तो यह मज्लिस ऐसी है जैसे मरे हुए गधे के पास से उठ गये, गोया कि वह मज्लिस मुर्दा गधा है, जिसमें अल्लाह का ज़िक्र न किया जाये, और क़ियामत के दिन वह मज्लिस उनके लिये हस्रत का सबब बनेगी।

नींद अल्लाह की अ़ता है

यह सोने और उसके आदाब, लेटने और उसके आदाब और इसके मुताल्लिक़ चीज़ों का बयान चल रहा है, और जैसा कि मैं पहले भी अ़र्ज़ कर चुका हूं कि ज़िन्दगी का कोई गोशा ऐसा नहीं है, जिसके बारे में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें सही तरीक़ा न बताया हो, और जिसके बारे में यह न बताया हो कि उस वक़्त तुम्हें क्या करना चाहिये। नींद भी अल्लाह तबारक व तआ़ला की अ़ज़ीम नेमत है। अगर यह हासिल न हो तब पता लगे कि इसका न होना कितनी बड़ी मुसीबत है, अल्लाह तआ़ला ने सिर्फ़ अपने फ़ज़्ल व करम से अ़ता फ़रमा दी है, और इस तरह अ़ता फ़रमाई कि हमारी किसी मेहनत के बग़ैर निज़ाम ही ऐसा बना दिया कि वक़्त पर नींद आ जाती है, इन्सान के जिस्म में कोई ऐसा सूइच नहीं है कि अगर उसको दबा दोगे तो नींद आ जायेगी, बल्कि यह सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की अ़ता है।

रात अल्लाह की अज़ीम नेमत है

मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि इस पर ग़ौर करो कि अल्लाह तआ़ला ने नींद का निज़ाम ऐसा बना दिया कि सब को एक ही वक़्त में नींद की ख़्वाहिश होती है। वर्ना अगर यह होता कि हर शख़्स नींद के मामले में आज़ाद है कि जिस वक़्त वह चाहे सो जाये, तो अब यह होता कि एक आदमी का सुबह आठ बजे सोने का दिल चाह रहा है, एक आदमी का बारह बजे सोने का दिल चाह रहा है, एक आदमी का चार बजे सोने का दिल चाह रहा है। तो इसका नतीजा यह होता कि एक आदमी सोना चाह रहा है, दूसरा आदमी अपने काम में लगा हुआ है, और उसके सर पर खट खट कर रहा है, तो अब सही तौर पर नींद नहीं आयेगी, बेआरामी रहेगी, इसलिये अल्लाह तआ़ला ने कायनात का निज़ाम ऐसा बना दिया कि हर इन्सान को, जानवरों को, परिन्दों को, मवेशियों को, दरिन्दों को एक ही वक़्त में नींद आती है। हज़रत वालिद साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि क्या एक वक़्त में सोन के निज़ाम के लिये अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस हुई थी? और सारी दुनिया के नुमाइन्दों को बुला कर मश्विरा किया गया था कि कौन से वक़्त सोया करें। अगर इन्सान के ऊपर इस मामले को छोड़ा जाता तो इन्सान के बस में नहीं था कि वह पूरी दुनिया का निज़ाम इस तरह बना देता कि हर आदमी उस वक़्त सो रहा है। इसलिये अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल व करम से हर एक के दिल में ख़ुद बख़ुद यह एहसास डाल दिया कि यह रात का वक़्त सोने का है, और नींद को उन पर मुसल्लत कर दिया। सब एक वक़्त में सो रहे हैं, इसी लिये क़ुरआने करीम में फ़रमाया कि:

"وجعل الليل سكنا" (سورة الانعام:٩٦)

कि रात को सुकून का वक़्त बनाया, दिन को कमाने व रोज़गार के लिये और ज़िन्दगी के कारोबार के लिये बनाया, इसलिये यह नींद अल्लाह तआ़ला की अ़ता है। बस इतनी सी बात है कि उसकी अ़ता से फ़ायदा उठाओ, और इसको ज़रा सा याद कर लो कि यह अ़ता किस

की तरफ़ से है, और उसका शुक्र अदा कर लो, और उसके सामने हाज़री का एहसास कर लो। यह इन सारी तालीमात का ख़ुलासा है। अल्लाह तआ़ला मुझे और आप सब को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

وآخردعوانا ان الحمد لله رب العالمين

अल्लाह के साथ ताल्लुक़ का आसान तरीक़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَنَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَنَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَ اَصْحَابِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ تَسْلِیْماً کَثِیْرًا کَثِیْرًا۔ اَمَّا بَعْدُ:

"عن ابی سعیدالخدری رضی اللہ عنہ قال کان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا استجد ثوبًا سماہ باسمہ، عمامۃ او قمیصًا او رداءً یقول اللھم لک الحمد انت کسوتنیہ، اسألک خیرہ وخیر ما صنع لہ، واعوذبک من شرہ وشر ما صنع لہ" (ترمذی شریف)

नया कपड़ा पहनने की दुआ

हज़रत अबू सअ़ीद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आ़दत यह थी कि जब आप कोई नया कपड़ा पहनते तो उस कपड़े का नाम लेते चाहे वह पगड़ी या क़मीस हो या चादर हो, और उसका नाम लेकर यह दुआ़ करते कि ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है कि आपने मुझे यह लिबास अ़ता फ़रमाया, मैं आपसे इस लिबास की ख़ैर का सवाल करता हूं, और जिन कामों के लिये यह बनाया गया है, उनमें से बेह्तर कामों का सवाल करता हूं, और मैं आप से इस लिबास की बुराई से पनाह मांगता हूं, और जिन बुरे कामों के लिये यह बनाया गया है, उनकी बुराई से पनाह मांगता हूं।

हर वक़्त की दुआ़ अलग है

लिबास पहनते वक़्त आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत

यह थी कि आप यह दुआ पढ़ते थे। अगर किसी को ये अल्फ़ाज़ याद न हों तो फिर उर्दू ही में लिबास पहनते वक़्त ये अल्फ़ाज़ कह लिया करे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इस उम्मत पर यह अ़ज़ीम एहसान है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने क़दम क़दम पर अल्लाह जल्ल शानुहू से दुआ मांगने का तरीक़ा सिखाया, हम तो वे लोग हैं जो मुहताज तो बे इन्तिहा हैं, लेकिन हमें मांगने का ढंग नहीं आता, हमें न तो यह मालूम है कि क्या मांगा जाये, और न यह मालूम है कि किस तरह मांगा जाये, लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें तरीक़ा भी सिखा दिया कि अल्लाह तआ़ला से इस तरह मांगो। सुबह से लेकर शाम तक बेशुमार आमाल इन्सान अन्जाम देता है। तक़रीबन हर अ़मल के लिये अलग दुआ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तल्क़ीन फ़रमाई है। जैसे फ़रमाया कि सुबह को जब नींद से जागो तो यह दुआ पढ़ो, जब इस्तिन्जे के लिये जाने लगो तो यह दुआ पढ़ो, इस्तिन्जा से फ़ारिग़ होकर बाहर आओ तो यह दुआ पढ़ो, जब वुज़ू शुरू करो तो यह दुआ पढ़ो, वुज़ू के दौरान ये दुआयें पढ़ते रहो, वुज़ू से फ़ारिग़ होकर यह दुआ पढ़ो, जब नमाज़ के लिये मस्जिद में दाख़िल होने लगो तो यह दुआ पढ़ो, और मस्जिद में इबादत करते रहो, फिर मस्जिद से बाहर निकलो तो यह दुआ पढ़ो, जब अपने घर में दाख़िल होने लगो तो यह दुआ पढ़ो, जब बाज़ार में पहुंचो तो यह दुआ पढ़ो। गोया कि हर हर नक़्ल व हर्कत पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दुआयें तल्क़ीन फ़रमा दीं कि ये दुआयें इस तरह पढ़ा करो।

अल्लाह के साथ ताल्लुक़ का तरीक़ा

यह हर हर नक़्ल व हर्कत पर अलग अलग दुआ क्यों तल्क़ीन फ़रमाई? यह हक़ीक़त में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अल्लाह तआ़ला से ताल्लुक़ जोड़ने के लिये नुस्ख़ा–ए–अक्सीर बता दिया, अल्लाह तआ़ला से ताल्लुक़ पैदा करने का आसान तरीन और बहुत मुख़्तसर रास्ता यह है कि हर वक़्त इन्सान अल्लाह तआ़ला से

मांगता रहे, और दुआ करता रहे, कुरआने करीम ने हमें यह हुक्म दिया कि:

"يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللهَ ذِكْرًا كَثِيرًا" (سورة الاحزاب:٤١)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह को कस्रत से याद करो, कस्रत से उसका ज़िक्र करो, और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने पूछा या रसूलल्लाह! सब से अफ़ज़ल अमल कौन सा है? तो आपने इरशाद फ़रमाया कि सब से अफ़ज़ल अमल यह है कि:

"ان يكون لسانك رطبًا بذكر الله" (ترمذی شریف)

यानी तुम्हारी ज़बान हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र से तर रहे, हर वक़्त ज़बान पर ज़िक्र जारी रहे। ख़ुलासा यह कि कस्रत से ज़िक्र करने का हुक्म कुरआने करीम ने भी दिया, और हुज़ूरे अक्दस सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हदीस में इसकी फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई।

अल्लाह ज़िक्र से बे-नियाज़ है

अब सवाल यह है कि अल्लाह तआला ने हमें कस्रत से ज़िक्र करने का हुक्म क्यों दिया? (ख़ुदा की पनाह) क्या अल्लाह को हमारे ज़िक्र से फ़ायदा पहुंचता है? क्या उसको इससे लज़्ज़त आती है? या उसको कोई नफ़ा मिलता है? ज़ाहिर है कि कोई भी शख़्स जो अल्लाह की मारिफ़त रखता हो, और उस पर ईमान रखता हो, वह इस बात का तसव्वुर भी नहीं कर सकता। क्योंकि अगर सारी कायनात हर वक़्त हर लम्हे अल्लाह तआला का ज़िक्र करती रहे तो उसकी बड़ाई में, उसके जलाल व जमाल में, उसकी अज़्मत में एक ज़र्रा बराबर इज़ाफ़ा नहीं होता। और अगर (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) सारी कायनात मिल कर इस बात का अहद कर ले कि अल्लाह तआला का ज़िक्र नहीं करेंगे, अल्लाह तआला को भुला दें, ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जायें, और गुनाहों और बुराइयों को करने लगें, ना फ़रमानियों में मुब्तला हो जायें। तो उसकी अज़्मत व जलाल में ज़र्रा बराबर कमी नहीं होगी। वह ज़ात तो बे-नियाज़ है "अल्लाहुस्-समद" वह हमारे ज़िक्र से भी बे-नियाज़, हमारे सज्दों से भी बे-नियाज़, हमारी तस्बीह से भी बे-नियाज़, उसको

हमारे ज़िक्र की ज़रूरत नहीं।

बुराइयों की जड़ अल्लाह से ग़फ़लत

लेकिन यह जो कहा जा रहा है कि अल्लाह को कस्रत से याद करो, इससे हमारा ही फ़ायदा है, इसलिये कि दुनिया में जितने जराइम, भ्रष्टाचार और बद अख़्लाक़ियां होती हैं अगर इन सब बुराइयों की जड़ देखी जाये तो वह अल्लाह से ग़फ़लत है, जब इन्सान अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हो जाता है, अल्लाह तआ़ला को भुला बैठता है, तब गुनाह का अ़मल करता है। लेकिन अगर अल्लाह तआ़ला की याद दिल में हो, अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र दिल में हो, और अल्लाह तआ़ला के सामने जवाब देही का एहसास दिल में हो कि एक दिन अल्लाह के सामने पेश होना है तो फिर गुनाह ज़ाहिर नहीं होगा।

चोर जिस वक़्त चोरी कर रहा है उस वक़्त अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल है, अगर अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न होता तो चोरी का जुर्म न करता। बदकार जिस वक़्त बदकारी कर रहा है, उस वक़्त वह अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल है, अगर अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न होता तो वह बदकारी का अ़मल न करता। इसी बात को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:

"لا يزني الزاني حين يزني وهو مؤمن لا يسرق السارق حين يسرق وهو مؤمن لا يشرب الشارب حين يشرب وهو مؤمن" (مسلم شریف)

यानी जब ज़िना करने वाला ज़िना करता है, उस वक़्त वह मोमिन नहीं होता। मोमिन न होने के मायने यह हैं कि ईमान उस वक़्त पूरी तरह हाज़िर नहीं होता, अल्लाह तआ़ला की याद और उसका ज़िक्र पूरी तरह ध्यान में नहीं होता। जब चोरी करता है, तो उस वक़्त वह मोमिन नहीं होता। यानी उस वक़्त अल्लाह तआ़ला की याद दिल में होती तो यह गुनाह का अ़मल न करता। इसलिये सारी बुराइयां, सारे मज़ालिम, सारी बद अख़्लाक़ियां जो दुनिया के अन्दर पाई जा रही हैं, इनका बुनियादी सबब अल्लाह के ज़िक्र से ग़फ़लत है।

अल्लाह कहां गया?

हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु एक मर्तबा सफ़र पर जा रहे थे। जंगलों का सफ़र था, और उस वक़्त आज कल की तरह होटलों का रिवाज तो था नहीं, इसलिये जब भूख लगी, और सफ़र का खाना ख़त्म हो गया, तो आस पास बस्ती तलाश की कि क़रीब में कोई बस्ती हो तो वहां जाकर खाना खा लिया जाये। तलाश के दौरान देखा कि एक बकरियों का रेवड़ चर रहा है, आपने क़रीब जाकर चरवाहे को तलाश किया और उससे मुलाक़ात करके उससे कहा कि मैं मुसाफ़िर हूं और भूख लगी हुई है, इसलिये बकरी का दूध निकाल दो और मुझ से उसके पैसे ले लो, ताकि मैं दूध पीकर अपनी भूख को मिटा सकूं। यह उस ज़माने का वाक़िआ है जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आधी दुनिया से ज़्यादा के हाकिम और बादशाह बन चुके थे। जवाब में चरवाहे ने कहा कि जनाब मैं आपको ज़रूर दूध दे देता, मगर बात यह है कि ये बकरियां मेरी नहीं हैं, ये मेरे मालिक की हैं और उसने मुझे चराने के लिये दी हैं। इसलिये ये बकरियां मेरे पास अमानत हैं, और इनका दूध भी मेरे पास अमानत है। इसलिये मैं मालिक की इजाज़त के बग़ैर इनका दुध देने की इजाज़त पाये हुए नहीं हूं। इसलिये मजबूरी है। हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में ख़्याल आया कि इस शख़्स का थोड़ा सा इम्तिहान लिया जाये, चुनांचे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस चरवाहे से कहा कि मैं तुम्हें एक तदबीर बताता हूं, अगर तुम उस पर अमल कर लो, उसमें तुम्हारा भी फ़ायदा है और मेरा भी फ़ायदा है। उस चरवाहे ने पूछा कि वह क्या? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि तुम ऐसा करो कि एक बकरी मुझे बैच दो, और उस बकरी की जो क़ीमत हो वह तुम मुझ से ले लो, इसमें मेरा तो यह फ़ायदा है कि मैं उस बकरी को अपने साथ सफ़र में रखूंगा और जब ज़रूरत पेश आयेगी उसका दूध निकाल कर पी लूंगा, और तुम्हारा फ़ायदा यह है कि तुम्हें बकरी के पैसे मिल जायेंगे। रहा मालिक, तो अगर मालिक पूछे कि बकरी कहां गयी तो उसको यह कह

देना कि उसको भेड़िया खा गया। इसलिये कि इस किस्म के वाकिआत जंगल में पेश आते ही रहते हैं। इसलिये उसको यकीन आ जायेगा। इसमें तुम्हारा भी भला हो जायेगा, और मेरा भी भला हो जायेगा। चरवाहे ने जैसे ही यह तदबीर सुनी तो फ़ौरन उसकी ज़बान पर ये अल्फ़ाज़ आये कि "या हाज़ा फ़अैनल्लाह?" फिर अल्लाह कहां गया? यानी अगर यह सब काम मैं कर लूं तो अगरचे मालिक तो नहीं देख रहा है लेकिन अल्लाह तआला तो देख रहा है, यह सब कुछ हकीकत में झूठ है, फ़रेब और धोखा है, उस अल्लाह तआला के सामने जाकर मैं क्या जवाब दूंगा?

ज़िक्र से गफ़लत, जुर्मों की ज़्यादती

यह है अल्लाह का ज़िक्र, अल्लाह की याद, जो दिल में इस तरह जम गया कि किसी भी वक्त, जंगल की तन्हाई में भी, रात के अन्धेरे में भी अल्लाह तआला का ज़िक्र दिल से निकलता नहीं। बहर हाल! हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब उस चरवाहे का जवाब सुना तो फ़रमाया कि जब तक तुम जैसे इन्सान इस रूए ज़मीन पर मौजूद रहेंगे और जब तक अल्लाह तआला के सामने हाज़िर होकर जवाब देही का एहसास दिलों में मौजूद होगा, उस वक्त तक इस रूए ज़मीन पर ज़ुल्म नहीं आ सकता। इसलिये कि जवाब देही का एहसास वह चीज़ है जो तन्हाई में भी इन्सान के दिल पर पहरे बिठा देता है, और अगर यह एहसास बाकी न रहे तो उसका अन्जाम आप देख रहे हैं कि आज पुलिस की तादाद बढ़ रही है, महकमों में इज़ाफ़ा हो रहा है, अदालतों का एक लम्बा सिलसिला है, फ़ौज लगी हुई है, गली कूचों में पहरे लेगे हुए हैं। मगर फिर भी डाके पड़ रहे हैं, लोगों के जान व माल और आबरू पर किस तरह हमले हो रहे हैं, जराइम में इज़ाफ़ा हो रहा है, यह सब क्यों है? इसलिये कि जराइम की जड़ उस वक्त तक ख़त्म नहीं हो सकती, जब तक अल्लाह जल्ल शानुहू की याद और अल्लाह तआला का ज़िक्र दिल में न समा जाये, जब तक अल्लाह तआला के सामने हाज़री का एहसास दिल में पैदा न हो। इसलिये जब

तक दिल में यह शमा रोशन नहीं होती, उस वक़्त तक हज़ार पहरे बिठा लो, हज़ार फ़ौजी बुलालो, मगर जराइम बन्द नहीं होंगे, ज़रा सी किसी की आंख बहकेगी और जुर्म हो जायेगा। बल्कि जो आंख हिफ़ाज़त के लिये मुक़र्रर थी आज वह आंख जुर्म करा रही है। जिसको लोगों के जान व माल की हिफ़ाज़त के लिये बिठाया गया था, वही लोग जान व माल पर डाके डाल रहे हैं। इसलिये जब तक अल्लाह का ज़िक्र, उसकी याद दिल में न हो, जवाब देही का एहसास दिल में न हो, उस वक़्त तक जराइम का ख़ात्मा नहीं हो सकता।

जराइम का ख़ात्मा हुज़ूर ने फ़रमाया

जराइम का ख़ात्मा तो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया कि न पुलिस है, न महकमा है, न अदालत है, न फ़ौज बल्कि जिस किसी से जुर्म सादिर हो गया तो वह रोता हुआ आ रहा है कि या रसूलल्लाह मुझ पर सज़ा जारी कर दीजिये, ताकि आख़िरत के अज़ाब से बच जाऊं, और ऐसी सज़ा जारी करें कि पत्थर मार मार कर मुझे हलाक कर दीजिये, और मुझे "रज्म" कर दीजिये। बस बात यह थी कि अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र और उसका ख़ौफ़ दिल में समा गया, इसी लिये कहा जा रहा है कि अल्लाह तआ़ला का कस्रत से ज़िक्र करो, वर्ना हमारे ज़िक्र से अल्लाह तआ़ला का कोई फ़ायदा नहीं, लेकिन जितना ज़िक्र करोगे, उतना ही अल्लाह तआ़ला के सामने जवाब देही का एहसास दिल में पैदा होगा, और फिर जुर्म, गुनाह, मासियत और ना फ़रमानी से इन्शा-अल्लाह बचाव होगा, इसी लिये कहा जाता है कि अल्लाह का ज़िक्र कस्रत से करो।

ज़बानी ज़िक्र भी मुफ़ीद और पसन्दीदा है

लोग कहते हैं कि अगर सिर्फ़ ज़बान से "अल्लाह अल्लाह" कर रहे हैं, या "सुब्हानल्लाह" कह रहे हैं। या ज़बान से "अल्हम्दु लिल्लाह" कह रहे हैं और दिल कहीं है, दिमाग़ कहीं है तो इससे क्या हासिल? याद रखो यह ज़बान से ज़िक्र करना पहली सीढ़ी है, अगर यह सीढ़ी तय न की तो दूसरी सीढ़ी पर कभी नहीं पहुंच सकते, ज़िन्दगी भर

नहीं पहुंच सकते, और अगर यह सीढ़ी तय कर ली, और ज़बान से अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करना शुरू कर दिया तो कम से कम एक सीढ़ी तो तय हो गयी फिर उसकी बरकत से अल्लाह तआ़ला दूसरी सीढ़ी भी तय करा देंगे। इसलिये इस ज़िक्र को बेकार मत समझो, यह ज़िक्र भी अल्लाह तआ़ला की नेमत है, अगर हमारा सारा जिस्म न सही तो कम से कम एक उज़्व (अंग) तो अल्लाह तआ़ला की याद में मश्ग़ूल है। अगर इसमें लगे रहे तो इन्शा–अल्लाह आगे जाकर यही तरक़्क़ी कर जायेगा।

अल्लाह के साथ ताल्लुक़ की हक़ीक़त

बहर हाल! अल्लाह के ज़िक्र और अल्लाह की याद के दिल में समा जाने का नाम ही "तअ़ल्लुक़ म–अ़ल्लाह" है। यानी हर वक़्त अल्लाह तआ़ला के साथ कुछ न कुछ राबता और ताल्लुक़ क़ायम है, सूफ़िया–ए–किराम के सिलसिलों में जितनी रियाज़तें, मुजाहदात, वज़ीफ़े और अश्ग़ाल हैं। उन सब का हासिल और ख़ुलासा और मक़्सूद सिर्फ़ एक ही चीज़ है, वह है "अल्लाह के साथ ताल्लुक़ का मज़बूत करना" इसलिये कि जब अल्लाह तआ़ला से ताल्लुक़ हो जाता है तो फिर इन्सान से गुनाह भी नहीं होते, फिर इन्सान अल्लाह की इबादत भी अपनी हिम्मत के मुताबिक़ बेह्तर से बेह्तर अन्जाम देता है, फिर अच्छे अख़्लाक़ उसको हासिल हो जाते हैं। और बुरे अख़्लाक़ से नजात मिल जाती है, ये सब चीज़ें अल्लाह के साथ ताल्लुक़ से हासिल होती हैं।

हर वक़्त मांगते रहो

इस अल्लाह के साथ ताल्लुक़ को हासिल करने के लिये सूफ़िया–ए–किराम के यहां बड़े लम्बे चौड़े मुजाहदात और रियाज़तें कराई गयी हैं। लेकिन हमारे हज़रत डा० अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि अल्लाह के साथ इस ताल्लुक़ को हासिल करने के लिये मैं तुम्हें एक मुख़्तसर और आसान रास्ता बताता हूं। वह यह कि अल्लाह तआ़ला से हर वक़्त और हर

लम्हे मांगने और मांगते रहने की आदत डालो, हर चीज़ अल्लाह तआला से मांगो, जो दुख और तक्लीफ़ पहुंचे, परेशानी हो, जो ज़रूरत और हाजत हो, बस अल्लाह तआला से मांगो। जैसे गर्मी लग रही है, कहो ऐ अल्लाह! गर्मी दूर फ़रमा दीजिये, बिजली चली गयी, कहो या अल्लाह बिजली अता फ़रमा दीजिये, भूख लग रही है, कहो या अल्लाह! अच्छा खाना दे दीजिये, घर में दाख़िल हो रहे हैं, कहो या अल्लाह! घर में अच्छा मन्ज़र सामने आये, आफ़ियत की ख़बर मिले, कोई परेशानी की बात न हो। दफ़्तर में दाख़िल होने से पहले कहो कि या अल्लाह! दफ़्तर जा रहा हूं, हालात ठीक रहें, तबीयत के मुवाफ़िक़ रहें, कोई ना—ख़ुशगवार बात पेश न आये, कोई तक्लीफ़ की बात पेश न आये। जब बाज़ार जा रहे हो, कहो कि या अल्लाह! फ़लां चीज़ ख़रीदने जा रहा हूं, मुनासिब क़ीमत पर मुनासिब चीज़ दिला दीजिये। हर वक़्त हर लम्हे अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करने और अल्लाह से मांगने की आदत डालो।

यह छोटा सा चुट्कुला है

वाक़िआ यह है कि कहने को यह मामूली बात है इसलिये कि यह काम इतना आसान है जिसकी कोई हद नहीं, इसी वजह से इसकी क़द्र नहीं होती, लेकिन इस नुस्ख़े पर अ़मल करके देखो, अल्लाह तआला से मांग कर देखो, हर वक़्त अल्लाह तआला के सामने रट लगाओ, जो मस्अला सामने आये उसको अल्लाह तआला के सामने पेश करो, कि या अल्लाह यह काम कर दीजिये। अगर इसकी आदत डाल लो तो फिर कोई लम्हा अल्लाह तआला से मांगने से ख़ाली नहीं जायेगा। जैसे एक आदमी सामने से आप से मुलाक़ात के लिये आ रहा है, आप एक लम्हे के लिये अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू कर लें कि या अल्लाह यह शख़्स अच्छी ख़बर लेकर अया हो, कोई बुरी ख़बर लेकर न आया हो, या अल्लाह यह शख़्स जो बात कहना चाह रहा है उसका नतीजा अच्छा निकाल दीजिये। डा० के पास दवा के लिये जा रहे हैं, कहो कि या अल्लाह इस डा० के दिल में सही तज्वीज़ डाल

दीजिये। गोया कि हर मामले में अल्लाह तआला से मांगने की आदत डालो। यह छोटा सा चुटकुला है और छोटा सा नुस्ख़ा है। हज़रत डा० साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि इस चुटकुले पर अमल करके देखो, क्या से क्या हो जाता है, इन्सान इसकी वजह से कहां से कहां पहुंच जाता है।

ज़िक्र के लिये कोई पाबन्दी व शर्त नहीं

और यह जो मस्नून दुआयें हैं, हुज़ूर नबी–ए–करीम सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके ज़रिये इस नुस्ख़े की तरफ़ ला रहे हैं कि जब कोई मस्अला पेश आये तो अल्लाह तआला से मांगो, और दुआ करो, और अल्लाह तआला ने इस मांगने और फ़रियाद को इतना आसान बना दिया है कि इस पर कोई पाबन्दी और शर्त नहीं लगाई, बल्कि किसी हालत में हो, अल्लाह तआला से मांगो। न वुज़ू की शर्त, न क़िब्ले की तरफ़ रुख़ करने की शर्त, यहां तक कि नापाकी की हालत में भी दुआ मांगना मना नहीं है, अगरचे उस हालत में कुरआने करीम की तिलावत जायज़ नहीं, लेकिन दुआ कर सकते हो, यहां तक कि जिस वक़्त इन्सान लैट्रीन करने में मसरूफ़ है, उस वक़्त ज़बान से कोई दुआ नहीं करनी चाहिये, ज़बान से ज़िक्र नहीं करना चाहिये, उस वक़्त भी दिल दिल में ज़िक्र करने से कोई चीज़ रोक नहीं।

बहर हाल! अल्लाह तआला ने इस ज़िक्र को इतना आसान कर दिया कि कोई पाबन्दी व शर्त नहीं, और कोई ख़ास तरीक़ा नहीं, अगर मौक़ा हो तो बा–वुज़ू होकर क़िब्ला–रू होकर हाथ उठा कर मांगो लेकिन अगर ऐसा मौक़ा न मिले तो न वुज़ू की शर्त न हाथ उठाने की शर्त, न ज़बान से बोलने की शर्त, बल्कि दिल दिल में अल्लाह तआला से मांग लो, कि या अल्लाह यह काम कर दीजिये।

हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जब कोई शख़्स सवाल करने के लिये आता है, और आकर यह कहता है कि हज़रत एक बात पूछनी है, तो उस वक़्त फ़ौरन दिल दिल में अल्लाह तआला की तरफ़ मुतव्वज होकर दुआ करता हूं कि यह शख़्स मालूम नहीं कौन

सा सवाल करेगा। ऐ अल्लाह! उस सवाल का सही जवाब मेरे दिल में डाल दीजिये, और कभी इस अ़मल के ख़िलाफ़ नहीं होता, हमेशा यह अ़मल करता हूं।

मुस्नून दुआओं की अहमियत

अब हर हर मौक़े पर अल्लाह तआ़ला से मांगने का नुक्ता हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस तरह सिखाया कि मांगने की ख़ास ख़ास जगहें बता दीं कि इस जगह तो मांग ही लो, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस अ़ज़ीम एहसान पर कुर्बान जाइये कि उन्हों ने दुआ़ मांगना भी सिखा दिया। अरे तुम क्या मांगोगे? किस तरह मांगोगे? किन अल्फ़ाज़ से मांगोगे? तुम्हें तो मांगने का ढंग भी नहीं आता। यह मांगने का ढंग भी मैं ही तुमको बता देता हूं कि यह मांगो और इस तरह मांगो, इन अल्फ़ाज़ से मांगो। यह सब कुछ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सिखा गये, अब हमारा आपका काम यह है कि इन दुआ़ओं को याद करें, और जब वह मौक़ा आये तो तवज्जोह के साथ वह दुआ़ मांग लिया करें, बस इतना सा काम है। सब काम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कर गये। पकी पकाई रोटी तैयार करके पूरी उम्मत के लिये छोड़ गये। अब उम्मत का काम है कि इस रोटी को उठा कर अपने हलक़ में डाल ले। बस इतना सा काम भी हम से नहीं होता। और उलमा ने मासूरा दुआ़ओं और मुस्नून दुआओं के नाम से बेशुमार किताबें लिख दीं, और उनमें वे दुआ़यें जमा कर दीं, ताकि हर मुसलमान उनको आसानी के साथ याद कर ले। पहले मुसलमान घरानों में यह रिवाज था कि जब बच्चे ने बोलना शुरू किया तो सब से पहले उसको दुआ़यें सिखाई जातीं, कि बेटा बिस्मिल्लाह पढ़ कर खाना खाओ, खाने के बाद यह दुआ़ पढ़ो, बिस्तर पर जाओ तो यह दुआ़ पढ़ो, इसका नतीजा यह था कि इस काम के लिये बाक़ायदा क्लास लगाने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी और फिर बचपन का हाफ़िज़ा भी ऐसा होता है कि जैसे पत्थर पर लकीर, सारी उमर याद रहता है, अब बड़ी उमर में याद करना आसान

काम नहीं। लेकिन बहर हाल, यह काम करने का है, हर मुसलमान इसको ग़नीमत समझे और ये मस्नून दुआयें कोई लम्बी चौड़ी नहीं होतीं बल्कि छोटी छोटी होती हैं, रोज़ाना इन मस्नून दुआओं में से एक दुआ याद कर लो, और फिर उसको मौके पर पढ़ने का इरादा कर लो कि जब यह मौका आयेगा इस दुआ को ज़रूर पढ़ेंगे फिर देखियेगा कि अल्लाह तआला उसके कैसे अन्वार व बरकतें अता फ़रमाते हैं। अल्लाह तआला हम सब को हर वक़्त अपना ज़िक्र करने और उसमें मश्गूल रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

ज़बान की हिफ़ाज़त कीजिये

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْماً كَثِيْرًا كَثِيْرًا۔ اَمَّا بَعْدُ:

तीन मुबारक हदीसें

"عن ابی هريرة رضی الله تعالیٰ عنه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من كا يؤمن بالله واليوم الآخرفليقل خيرا اوليصمت" (بخاری شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि नबी-ए-करीम सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, उसको चाहिये कि या तो वह अच्छी और नेक बात कहे, या ख़ामोश रहे।

दूसरी रिवायत भी हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत की गयी है:

"عن ابی هريرة رضی الله عنه انه سمع النبی صلى الله عليه وسلم يقول ان العبد يتكلم با لكلمة ما يتبين فيها، يزل بها فی النار ابعد ما بين المشرق والمغرب" (بخاری شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है, उन्हों ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना, आपने इरशाद फ़रमाया कि एक इन्सान सोचे समझे बग़ैर जब कोई कलिमा ज़बान से कह देता है तो वह कलिमा उस शख़्स को जहन्नम के अन्दर इतनी गहराई तक गिरा देता है, जितना मश्रिक़ और मग़्रिब के दर्मियान फ़ासला और दूरी है। एक तीसरी हदीस भी इसी मायने में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मर्वी है:

"عن ابی هريرة رضی الله عنه عن النبی صلی الله عليه وسلم قال: ان العبد يتكلم بالكلمة من رضوان الله تعالیٰ لا يلقی بها بالا، يرفعه الله بها فی الجنة، وان العبد ليتكلم بالكلمة من سخط الله تعالیٰ لا يلقی بها بالا، يهوی بها فی جهنم" (بخاری شريف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि: कभी कभी एक इन्सान अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी का कोई कलिमा कहता है, यानी ऐसा कलिमा ज़बान से अदा करता है जो अल्लाह तआ़ला को ख़ुश करने वाला है, अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के मुताबिक़ है, लेकिन जिस वक़्त वह कलिमा ज़बान से अदा करता है, उस वक़्त उस कलिमे की अहमियत का अन्दाज़ा नहीं होता, और ला परवाही से वह कलिमा ज़बान से निकाल देता है, मगर अल्लाह तआ़ला उस कलिमे की बदौलत जन्नत में उसके दरजात बुलन्द फ़रमा देते हैं। और इसके उलट कभी कभी एक इन्सान ज़बान से ऐसा कलिमा निकालता है जो अल्लाह तआ़ला को नाराज़ करने वाला होता है और वह शख़्स ला परवाही में उस कलिमे को निकाल देता है, लेकिन वह कलिमा उसको जहन्नम में लेजा कर गिरा देता है।

ज़बान की देख भाल करें

इन तीनों हदीसों में इस बात की तरफ़ तवज्जोह दिलाई गयी है कि आदमी ज़बान के गुनाहों से बचने का एहतिमाम करे, और इस ज़बान को अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ियात में ख़र्च करे, और उसके नाराज़गी के कामों से इसको बचाये। जैसा कि मैं पहले अ़र्ज़ कर चुका हूं कि हम लोगों के लिये सब से ज़्यादा एहतिमाम की चीज़ यह है कि गुनाहों से बचें, गुनाह न हों। उन गुनाहों में यहां ज़बान के गुनाहों का बयान शुरू हुआ है, चूंकि ज़बान के गुनाह ऐसे हैं कि कभी कभी आदमी समझे बग़ैर बे-परवाई की हालत में बातें कर लेता है, और वे बातें उसके लिये सख़्त तरीन अ़ज़ाब का सबब होती हैं, इसलिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ज़बान को

देख भाल कर इस्तेमाल करो, अगर कोई अच्छी बात ज़बान से कहनी है तो कहो, वर्ना ख़ामोश रहो।

ज़बान एक अज़ीम नेमत

यह ज़बान जो अल्लाह तआ़ला ने हमें अ़ता फ़रमाई है, इसमें ज़रा ग़ौर करो तो यह कितनी अ़ज़ीम नेमत है, यह कितना बड़ा इनाम है, जो अल्लाह तआ़ला ने हमें अ़ता फ़रमा दिया। और बोलने की ऐसी मशीन अ़ता फ़रमा दी कि जो पैदाईश से लेकर मरते दम तक इन्सान का साथ दे रही है, और चल रही है और इस तरह चल रही है कि आदमी ने इधर ज़रा इरादा किया उधर इसने काम शुरू कर दिया, अब चूंकि इस मशीन को हासिल करने के लिये कोई मेहनत और मशक़्क़त नहीं की, कोई पैसा ख़र्च नहीं हुआ। इसलिये इस नेमत की क़दर मालूम नहीं होती, और जो नेमत भी बैठे बिठाये बे मांगे मिल जाती है, उसकी क़दर नहीं होती। अब यह ज़बान भी बैठे बिठाये मिल गयी, और लगातार काम कर रही है, हम जो चाहते हैं इस ज़बान से बोल पड़ते हैं। इस नेमत की क़दर उन लोगों से पूछें जो इस नेमत से महरूम हैं ज़बान मौजूद है मगर बोलने की ताक़त नहीं है, आदमी कोई बात कहना चाहता है मगर कह नहीं सकता, दिल में जज़्बात पैदा हो रहे हैं मगर उनका इज़्हार नहीं कर सकता, उससे पूछो वह बतायेगा कि ज़बान कितनी बड़ी नेमत है, अल्लाह तआ़ला का कितना बड़ा इनाम है।

अगर ज़बान बन्द हो जाए

इस बात का तसव्वुर करो कि ख़ुदा न करे, इस ज़बान ने काम करना बन्द कर दिया और अब तुम बोलना चाहते हो लेकिन नहीं बोला जाता, उस वक़्त कैसी बेचारगी और बेबसी का आ़लम होगा। मेरे एक अ़ज़ीज़ जिनका अभी हाल ही में आप्रेशन हुआ है उन्हों ने बताया कि आप्रेशन के बाद कुछ देर इस हालत में गुज़री कि सारा जिस्म बेहिस था, प्यास शदीद लग रही थी, सामने आदमी मौजूद हैं, मैं उनसे कहना चाहता हूं कि तुम मुझे पानी पिला दो, लेकिन ज़बान नहीं चलती, आधा

घन्टा इसी तरह गुज़र गया। बाद में वह कहते थे कि मेरी पूरी ज़िन्दगी में वह आधा घन्टा जितना तक्लीफ़ देने वाला था, ऐसा वक़्त कभी मेरे ऊपर नहीं गुज़रा था।

ज़बान अल्लाह की अमानत है

अल्लाह तआ़ला ने ज़बान और दिमाग़ के दर्मियान ऐसा कनेक्शन रखा है कि जैसे ही दिमाग़ ने यह इरादा किया कि फ़लां बात ज़बान से निकाली जाये, उसी लम्हे ज़बान वह बात अदा कर देती है। और अगर इन्सान के ऊपर छोड़ दिया जाता कि तुम ख़ुद इस ज़बान को इस्तेमाल करो तो उसके लिये पहले यह इल्म सीखना पड़ता कि ज़बान की किस हर्कत से अलिफ़ निकालें, ज़बान को कहां लेजा कर "बा" निकालें तो फिर इन्सान एक मुसीबत में मुब्तला हो जाता, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने फ़ितरी तौर पर इन्सान के अन्दर यह बात रख दी कि जो लफ़्ज़ वह ज़बान से अदा करना चाह रहा है तो बस इरादा करते ही फ़ौरन वह लफ़्ज़ ज़बान से निकल जाता है, लेकिन अब ज़रा इसको इस्तेमाल करते हुये यह तो सोचो कि क्या तुम ख़ुद यह मशीन ख़रीद कर ले आये थे? नहीं, बल्कि यह अल्लाह तआ़ला की अ़ता है, उसने तुम्हें अ़ता की है, यह तुम्हारी मिल्कियत नहीं, बल्कि तुम्हारे पास अमानत है और जब उनकी दी हुई अमानत है तो फिर यह भी ज़रूरी है कि उसको उनकी रिज़ा के मुताबिक़ इस्तेमाल किया जाये, यह न हो कि जो दिल में आया बक दिया। बल्कि जो बात अल्लाह तआ़ला के अह्काम के मुताबिक़ है वह निकालो, और जो बात अल्लाह के अह्काम के मुताबिक़ नहीं वह बात मत निकालो। यह सरकारी मशीन है, इसको उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्तेमाल करो।

ज़बान का सही इस्तेमाल

अल्लाह तआ़ला ने इस ज़बान को ऐसा बनाया है कि अगर कोई शख़्स इस ज़बान को सही इस्तेमाल कर ले, जैसा कि आपने अभी ऊपर एक हदीस में पढ़ा कि एक शख़्स ने एक बात बे परवाई में ज़बान से निकाल दी मगर वह बात अच्छी थी। तो उस बात की वजह

से अल्लाह तआ़ला न जाने उसके कितने दरजात बुलन्द फ़रमा देते हैं, और उसको कितना अज्र व सवाब हासिल हो जाता है। जब एक इन्सान काफ़िर से मुसलमान होता है तो वह इसी ज़बान की बदौलत होता है, ज़बान से कलिमा–ए–शहादत पढ़ लेता है:

"اشهد ان لا اله الا الله واشهد ان محمدًا رسول الله"

"अश्हदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्–न मुहम्म–दर्रसूलुल्लाहि"

इस कलिमा–ए–शहादत के पढ़ने से पहले वह काफ़िर था मगर इसके पढ़ने के बाद मुसलमान हो गया, पहले जहन्नमी था, अब जन्नती बन गया, पहले अल्लाह का ना पसन्दीदा था, अब महबूब बन गया, और नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्मते इजाबत में शामिल हो गया, यह अज़ीम इन्क़िलाब इस कलिमे की बदौलत आया जो उसने ज़बान से अदा किया।

ज़बान को ज़िक्र से तर रखो

ईमान लाने के बाद एक बार ज़बान से कह दिया: "सुब्हानल्लाह" तो हदीस शरीफ़ में आता है कि उसके ज़रिये अ़मल की तराज़ू का आधा पलड़ा भर जाता है, यह कलिमा छोटा है लेकिन इसका सवाब इतना अज़ीम है। और एक हदीस में है कि "सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीम" ये दो कलिमे ज़बान पर तो हल्के फुल्के हैं कि ज़रा सी देर में अदा हो गये, लेकिन अ़मल की तराज़ू में बहुत भारी हैं, और रहमान को बहुत महबूब हैं। बहर हाल! यह मशीन अल्लाह तआ़ला ने ऐसी बनाई है कि अगर ज़रा सा इसका रुख़ बदल दो और सही तरीक़े से इसको इस्तेमाल करना शुरू कर दो, तो फिर देखो यह तुम्हारे नामा–ए–आमाल में कितना इज़ाफ़ा करती है, और तुम्हारे लिये जन्नत में किस तरह घर बनाती है, और तुम्हें किस तरह अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी अ़ता कराती है, इसके ज़रिये अल्लाह तआ़ला तआ़ला का ज़िक्र करो, और अल्लाह के ज़िक्र से इस ज़बान को तर रखो, फिर देखो किस तरह तुम्हारे दरजात में तरक़्क़ी होती है। एक

सहाबी ने पूछा कि या रसूलल्लाह! कौन सा अमल अफ़्ज़ल है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब में इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारी ज़बान अल्लाह के ज़िक्र से तर रहे, चलते फिरते, उठते बैठते अल्लाह का ज़िक्र करते रहो। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

ज़बान के ज़रिये दीन सिखायें

अगर इस ज़बान के ज़रिये से तुमने किसी को छोटी सी दीन की बात सिखा दी, जैसे एक शख़्स ग़लत तरीक़े से नमाज़ पढ़ रहा था, और तुम्हें मालूम था कि यह ग़लत तरीक़े से नमाज़ पढ़ रहा है, चुनांचे तुमने चुपके से तन्हाई में नर्मी के साथ मुहब्बत और शफ़्क़त से उसको समझा दिया कि भाई! तुम्हारी नमाज़ में यह ग़लती थी। इस तरह कर लिया करो। आपकी ज़बान की ज़रा सी हर्कत से उसकी इस्लाह हो गयी और उसने ठीक नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी, तो अब सारी उमर जितनी नमाज़ें वह ठीक तरीक़े से पढ़ेगा तो उन सब का अज्र व सवाब तुम्हारे नामा-ए-आमाल में भी लिखा जायेगा।

तसल्ली की बात कहना

एक शख़्स तक्लीफ़ और परेशानी में मुब्तला था, तुमने उसकी परेशानी दूर करने के लिये उससे कोई तसल्ली की बात, कोई तसल्ली का कलिमा कह दिया जिसके नतीजे में उसको कुछ ढारस बन गयी, उसको कुछ तसल्ली हासिल हो गयी, तो यह कलिमा कहना तुम्हारे लिये अज़ीम अज्र व सवाब खींच लाया, चुनांचे एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि:

"من عزی ثکلی کسی بردًا فی الجنة" (ترمذی شریف)

यानी अगर कोई शख़्स ऐसी औरत के लिये तसल्ली के कलिमात कहे कि जिसका बेटा गुम हो गया हो, या मर गया हो तो अल्लाह तआला उस तसल्ली देने वाले को जन्नत में शानदार क़ीमती जोड़े पहनायेंगे।

ग़र्ज़ यह कि इस ज़बान को नेक कामों में इस्तेमाल करने के जो

रास्ते अल्लाह तआला ने रखे हैं, उनमें इसको ठीक तरीक़े से इस्तेमाल कर लो, फिर देखो कि तुम्हारे नामा–ए–आमाल में किस तरह सवाब के ढेर लग जायेंगे। जैसे कोई शख़्स जा रहा था तुमने उसकी रहनुमाई करके उसको सही रास्ता बता दिया। अब यह छोटा सा काम कर दिया, और तुम्हें ख़्याल भी नहीं हुआ कि मैंने यह कोई नेकी का काम किया, अल्लाह तआला उसके बदले में बेशुमार अज्र व सवाब अ़ता फ़रमायेंगे। बहर हाल! अगर एक इन्सान इस ज़बान को सही इस्तेमाल करे तो यक़ीन कीजिये उसके लिये जन्नत के दरवाज़े खुल जायें, और उसके बेशुमार गुनाहों की माफ़ी का ज़रिया बन जाये, लेकिन ख़ुदा न करे अगर इस ज़बान का ना जायज़ और ग़लत इस्तेमाल हो, तो फिर यही ज़बान इन्सान को जहन्नम में खींच कर लेजाती है।

ज़बान जहन्नम में लेजाने वाली है

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि जितने लोग जहन्नम में जायेंगे, उनमें अक्सरियत उन लोगों की होगी, जो अपनी ज़बान की करतूत की वजह से जहन्नम में जायेंगे। जैसे झूठ बोल दिया, ग़ीबत कर दी, किसी का दिल दुखा दिया, किसी की दिल आज़ारी की, दूसरों के साथ ग़ीबत में हिस्सा लिया, किसी की तक्लीफ़ पर ख़ुशी का इज़्हार किया वग़ैरह। जब ये गुनाह के काम किये तो उस के नतीजे में वह जहन्नम में चला गया, हदीस शरीफ़ में फ़रमाया कि:

"هل يكب الناس فى النار علىٰ وجوههم الا حصائد السنتهم"

(ترمذی شریف)

यानी बहुत से लोग ज़बान के करतूत की वजह से जहन्नम में जायेंगे। इसलिये यह ज़बान जो अल्लाह तआला ने हमें अ़ता फ़रमाई है, इसको ज़रा ध्यान से इस्तेमाल करो, इसको क़ाबू रखो, बेक़ाबू मत छोड़ो, और इसको सही कामों में इस्तेमाल करो, इसलिये फ़रमाया कि ज़बान से या तो सही बात बोलो, वर्ना ख़ामोश रहो, इसलिये कि ख़ामोशी इससे हज़ार दर्जे बेहतर है कि आदमी ग़लत बात ज़बान से निकाले।

पहले तौलो फिर बोलो

इसी जवह से ज़्यादा बोलने से मना किया गया, इसलिये कि अगर इन्सान ज़्यादा बोलेगा तो ज़बान क़ाबू में नहीं रहेगी, कुछ न कुछ गड़बड़ करेगी, और उसके नतीजे में इन्सान गुनाह में मुब्तला हो जायेगा, इसलिये ज़रूरत के मुताबिक़ बोलो, जैसे एक बुज़ुर्ग ने इरशाद फ़रमाया कि पहले बात को तौलो फिर बोलो, जब तौल तौल कर बात करोगे तो फिर यह ज़बान क़ाबू में आ जायेगी।

हज़रत मियां साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

मेरे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के एक उस्ताद थे हज़रत मियां सैयद असग़र हुसैन मियां साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि, बड़े ऊंचे दर्जे के बुज़ुर्ग थे। और "हज़रत मियां साहिब" के नाम से मशहूर थे, यह ऐसे बुज़ुर्ग थे जिन्हों ने सहाबा-ए-किराम के ज़माने की यादें ताज़ा कर दीं, मेरे वालिद साहिब उनसे बहुत ख़ुसूसी ताल्लुक़ रखते थे, और उनकी ख़िदमत में बहुत कस्रत से जाया करते थे, और हज़रत मियां साहिब भी वालिद साहिब पर बहुत शफ़्क़त फ़रमाया करते थे। हज़रत वालिद साहिब फ़रमाते थे कि मैं एक मर्तबा हज़रत मियां साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और जाकर बैठ गया तो हज़रत मियां साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि कहने लगे कि भाई देखो मौलवी शफ़ी साहिब आज हम अ़र्बी में बात करेंगे, और उर्दू में बात नहीं करेंगे। हज़रत वालिद साहिब फ़रमाते हैं कि मुझे बड़ी हैरानी हुई, कि इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ, आज बैठे बिठाये यह अ़र्बी में बात करने का ख़्याल कैसे आया। मैंने पूछा हज़रत! क्या वजह है? हज़रत ने फ़रमाया: नहीं बस वैसे ही ख़्याल आ गया कि अ़र्बी में बात करेंगे। जब मैंने बहुत इस्रार किया तो फ़रमाया कि बात असल में यह है कि मैंने यह देखा कि जब हम दोनों मिल कर बैठते हैं तो बहुत बातें चल पड़ती हैं, इधर उधर की गुफ़्तगू शुरू हो जाती है, और इसके नतीजे में हम लोग कभी कभी ग़लत बातों के अन्दर मुब्तला हो जाते हैं। मुझे ख़्याल आया

कि अगर हम अ़र्बी में बात करने का एहतिमाम करें तो अ़र्बी न तुम्हें रवानी के साथ बोलनी आती है और न मुझे बोलनी आती है, इसलिये कुछ तकल्लुफ़ के साथ अ़र्बी में बोलना पड़ेगा, तो इसके नतीजे में यह ज़बान जो बेमुहार चल रही है, यह क़ाबू में आ जायेगी, और फिर बिला ज़रूरत फ़ुज़ूल गुफ़्तगू न होगी, सिर्फ़ ज़रूरत की बात होगी।

हमारी मिसाल

फिर हज़रत मियां साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि भाई! हमारी मिसाल उस शख़्स जैसी है जो अपने घर से बहुत सारी अशरफ़ियां, बहुत सारे पैसे लेकर सफ़र पर रवाना हुआ था, और अभी उसका सफ़र जारी था, अभी मन्ज़िल तक न पहुंचा था कि उसकी सारी अशरफ़ियां ख़र्च हो गयीं। और अब चन्द अशरफ़ियां उसके पास बाक़ी रह गयीं, और अब वह अशरफ़ियों को बहुत संभाल कर और फूंक फूंक कर ख़र्च करता है, सिर्फ़ बहुत ज़्यादा ज़रूरत की जगह पर ख़र्च करता है। फ़ुज़ूल जगह पर ख़र्च नहीं करता है ताकि किसी तरह वह अपनी मन्ज़िल तक पहुंच जाये।

फिर फ़रमाया कि हमने अपनी अक्सर उमर गुज़ार दी, और उमर के जो लम्हात अल्लाह तआ़ला ने अ़ता फ़रमाये थे, ये सब मन्ज़िल तक पहुंचने के लिये माल व दौलत और अशरफ़ियां थीं, अगर उनको सही तरीक़े से इस्तेमाल करते तो मन्ज़िल तक पहुंचना आसान हो जाता और मन्ज़िल का रास्ता हम्वार हो जाता, लेकिन हमने पता नहीं किन किन चीज़ों में इसको ख़र्च कर दिया, बैठे हुए गप-शप कर रहे हैं, मज्लिस जमाई जा रही है, इसका नतीजा यह हुआ कि सारी ताक़तें उन फ़ुज़ूल चीज़ों में ख़र्च हो गयीं, अब पता नहीं कि ज़िन्दगी के कितने दिन बाक़ी हैं, अब यह दिल चाहता है कि ज़िन्दगी के औक़ात (समय) को तौल तौल कर एह्तियात के साथ फूंक फूंक कर इस्तेमाल करें। जिन लोगों को अल्लाह तआ़ला यह फ़िक्र अ़ता फ़रमाते हैं, वे यह सोचते हैं कि जब अल्लाह तआ़ला ने ज़बान की यह दौलत अ़ता फ़रमाई है तो इसको ठीक ठीक इस्तेमाल करूं, ग़लत जगह इस्तेमाल

न करूं।

ज़बान को काबू में करने का इलाज

हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु जो अंबिया अलैहिमुस्सलाम के बाद सब से अफ़्ज़ल इन्सान हैं। वह एक मर्तबा अपनी ज़बान को पकड़ कर बैठे थे, और उसको मरोड़ रहे थे, लोगों ने पूछा कि ऐसा क्यों कर रहे हैं? उन्हों ने जवाब दियाः

"ان هذا اورد نی الموارد" (مؤطا امام مالك)

यानी इस ज़बान ने मुझे बड़ी हलाकतों में डाल दिया है, इसलिये मैं इसको काबू करना चाहता हूं। बाज़ रिवायात में मर्वी है कि अपने मुंह में कंकर डाल कर बैठ गये, ताकि बिला ज़रूरत ज़बान से बात न निकले। बहर हाल! जबान ऐसी चीज़ है कि इसके ज़रिये से इन्सान जन्नत भी कमा सकता है, और दोज़ख़ भी कमा सकता है, इसको काबू करने की ज़रूरत है, ताकि यह बे जगह इस्तेमाल न हो, इसका तरीका यह है कि इन्सान ज़्यादा बोलने से परहेज़ करे, इसलिये कि इन्सान जितना ज़्यादा कलाम करेगा, उतना ही ज़्यादा गुनाहों में मुब्तला होगा, चुनांचे अपनी इस्लाह के तालिब हज़रात जब किसी शैख़ के पास इलाज के लिये जाते हैं तो शैख़ हर एक के लिये उसके मुनासिब अलग अलग नुस्ख़ा तज्वीज़ करते हैं, और वे बहुत से हज़रात के लिये सिर्फ़ ज़बान को काबू में करने के लिये इलाज तज्वीज़ करते हैं।

ज़बान पर ताला डाल लो

एक साहिब मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िदमत में आया करते थे, लेकिन कोई इस्लाह का ताल्लुक कायम नहीं किया था, बस वैसे ही मिलने के लिये आ जाया करते थे, और जब बातें शुरू करते तो फिर रुकने का नाम नहीं लेते। एक किस्सा बयान किया वह ख़त्म हुआ तो दूसरा किस्सा सुनाना शुरू कर दिया, हज़रत वालिद साहिब बर्दाश्त करते रहते थे। एक दिन उन्हों ने हज़रत वालिद साहिब से दरख़्वास्त की कि मैं आपसे इस्लाही ताल्लुक कायम करना चाहता हूं। हज़रत वालिद साहिब ने कुबूल कर

लिया और इजाज़त दे दी, उसके बाद उन्हों ने कहा कि हज़रत मुझे कोई वज़ीफ़ा पढ़ने के लिये बता दें, मैं क्या पढ़ा करूं? हज़रत वालिद साहिब ने फ़रमाया कि तुम्हारा एक ही वज़ीफ़ा है और वह यह कि इस ज़बान पर ताला डाल लो, और यह ज़बान जो हर वक़्त चलती रहती है इसको क़ाबू में करो, तुम्हारे लिये और कोई वज़ीफ़ा नहीं है। चुनांचे उन्हों ने जब ज़बान को क़ाबू में किया तो उसी के ज़रिये उनकी इस्लाह हो गयी।

गप—शप में ज़बान को लगाना

हमारे यहां ज़बान के ग़लत इस्तेमाल की जो वबा चल पड़ी है, याद रखो, यह बड़ी ख़तरनाक बात है, दोस्तों को बुलाया कि आना ज़रा बैठ कर गप—शप करेंगे, अब उस गप—शप के अन्दर झूठ बोला जा रहा है, ग़ीबत उसके अन्दर हो रही है, दूसरों की बुराई उसमें की जा रही है, दूसरों की नक़ल उतारी जा रही है, जिसका नतीजा यह होता है कि हमारी एक मज्लिस न जाने कितने गुनाहों का मज्मूआ होती है। इस लिये सब से पहला काम यह है कि इस ज़बान को क़ाबू में करने की अहमियत दिल में पैदा करें, अल्लाह तआला अपनी रहमत से इसकी अहमियत हमारे दिलों में पैदा फ़रमा दे, आमीन।

औरतें और ज़बान का इस्तेमाल

यों तो सारा समाज इस ज़बान के गुनाहों में मुब्तला है लेकिन हदीसों में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरतों के अन्दर जिन बीमारियों के पाये जाने की निशान देही फ़रमाई, उनमें से एक बीमारी यह भी है कि ज़बान उनके क़ाबू में नहीं होती। हदीस में आता है कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरतों से ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि:

ऐ औरतो! मैंने जहन्नम वालों में सब से ज़्यादा तादाद में तुमको पाया, यानी जहन्नम में मर्दों के मुक़ाबले में औरतों की तादाद ज़्यादा है। औरतों ने पूछा या रसूलल्लाह! इसकी क्या वजह है? तो आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया कि:

"تکثرن اللعن وتکفرن العشیر" (بخاری شریف)

यानी तुम लान तान बहुत करती हो, और शौहरों की नाशुक्री बहुत करती हो, इस वजह से जहन्नम में तुम्हारी तादाद ज़्यादा है। देखिये इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो दो बातें बयान फ़रमायीं, उन दोनों का ताल्लुक़ ज़बान से है। लानत की कसरत और शौहर की नाशुक्री। मालूम हुआ कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने औरतों के अन्दर जिन बीमारियों की तश्ख़ीस फ़रमाई, उनमें ज़बान के बेजा इस्तेमाल को बयान फ़रमाया, कि ये औरतें ज़बान को ग़लत इस्तेमाल करती हैं, जैसे किसी को ताना दे दिया, किसी को बुरा कह दिया, किसी की ग़ीबत कर दी, किसी की चुग़ली खाली, यह सब इसके अन्दर दाख़िल है।

मैं जन्नत की ज़मानत देता हूं

"عن سهل بن سعد رضی اللہ عنه قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم من یضمن لی ما بین لحییه ومابین رجلیه اضمن له الجنة" (بخاری شریف)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स मुझे दो चीज़ों की ज़मानत और गारन्टी दे दे तो मैं उसको जन्नत की गारन्टी देता हूं। एक उस चीज़ की गारन्टी दे दे जो उसके दो जब्ड़ों के दर्मियान है यानी ज़बान कि यह ग़लत इस्तेमाल नहीं होगी, इस ज़बान से झूठ नहीं निकलेगा, ग़ीबत नहीं होगी, दिल दुखाने वाली बात किसी की नहीं होगी वग़ैरह वग़ैरह। और एक उस चीज़ की गारन्टी दे दे जो उसकी दोनों टांगों के दर्मियान है यानी शर्मगाह कि उसको ग़लत जगह पर इस्तेमाल नहीं करूंगा। तो मैं उसको जन्नत की ज़मानत देता हूं।

इससे मालूम हुआ कि ज़बान की हिफ़ाज़त दीन की हिफ़ाज़त का आधा बाब है। और आधा दीन ज़बान के अन्दर है, आधे गुनाह ज़बान के ज़रिये होते हैं, इसलिये इसकी हिफ़ाज़त ज़रूरी है।

नजात के लिये तीन काम

"عن عقبة ابن عامر رضى الله عنه قال قلت يا رسول الله ما النجاة؟ قال امسك عليك لسانك، وليسعك بيتك وابك على خطيئتك" (ترمذی شریف)

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया कि या रसूलल्लाह! नजात का क्या तरीक़ा है? यानी आख़िरत में अज़ाबे जहन्नम से नजात हो जाये, और अल्लाह तआ़ला अपनी रज़ामन्दी अ़ता फ़रमा दें, और जन्नत में दाख़िला फ़रमा दें, इसका क्या तरीक़ा है? तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस सवाल के जवाब में तीन जुम्ले इरशाद फ़रमाये, पहला जुम्ला यह इरशाद फ़रमाया कि तुम अपनी ज़बान को अपने क़ाबू में रखो, ज़बान बेक़ाबू न होने पाये, और दूसरा जुम्ला यह इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारा घर तुम्हारे लिये काफ़ी हो जाये, यानी अपना ज़्यादा वक़्त घर में गुज़ारो, फ़ुज़ूल और बिला वजह तुम्हें घर से निकलने की ज़रूरत नहीं। सिर्फ़ ज़रूरत के तहत घर से बाहर जाओ, बिला ज़रूरत बाहर मत जाओ, ताकि बाहर जो फ़ितने हैं उनके अन्दर मुब्तला न हो जाओ।

गुनाहों पर रोओ

और तीसरा जुम्ला यह इरशाद फ़रमाया कि अगर कोई ग़लती, कोई गुनाह या ख़ता तुम से हो जाये तो उस ग़लती पर रोओ, रोने का मतलब यह है कि उससे तौबा करो, और उस पर शर्मिन्दगी का इज़्हार करके इस्तिग़फ़ार करो। रोने का मतलब यह नहीं है कि उस पर हक़ीक़त में रोओ, जैसे कुछ दिन पहले एक साहिब मुझ से कहने लगे कि मुझे रोना आता ही नहीं है इसलिये मैं परेशान हूं। असल बात यह है कि अगर ख़ुद से ग़ैर इख़्तियारी तौर पर रोना न आये तो इसमें कोई हर्ज नहीं, लेकिन गुनाह पर दिल से शर्मिन्दा होकर अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर तौबा व इस्तिग़फ़ार करे, कि या अल्लाह मुझसे ग़लती हो गयी, आप माफ़ फ़रमा दें।

ऐ ज़बान अल्लाह से डरना

"وعن ابی سعید الخدری رضی اللہ عنہ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال اذا اصبح ابن آدم، فان الاعضاء کلها تکفر اللسان، تقول اتق اللہ فینا، فانما نحن بک، فان استقمت استقمنا، وان اعوججت اعوججنا" (ترمذی شریف)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब सुबह होती है तो इन्सान के जिस्म के अन्दर जितने आज़ा (अंग) हैं वे सब ज़बान से मुख़ातिब होकर यह कहते हैं कि ऐ ज़बान! तू अल्लाह से डरना, इसलिये कि हम तो तेरे ताबे हैं, अगर तू सीधी रही तो हम भी सीधे रहेंगे, अगर तू टेढ़ी हो गयी तो हम भी टेढ़े हो जायेंगे। मतलब यह है कि इन्सान का सारा जिस्म ज़बान के ताबे होता है, अगर ज़बान ने ग़लत काम करना शुरू कर दिया तो उसके नतीजे में सारे का सारा जिस्म गुनाह में मुब्तला हो जाता है, इसलिये वे ज़बान से कहते हैं कि तू सीधी रहना वर्ना तेरे करतूत की वजह से हम भी मुसीबत में फंस जायेंगे।

अब किस तरह ये आज़ा ज़बान से मुख़ातिब होते हैं? हो सकता है कि हक़ीक़त में कहते हों इसलिये कि क्या बईद है कि अल्लाह तआला इन आज़ा को बोलने की ताक़त अता फ़रमा देते हों, और उसके नतीजे में वे गुफ़्तगू करते हों, इसलिये कि ज़बान को भी बोलने की ताक़त अल्लाह तआला ने अता फ़रमाई है, और क़ियामत के दिन अल्लाह तआला इन आज़ा को बोलने की कुव्वत अता फ़रमायेंगे।

क़ियामत के दिन आज़ा बोलेंगे

पहले ज़माने में "नेचरियत" का बड़ा ज़ोर था। और यह फ़िर्क़ा "नेचरियत" के लोग मोजिज़ों वग़ैरह का इन्कार करते थे, और यह कहते थे कि यह तो फ़ित्रत के ख़िलाफ़ है, कैसे हो सकता है। चुनांचे एक साहिब ने हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि से पूछा कि यह जो कुरआन शरीफ़ में आया है कि क़ियामत के दिन ये हाथ पांव गवाही देंगे, गुफ़्तगू करेंगे। यह किस तरह गवाही देंगे? इनके अन्दर ज़बान

नहीं है, और बग़ैर ज़बान के कैसे बोलेंगे? तो हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने पूछा कि अच्छा यह बताओ कि ज़बान बग़ैर ज़बान के कैसे बोलती है? यह ज़बान भी एक गोश्त का टुकड़ा है, इसके लिये अलग से कोई ज़बान नहीं है, लेकिन फिर भी बोल रही है, जब अल्लाह तआ़ला ने गोश्त के इस लोथड़े को बोलने की कुव्वत अ़ता फ़रमा दी, तो यह बोलने लगी, अगर अल्लाह तआ़ला इस कुव्वत को छीन लें, तो बोलना बन्द कर देगी। और यही बोलने की कुव्वत जब अल्लाह तआ़ला हाथ को अ़ता फ़रमायेंगे तो हाथ बोलने लगेगा, पांव को अ़ता फ़रमायेंगे तो पांव बोलने लगेगा।

बहर हाल! यह हकीकत भी हो सकती है कि सुबह के वक़्त आज़ा ज़बान से इस तरह गुफ़्तगू करते हों, और यह भी हो सकता है कि यह सिर्फ़ एक मिसाल के तौर पर हो, कि ये सारे आज़ा (जिस्म के अंग) चूंकि इस ज़बान के ताबे हैं। इसलिये ज़बान को सही रखने की कोशिश करो।

बहर हाल! इस ज़बान की हिफ़ाज़त बहुत ज़रूरी है, जब तक इन्सान इस पर क़ाबू न पाले और इसको गुनाहों से न बचा ले, उस वक़्त तक कामयाब नहीं हो सकता। अल्लाह तआ़ला हम सब को इस ज़बान की हिफ़ाज़त करने और इसको सही इस्तेमाल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

وآخردعوانا ان الحمد لله رب العالمين

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम

और बैतुल्लाह की तामीर

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْماً كَثِيْرًا كَثِيْرًا۔ اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرَاهِيْمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ، رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا، اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ، رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَااُمَّةً مُّسْلِمَةًلَّكَ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ، رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ، اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ.

(سورة البقرة: ١٢٧)

آمنت بالله صدق الله مولانا العظيم، وصدق رسوله النبي الكريم، ونحن علىٰ ذلك من الشاهدين والشاكرين والحمد لله رب العالمين.

बुज़ुर्गाने दीन और मोहतरम प्यारे भाईयो!

यह हम सब के लिये बड़ी अज़ीम सआदत और ख़ुश नसीबी का मौक़ा है कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने हमें आज एक मस्जिद की तासीस और उसकी बुनियाद रखने की मुबारक तक़रीब में शिर्कत का मौक़ा अता फ़रमाया। इस मौक़े पर मुझ से फ़रमाइश की गयी कि कुछ गुज़ारिशात आप हज़रात की ख़िदमत में पेश करूं, अल्लाह का शुक्र है कि इस मुबारक महफ़िल में मेरे बहुत से बुज़ुर्ग जो मुझ से कहीं ज़्यादा इल्म व फ़ज़्ल और फ़लाह व तक़्वे वाले हैं, इसी स्टेज पर तशरीफ़ रखते हैं और उनकी मौजूदगी में मुझ नाकारा का कुछ कहना एक जसारत और जुर्रत मालूम होती है लेकिन साथ ही अपने बुज़ुर्गों से

हमेशा यह सुना कि जब कोई बड़ा किसी बात का हुक्म दे तो छोटे का यही काम है कि उस हुक्म की तामील करे उसमें चूं व चरा की मजाल न होनी चाहिये, इसलिये तामीले हुक्म की ख़ातिर यह मुश्किल फ़रीज़ा अन्जाम दे रहा हूं कि अपने इन बुज़ुर्गों की मौजूदगी में, आप हज़रात के सामने ख़िताब करने के लिये बैठा हूं। अल्लाह जल्ल शानुहू से दुआ है कि वह अपने फ़ज़्ल व करम से ऐसी बात कहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये जो उसकी रिज़ा के मुताबिक़ हो, और उससे मुझे और सुनने वालों को फ़ायदा पहुंचे, आमीन।

दीन की जामिअिय्यत

मैं सोच रहा था कि इस मौक़े पर दीन की कौन सी बात आप हज़रात की ख़िदमत में पेश करूं क्योंकि हम और आप जिस दीन के पैरोकार हैं अल्लाह तबारक व तआला ने उसको ऐसा अज़ीमुश्शान बनाया है कि उसका हर गोशा उसका हर पहलू एक मुस्तक़िल मौज़ू बनाने के क़ाबिल है और इसके लिये एक मुस्तक़िल वक़्त चाहिये है।

ज़ फ़र्क़ ता ब–क़दम हर कुजा कि मी नगरम
करिश्मा दामने दिल मी कशद कि जा ईं जा अस्त

दीन के हर पहलू का हाल यह है कि जब उसकी तरफ़ निगाह जाती है तो ख़्याल होता है कि इसी को बात का मौज़ू बनाया जाए। इसलिये समझ में नहीं आ रहा था कि क्या बात आप हज़रात की ख़िदमत में अर्ज़ करूं। लेकिन इस मस्जिद की बुनियाद का पत्थर रखने के अज़ीमुश्शान मौक़े पर शिर्कत करते वक़्त और हिस्सा लेते वक़्त ख़्याल आया कि आजकी गुफ़्तगू का मौज़ू इसी मस्जिद की तामीर की मुनासिबत से क़ुरआने करीम की इन आयात को बनाया जाये जो अभी मैंने आप हज़रात की ख़िदमत में पेश कीं। इन आयाते करीमा में अल्लाह तआला ने एक अज़ीमुश्शान वाक़िआ बयान फ़रमाया है।

बैतुल्लाह की तामीर का वाक़िआ

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बुलन्द मर्तबे वाले बेटे हज़रत इस्माईल ज़बीहुल्लाह अलैहिस्सलाम के साथ मिल कर अल्लाह

तआ़ला का घर तामीर फ़रमाया। क़ुरआने करीम ने इस वाक़िए को बड़े वालिहाना अन्दाज़ में बयान फ़रमाया, और पूरी उम्मत के लिये क़ियामत आने तक इसको अपनी मुक़र्रब किताब का हिस्सा बना कर पूरी उम्मते मुस्लिमा के लिये इसको हमेशा के लिये महफ़ूज़ फ़रमा दिया, और इस बात की दावत दे दी कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के इस वाक़िए को बार बार ताज़ा किया जाये। ख़्याल आया कि आज इस महफ़िल में मुख़्तसर तौर पर इन आयतों की थोड़ी सी तफ़्सीर और इस दुआ़ की थोड़ी सी तफ़्सील आप हज़रात की ख़िदमत में पेश करूं, जो हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ने अल्लाह का घर तामीर करते वक़्त मांगी थी। और जिसको अल्लाह तबारक व तआ़ला ने तफ़्सील के साथ सूरः बक़रः में ज़िक्र फ़रमाया, सब से पहले अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि:

"وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ" (سورة البقرة:١٢٧)

उस वक़्त को याद करो जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बैतुल्लाह की बुनियादों को बुलन्द फ़रमा रहे थे, और हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम भी (उनके साथ में शामिल थे) "व इज़" यह अ़र्बी ज़बान में बयान करने का ख़ास ढंग है जिस से इस बात की तरफ़ इशारा किया जाता है कि जो बात आगे बयान की जा रही है वह इस लायक़ है कि हर आन और हर लम्हे उसको अपनी आंखों के सामने मुस्तहज़र (ध्यान व ख़्याल में) रखा जाये।

इस आयत में इस बात की तरफ़ इशारा फ़रमा दिया कि बैतुल्लाह अगर्चे पहले से मौजूद था, उसकी बुनियादें मौजूद थीं हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के वक़्त से यह दुनिया के अन्दर चला आता था, लेकिन लम्बी मुद्दत और ज़माने गुज़र जाने से उसकी इमारत मौजूद न रही थी, बुनियादें बाक़ी थीं। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उन बुनियादों पर इस बैतुल्लाह की तामीर फ़रमाई, और हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम इस अ़मल में उनके साथ शरीक थे।

मुश्तरका कारनामे को बड़े की तरफ़ मन्सूब करना

मेरे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब

रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का मामूल था कि रोज़ाना जब कुरआने करीम की तिलावत फ़रमाया करते थे तो तिलावत के दौरना ही कुरआने करीम की आयतों में ग़ौर व फ़िक्र भी करते थे। कभी कभी हम लोगों में से कोई या हज़रत के ख़ादिमों में से कोई मौजूद होता तो जो बात तिलावत के दौरान ज़ेहन में आती उसके बारे में उसके सामने इरशाद फ़रमाया करते थे। एक दिन हज़रत वालिद माजिद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि कुरआने करीम की तिलावत फ़रमा रहे थे, मैं क़रीब बैठा हुआ था, जब इस आयत पर पहुंचे:

"وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ"

तो तिलावत रोक कर मुझ से फ़रमाया कि देखो: कुरआने करीम की इस आयत में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने एक अ़जीब तरीक़ा इख़्तियार फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला यों भी फ़रमा सकते थे कि:

"وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ وَإِسْمَاعِيلُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ"

यानी उस वक़्त को याद करो जब इब्राहीम और "इस्माईल" दोनों बैतुल्लाह की बुनियादें उठा रहे थे, लेकिन अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इस तरह बयान नहीं फ़रमाया, बल्कि पहले इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का नाम लेकर जुम्ला मुकम्मल कर दिया कि उस वक़्त को याद करो जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बैतुल्लाह की बुनियादें उठा रहे थे और इस्माईल भी। इस्माईल अ़लैहिस्सलाम का आख़िर में अलग ज़िक्र फ़रमाया। वालिद साहिब ने फ़रमाया कि हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम भी बैतुल्लाह की तामीर के वक़्त हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के साथ उस अ़मल में शरीक थे। पत्थर उठा कर ला रहे थे और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को दे रहे थे और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम उन पत्थरों से बैतुल्लाह की तामीर फ़रमा रहे थे। लेकिन इसके बावजूद कुरआने करीम ने इस तामीर को बराहे रास्त हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ मन्सूब फ़रमाया।

फिर वालिद साहिब ने फ़रमाया कि बात असल में यह है कि अगर कोई बड़ा और छोटा दोनों मिल कर एक काम अन्जाम दे रहे हों तो

अदब का तक़ाज़ा यह है कि उस काम को बड़े की तरफ़ मन्सूब किया जाये और उसके साथ छोटे का ज़िक्र यों कर दिया जाए कि छोटा भी उसके साथ मौजूद था, न यह कि छोटे और बड़े दोनों को मर्तबे में बराबर क़रार देकर दोनों की तरफ़ उस काम को बराबर मन्सूब कर दिया जाये।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और अदब

इसी बात को हज़रत वालिद माजिद रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने एक और वाक़िए के ज़रिये समझाया। फ़रमाया कि हदीस में आता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का आम मामूल तो यह था कि इशा के बाद ज़्यादा किसी काम में मश्ग़ूल नहीं होते थे, आप फ़रमाते थे कि इशा के बाद क़िस्से कहानियां कहना और ज़्यादा फ़ुज़ूल बात करने में मश्ग़ूल रहना अच्छी बात नहीं है। ताकि सुबह की नमाज़ पर असर न पड़े, लेकिन साथ ही फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि कभी कभी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इशा के बाद हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु से मुसलमानों के मामलात में मश्विरा फ़रमाया करते थे, और मैं भी उनके साथ होता था। देखिये जब फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस वाक़िए का तज़्किरा फ़रमाया तो यों नहीं कहा कि मुझ से और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से मश्विरा किया करते थे, बल्कि फ़रमाया कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से मश्विरा करते थे और मैं भी उनके साथ होता था। यह है छोटे का अदब कि जब छोटा किसी बड़े के साथ कोई काम कर रहा हो तो वह काम अपनी तरफ़ मन्सूब न करे बल्कि बड़े की तरफ़ मन्सूब करे कि बड़े ने यह काम किया, और मैं भी उनके साथ था।

इसलिये क़ुरआने करीम ने भी वही तरीक़ा इख़्तियार फ़रमाया कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बैतुल्लाह की बुनियादें बुलन्द कर रहे थे और इस्माईल अ़लैहिस्सलाम भी उनके साथ शामिल थे। यहां बैतुल्लाह की तामीर की असल निस्बत हज़रत इब्राहीम की तरफ़ की गयी और

इस्माईल अलैहिस्सलाम को उनके साथ शामिल किया गया। यह तो एक नुक्ता था जो हज़रत वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अलैहि के हवाले से याद आ गया।

अज़ीमुश्शान वाक़िआ

ग़र्ज़ समझने की बात यह है कि यह वाक़िआ कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बैतुल्लाह की तामीर फ़रमाई, यह कोई मामूली वाक़िआ नहीं है बल्कि तारीख़े इन्सानियत का और दीनों की तारीख़ का अज़ीमुश्शान वाक़िआ है, इबादत-गाहों की तारीख़ में इससे ज़्यादा अज़ीमुश्शान वाक़िआ कोई और नहीं हो सकता, इसलिये कि यह अल्लाह का घर तामीर किया जा रहा था, इस वाक़िए में बेशुमार तफ़्सीलात थीं, जैसे कि ये पत्थर कहां से लाये गये? गारा कहां से जमा किया गया? कौन पत्थर उठा रहा था? कौन चिनाई कर रहा था? कितनी बुलन्दी पर तामीर किया गया? कितनी लम्बाई और कितनी चौड़ाई थी? कितना वक़्त उस तामीर में लगा? कितना रुपया उस पर ख़र्च हुआ? ये सारी तफ़्सीलात थीं लेकिन कुरआने करीम ने इन तफ़्सीलात में से कोई तफ़्सील ज़िक्र नहीं फ़रमाई, बस इस वाक़िए की तरफ़ इशारा किया गया कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बैतुल्लाह की तामीर कर रहे थे।

उसके बाद यह बयान फ़रमाया कि जिस वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बैतुल्लाह की तामीर कर रहे थे उस वक़्त उनकी ज़बाने मुबारक पर क्या दुआयें थीं? वे क्या अल्फ़ाज़ कह रहे थे? अल्लाह तबारक व तआला से क्या मुनाजात कर रहे थे? इससे मालूम हुआ कि वह सारा अमल एक तरफ़ और उस अमल के साथ जो अल्लाह तबारक व तआला के साथ तल्लुक़ क़ायम करने वाली दुआयें ज़बाने मुबारक पर थीं वे एक तरफ़, अल्लाह तआला को सारे अमल के मुक़ाबले में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआयें इतनी पसन्द आयीं कि उनको क़ियामत आंने तक के लिये कुरआने करीम का हिस्सा बना दिया। चुनांचे वह बैतुल्लाह की तामीर का काम कर रहे थे तो

ज़बाने मुबारक पर यह दुआ थीः

"رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا، إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ"

"कि ऐ परवरदिगार! हम से इस ख़िदमत को अपने फ़ज़्ल व करम से अपनी बारगाह में शर्फ़े कुबूलियत अता फ़रमा, बिला शुबह आप बहुत सुनने वाले और बहुत जानने वाले हैं" जो बात अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को पसन्द आयी, जो अदा अल्लाह तबारक व तआला को भाई वह यह कि काम तो इतना अज़ीमुश्शान अन्जाम दे रहे हैं कि इस रूए ज़मीन पर अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ मन्सूब पहला और आख़िरी घर तामीर कर रहे हैं, जो क़ियामत तक के लिये सारी इन्सानियत के वास्ते एक मक़्नातीस बनने वाला है, जिसकी तरफ़ लोग खिंच खिचं कर जाने वाले हैं, वहां पर इबादतें करने वाले हैं, वह बैतुल्लाह कि जिसकी बुनियादें ना मालूम हो चुकी थीं, वह बैतुल्लाह जिस की तामीर ख़त्म हो चुकी थी, उसको हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उठा रहे थे, लेकिन ज़बान और दिल पर कोई फ़ख़्र नहीं, कोई नाज़ नहीं, कोई गुरूर भी नहीं कि मैं इतना बड़ा काम अन्जाम दे रहा हूं और इस काम को अन्जाम देते वक़्त सीना तना हुआ नहीं है, गर्दन अकड़ी हुई नहीं है और किसी क़िस्म के फ़ख़्र और तकब्बुर के जज़्बात नहीं बल्कि दिल में यह जज़्बात हैं कि या अल्लाह मेरी यह ख़िदमत और मेरा यह अमल इस लायक़ तो नहीं है कि आपकी बारगाह में कुबूलियत हासिल करे, लेकिन ऐ अल्लाह आप अपने फ़ज़्ल व करम और अपनी रह्मत से इसे कुबूल फ़रमा लीजिये।

दिल में बड़ाई न हो

इस दुआ में इशारा इस बात की तरफ़ कर दिया कि इन्सान अल्लाह का बन्दा है, वह चाहे कितना ही बड़ा कारनामा अन्जाम दे रहा हो, कितनी ही बड़ी ख़िदमत अन्जाम दे रहा हो, लेकिन उसके दिल में कभी यह ख़्याल पैदा नहीं होना चाहिये कि मैं कोई बहुत बड़ा कारनामा अन्जाम दे रहा हूं या यह कि मैं अल्लाह के दीन की कोई बहुत बड़ी ख़िदमत कर रहा हूं। उसके दिल में यह जज़्बा होना चाहिये कि मेरा

यह अ़मल मेरी ज़ात के लिहाज़ से तो इस लायक़ नहीं कि उसकी बारगाह में पेश किया जाये, लेकिन अल्लाह तबारक व तआ़ला के हुज़ूर यह इल्तिजा है कि या अल्लाह इस छोटे अ़मल को और इस अधूरे अ़मल को अपने फ़ज़्ल व करम से कुबूलियत का शर्फ़ अ़ता फ़रमा दीजिये। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने इस दुआ़ से यह सबक़ दिया कि दुनिया का दस्तूर यह है कि बड़े बड़े काम जो शख़्स अन्जाम देता है तो उसका नफ़्स और उसकी नफ़्सानी ख़्वाहिशात उसको फ़ख़्र पर उभारती हैं, दूसरों के सामने शैख़ी भगारने की तरफ़ माइल करती हैं। लेकिन हज़राते अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम ने अपनी सुन्नत से यह तरीक़ा बताया कि अगर तुमने कोई नेक काम किया, और उस नेक काम से तुम्हारे दिल में कोई फ़ख़्र और तकब्बुर पैदा हो गया तो वह उस अ़मल को मलियामेट कर डालेगा। इसके बजाये जब तुम कोई अ़मल करो तो यह सोचो कि मुझे तो अल्लाह की बारगाह में जैसा अ़मल पेश करना चाहिये था वैसा अ़मल पेश नहीं कर सका, अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से कुबूल फ़रमाये, आमीन।

मक्के का फ़तह होना और आप सल्ल० की इंकिसारी

नबी–ए–करीम दो जहां के सरदार मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़तहे मक्का के मौके पर जब फ़ातिहाना शान से मक्का में दाख़िल हो रहे थे, इक्कीस साल की मेहनत का फल मक्का मुकर्रमा की फ़तह की सूरत में सामने आ रहा था उस मक्का में फ़ातिहाना शान से दाख़िल हो रहे थे जिसमें रहने वालों ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तक्लीफ़ें पहुंचाने और दुख देने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी, जहां हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ साज़िशें तैयार की गयीं, क़त्ल के मन्सूबे बनाये गये, मुसलमानों को "ला इला–ह इल्लल्लाह" कहने के जुर्म में ज़ुल्म व सितम का कोई दक़ीक़ा नहीं छोड़ा, उस मौके पर कोई और होता तो उसका सीना तना हुआ होता, गर्दन अकड़ी हुई होती और "अ–न वला ग़ैरी" (मैं ही सब कुछ हूं) के नारे लगाता हुआ दाख़िल होता, और

मक्का मुकर्रमा की गलियां ख़ून से लाला हो जातीं। लेकिन यह रह्मतुल लिल्आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, चुनांचे हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे वह मन्ज़र आज भी इस तरह याद है जैसे उसको देख रहा हूं कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुअल्ला (मक्के शरीफ़ के क़ब्रिस्तान) की तरफ़ से मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हो रहे हैं और अपनी ऊंटनी "नाक़ा-ए-क़ुस्वा" पर सवार हैं, और ऊंटनी पर सवार होने की हालत में गर्दन झुकी हुई है यहां तक कि ठोड़ी मुबारक सीने से लगी हुई है और आंखों से आंसू जारी हैं और ज़बाने मुबारक पर ये आयतें हैं:

"إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا" (سورة الفتح:١)

कि या अल्लाह यह जो कुछ फ़तह हुई यह आप ही की तरफ़ से है मेरी क़ुव्वते बाज़ू का करिश्मा नहीं, यह आपके फ़ज़्ल व करम से है कि आपने मुझे फ़ातिहाना शान से यहां दाख़िल फ़रमाया, इसलिये अब फ़ातेह की शान यह है कि उसकी गर्दन तनने के बजाये झुक जाये और सीना-ए-मुबारक से लग जाये। अंबिया-ए-किराम की यह सुन्नत थी और यही नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है और इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की सुन्नत है।

तौफ़ीक़ अल्लाह की तरफ़ से होती है

जब अल्लाह तआला किसी अच्छे अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये तो याद रखो कि यह तौफ़ीक़ भी उसकी तरफ़ से है, अगर अमल की तौफ़ीक़ न होती तो तुम से यह काम बन नहीं सकता था। यह अल्लाह का करम है कि उसने तुम्हें इस ख़िदमत पर लगा दिया।

मिन्नत मनेह कि ख़िदमते सुल्तां हमीं कुनी
मिन्नत अज़ो शनास कि बख़िदमत बदाश्तत्

कि यह एह्सान करने का मौक़ा नहीं कि मैंने बड़ी नमाज़ें पढ़ लीं, मैंने बड़े रोज़े रख लिये, मैंने बड़ा ज़िक्र कर लिया, मैंने बड़ी इबादतें अन्जाम दे लीं, मैंने बड़ी ख़िदमते दीन अन्जाम दीं, मैंने बड़ी किताबें लिखीं, मैंने बड़ी तक़रीरें कीं, मैंने बड़े फ़तवे लिखे, यह कोई फ़ख़्र की

बात नहीं, अरे यह अल्लाह तआ़ला का करम है कि वह एक ज़र्रे से जो चाहे काम ले। यह दुआ़ करो कि वह नेक काम करने की तौफ़ीक़ दे। और जो कुछ अ़मल करने की तौफ़ीक़ हो तो एक बन्दे का काम यह है कि सब से पहले उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे और अल्लाह के सामने उसके क़ुबूल होने की दुआ़ मांगे, कि ऐ अल्लाह! इसको अपने फ़ज़्ल व करम से क़ुबूल फ़रमा, यह बड़े पस्त हौसला इन्सान का काम है कि थोड़े से अ़मल की तौफ़ीक़ अल्लाह ने दे दी तो उस पर इतराने लगा, उसके ऊपर फ़ख़्र व नाज़ में मुब्तला हो गया। और लोगों के सामने तकब्बुर करने लगा। जैसे अ़र्बी ज़बान की एक मिसाल है कि:

"صلی الحائك ركعتين وانتظر الوحي"

एक जुलाहे ने एक मर्तबा दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी, नमाज़ पढ़ने के बाद इन्तिज़ार में बैठा है कि कब मेरे पास "वही" नाज़िल हो। यह समझ रहा है कि दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ना इतना अ़ज़ीमुश्शान काम है कि मुझे बराहे रास्त नुबुव्वत मिलनी चाहिये। तो यह कम्ज़र्फ़ और कम हौसला इन्सान का काम है। एक बन्दा जो अल्लाह से डरता है उसका काम यह है कि वह डरता रहे, काम भी कर रहा है और साथ ही अल्लाह से डर भी रहा है कि यह काम उसकी शान के तो लायक़ नहीं है जैसा कि उसका हक़ है, लेकिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से दुआ़ कर रहा है कि इसको अपने फ़ज़्ल व करम से क़ुबूल फ़रमाये।

तो सब से पहली बात जो अल्लाह तआ़ला को काबे की तामीर में पसन्द आई वह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की यह अदा थी कि काबा तामीर कर रहे हैं, और इतना अ़ज़ीमुश्शान काम अन्जाम दे रहे हैं, लेकिन कोई फ़ख़्र नहीं, कोई ग़ुरूर नहीं, कोई तकब्बुर नहीं।

हक़ीक़ी मुसलमान कौन?

आगे दुआ़ का दूसरा हिस्सा अ़जीब व ग़रीब है, जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बैतुल्लाह तामीर फ़रमा रहे थे उस वक़्त दूसरी दुआ़ यह फ़रमाई:

"رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ"

ऐ परवरदिगार! हम दोनों को यानी मुझे भी और मेरे बेटे इस्माईल को मुसलमान बना दीजिये। अब यह अ़जीब दुआ़ है कि क्या वे मुसलमान नहीं थे? अगर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और उनके बेटे हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम मुसलमान न हों तो फिर दुनिया में कौन मुसलमान होगा? लेकिन दुआ़ यह फ़रमा रहे हैं कि हमें मुसलमान बना दीजिये। बात असल में यह है कि अ़र्बी ज़बान में "मुस्लिम" के मायने हैं ताबेदार, फ़रमांबर्दार, झुकने वाला, आप फ़रमा रहे हैं कि ऐ अल्लाह मुझे और मेरे बेटे को अपने आगे झुकने वाला बना दीजिये ताकि मेरी पूरी ज़िन्दगी और मेरे बेटे की ज़िन्दगी आपके फ़रमान के ताबे हो जाये, पूरी ज़िन्दगी आपकी फ़रमांबर्दारी में गुज़र जाये, क्योंकि वैसे तो आदमी जैसे ही कलिमा पढ़ता है "अश्हदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुहम्म–दर् रसूलुल्लाह" वह मुसलमान हो जाता है चाहे सत्तर बरस का काफ़िर ही क्यों न हो, लेकिन सिर्फ़ कलिमा तैयबा पढ़ लेना मोमिन का काम नहीं बलिक कलिमा तैयबा के बाद पूरी ज़िन्दगी को अल्लाह के फ़रमान के ताबे बनाये बग़ैर इन्सान मुकम्मल मुसलमान नहीं बनता, इसी लिये कुरआने करीम में दूसरी जगह फ़रमायाः

"يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِى السِّلْمِ كَآفَّةً"

ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ। यहां ख़िताब किया गया है ईमान वालों को जो पहले से ईमान वाले हैं, कि इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ, ये ईमान वाले अब किस में दाख़िल हो जायें? इशारा इस बात की तरफ़ फ़रमा दिया कि ईमान ले आना एक अ़मल है और उसके बाद इस्लाम में दाख़िल होना दूसरा अ़मल है, और इस्लाम के मायने यह हैं कि अपने वजूद को, अपनी ज़िन्दगी को, अपने उठने बैठने को, अपने फ़िक्र व अन्दाज़ को अल्लाह तआ़ला के फ़रमान के ताबे बनाये, जब तक यह नहीं करोगे इस्लाम में पूरी तरह दाख़िल नहीं होगे। तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम यह दुआ़ फ़रमा रहे हैं कि ऐ परवरदिगार! मुझे और मेरे बेटे को सही

मायनों में मुसलमान बनाइये यानी अपने फ़रमान के ताबे बनाइये।

मस्जिद तामीर करने का मक़्सद

यहां सिर्फ़ एक बात की तरफ़ तवज्जोह दिलाना चाहता हूं वह यह कि इस आयत में इशारा इस बात की तरफ़ मालूम होता है, "वल्लाहु सुब्हानहू अअ्लम" कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मस्जिद तो बना रहे हैं अल्लाह का घर तो तामीर कर रहे हैं, जो बहुत बड़ा अज़ीमुश्शान काम है लेकिन यह मस्जिद की तामीर हक़ीक़त में एक अलामत है, मस्जिद की तामीर बज़ाते ख़ुद मक़्सूद नहीं है, बल्कि मक़्सूद यह है कि इस मस्जिद की तामीर के बाद अपनी ज़िन्दगी को अल्लाह तआला के फ़रमान के ताबे बना लिया जाये, जब तक यह न होगा तो सिर्फ़ मस्जिद का तामीर करना तन्हा काफ़ी नहीं, इसी लिये हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़रमा रहे हैं कि हमें अपने फ़रमान का ताबे इस तरह बना लीजिये कि अपनी ज़िन्दगी का हर काम आपके हुक्म के मुताबिक़ हो जाये, यह हैं "मुस्लिमैनि" के मायने, और अगर यह मक़्सद हासिल नहीं हुआ तो फिर वह मस्जिद इस शेर का मिस्दाक़ बन जायेगी:

मस्जिद तो बना दी शब भर में ईमां की हरारत वालों ने
मन अपना पुराना पापी है बर्सों में नमाज़ी बन न सका

मस्जिद तो बड़ी आलीशान तामीर हो गयी लेकिन उसमें कोई नमाज़ पढ़ने वाला नहीं, अल्लाह का ज़िक्र करने वाला नहीं, और ख़ुदा न करे और वह कैफ़ियत हो जाये जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आख़िरी ज़माने की मस्जिदों के बारे में फ़रमाया कि "आमिरतुन व हि–य ख़राबतुन" कि मस्जिदें बाहर से बड़ी अच्छी, शानदार, बड़ी सजी धजी, बड़ी संवारी हुई होंगी, लेकिन अन्दर से वीरान होंगी, उनके अन्दर कोई नमाज़ पढ़ने वाला मौजूद न होगा, कहीं ऐसा न हो, इसलिये फ़रमाया कि ऐ अल्लाह हमें मुसलमान बना दीजिये। साथ साथ अपने फ़रमान का ताबे बना दीजिये।

दीन नमाज़ और रोज़े में सीमित नहीं

बाज़ मर्तबा लोगों के ज़ेहनों में यह ख़्याल आता है कि मुसलमानी का तक़ाज़ा यह है कि मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ ली और पांच वक़्त हाज़री दे दी, रोज़ा रख लिया, और ज़कात अदा कर दी, इबादात अन्जाम दे लीं, बस हो गये मुसलमान।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस दुआ में एक इशारा इस तरफ़ भी है कि यह मस्जिद की तामीर करना, मस्जिद के अन्दर जाकर अल्लाह तआला की इबादत करना, नमाज़ें पढ़ना, ज़िक्र करना, ये सब भी दीन का हिस्सा हैं। लेकिन ऐसा न हो कि इसी को सब कुछ समझ कर बाक़ी चीज़ों को नज़र अन्दाज़ कर दो, आज हमारा यह हाल है कि जब तक मस्जिद में हैं तो मुसलमान हैं, नमाज़ें भी हो रही हैं, ज़िक्र भी हो रहा है, इबादत भी अन्जाम दी जा रही है, लेकिन जब बाज़ार में पहुंचे तो वहां सारे मामलात अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ हो रहे हैं, दफ़्तरों में पहुंचे तो वहां मुसलमान नहीं, हुकूमत के ऐवानों में पहुंचे तो वहां मुसलमान नहीं, बस दीन नाम रख लिया इबादतों के अन्जाम देने का, नमाज़ पढ़ ली, रोज़ा रख लिया, ज़कात दे दी, हज कर लिया, अल्लाह अल्लाह ख़ैर सल्ला, याद रखो! दीन हक़ीक़त में पांच शोबों का मजमूआ है। अक़ायद को दुरुस्त करना, इबादात, मामलात, समाजी ज़िन्दगी, अख़्लाक़। इन सब के मजमूए से इस्लाम बनता है, इस्लाम यह नहीं कि मस्जिद में तो मुसलमान हैं घर में जाकर काफ़िर हो गये (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) मुसलमान वह है जो पूरा का पूरा मुसलमान हो, इसी लिये क़ुरआने करीम ने फ़रमाया:

"يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِى السِّلْمِ كَآفَّةً"

ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ, यह नहीं कि बस मस्जिद में चले गये और इबादतें भी कर लेंगे मगर मामलात ख़राब, समाजी ज़िन्दगी ख़राब, अख़्लाक़ ख़राब, ये सारी चीज़ें इस्लाम में दाख़िल होने के लिये ज़रूरी हैं।

मस्जिद के हुक़ूक़ में यह बात भी दाख़िल है कि जिसको मस्जिद में. जाकर सज्दा कर रहे हो, बाज़ार में भी जाकर उसी के हुक्म की इताअ़त करो, यह नहीं कि मस्जिद में नमाज़ पढ़ी और बाज़ार में जाकर रिश्वत दे दी। यह नहीं कि नमाज़ पढ़ने के बाद सूद खा लिया बल्कि अख़्लाक़ व मुआ़शरत को भी शरीअ़त के मुताबिक़ बना लो, हमारे हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के मल्फ़ूज़ात इस बात से भरे हुए हैं कि जिस तरह इबादत ज़रूरी है इसी तरह मुआ़शरत (रहन सहन और समाजी ज़िन्दगी) दुरुस्त करना भी ज़रूरी है, अख़्लाक़ दुरुस्त करना भी ज़रूरी है, और मामलात दुरुस्त करना भी ज़रूरी हैं। आजकी दुनिया इस बात को भुला बैठी है, और दीन सिर्फ़ नमाज़ रोज़े का नाम रख लिया है, यह ग़लत फ़हमी दूर कर लेनी चाहिये।

औलाद की इस्लाह करना वाजिब है

फिर आगे हज़रत इब्राहीम अ़लै० ने यह जुम्ला फ़रमाया कि:

"وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ"

ऐ अल्लाह! हमारी आने वाली नस्ल को भी मुसलमान बनाइये, उसको भी अपने फ़रमान के ताबे बनाइये। इसमें इशारा इस बात की तरफ़ कर दिया कि एक मुसलमान का काम सिर्फ़ ख़ुद मुसलमान बन कर ख़त्म नहीं होता, उसके फ़राइज़ में यह बात भी दाख़िल है कि अपनी औलाद की फ़िक्र करे, आज हम मुसलमानों के अन्दर ऐसे लोग मौजूद हैं जो ख़ुद तो नमाज़ के पाबन्द, पहली सफ़ के पाबन्द, तिलावते क़ुरआन के पाबन्द, लेकिन उनके ज़ेहनों में कभी यह ख़्याल नहीं आता कि औलाद कहां जा रही है, औलाद तेज़ी से बेदेनी के रास्ते पर, अल्लाह तआ़ला को नाराज़ करने वाले रास्ते पर, जहन्नम के रास्ते पर जा रही है, लेकिन कभी यह ख़्याल नहीं आता है कि उनको किस तरह बचाया जाये, तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने इस दुआ़ में इस तरफ़ इशारा कर दिया कि मुसलमान के लिये सिर्फ़ अपनी इस्लाह कर लेना काफ़ी नहीं, बल्कि क़ुरआने करीम का इरशाद है कि:

"يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا"

ऐ ईमान वालो! अपने आपको भी आग से बचाओ और अपने घर वालों को भी बचाओ, अपने बच्चों को भी बचाओ, जिस तरह ख़ुद मुसलमान बनना फ़र्ज़ इसी तरह आने वाली नस्ल को भी मुसलमान बनाना और उनकी इस्लाह की फ़िक्र करना भी फ़र्ज़ है।

आगे फ़रमायाः

"وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ"

यह नहीं फ़रमाया कि इस अ़मल पर मुझे सवाब अ़ता फ़रमा, इसलिये कि मेरा यह अ़मल सवाब के लायक़ तो क्या होता बल्कि ख़तरा यह है कि मेरे अ़मल में किसी क़िस्म की कोताहियां शामिल न हो गयी हों जिसकी वजह से यह अ़मल ग़ारत हो जाये, ऐ अल्लाह अगर ऐसी कोताहियां हुई हों तो हमारी तौबा क़ुबूल फ़रमा।

यह भी अ़मल की तौफ़ीक़ का हिस्सा है कि सब से पहले उसके ऊपर अल्लाह तआ़ला से क़ुबूलियत की दुआ़ करे और फिर इस्तिग़फ़ार करे कि ऐ अल्लाह इस अ़मल में जो कोताहियां हुई हों उनको अपने फ़ज़्ल व करम से माफ़ फ़रमा, यह काम है मोमिन का।

नमाज़ के बाद इस्तिग़फ़ार क्यों?

हदीस में आता है कि जब नबी–ए–करीम सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो नमाज़ ख़त्म होते ही आप तीन बार फ़र्माते थेः अस्तग़्फ़िरुल्ला–ह, अस्तग़्फ़िरुल्ला–ह, अस्तग़्फ़िरुल्ला–ह, अब यह उस वक़्त इस्तिग़फ़ार करना समझ में नहीं आता। इसलिये कि इस्तिग़फ़ार तो उस वक़्त होता है जब इन्सान से कोई गुनाह हो जाए तो वह इस्तिग़फ़ार करे कि या अल्लाह मुझे माफ़ कर दे, तो बज़ाहिर हर नमाज़ के बाद इस्तिग़फ़ार क्यों? बात असल में यह है कि नमाज़ तो हमने पढ़ ली मगर अल्लाह तबारक व तआ़ला की अ़ज़्मत वाली ज़ात का जो हक़ था वह नमाज़ में अदा न हुआ।

"ماعبدناك حق عبادتك"

ऐ अल्लाह! हम आपकी बन्दगी का हक़ अदा न कर सके, तो

नमाज़ के बाद यह "अस्तग़्फ़िरुल्ला–ह" इस वास्ते है कि जो हक़ था वह तो अदा हुआ नहीं, ऐ अल्लाह अपनी रहमत से इन कोताहियों को दूर फ़रमा, कुरआने करीम में भी नेक बन्दों की तारीफ़ करते हुए सूरः ज़ारियात में बारी तआला ने फ़रमायाः

"كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ"

अल्लाह के बन्दे वे हैं जो रात को बहुत कम सोते हैं, अल्लाह तआला के हुज़ूर रात को खड़े होकर नमाज़ पढ़ते हैं, अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हैं और दुआ मांग रहे हैं, पूरी रात इबादत में गुज़ारी, लेकिन जब सहरी का वक़्त होता है तो उस वक़्त इस्तिग़फ़ार करते हैं।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया कि या रसूलल्लाह यह कौन सा इस्तिग़फ़ार का मौक़ा है? सारी रात इबादत करते रहे, कोई गुनाह नहीं किया, जो इस्तिग़फ़ार करें? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमायाः हक़ीक़त में वे इस बात पर इस्तिग़फ़ार करते हैं कि ऐ अल्लाह जो इबादत रात को की है वह इस लायक़ तो नहीं कि आपकी बारगाह में पेश की जाये, इस वास्ते ऐ अल्लाह हम उन कोताहियों से इस्तिग़फ़ार करते हैं जो नमाज़ के अन्दर हुयीं। तो एक बन्दे का काम यह है कि जो नेक अमल भी करे, नेकी के जिस काम की जो तौफ़ीक़ हो उस पर गुरूर में मुब्तला होने के बजाये उसकी कोताहियों पर इस्तिग़फ़ार करे, अल्लाह तआला अपनी रहमत से इस हक़ीक़त को समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, आमीन।

जामे दुआ

फिर ये सारी दुआयें करने के बाद आख़िर में यह ज़बरदस्त दुआ फ़रमाईः

"رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ"

कि ऐ परवरदिगार! यह काबा तामीर कर लेना काफ़ी नहीं। ऐ अल्लाह! जो काबे के पास रहने वाले हैं उनमें अपने फ़ज़्ल व करम से

एक ऐसा रसूल भेजिये जो उनके सामने आपकी आयतों की तिलावत करे, और उनको किताब और हिक्मत की तालीम दे। और उनको पाक साफ़ करे, उनके अख़्लाक़ उनके आमाल पाक साफ़ करे।

यह दुआ बैतुल्लाह की तामीर के वक़्त हज़रत इब्राहीम अ़लै० फ़रमा रहे हैं, इशारा इस बात की तरफ़ कर दिया कि चाहे अल्लाह के कितने ही घर दोबारा तामीर हो जायें, कितनी ही मस्जिदें बन जायें। लेकिन यह मस्जिद उस वक़्त तक अपने मक़सद में पूरी तरह कामयाब नहीं हो सकती जब तक मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात उसके साथ मौजूद न हों। इसलिये हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने यह दुआ फ़रमाई और इस दुआ के अन्दर फ़रमाया कि वह पैग़म्बर आपकी आयतों की तिलावत करे, इसमें इशारा इस तरफ़ कर दिया कि आयात की तिलावत बज़ाते ख़ुद एक मक़सद है और इस मक़सद को हासिल करना बज़ाते ख़ुद एक इन्सान की बहुत बड़ी कामयाबी है। और वह पैग़म्बर सिर्फ़ तिलावत नहीं करेगा, बल्कि वह किताब की तालीम भी देगा।

क़ुरआन के लिये हदीस के नूर की ज़रूरत

इससे इशारा इस बात की तरफ़ फ़रमा दिया कि किताब यानी क़ुरआन सिर्फ़ मुताले (पढ़ लेने) से हासिल होने वाली चीज़ नहीं कि इसका मतलब हम मुताले से हासिल कर लें, आज कल क़ुरआन की स्टडी (मुताला) करने का रिवाज है, सिर्फ़ स्टडी के ज़रिये उसको हासिल करने और समझने की कोशिश करते हैं। इसलिये इस आयत में इशारा कर दिया कि यह क़ुरआन ख़ुद बैठ कर स्टडी करने की चीज़ नहीं जब तक मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात की रोशनी में इसको नहीं पढ़ा जायेगा उस वक़्त तक क़ुरआन का मतलब समझ में नहीं आयेगा, इसलिये अल्लाह तआ़ला ने दूसरी जगह फ़रमाया कि:

"لَقَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ"

फ़रमाया कि जैसे आपके पास एक किताब हो लेकिन रोशनी न हो

अन्धेरा हो, अब किताब तो मौजूद है, लेकिन रोशनी के बग़ैर आप उस किताब से फ़ायदा नहीं उठा सकते। तो अल्लाह तआ़ला ने यह हसीन इशारा फ़रमाया कि तुम्हारे पास हमने किताबा भी भेजी और उसके साथ इस किताब को पढ़ कर समझने वाला नूर भी भेजा। और वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात का नूर है, उसकी रोशनी में पढ़ोगे तो कामयाबी हासिल होगी, उससे हट कर अगर पढ़ने की कोशिश करोगे तो वह शख़्स ऐसा ही है जैसा कि अन्धेरे में किताब पढ़ने वाला। उससे कोई फ़ायदा नहीं, फिर आख़िर में फ़रमाया कि वह पैग़म्बर तालीम पर ही बस नहीं करेगा, बल्कि उनको ग़लत अख़्लाक़ से, ग़लत आमाल से साफ़ करेगा, उनका तज़्किया करेगा। इशारा इस बात की तरफ़ फ़रमा दिया कि तालीम भी ज़बानी काफ़ी नहीं बल्कि उसके लिये तर्बियत और सोहबत की ज़रूरत होगी, जब तक कि यह नहीं होगी उस वक़्त तक इन्सान के आमाल और अख़्लाक़ सही मायनों में दुरुस्त नहीं होंगे, बहर हाल! हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने जो दुआ़यें काबे की तामीर के वक़्त मांगी थीं यह उसकी थोड़ी सी तफ़्सील थी, इस दुआ़ में पूरा दीन समा गया है, दीन के सारे शोबे इसके अन्दर आ गये हैं। अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें इसको समझने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और दीन पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, और इस मस्जिद की तामीर और इसकी तासीस (बुनियाद रखने) की बर्कत अ़ता फ़रमाये, और इसके हुक़ूक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

वक़्त की क़द्र करें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا۔ اَمَّا بَعْدُ:

"عن ابن عباس رضی اللّٰہ تعالیٰ عنہ قال: قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم: نعمتان مغبون فیھا کثیر من الناس، الصحۃ والفراغ" (بخاری شریف)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

जैसाकि मैंने पिछले जुमे में अ़र्ज़ किया था कि "रियाज़ुस्सालिहीन" की तक्मील के बाद इन्शा-अल्लाह हदीस की कोई दूसरी किताब शुरू करने का इरादा है, इसलिये आज अल्लाह के नाम पर हदीस की दूसरी किताब शुरू की जा रही है। अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से इसके अन्वार व बरकतें हम सब को अ़ता फ़रमाये, और इस पर अमल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

यह किताब एक बहुत बड़े इमाम, फ़क़ीह, मुहद्दिस, सूफ़ी, मुजाहिद हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की तस्नीफ़ है, जिसका नाम "किताबुज़्ज़ुहद वर्रक़ायक़" है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अ़लैहि हमारी उम्मत के उन बुज़ुर्गों में से हैं, जिनका नाम आते ही दिल में अ़क़ीदत व मुहब्बत की फुवारें महसूस होती हैं। इस मज्लिस में पहले भी उनके कई वाक़िआ़त बयान कर चुका हूं। यह दूसरी सदी हिजरी के बुज़ुर्ग हैं, इनकी पैदाइश ग़ालिबन दूसरी सदी हिजरी के शुरू में हुई है, गोया कि यह उस ज़माने के बुज़ुर्ग हैं जब्कि अभी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इस दुनिया से गये हुए सौ साल हुए थे, सिहा-ए-सित्ता के नाम से हदीस शरीफ़ की जो छः मशहूर किताबें, बुख़ारी शरीफ़ से लेकर इब्ने

माजा तक हैं, ये उन सब से पहले और उन सबके बुज़ुर्ग हैं। इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के ज़माने के भी हैं और उनके शागिर्द भी हैं। और यह उस ज़माने के बुज़ुर्ग हैं जब इस्लामी दुनिया उन बड़ी बड़ी शख़्सियतों से जगमगा रही थी। उस ज़माने के जिस ख़ित्ते को देखिये उसमें बेनज़ीर शख़्सियतें मौजूद थीं। और यह अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाहि अ़लैहि ख़ुरासान के शहर "मरो" में पैदा हुए, और फिर जाकर इराक़ के शहर बग़दाद में आबाद हुए, और वहीं कियाम किया।

आपकी इस्लाह का अ़जीब व ग़रीब वाक़िआ

इनके हालात भी बड़े अ़जीब व ग़रीब हैं। इन बुज़ुर्गों के तज़्किरे में भी बड़ा नूर और बड़ी बर्कत है। उनके एक एक वाक़िए के अन्दर यह तासीर है कि अल्लाह तआ़ला उसकी बर्कत से दिलों की दुनिया बदल देते हैं। शायद उनका यह क़िस्सा मैंने आपको पहले भी सुनाया होगा कि यह अमीर घराने के एक फ़र्द थे। और ख़ानदानी रईस थे। हज़रत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने बुस्तानुल मुहद्दिसीन में इनका यह वाक़िआ नक़ल किया है कि इनका एक बुहत बड़ा सेब का बाग़ था, और जिस तरह अमीर कबीर लोगों में आज़ादी होती है, इसी तरह यह भी आज़ाद क़िस्म के आदमी थे, न इल्म से कोई ताल्लुक़, न दीन से कोई ताल्लुक़, पीने पिलाने वाले और गाने बजाने वाले थे। एक मर्तबा जब सेब का मौसम आया तो यह अपने घर वालों समेत अपने बाग़ ही में मुन्तक़िल हो गये, ताकि वहां सेब भी खायेंगे और शहर से बाहर एक तफ़रीह की फ़िज़ा होगी, वहां जाकर मुक़ीम हो गये, दोस्त व अहबाब का हल्क़ा भी काफ़ी बड़ा था। इसलिये वहां पर दोस्तों को भी बुला लिया। रात को बाग़ के अन्दर गाने बजाने की महफ़िल जमी, और उस महफ़िल में पीने पिलाने का दौर भी चला। यह ख़ुद मौसीक़ी का आला (यंत्र) रिबात के बजाने के बहुत माहिर थे, और आला दर्जे के मौसीक़ार थे। अब एक तरफ़ पीने पिलाने का दौर और उसका नक़्शा, और दूसरी तरफ़ मौसीक़ी की धुनें, इसी नशे के

आ़लम में उनको नींद आ गयी और वह साज़ इसी हालत पर गोद में पड़ा हुआ था। जब आंख खुली तो देखा कि वह साज़ गोद में रखा हुआ है, अब उठ कर उसको दोबारा बजाना शुरू किया तो वह साज़ अब बजता ही नहीं। उसमें से आवाज़ ही नहीं आ रही थी। चूंकि ख़ुद उसकी मरम्मत करने और दुरुस्त करने के माहिर भी थे, इसलिये उसके तार दुरुस्त करके मरम्मत की फिर बजाने की कोशिश की। मगर वह फिर नहीं बजता, दोबारा उसके तार वग़ैरह दुरुस्त किये और बजाने की कोशिश की तो अब बजाये उसमें से मौसीक़ी की आवाज़ निकलने के क़ुरआने करीम की एक आयत की आवाज़ आ रही थी। वह यह कि:

"اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِکْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ"

(سورة الحديد:١٦)

क़ुरआने करीम भी अ़जीब अ़जीब अन्दाज़ से ख़िताब फ़रमाता है, इस आयत का तर्जुमा यह है कि क्या अब भी ईमान वालों के लिये वह वक़्त नहीं आया कि उनका दिल अल्लाह के ज़िक्र के लिये पसीजे, और अल्लाह ने जो हक़ बात इस क़ुरआने करीम के अन्दर उतारी है उसके लिये उनके दिलों में नर्मी पैदा हो, क्या अब भी इसका वक़्त नहीं आया?

एक रिवायत में यह है कि यह आवाज़ उसी साज़ में से आ रही थी, और एक रिवायत में यह है कि जिस जगह वह बैठे हुए थे उसके क़रीब एक पेड़ पर एक परिन्दा बैठा हुआ था, उस परिन्दे के मुंह से यह आवाज़ आ रही थी। बहर हाल! अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से यह एक ग़ैबी लतीफ़ा था। अल्लाह तआ़ला को नवाज़ना मन्ज़ूर था। बस जिस वक़्त यह आवाज़ सुनी, उसी वक़्त दिल पर चोट लगी, और यह ख़्याल आया कि अब तक मैंने अपनी उमर किस काम के अन्दर गंवाई है, फ़ौरन जवाब में फ़रमायाः

"بلیٰ یا رب قد آن، بلیٰ یارب قد آن"

"ऐ परवरदिगार! अब वह वक़्त आ गया"

अब मैं अपने सारे धन्धों और मशग़लों को छोड़ता हूं और अल्लाह की तरफ़ रुजू करता हूं। चुनांचे यह सारे काम धन्धे छोड़ कर पूरी तरह दीन की तरफ़ मुतवज्जह हो गए। कहां तो यह आलम था कि रात के वक़्त भी साज़ व रिबात की महफ़िलें जमी हुई हैं। पीने पिलाने का मशग़ला हो रहा है। और कहां यह इन्क़िलाब आया कि इस किताब के मुअल्लिफ़ (लेखक) बन कर दुनिया से रुख़्सत हुए। आज पूरी उम्मते मुस्लिमा की गर्दनें उनके एहसानों से झुकी हुई हैं।

(बुस्तानुल मुहद्दिसीन)

इल्मे हदीस में आपका मक़ाम

अल्लाह तआला ने इल्मे हदीस में आपको बहुत ऊंचा मक़ाम अता फ़रमाया था। इल्मे हदीस में बहुत बड़े बड़े उलमा पर तन्क़ीद (आलोचना, तब्सिरा) की गयी है, इमामे बुख़ारी रह्मतुल्लाहि अलैहि भी तन्क़ीद से नहीं बचे, इमाम अबू हनीफ़ा रह्मतुल्लाहि अलैहि और इमाम शाफ़ई रह्मतुल्लाहि अलैहि नहीं बचे। बड़े बड़े इमाम तन्क़ीद से नहीं बचे। लेकिन मेरी नज़र में अब तक कोई आदमी ऐसा नहीं गुज़रा, जिसने अब्दुल्लाह बिन मुबारक की रिवायत और हदीस के बारे में उन पर तन्क़ीद की हो, इतने ऊंचे दर्जे के मुहद्दिस हैं।

दुनिया से आपकी बेरग़बती और किनारा करना

और फिर दुनिया से अपने आपको ऐसा काटा, और ऐसे ज़ाहिद बन कर दुनिया से रुख़्सत हुए कि उनके हालात में लिखा है कि ख़ानदानी रईस और अमीर कबीर आदमी थे। इसलिये हालात में तब्दीली के बाद एक एक वक़्त में उनके दस्तरख़्वान पर दस दस पन्द्रह पन्द्रह क़िस्म के खाने होते थे। और खाने के वक़्त बड़ा मजमा मौजूद होता था, लेकिन सारा मजमा खाने में मश्ग़ूल होता था मगर यह ख़ुद रोज़े से होते थे। और लोगों को बुला बुला कर खाने की दावत देते, और उनकी हाजतें पूरी करते थे।

हदीसे रसूल का मश्गला

ख़ुरासान के शहर "मरो" जहां यह पैदा हुए, वहां पर उनका जो मकान था उसके बारे में यह लिखा है कि उस मकान का सिर्फ़ सेहन पचास गज़ लम्बा पचास गज़ चौड़ा था। वह पूरा सेहन ज़रूरत मन्दों से भरा रहता था, कोई मस्अला पूछने आ रहा है तो कोई इल्म हासिल करने के लिये आ रहा है। कोई अपनी ज़ाती ज़रूरत के लिये आ रहा है। फिर बाद में जब बग़दाद में जाकर आबाद हुए तो वहां पर अपने लिये एक छोटा सा घर ख़रीद लिया, और उसमें गुमनामी की ज़िन्दगी बसर करने लगे, तो किसी शख़्स ने आप से पूछा कि हज़रत, आप अपना आलीशान मकान छोड़ कर यहां बग़दाद में एक छोटे से मकान में रहने लगे हैं, यहां आपका दिल कैसे लगता होगा? जवाब में फ़र्माया कि अल्हम्दु लिल्लाह यहां मेरा दिल ज़्यादा लगता है। इसलिये कि पहले लोग मेरे पास बहुत अया करते थे और अब मैं तन्हाई की ज़िन्दगी गुज़ारता हूं। बस मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ लेता हूं, और फिर अपने घर चला जाता हूं। और वहां मैं होता हूं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम होते हैं। यानी घर में दिन रात रसूलुल्लाह की हदीसों का मश्गला है इसमें मसरूफ़ रहता हूं। यह ज़िन्दगी मुझे बहुत ज़्यादा पसन्द है। (तारीख़े बग़दाद)

लोगों के दिलों में आपकी अज़्मत और मुहब्बत

बग़दाद का एक शहर रिक़ा था। जो अब बग़दाद ही का एक मौहल्ला बन गया है, हारून रशीद की बादशाहत का ज़माना था। एक मर्तबा हारून इस शहर में अपनी वालिदा या बीवी के साथ शाही बुरजे में बैठा हुआ था, इतने में उसने देखा कि शहर की फ़सील के बाहर एक शोर बुलन्द हो रहा है, हारून रशीद को ख़्याल हुआ कि शायद किसी दुश्मन ने हमला कर दिया, या कोई फ़ातेह चढ़ आया है, मालूम करने के लिये फ़ौरन आदमी दौड़ाये तो मालूम हुआ कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रिक़ा शहर में तशरीफ़ लाये हैं और लोग उनके इस्तिक़बाल के लिये गिरोह के गिरोह शहर से बाहर निकले हैं, यह

उसका शोर है।

और मैंने अपने वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि से सुना कि इस्तिक़बाल के दौरान हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाहि अ़लैहि को छींक आ गयी थी, और उस पर उन्हों ने "अल्हम्दु लिल्लाह" कहा, और उसके जवाब में पूरे मजमे ने "यरहमुकल्लाह" कहा, उससे यह शोर बुलन्द हुआ। जब हारून रशीद की बीवी ने यह सूरते हाल देखी तो हारून रशीद से कहा कि हारून, तुम यह समझते हो कि तुम बड़े बादशाह हो, और आधी दुनिया पर तुम्हारी हुकूमत है। लेकिन सच्ची बात यह है कि बादशाहत तो इन लोगों का हक़ है। हक़ीक़त में तो ये लोग बादशाह हैं जो लोगों के दिलों पर हुकूमत कर रहे हैं। कोई पुलिस उनको खींच कर यहां नहीं लाई है, बल्कि यह सिर्फ़ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक की मुहब्बत है, जिसने इतने सारे लोगों को यहां जमा कर दिया है। यह मक़ाम अल्लाह तआ़ला ने उनको अ़ता फ़रमाया था। (तारीख़े बग़दाद)

आपकी सख़ावत का अ़जीब वाक़िआ़

अल्लाह तआ़ला ने दौलत और दुनिया की नेमतें बहुत दीं मगर वही बात थी कि दुनिया तो अ़ता फ़रमाई लेकिन दुनिया की मुहब्बत से ख़ाली रखा, यह जो किसी ने कहा कि दुनिया हाथ में हो दिल में न हो, यह कैफ़ियत अल्लाह तआ़ला ने उनको इस दर्जा अ़ता फ़रमाई कि उसकी मिसाल मिलनी मुश्किल है। ख़ुरासान में क़ियाम के दौरान एक मर्तबा उन्हों ने हज पर जाने का इरादा किया, जब बस्ती के लोगों को पता चला कि यह हज पर तशरीफ़ ले जा रहे हैं तो बस्ती के लोग एक वफ़्द बनाकर उनके पास आ गये कि हज़रत हम भी आपके साथ हज को जायेंगे, ताकि हज के अन्दर आपकी सोहबत मयस्सर हो, उन्हों ने फ़रमाया कि अच्छा अगर तुम लोग भी मेरे साथ चलना चाहते हो तो चलो, लेकिन तुम सब अपना सफ़र ख़र्च मेरे पास जमा करा दो, ताकि मैं तुम सबकी तरफ़ से इकट्ठा ख़र्च करता रहूं। चुनांचे जितने लोगों ने जाने का इरादा किया उन सब ने अपने अपने पैसों की थैली लाकर

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक के पास जमा करा दी, उन्हों ने वे सारी थैलियां लेकर एक सन्दूक़ में रख दीं और उसके बाद सफ़र पर रवाना हो गये, चुनांचे तमाम साथियों की सवारी और खाने का इन्तिज़ाम वग़ैरह करते रहे, यहां तक कि हज मुकम्मल होने के बा़द उन सब को मदीना मुनव्वरा लेकर गये, और वहां जाकर उनमें से हर एक से पूछा कि भाई तुम्हारे घर वालों ने मदीना मुनव्वरा से क्या चीज़ मंगवाई थी? चुनांचे हर एक को बाज़ार लेजा कर वह चीज़ दिलवा दी। फिर वापस मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ लाये और वहां आकर हर एक से पूछा कि तुम्हारे घर वालों ने मक्का मुकर्रमा से क्या चीज़ लाने को कहा था? उन्हों ने जवाब में कहा कि फ़लां चीज़ मंगवाई थी, चुनांचे एक एक फ़र्द को बाज़ार लेजा कर वह चीज़ दिलवा दी। फिर वापस सफ़र करके जब ख़ुरासान पहुंचे तो वहां सब की आ़लीशान दावत की, और उस दावत में हर एक को तोहफ़े भी पेश किये, उसके बाद वह सन्दूक़ खोला जिसमें जाते वक़्त हर एक के पैसों की थैली रखी थी, और हर एक को उसकी थैली वापस कर दी। इस तरीक़े से सख़ावत के दरिया बहाये। (सियर ऐलाउन नुबला)

आपकी सख़ावत और ग़रीबों की मदद

एक और वाक़िआ़ लिखा है कि एक मर्तबा हज को जा रहे थे, एक क़ाफ़िला भी साथ था, रास्ते में एक जगह पर क़ाफ़िले वालों की एक मुर्ग़ी मर गयी। क़ाफ़िले वालों ने वह मुर्ग़ी उठा कर कूड़े के ढेर पर फेंक दी। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक क़ाफ़िले वालों से ज़रा पीछे थे, उन्हों ने देखा कि क़ाफ़िले वाले तो उस मुर्दा मुर्ग़ी को फेंक कर चले गये, इतने में क़रीब की बस्ती से एक लड़की निकली, और वह तेज़ी से उस मुर्दा मुर्ग़ी पर झपटी, और उसको उठा कर एक कपड़े में लपेटा, और जल्दी से भाग कर अपने घर चली गयी। अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक यह सब देख रहे थे। बहुत हैरान हुए कि उस मुर्दा मुर्ग़ी को इस तरह रग़बत के साथ उठा कर लेजाने वाली लड़की कौन है? चुनांचे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक बस्ती में उस लड़की के घर गये

और पूछा कि वह कौन है? और इस तरह मुर्दा मुर्ग़ी उठा कर क्यों लाई है? जब बहुत इसरार किया तो उस लड़की ने बताया कि बात असल में यह है कि मेरे वालिद का इन्तिक़ाल हो गया है जो हमारे घर में अकेले कमाने वाले थे, मेरी वालिदा बेवा हैं, मैं तन्हा हूं, और लड़की ज़ात हूं और घर में कुछ खाने को नहीं है। हम कई दिन से इस हालत में हैं जिसमें शरीअत ने मुर्दार खाने की इजाज़त दे रखी है। चुनांचे इस कूड़े के ढेर में जो कोई मुर्दार फेंक देता है, हम उसको खा कर गुज़ारा कर लेते हैं।

बस यह सुन कर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक के दिल पर चोट लगी, उन्हों ने सोचा कि यह अल्लाह के बन्दे तो इस हालत में हैं कि मुर्दार खा खा कर गुज़ारा कर रहे हैं और मैं हज पर जा रहा हूं, चुनांचे अपने साथी से पूछा कि तुम्हारे पास कितने पैसे हैं? उसने बताया कि मेरे पास शायद दो हज़ार दीनार हैं, उन्हों ने फ़रमाया कि हमें वापस घर जाने के लिये जितने दीनार की ज़रूरत है, तक़रीबन बीस दीनार, वे रख लो, और बाक़ी सब इस लड़की को दे दो, और इस साल हम हज नहीं करते, और इन दीनारों से इसके घर वालों को जो फ़ायदा होगा अल्लाह की रहमत से उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला हज से ज़्यादा अज्र व सवाब इस पर अ़ता फ़रमा देंगे, यह कह कर वापस चले गये।

ग़र्ज़ यह कि एक दो नहीं बल्कि ऐसे बेशुमार फ़ज़ाइल अल्लाह तआ़ला ने उनको अ़ता फ़रमाये थे कि हम लोग उनका तसव्वुर भी नहीं कर सकते।

आपकी दरिया दिली का एक और वाक़िआ़

एक और वाक़िआ़ याद आया, जब कभी यह रिक़ा शहर में जाया करते थे तो एक नौजवान इनसे आकर मिला करता था। और आकर कभी मसाइल पूछता, कभी दूसरी बातें पूछता, एक मर्तबा जब रिक़ा शहर जाना हुआ तो वह नौजवान नहीं आया, और न उसने आकर मुलाक़ात की। आपने लोगों से पूछा कि एक नौजवान था जो हमेशा

आकर मुलाक़ात किया करता था, वह नज़र नहीं आ रहा है। वह कहां गया? लोगों ने बताया कि उस पर बहुत क़र्ज़ा हो गया था, और जिस शख़्स का क़र्ज़ा था उसने उसको गिरफ़्तार करा दिया है, इसलिये वह जेल में है। उनको बड़ा दुख हुआ, उन्हों ने लोगों से पूछा कितना क़र्ज़ा हो गया था? लोगों ने बताया कि दस हज़ार दीनार, फिर मालूम किया कि किस का क़र्ज़ा था? लोगों ने बताया कि फ़लां शख़्स का क़र्ज़ा था। चुनांचे आप उस शख़्स की तलाश में निकले, और पता पूछते पूछते उसके घर पहुंचे, और जाकर उससे कहा कि हमारा एक दोस्त है, तुम्हारा क़र्ज़ा उसके ज़िम्मे है, जिसकी वजह से वह जेल में है। मैं वह क़र्ज़ा अदा कर देता हूं लेकिन एक शर्त है, वह यह कि मेरे सामने वादा करो और क़सम खाओ कि मेरे जीते जी उसको यह नहीं बताओगे कि यह क़र्ज़ा किसने अदा किया है। चुनांचे उसने क़सम खा ली कि मैं नहीं बताऊंगा। चुनांचे आपने दस हज़ार दीनार उसको दे दिये और उससे कहा कि अब उसको रिहा करा दो। चुनांचे उसने जेल जाकर उसको रिहा करा दिया।

जब वह नौजवान जेल से रिहा होकर शहर में आया तो उसको पता चला कि चन्द दिन से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक यहां आये हुए थे। लोगों से पूछा कि यहां से कब निकले हैं? लोगों ने बताया कि अभी निकले हैं। चुनांचे वह नौजवान आपके पीछे दौड़ा, और रास्ते में आपको पकड़ लिया। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने फ़रमाया कि मैंने सुना था कि तुम जेल में हो? उसने जवाब दिया कि हां मैं जेल में था। अब अल्लाह तआ़ला ने रिहाई अ़ता फ़रमा दी, उन्हों ने पूछा कि कैसे निकले? उस नौजवान ने कहा कि बस अल्लाह तआ़ला ने ग़ैब से फ़रिश्ता भेज दिया, उसने मेरा क़र्ज़ा अदा कर दिया, इसलिये मुझे रिहाई मिल गयी। अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने फ़रमाया कि अब अल्लाह का इस पर शुक्र अदा करो, और मैं भी तुम्हारे लिये दुआ़यें कर रहा था कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें रिहाई अ़ता फ़रमा दे।

वह नौजवान बाद में कहते हैं कि सारी ज़िन्दगी मुझे यह पता न

चला कि मेरा क़र्ज़ा अदा करने वाले अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक हैं, इसलिये कि उस शख़्स ने अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक के सामने क़सम खाई थी कि मैं आपकी ज़िन्दगी में इसके बारे में किसी को नहीं बताऊंगा, लेकिन जब अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक की वफ़ात हो गयी, उस वक़्त उस शख़्स ने मुझे बताया कि तुम्हारी रिहाई का सबब हक़ीक़त में अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ही थे। (तारीख़े बग़दाद)

किताबुज़्ज़ुहद वर्रक़ाइक़

बहर हाल! यह उस मक़ाम के बुज़ुर्ग हैं कि हमें उनका नाम लेते हुए भी शर्म आती है। यह किताब जो हम आज शुरू कर रहे हैं यह उन्हीं की लिखी हुई किताब है। जिसका नाम "किताबुज़्ज़ुहद वर्रक़ाइक़" यानी उन हदीसों का मजमूआ है जिनमें नबी-ए-करीम सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ज़ुहद की तल्क़ीन फ़रमाई है। और जिनको पढ़ने से दुनिया की बेरग़बती और आख़िरत की फ़िक्र पैदा होती है, और "रक़ाइक़" के मायने वे हदीसें जिनके पढ़ने से दिल में रिक़्क़त और नर्मी पैदा होती है। दिल नरम होते हैं, ग़फ़्लत दूर होती है, ऐसी हदीसों को "रक़ाइक़" या "रक़ाक़" कहा जाता है। तक़रीबन तमाम मुहद्दिसीन ऐसी हदीसों पर एक मुस्तक़िल बाब क़ायम करते हैं। लेकिन उन्हों ने इन हदीसों पर यह मुस्तक़िल किताबें लिखी हैं। जैसे इमाम वकीअ़ बिन अल-जर्राह रह्मतुल्लाहि अ़लैहि, इमाम अह्मद बिन हंबल रह्मतुल्लाहि अ़लैहि और इमाम बैहक़ी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि, इन सबकी किताबें इस मौज़ू पर इस नाम से मौजूद हैं, लेकिन हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की यह किताब सबसे ज़्यादा इसलिये मश्हूर हुई कि अव्वल तो यह मुतक़द्दिमीन में से हैं, दूसरे इसलिये कि अल्लाह तआ़ला ने इनके हर काम के अन्दर बर्कत अ़ता फ़रमाई थी। इसलिये ख़्याल हुआ कि उनकी यह किताब शुरू की जाये, क्या बओ़द है कि अल्लाह तआ़ला इसकी बर्कत से हमारे दिलों में कुछ नर्मी पैदा कर दे, यह दुनिया जो हमारे दिलों पर छाई हुई है, इसके बदले अल्लाह तआ़ला आख़िरत की

कुछ फ़िक्र अ़ता फ़रमा दें, आमीन।

दो अ़ज़ीम नेमतें और उनसे ग़फ़लत

इस किताब में हदीसें भी हैं और सहाबा व ताबिअ़ीन के कुछ आसार और वाकिआत भी हैं। पहली हदीस वह मशहूर हदीस है, जो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

"نعمتان مغبون فيهما كثير من الناس الصحة والفراغ" (بخاری شریف)

फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की अ़ता की हुई दो नेमतें ऐसी हैं कि बहुत से लोग उनके बारे में धोखे में पड़े हुए हैं, उनमें से एक सेहत और तन्दुरुस्ती की नेमत है, औ दूसरी फ़राग़त और फ़ुर्सत की नेमत है। ये दो नेमतें ऐसी हैं कि जब तक ये नेमतें हासिल रहती हैं उस वक़्त तक इन्सान धोखे में पड़ा रहता है कि ये नेमतें हमेशा बाकी रहेंगी, चुनांचे जब तक तन्दुरुस्ती का ज़माना है, उस वक़्त यह ख़्याल भी नहीं आता कि कभी बीमारी आयेगी। या फ़राग़त का ज़माना है, उस वक़्त यह ख़्याल भी नहीं आता कि कभी मसरूफ़ियत इतनी ज़्यादा हो जायेगी। इसलिये जब अल्लाह तआ़ला सेहत अ़ता फ़रमा देते हैं या फ़राग़त अ़ता फ़रमा देते हैं वह धोखे में अपना वक़्त गुज़ारता रहता है, और अच्छे कामों को टलाता रहता है, और यह सोचता रहता है कि अभी तो बहुत वक़्त पड़ा है, और इसका नतीजा यह होता है कि अपनी इस्लाह से महरूम रहता है। सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि इन नेमतों की उसी वक़्त क़दर पहचान लो जब ये हासिल हों।

सेहत की क़द्र कर लो

यह सेहत की नेमत जो इस वक़्त हासिल है, क्या मालूम कि कब तक यह हासिल रहेगी, कुछ पता नहीं कि किस वक़्त बीमारी आ जाये, और कैसी बीमारी आ जाये, इसलिये नेकी और ख़ैर के काम को, और अपनी इस्लाह के काम को, अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू के काम

को, आख़िरत की फ़िक्र को इसी ज़माने के अन्दर इख़्तियार कर लो, क्या पता फिर मौक़ा मिले या न मिले।

अरे जब यह बीमारी आती है तो पहले नोटिस देकर नहीं आती। अल्लाह तआ़ला बचाए। अच्छा ख़ासा भला तन्दुरुस्त इन्सान है मगर बैठे बैठे किसी बीमारी का हमला हो गया। और अब चलने फिरने की भी ताक़त नहीं, इसलिये यह ज़माना टला कर न गुज़ारो, बल्कि जो नेक काम करना है, वह कर गुज़रो, यह सेहत अल्लाह तआ़ला ने इसलिये अ़ता फ़रमाई है कि इसको उस आ़लम के लिये इस्तेमाल करो जो मरने के बाद आने वाला है, लेकिन अगर तुमने इस सेहत को गंवा दिया और बीमारी आ गयी, तो फिर उमर भर सर पकड़ कर रोओगे। और हस्रत और अफ़्सोस में मुब्तला रहोगे कि काश! उस सेहत के आ़लम में कुछ काम कर लिया होता, लेकिन उस वक़्त हस्रत और अफ़्सोस करने से कुछ हासिल न होगा, इसलिये इन नेमतों की क़द्र करो।

सिर्फ़ एक हदीस पर अ़मल

यह हदीस जो नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाई है, यह "जवामिउल कलिम" में से है, और ग़ालिबन इमाम अबू दाऊद रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का क़ौल है कि चन्द हदीसें ऐसी हैं कि अगर इन्सान सिर्फ़ चन्द हदीसों पर अ़मल कर ले तो उसकी आख़िरत की नजात के लिये काफ़ी है, उनमें से एक हदीस यह भी है, इसी वजह से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने अपनी किताब इस हदीस से शुरू फ़रमाई है, और इमाम बुख़ारी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने भी अपनी किताब बुख़ारी शरीफ़ में "किताबुर्रक़ाक़" को इसी हदीस से शुरू फ़रमाया है, इसलिये कि इस हदीस के ज़रिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमें पहले से तंबीह फ़रमा रहे हैं। बाद में तंबीह तो ख़ुद हो जाती है, लेकिन वह तंबीह उस वक़्त होती है जब तलाफ़ी का कोई रास्ता नहीं होता। इसलिये नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो हम पर मां

बाप से ज़्यादा शफ़ीक़ हैं, और हमारी नफ़्सियात और रगों से वाक़िफ़ हैं वह फ़रमा रहे हैं कि देखो, इस वक़्त जो तुम्हें सेहत और फ़रागत का जो आलम मयस्सर है फिर बाद में रहे या न रहे, इससे पहले कि हस्रत का वक़्त आ जाये, इसको काम में लगा लो।

"अभी तो जवान हैं" शैतानी धोखा है

यह "नफ़्स" इन्सान को धोखा देता रहता है कि मियां, अभी तो जवान हैं, अभी तो बहुत वक़्त पड़ा है। हमने देखा ही क्या है, अभी तो ज़रा मज़े उड़ा लें, फिर जब मौक़ा आयेगा तो उस वक़्त अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करेंगे, और उस वक़्त इस्लाह की फ़िक्र कर लेंगे, अभी क्या रखा है?

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि नफ़्स व शैतान के इस धोखे में न आओ, जो कुछ करना है, कर गुज़रो। इसलिये कि यह वक़्त जो अल्लाह तआला ने अता फ़रमाया है, यह बड़ी क़ीमती चीज़ है, यह बड़ी दौलत है, उमर के यह लम्हात जो इस वक़्त इन्सान को मयस्सर हैं, इसका एक एक लम्हा बड़ा क़ीमती है, इसको बर्बाद और ज़ाया न करो, बल्कि इसको आख़िरत के लिये इस्तेमाल करो।

क्या हमने इतनी उमर नहीं दी थी?

कुरआने करीम फ़रमाता है कि जब इन्सान आख़िरत में अल्लाह तआला के पास पहुंचेगा तो अल्लाह तआला से कहेगा कि हमें एक बार और दुनिया में भेज दें, हम नेक अमल करेंगे, तो अल्लाह तआला जवाब में फ़रमायेंगे:

"أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ" (سورة فاطر: ٣٧)

यानी क्या हमने तुमको इतनी उम्र नहीं दी थी कि अगर उसमें कोई शख़्स नसीहत हासिल करना चाहता तो नसीहत हासिल कर लेता, सिर्फ़ यह नहीं कि उमर देकर वैसे छोड़ दिया, बल्कि तुम्हारे पास डराने वाले, तंबीह करने वाले भेजते रहे। एक लाख चौबीस हज़ार अंबिया अलैहिमुस्सलाम भेजे, और आख़िर में सरकारे दो आलम

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भेजा, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ख़ुलफ़ा और वारिस तुम्हें मुसलसल झंझोड़ते रहे, और तुम्हें ग़फ़लत से जगाते रहे और आकर यह कहते रहे कि ख़ुदा के लिये इस वक़्त को काम में लगा लो।

डराने वाले कौन हैं?

"डराने वाले" की तफ़सीर मुफ़स्सिरीन ने मुख़्तलिफ़ फ़रमाई है, बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इससे मुराद अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम और उनके वारिसीन हैं, जो लोगों को वाज़ व नसीहत करते हैं। और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इससे मुराद "सफ़ेद बाल" हैं यानी जब सफ़ेद बाल आ गये तो समझ लो कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से डराने वाला आ गया, कि अब वक़्त आने वाला है तैयार हो जाओ, और अब भी अपनी पहली ज़िन्दगी से तौबा कर लो, और अपने हालात की इस्लाह कर लो, इसलिये कि "सफ़ेद बाल" आ गये हैं। और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इसकी तफ़सीर "पोते" से की है "यानी जब किसी का पोता पैदा हो जाए, और वह दादा बन जाए, तो वह पोता डराने वाला है, इस बात से कि बड़े मियां तुम्हारा वक़्त आने वाला है, अब हमारे लिये जगह ख़ाली करो।

मौत के फ़रिश्ते से मुकालमा

मैंने अपने वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि से एक वाक़िआ सुना कि किसी शख़्स की मौत के फ़रिश्ते से मुलाक़ात हो गयी। उस शख़्स ने मौत के फ़रिश्ते से शिकायत की, कि आपका भी अजीब मामला है दुनिया में किसी को पकड़ा जाता है तो दुनिया की अ़दालतों का क़ानून यह है कि पहले उसके पास नोटिस भेजते हैं कि तुम्हारे ख़िलाफ़ यह मुक़द्दमा क़ायम हो गया है, तुम उसकी जवाब देही के लिये तैयारी करो। लेकिन आपका मामला बड़ा अ़जीब है कि जब चाहते हैं बग़ैर नोटिस के आ धमकते हैं, बैठे बिठाये पहुंच गये, और रूह क़ब्ज़ कर ली, यह क्या मामला है? मौत के फ़रिश्ते ने जवाब दिया कि मियां! मैं तो इतने नोटिस भेजता हूं

कि दुनिया में कोई इतने नोटिस नहीं भेजता, लेकिन मैं क्या करूं तुम मेरे नोटिस का नोटिस नहीं लेते, उसकी परवाह नहीं करते। अरे! जब तुम्हें बुख़ार आता है, वह मेरा नोटिस होता है। जब तुम्हें कोई बीमारी आती है वह मेरा नोटिस होता है। जब तुम्हारे सफ़ेद बाल आते हैं, वह मेरा नोटिस होता है, तुम्हारे पोते आते हैं वह मेरा नोटिस होता है। मैं तो इतने नोटिस भेजता हूं कि कोई हद और हिसाब नहीं, मगर तुम कान ही नहीं धरते।

बहर हाल! इसलिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि इसके पहले कि वह हस्रत का वक़्त आए ख़ुदा के लिये अपने आप को संभाल लो, और इस सेहत के वक़्त को, और इस फ़राग़त के वक़्त को काम में ले आओ, ख़ुदा जाने कल क्या आ़लम पेश आए।

जो करना है अभी कर लो

हमारे हज़रत डाक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि हम लोगों को तंबीह करते हुए फ़रमाते थे कि अल्लाह मियां ने तुम्हें जवानी दी है, सेहत दी है, फ़राग़त दी है इसको काम में ले लो, और जो कुछ करना है, इस वक़्त कर लो। इबादतें इस वक़्त कर लो, अल्लाह का ज़िक्र इस वक़्त कर लो, इस वक़्त गुनाहों से बच जाओ, फिर जब बीमार हो जाओगे, या ज़ई़फ़ हो जाओगे, तो उस वक़्त कुछ बन नहीं पड़ेगा, और यह शेर पढ़ा करते थे:

अभी तो उनकी आहट पर मैं आंखें खोल देता हूं
वह कैसा वक़्त होगा जब न होगा यह भी इम्कान में

उस वक़्त अगर दिल भी चाहेगा कि आख़िरत का कुछ सामान कर लूं, लेकिन उस वक़्त इम्कान में नहीं होगा, कर नहीं सकोगे।

दो रक्अ़त की हस्रत होगी

रिवायत में है कि एक मर्तबा हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु सफ़र पर तशरीफ़ लेजा रहे थे, रास्ते में एक क़ब्र को देखा तो वहां पर सवारी से उतर गये और उतर कर दो रक्अ़त नफ़िल

पढ़ी, और फिर सवारी पर सवार होकर आगे रवाना हो गए। साथ में जो हज़रात थे, उन्हों ने समझा कि शायद किसी ख़ास आदमी की क़ब्र है, इसलिये यहां उतर कर दो रक्अ़त पढ़ लीं। चुनांचे उन्हों ने पूछा कि हज़रत क्या बात है? आप यहां क्यों उतरे? उन्हों ने जवाब दिया कि बात असल में यह है कि जब मैं यहां से गुज़रा तो मेरे दिल में ख़्याल आया कि जो लोग क़ब्रों में पहुंच चुके हैं, उनका अ़मल ख़त्म हो चुका है, और जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि ये लोग क़ब्रों के अन्दर इस बात की हस्रत करते हैं कि काश हमें इतना मौक़ा मिल जाए कि हम दो रक्अ़तें और पढ़ लें और हमारी नेकियों में और हमारे आमाल में दो रक्अ़त नफ़िल का और इज़ाफ़ा हो जाए। लेकिन इस हस्रत के बावजूद उनके पास नफ़िल पढ़ने का मौक़ा नहीं होता, तो मुझे ख़्याल आया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे यह मौक़ा दे रखा है, इसलिये चलो मैं जल्दी से दो रक्अ़त नफ़िल पढ़ लूं। इसलिये फ़रमाते हैं कि वे अपने एक एक लम्हे को इस तरह काम में लाते हैं।

नेकियों से अ़मल की तराज़ू भर लो

ये वक़्त के लम्हात बड़े क़ीमती हैं, इसी वास्ते कहा गया है कि मौत की तमन्ना न करो, इसलिये कि क्या मालूम कि मौत के बाद क्या होने वाला है।

अरे जो कुछ फ़ुर्सत और मोहलत अल्लाह तआ़ला ने अ़ता फ़रमा रखी है, सब कुछ इसी में होना है, आगे जाके कुछ नहीं होगा, इसलिये इस दुनिया में जो लम्हात अल्लाह तआ़ला ने अ़ता फ़रमाये हैं, इसको ग़नीमत समझो, और इसको काम में ले लो। जैसे एक लम्हे में अगर एक मर्तबा सुब्हानल्लाह कह दो, हदीस शरीफ़ में आता है कि एक मर्तबा सुब्हानल्लाह पढ़ने से अ़मल की तराज़ू का आधा पलड़ा भर जाता है, और एक मर्तबा "अल्हम्दु लिल्लाह" कह दिया तो अब अ़मल की तराज़ू का पूरा पलड़ा भर गया। देखिये ये लम्हात कितने क़ीमती हैं लेकिन तुम इनको गंवाते फिर रहे हो, ख़ुदा के लिये इनको इस काम में इस्तेमाल करो। (कुन्ज़ुल उम्माल)

हाफ़िज़ इब्ने हजर और वक़्त की क़द्र

हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैहि बड़े दर्जे के मुहद्दिसीन में से हैं और बुख़ारी शरीफ़ के शारेह हैं, और इल्म के पहाड़ हैं, अमल के जिस मक़ाम पर अल्लाह तआला ने उनको पहुंचाया था, आज इन्सान उस मक़ाम का तसव्वुर भी नहीं कर सकता। आलिम और मुसन्निफ़ और मुहद्दिस के नाम से मशहूर हैं। उनके हालात में लिखा है कि जिस वक़्त तस्नीफ़ कर रहे होते तो किताब लिखते लिखते जब क़लम का क़त (नोक) ख़राब हो जाता। उस ज़माने में लकड़ी के क़लम होते थे, और बार बार उसका क़त बनाना पड़ता था। तो उसको चाकू से दोबारा दुरुस्त करना पड़ता था। और उस में थोड़ा सा वक़्त लगता तो यह वक़्त भी बेकार गुज़ारना गवारा नहीं था, जितना वक़्त क़त लगाने में गुज़रता उतनी देर तीसरा कलिमा "सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वला इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर" पढ़ते रहते थे। ताकि यह वक़्त भी ज़ाया न जाये। इसलिये कि जो वक़्त तस्नीफ़ करने में गुज़र रहा है वह तो अल्लाह तआला की इबादत ही में गुज़र रहा है। लेकिन जो चन्द लम्हात मिले हैं इनको क्यों ज़ाया करें। और उनमें तीसरा कलिमा पढ़ लें, ताकि ये लम्हे भी बेकार न जाएं। बहर हाल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस इरशाद का हासिल यह है कि वक़्त की क़द्र पहचानें।

हज़रत मुफ़्ती साहिब और वक़्त की क़द्र

आज हमारे माहौल में सब से ज़्यादा बेक़द्र और बेवक़अत चीज़ वक़्त है, इसको जिस तरह चाहा गंवा दिया, गप–शप में गुज़ार दिया, या फ़ुज़ूलियात में गुज़ार दिया, या बिला वजह ऐसे काम के अन्दर गुज़ार दिया जिसमें न दुनिया का नफ़ा न दीन का नफ़ा। मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि मैं अपने वक़्त को तौल तौल कर ख़र्च करता हूं, ताकि कोई लम्हा बेकार न गुज़रे। या दीन के काम में गुज़रे, या दुनिया के काम में गुज़रे, और दुनिया के काम में भी अगर नियत सही हो तो वह भी

आख़िर कार दीन ही का काम बन जाता है। और हमें नसीहत करते हुए फ़रमाया करते थे कि यह बात तो है ज़रा शर्म की सी, लेकिन तुम्हें समझाने के लिये कहता हूं, जब इन्सान बैतुल ख़ला (लैट्रीन) में बैठता है, वह वक़्त ऐसा होता है कि उसमें न तो इन्सान ज़िक्र कर सकता है, इसलिये कि ज़िक्र करना मना है, और न और कोई काम कर सकता है। और मेरी तबीयत ऐसी बन गयी है कि जो वक़्त वहां बेकारी में गुज़रता है, वह बहुत भारी होता है, कि उसमें कोई काम नहीं हो रहा है। इसलिये उस वक़्त के अन्दर बैतुल ख़ला के लोटे को धो लेता हूं ताकि यह वक़्त भी किसी काम में लग जाए, और ताकि जब बाद में कोई दूसरा आदमी आकर उस लोटे को इस्तेमाल करे तो उसको गन्दा और बुरा मालूम न हो।

और फ़रमाया करते थे कि पहले मैं सोच लेता हूं कि फ़लां वक़्त में मुझे पांच मिनट मिलेंगे, उस पांच मिनट में क्या काम करना है? या खाना खाने के फ़ौरन बाद पढ़ना लिखना मुनासिब नहीं है, बल्कि दस मिनट का वक़्फ़ा (अंतराल) होना चाहिए, तो मैं पहले से सोच कर रखता हूं कि खाने के बाद ये दस मिनट फ़लां काम में ख़र्च करने हैं, चुनांचे उस वक़्त में वह काम कर लेता हूं।

जिन हज़रात ने मेरे वालिद माजिद रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की ज़ियारत की है, उन्हों ने देखा होगा कि आप कार के अन्दर सफ़र भी कर रहे हैं और क़लम भी चल रहा है। और बल्कि मैंने तो उनको रिक्शे के अन्दर सफ़र के दौरान भी लिखते हुए देखा है, जिसमें झटके भी बहुत लगते हैं, और एक जुम्ला बड़े काम का इरशाद फ़रमाया करते थे, जो सब के लिये याद रखने का है। अल्लाह तआला अपनी रह्मत से इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन। फ़रमाते थे कि देखोः

काम करने का बेह्तरीन गुर

जिस काम को फ़ुर्सत के इन्तिज़ार में रखा वह टल गया, यानी जिसको इस इन्तिज़ार में रखा कि जब फ़ुर्सत मिलेगी तब करेंगे, वह

टल गया, वह काम फिर नहीं होगा। काम करने का रास्ता यह है कि दो कामों के दर्मियान तीसरे काम को ज़बरदस्ती उसके अन्दर दाख़िल कर दो, तो वह काम हो जायेगा। मैं तो अपने वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अलैहि का एहसान मन्द हूं, अल्लाह तआला उनके दरजों को बुलन्द फ़रमाये, आमीन। आपका फ़रमाया हुआ यह जुम्ला हमेशा पेशे नज़र रहता है, और आंखों से इस बात का मुशाहदा करता हूं कि जिस काम के बारे में यह सोचता हूं कि फ़ुर्सत मिलेगी तो करेंगे, वह काम कभी नहीं होता। इसलिये कि ज़माने के हवादिस ऐसे हैं कि फिर वे मौक़ा देते ही नहीं। हां जिस काम की इन्सान के दिल में अहमियत होती है, इन्सान उस काम को कर ही गुज़रता है, ज़बरदस्ती कर लेता है, चाहे वक़्त मिले या न मिले।

क्या फिर भी नफ़्स सुस्ती करेगा?

हमारे हज़रत डा० अब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि देखो, वक़्त को काम में लगाने का तरीक़ा सुन लो, जैसे तुम्हें यह ख़्याल हुआ कि फ़लां वक़्त में तिलावत करेंगे, या नफ़िल नमाज़ पढ़ेंगे, लेकिन वह वक़्त जब आया तो अब तबीयत में सुस्ती हो रही है, और उठने को दिल नहीं चाह रहा है। तो ऐसे वक़्त में अपने नफ़्स की ज़रा तर्बियत किया करो, और उस नफ़्स से कहो कि अच्छा इस वक़्त तो तुम्हें सुस्ती हो रही है, और बिस्तर से उठने को दिल नहीं चाह रहा है, लेकिन यह बताओ कि अगर इस वक़्त राष्ट्रपति की तरफ़ से यह पैग़ाम आ जाए कि हम तुम्हें बहुत बड़ा इनाम, या बहुत बड़ा मन्सब या बहुत बड़ा ओहदा, या बहुत बड़ी नौकरी देना चाहते हैं। इसलिये तुम इस वक़्त फ़ौरन हमारे पास चले आओ। बताओ क्या उस वक़्त भी सुस्ती रहेगी? और क्या तुम यह जवाब दोगे कि मैं इस वक़्त नहीं आ सकता, इस वक़्त तो मुझे नींद आ रही है। कोई भी इन्सान जिसमें ज़रा भी अक़्ल व होश है, बादशाह का यह पैग़ाम सुन कर उसकी सारी सुस्ती व काहिली और नींद दूर हो जायेगी, और ख़ुशी के मारे फ़ौरन उस इनाम को लेने के लिये भाग खड़ा होगा, कि मुझे

इतना बड़ा इनाम मिलने वाला है।

इसलिये अगर उस वक़्त यह नफ़्स इस इनाम के हासिल करने के लिये भाग पड़ेगा तो इससे मालूम हुआ कि हक़ीक़त में उठने से कोई उज़्र नहीं है, अगर हकीकत में वाक़िअ़तन उठने में कोई उज़्र होता तो उस वक़्त न जाते, और बल्कि बिस्तर पर पड़े रहते। इसलिये यह तसव्वुर करो कि दुनिया का एक बादशाह जो बिल्कुल आ़जिज़, दर आ़जिज़, दर आ़जिज़ है, वह अगर तुम्हें एक ओहदे के लिए बुला रहा है तो उसके लिए इतना भाग रहे हो, लेकिन वह अह्कमुल हाकिमीन, जिसके क़ब्ज़े व क़ुदरत में पूरी कायनात है, देने वाला वह है, छीनने वाला वह है, उसकी तरफ़ से बुलावा आ रहा है, तो तुम उसके दरबार में हाज़िर होने में सुस्ती कर रहे हो? इस तसव्वुर से इन्शा-अल्लाह हिम्मत पैदा होगी, और वक़्त जो बेकार जा रहा है, वह इन्शा-अल्लाह काम में लग जायेगा।

शहवानी ख़्यालात का इलाज

हज़रत डाक्टर साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि एक मर्तबा फ़रमाने लगे कि ये जो गुनाह के दाईये और तक़ाज़े पैदा होते हैं। इनका इलाज इस तरह करो कि जब दिल में यह सख़्त तक़ाज़ा पैदा हो कि इस निगाह को ग़लत जगह पर इस्तेमाल करके लज़्ज़त हासिल करूं, तो उस वक़्त ज़रा सा यह तसव्वुर करो कि अगर मेरे वालिद मुझे इस हालत में देख लें, क्या फिर भी मैं यह हर्कत जारी रखूंगा? या अगर मुझे यह मालूम हो कि मेरे शैख़ मुझे इस हालत में देख रहे हैं, तो क्या फिर भी यह काम जारी रखूंगा? या मुझे पता हो कि मेरी औलाद मेरी इस हर्कत को देख रही है तो क्या फिर भी यह काम जारी रखूंगा? ज़ाहिर है कि अगर इनमें से कोई भी मेरी इस हर्कत को देख रहा होगा तो मैं अपनी नज़र नीची कर लूंगा। और यह काम नहीं करूंगा, चाहे दिल में कितना ही शदीद तक़ाज़ा पैदा क्यों न हो।

फिर यह तसव्वुर करो कि इन लोगों के देखने से मेरी दुनिया व आख़िरत में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। लेकिन मेरी इस हालत को जो

अह्कमुल हाकिमीन देख रहा है उसकी परवाह मुझे क्यों न हो, इसलिये कि वह मुझे इस पर सज़ा भी दे सकता है। इस ख़्याल और तसव्वुर की बर्कत से उम्मीद है कि अल्लाह तआला इस गुनाह से महफ़ूज़ रखेंगे।

तुम्हारी ज़िन्दगी की फ़िल्म चला दी जाए तो?

हज़रत डाक्टर साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि की एक बात और याद आ गयी फ़रमाते थे कि ज़रा इस बात का तसव्वुर करो कि अगर अल्लाह तआला आख़िरत में तुम से यों फ़रमायें कि: अच्छा अगर तुम्हें जहन्नम से डर लग रहा है, तो चलो हम तुम्हें जहन्नम से बचा लेंगे, लेकिन इसके लिये एक शर्त है, वह यह कि हम एक यह काम करेंगे कि तुम्हारी पूरी ज़िन्दगी जो बचपन से जवानी और बुढ़ापे तक और मरने तक तुमने गुज़ारी है। उसकी हम फ़िल्म चलायेंगे और उस फ़िल्म के देखने वालों में तुम्हारा बाप होगा, तुम्हारी मां होगी, बहन भाई होंगे, तुम्हारी औलाद होगी, तुम्हारे शागिर्द होंगे, तुम्हारे उस्ताद होंगे, तुम्हारे दोस्त व अहबाब होंगे। और उस फ़िल्म के अन्दर तुम्हारी पूरी ज़िन्दगी का नक़्शा सामने कर दिया जायेगा, अगर तुम्हें यह बात मन्ज़ूर हो तो फिर तुम्हें जहन्नम से बचा लिया जायेगा।

इसके बाद हज़रत फ़रमाते थे कि ऐसे मौक़े पर आदमी शायद आग के अज़ाब को गवारा कर लेगा, मगर इस बात को गवारा नहीं करेगा कि इन तमाम लोगों के सामने मेरी ज़िन्दगी का नक़्शा आ जाए......इसलिये जब अपने मां बाप, दोस्त अहबाब, अज़ीज़ व अक़ारिब और मख़्लूक़ के सामने अपनी ज़िन्दगी के हालात का आना गवारा नहीं तो फिर इन हालात का अल्लाह तआला के सामने आना कैसे गवारा कर लोगे? इसको ज़रा सोच लिया करो।

कल पर मत टालो

बहर हाल, यह हदीस जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाई यह बड़े काम की बात है, और दिल पर नक़्श करने के क़ाबिल है कि उमर का एक एक लम्हा बड़ा क़ीमती है,

जो वक़्त इस वक़्त मिला हुआ है, इसको टलाओ नहीं। और यह जो इन्सान सोचता है कि अच्छा यह काम कल करेंगे, वह कल फिर आती नहीं, जो काम करना है, वह अभी और आज ही शुरू कर दो, बिला ताख़ीर शुरू कर दो। क्या पता कल आए या न आए, क्या पता कि कल को यह जज़्बा मौजूद रहे या न रहे, क्या पता कि कल को हालात साज़गार रहें या न रहें, क्या पता कि कल को क़ुदरत रहे या न रहे, और क्या पता कि कल को ज़िन्दगी रहे या न रहे। इसलिये क़ुरआने करीम में फ़रमाया कि:

"وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ"

(سورة آل عمران:۱۳۳)

यानी अपने परवरदिगार की मग़फ़िरत की तरफ़ जल्दी दौड़ो, देर न करो, और उस जन्नत की तरफ़ दौड़ो जिसकी चौड़ाई सारे आसमान और ज़मीन है।

नेक काम में जल्द बाज़ी पसन्दीदा है

जल्द बाज़ी वैसे तो कोई अच्छी बात नहीं, लेकिन नेकी के काम में जल्दी करना और जिस नेकी का ख़्याल दिल में पैदा हुआ है, उस नेकी को कर गुज़रना, यह अच्छी बात है। और "मुसारअ़त" के मायने हैं कि एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो, रेस करो, मुक़ाबला करो, अगर दूसरा आगे बढ़ रहा है तो मैं उससे और आगे बढ़ जाऊं। और इसी काम के लिये अल्लाह तआ़ला ने हमें यह वक़्त अ़ता फ़रमाया है, इस हदीस को अल्लाह तअ़ला हमारे दिलों में उतार दे, और इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे, आमीन। आज हम लोगों ने अपने आपको ग़फ़्लत और बे फ़िक्री में मुब्तला किया हुआ है, चौबीस घन्टे के सोच विचार में आख़िरत की फ़िक्र और आख़िरत का ध्यान बहुत कम आता है। ग़फ़्लत में बढ़ते चले जा रहे हैं। इस मज़्मून को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस तरह इर्शाद फ़रमाया कि:

पांच चीज़ों को ग़नीमत समझो

"عن عمر بن میمون الاودی رضی اللہ تعالٰی عنہ،قال: قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لرجل وھو یعظہ: اغتنم خمسا قبل خمس، شبابك قبل ھرمك، وصحتك قبل سقمك، وغناك قبل فقرك، وفراغك قبل شغلك وحیاتك قبل موتك" (مشکٰوۃ شریف)

उमर बिन मैमून औदी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक साहिब को नसीहत करते हुए फ़रमाया कि पांच चीज़ों को पांच चीज़ों से पहले ग़नीमत समझो। बुढ़ापे से पहले जवानी को ग़नीमत समझो, और बीमारी से पहले सेहत को ग़नीमत समझो, और मालदारी को मुहताजी से पहले ग़नीमत समझो, और फ़ुर्सत को मश्ग़ूली से पहले ग़नीमत समझो, और अपनी ज़िन्दगी को मौत से पहले ग़नीमत समझो।

जवानी की क़द्र कर लो

मतलब यह है कि ये पांचों ऐसी हैं कि इनका ख़ात्मा होने वाला है इस वक़्त जवानी है, लेकिन जवानी के बाद बुढ़ापा आने वाला है, यह जवानी हमेशा बाक़ी रहने वाली नहीं है, बल्कि या तो इसके बाद बुढ़ापा आयेगा, या मौत आयेगी, तीसरा कोई रास्ता नहीं है। इसलिये उस बुढ़ापे से पहले इस जवानी को ग़नीमत समझो। यह क़ुव्वत और तवानाई और सेहत अल्लाह तआला ने इस वक़्त अता फ़रमाई है, इसको ग़नीमत समझ कर अच्छे काम में लगा लो, बुढ़ापे में तो यह हाल हो जाता है कि न मुंह में दांत और न पेट में आंत, उस वक़्त क्या करोगे जब हाथ पांव नहीं हिला सकोगे, शैख़ सादी रह्मतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि:

वक़्ते पीरी गर्गे ज़ालिम मी श–वद प्रहेज़गार
दर जवानी तौबा कर्–दन शेवा–ए–पैग़म्बरी

यानी बुढ़ापे में तो ज़ालिम भेड़िया भी प्रहेज़गार बन जाता है। क्यों? इसलिये कि खा ही नहीं सकता, ताक़त ही न रही, अब किस को

खायेगा। अरे जवानी में तौबा करना पैग़म्बरों का शेवा है, इसलिये फ़रमाया कि बुढ़ापे से पहले जवानी को ग़नीमत समझो।

सेहत, मालदारी और फ़ुर्सत की क़द्र करो

इस वक़्त सेहत है, लेकिन याद रखो, कोई इन्सान दुनिया के अन्दर ऐसा नहीं है कि सेहत के बाद उसको बीमारी न आए। बीमारी ज़रूर आयेगी, लेकिन पता नहीं कब आ जाए। इसलिये उससे पहले मौजूदा सेहत को ग़नीमत समझ लो।

और इस वक़्त अल्लाह तआला ने माली फ़राग़त और मालदारी अ़ता फ़रमाई है। कुछ पता नहीं कि यह कब तक की है, कितने लोग ऐसे हैं जिनके हालात बदल गये हैं, अच्छे ख़ासे अमीर कबीर थे, मगर अब फ़क़ीर हो गए। ख़ुदा जाने कब क्या हाल पेश आ जाए, उस वक़्त के आने से पहले इस मालदारी को ग़नीमत समझो और इसको अपनी आख़िरत संवारने के लिये इस्तेमाल कर लो।

और अपनी फ़ुर्सत को मश्ग़ूली से पहले ग़नीमत समझो, यानी फ़ुर्सत के जो लम्हे अल्लाह तआला ने अ़ता फ़रमाये हैं। यह मत समझो कि ये हमेशा बाक़ी रहेंगे, कभी न कभी मश्ग़ूली ज़रूर आयेगी। इसलिये इस फ़ुर्सत को सही काम में लगा लो। और ज़िन्दगी को मौत से पहले ग़नीमत समझो।

सुबह को ये दुआयें कर लो

और इस ज़िन्दगी के वक़्तों को काम में लेने का तरीक़ा यह है कि अपनी सुबह से शाम तक की ज़िन्दगी का "निज़ामुल औक़ात" (टाइम टेबल) बनाओ, और इसका जायज़ा लो कि मैं क्या क्या कर रहा हूं, और अच्छे आमाल के अन्दर क्या इज़ाफ़ा कर सकता हूं उनका इज़ाफ़ा करो। और मैं किन किन गुनाहों के अन्दर मुब्तला हूं उनको छोड़ो, और सुबह को नमाज़ पढ़ के यह दुआ मांगा करो कि या अल्लाह यह दिन आने वाला है मैं बाहर निकलूंगा, ख़ुदा जाने क्या हालात पेश आयें। या अल्लाह मैं इसका इरादा कर रहा हूं कि आज के दिन को आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा बनाऊंगा, ऐ अल्लाह मुझे इसकी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सुबह के वक़्त दुआयें मांगा करते थे। उन दुआओं को याद कर लेना चाहिये, और सुबह को वे दुआयें ज़रूर मांगनी चाहियें, चुनांचे आप दुआ फ़रमाते:

"اللهم انی اسئلك خير مافی هذا اليوم وخير ما بعده اللهم انی اعوذبك من شرمافی هذا اليوم وشرما بعده" (ترمذی شريف)

"اللهم انی اسئلك خير هذا اليوم وفتحه ونصره ونوره وبركته وهداه" (ابوداؤد شريف)

"यानी ऐ अल्लाह! मैं आपसे आज के दिन की भलाई और इसके बाद की भलाई का तालिब हूं। ऐ अल्लाह! मैं आज के दिन में जो बुराई है और इसके बाद की बुराई और शर से आपकी पनाह मांगता हूं।

ऐ अल्लाह! मैं आजके दिन की ख़ैर और फ़तह और कामयाबी और नूर और बरकत और हिदायत का आप से तालिब हूं।"

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ऐसी ऐसी दुआयें बता गये कि दीन व दुनिया की कोई हाजत नहीं छोड़ी, जिसको ये दुआयें याद हों, वह सुबह के वक़्त इन दुआओं को पढ़ ले। और जिसको यह दुआयें याद न हों, वह उर्दू में अल्लाह तआ़ला से यह दुआ कर ले कि या अल्लाह, यह दिन शुरू कर रहा हूं, और यह इरादा कर रहा हूं कि इस दिन के चौबीस घन्टों को सही इस्तेमाल करूंगा, ग़लत इस्तेमाल और बे-फ़ायदा ज़ाया करने से बचाऊंगा, मैं तो इरादा कर रहा हूं, लेकिन या अल्लाह मैं क्या और मेरा इरादा क्या, मेरा अ़ज़्म क्या। मेरी हिम्मत और मेरे हौसले की क्या हक़ीक़त है, अ़ज़्म देने वाले भी आप हैं, हिम्मत देने वाले भी आप हैं, हौसला देने वाले भी आप हैं। आप ही अपने फ़ज़्ल से मुझे ऐसे रास्ते पर लगा दीजिये, ऐसे हालात पैदा फ़रमा दीजिये कि मैं इस दिन के चौबीस घन्टों को आप की मर्ज़ी के मुताबिक़ ख़र्च कर दूं, बस सुबह उठ कर रोज़ाना यह दुआ मांग लिया करो, इन्शा-अल्लाह इसकी बर्कत से अल्लाह तआ़ला उस दिन के वक़्तों को ज़ाया होने से बचा लेंगे।

आगे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अ़लैहि हज़रत हसन बसरी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के दो क़ौल नक़ल फ़रमाते हैं:

"عن الحسن رحمه الله تعالى انه كان يقول: ادركت اقواماً كان احدهم اشح على عمره منه على دراهمه ودنانيره"

وعن الحسن انه كان يقول: ابن آدم،اياك والتسويف، فانك بيومك ولست بغد، وان يكن غدلك فكس فى غد كما كست فى اليوم والا يكن لك لم تندم على مافرطت فى اليوم" (كتاب الزهد والرقائق)

हज़रत हसन बसरी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

हज़रत हसन बसरी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि बड़े दर्जे के ताबिअ़ीन में से हैं, और हमारे मशाइख़ और तरीक़त के जितने सिलसिले हैं उन सब की इन्तिहा हज़रत हसन बसरी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि पर होती है। यानी शुरूआत हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से हुई, उसके बाद हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं, और उनके बाद हज़रत हसन बसरी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि हैं। चुनांचे जो हज़रात शजरा पढ़ते हैं उनको मालूम होगा कि उसमें हज़रत हसन बसरी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का नाम भी आता है, इस तरह हम सब उनके एह्सान मन्द हैं, हम सब की गर्दनें उनके एह्सान से झुकी हुई हैं, इसलिये कि हम को अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ अ़ता फ़रमाया है, वह उन्हीं बुज़ुर्गों के वास्ते से अ़ता फ़रमाया है। बहर हाल! यह बड़े दर्जे के औलिया-अल्लाह में से हैं।

वक़्त सोने चांदी से ज़्यादा क़ीमती है

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने यहां उनके दो क़ौल नक़ल किये हैं, पहले क़ौल में वह फ़रमाते हैं कि मैंने ऐसे लोगों को पाया है। "लोगों" से मुराद सहाबा-ए-किराम हैं। इसलिये कि यह ख़ुद ताबिअ़ीन में से हैं, इसलिये उनके असातिज़ा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सहाबा थे, फ़रमाते हैं कि मैंने उन लोगों पाया है और उन लोगों की सोहबत उठाई है जिनका अपने उम्र

के लम्हात और औक़ात पर बुख़्ल सोने चांदी के दराहिम और दीनार से कहीं ज़्यादा था। यानी जिस तरह आम आदमी की तबीयत सोने चांदी की तरफ़ माइल होती है। और उसको हासिल करने का शौक़ होता है। और अगर किसी के पास सोना चांदी आ जाए, तो वह उसको बड़ी हिफ़ाज़त से रखता है। और उसको बे जगह रखने से प्रहेज़ करता है। ताकि कहीं चोरी न हो जाए, या ज़ाया न हो जाए, इस तरह ये वे लोग थे जो सोने चांदी से कहीं ज़्यादा अपनी उमर के लम्हात की हिफ़ाज़त करते थे, इसलिये कि ज़िन्दगी का एक लम्हा सोने चांदी की अशरफ़ियों से कहीं ज़्यादा क़ीमती है, कहीं ऐसा न हो कि उमर का कोई लम्हा किसी बेकार काम में, या ना जायज़ काम में, या ग़लत काम में ख़र्च हो जाए। वे लोग वक़्त की क़द्र व क़ीमत को पहचानते थे कि उमर के जो लम्हे अल्लाह तआला ने अता फ़रमाये हैं, यह बड़ी अज़ीम नेमत है कि इसकी कोई हद व हिसाब नहीं, और यह नेमत कब तक हासिल रहेगी? इसके बारे हमें कुछ मालूम नहीं। इसलिये इसको ख़र्च करने में बड़ी एह्तियात से काम लेते थे।

दो रक्अ़त नफ़िल की क़द्र

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक क़ब्र के पास से गुज़र रहे थे। तो उस वक़्त सहाबा जो साथ थे उनसे ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि यह जो दो रक्अ़त नफ़िल कभी जल्दी जल्दी में तुम पढ़ लेते हो, और उनको तुम मामूली समझते हो। लेकिन यह शख़्स जो क़ब्र में लेटा हुआ है इसके नज़दीक दो रक्अ़त नफ़िल सारी दुनिया और जो कुछ इसमें है से बेह्तर हैं। इसलिये कि यह क़ब्र वाला शख़्स इस बात पर हसरत कर रहा है कि काश मुझे ज़िन्दगी में दो मिनट और मिल जाते तो मैं उसमें दो रक्अ़त नफ़िल और पढ़ लेता। और अपने नामा–ए–आमाल में इज़ाफ़ा कर लेता।

मक़बरे से आवाज़ आ रही है

हमारे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की कही हुई एक नज़म पढ़ने के क़ाबिल है। जो

असल में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के कलाम से निकाली हुई है। उस नज़्म का उन्वान है, "मक़्बरे की आवाज़" जैसा कि एक शायराना ख़्याल होता है कि एक क़ब्र के पास से गुज़र रहे हैं, तो वह क़ब्र वाला गुज़रने वाले को आवाज़ दे रहा है। चुनांचे वह नज़्म इस तरह शुरू की है:

मक़्बरे पर गुज़रने वाले सुन
ठेहर हम पर गुज़रने वाले सुन

हम भी एक दिन ज़मीन पर चलते थे
बातों बातें में हम मचलते थे

यह कह कर उसने ज़बाने हाल से अपनी दास्तान सुनाई कि हम भी इस दुनिया के एक फ़र्द थे। तुम्हारी तरह खाते पीते थे। लेकिन सारी ज़िन्दगी में हमने जो कुछ कमाया, उसमें से एक ज़र्रा भी हमारे साथ नहीं आया। और अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से जो कुछ नेक अमल करने की तौफ़ीक़ हो गयी थी, वह तो साथ आ गया, लेकिन बाक़ी कोई चीज़ साथ न आई। इसलिये वह गुज़रने वाले को नसीहत कर रहा है कि आज हमारा यह हाल है कि हम फ़ातिहा को तरस्ते हैं कि कोई अल्लाह का बन्दा आकर हम पर फ़ातिहा पढ़ कर उसका सावाब हमें पहुंचा दे, और ऐ गुज़रने वाले, तुझे अभी तक ज़िन्दगी के ये लम्हे मयस्सर हैं जिन्हें हम तरस रहे हैं।

सिर्फ़ "अमल" साथ जायेगा

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समझाने के क्या अजीब व ग़रीब अन्दाज़ हैं। किस किस तरीक़े से अपनी उम्मत को समझाया है। एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब मुर्दे को क़ब्रिस्तान ले जाया जाता है तो तीन चीज़ें उसके साथ जाती हैं। एक उसके अज़ीज़ व क़रीबी और रिश्तेदार, जो उसको छोड़ने के लिये क़ब्रिस्तान तक जाते हैं। दूसरे उसका माल, जैसे चारपाई वग़ैरह। और तीसरे उसका अमल। और फिर पहली दो

चीज़ें, यानी रिश्तेदार और माल क़ब्र तक उसको पहुंचाने के बाद वापस आ जाते हैं। लेकिन आगे जो चीज़ उसके साथ जाती है, वह सिर्फ़ उसका अ़मल है। (बुख़ारी शरीफ़)

किसी ने ख़ूब कहा है:

शुक्रिया ऐ क़ब्र तक पहुंचाने वालो शुक्रिया
अब अकेले ही चले ज़ायेंगे इस मन्ज़िल से हम

वहां कोई नहीं जायेगा। बहर हाल! उस "मक़बरे की आवाज़" में हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यह सबक़ दिया कि जब भी किसी क़ब्र के पास से गुज़रो, ज़रा सी देरे के लिये यह सोच लिया करो कि यह भी हमारी तरह एक इन्सान था। और हमारी तरह इसको भी ज़िन्दगी मयस्सर थी। इसका भी माल था, दौलत थी। इसके भी अ़ज़ीज़ व रिश्तेदार थे। इसके भी चाहने वाले थे। इसकी भी ख़्वाहिशात थीं। इसके भी जज़्बात थे। मगर आज वे सब रुख़्सत हो चुकीं, हां अगर कोई चीज़ इसके साथ है। तो वह सिर्फ़ इसका अ़मल है। और अब यह चन्द लम्हों को तरस रहा है कि अगर चन्द लम्हे मुझे मिल जायें तो मैं अपनी नेकियों में इज़ाफ़ा कर लूं।

मौत की तमन्ना मत करो

इसलिये नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कभी मौत की तमन्ना न करो, चाहे तुम कितनी ही मुसीबतों और तक्लीफ़ों में हो, उस वक़्त भी यह दुआ़ न करो कि या अल्लाह! मुझे मौत दे दे। इसलिये कि अगरचे तुम तक्लीफ़ों में घिरे हुए हो, लेकिन उमर के ये लम्हे जो इस वक़्त मयस्सर हैं, इनमें पता नहीं कि किस वक़्त किस नेकी की तौफ़ीक़ हो जाए। और फिर उस नेकी के बदले अल्लाह तआ़ला के यहां बेड़ा पार हो जाए। इसलिये कभी मौत की तमन्ना न करो। बल्कि अल्लाह तआ़ला से आ़फ़ियत मांगो यह दुआ़ करो कि या अल्लाह, आपने ज़िन्दगी के जो लम्हे अ़ता फ़रमाए हैं, इनको नेक कामों में और अपनी रिज़ा के कामों में ख़र्च फ़रमा दे।

हज़रत मियां साहिब का कश्फ़

हज़रत मियां सय्यद असग़र हुसैन साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अ़लैहि के उस्ताज़ों में से थे। और बड़े ऊंचे दर्जे के औलिया-अल्लाह में से थे, और साहिबे कश्फ़ व करामत बुज़ुर्ग थे, मेरे उस्ताज़ मौलाना फ़ज़्ल मुहम्मद साहिब मद्दज़िल्लु-हुम सयात में हैं। अल्लाह तआ़ला उनको आफ़ियत के साथ सलामत रखे, आमीन। उन्हों ने ख़ुद अपना वाक़िआ़ सुनाया कि एक मर्तबा हज़रत मियां साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि हज से वापस तश्रीफ़ लाए, हम उस वक़्त तालिब इल्म थे, और दारुल उलूम देवबन्द में पढ़ते थे। तालिब इल्मों में से एक तालिब इल्म ने कहा, मियां साहिब हज करके आये हैं। चलो उनके यहां चल कर खजूर खायेंगे। गोया कि उसने हज़रत मियां साहिब के पास जाने की वजह यह बयान की कि वहां खजूर मिलेंगी। हमें यह बात बुरी तो लगी कि यह तालिब इल्म मियां साहिब के पास सिर्फ़ खजूर खाने के लिये जाना चाहता है, हालांकि वह इतने बड़े बुज़ुर्ग हैं और हज करके आये हैं उनसे तो जाकर दुआयें लेनी चाहिएं। चुनांचे हम छः सात तुलबा उनसे मुलाक़ात के लिये चले। जब मियां साहिब के घर पहुंचे और उनको जाकर सलाम किया तो हज़रत मियां साहिब ने वहीं बैठे बैठे अपने ख़ादिम से फ़रमाया कि यह साहिब तो खजूर खाने आये हैं, इनको तो खजूरें देकर रुख़्सत कर दो, और बाक़ी तुलबा को अन्दर बुला लो, ऐसे साहिबे कश्फ़ बुज़ुर्ग थे।

ज़्यादा बातों से बचने का तरीक़ा

मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने हज़रत मियां असग़र हुसैन साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि का यह वाक़िआ़ सुनाया कि एक मर्तबा मैं उनके पास गया तो उन्हों ने फ़रमाया कि मौलवी शफ़ी साहिब आज हम आपस में अ़र्बी में बात करेंगे। मैं बड़ा हैरान हुआ कि आज तक तो कभी ऐसा नहीं किया था। आज मालूम नहीं क्या बात हो गयी, मैंने पूछा कि क्यों? कोई वजह तो बताइये? फ़रमाया कि जब हम

आपस में बैठते हैं तो कभी कभी फ़ुज़ूल इधर उधर की बातें शुरू हो जाती हैं, और यह ज़बान क़ाबू में नहीं रहती, और बे-तकल्लुफ़ अ़र्बी न तुम बोल सकते हो और न मैं बोल सकता हूं। इसका नतीजा यह होगा कि सिर्फ़ ज़रूरत की बात होगी, बे ज़रूरत बात न होगी।

हमारी मिसाल

फिर फ़रमाया कि हमारी मिसाल उस शख़्स जैसी है जो बहुत माल व दौलत, सोना चांदी लेकर सफ़र पर रवाना हुआ था। और फिर वह सारा माल व दौलत और सोना चांदी रास्ते में ख़र्च हो गया। और अब सिर्फ़ चन्द सिक्के बाक़ी रह गये, और सफ़र लम्बा है, इसलिये चन्द सिक्कों को बहुत देख भाल कर बहुत एहतियात से ख़र्च करता है। ताकि वे सिक्के बेजा ख़र्च न हो जाएं। फिर फ़रमाया कि हमारी बहुत बड़ी उमर तो बहुत से फ़ुज़ूल कामों में गुज़र गयी, और चन्द लम्हे बाक़ी हैं कहीं ऐसा न हो कि वे भी किसी बे फ़ायदा काम में ख़र्च हो जाएं। यह वही बात है जो हज़रत हसन बसरी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाई। हक़ीक़त यह है कि देवबन्द में अल्लाह तआ़ला ने जो उलमा पैदा फ़रमाये थे उन्हों ने सहाबा-ए-किराम की यादें ताज़ा कर दीं।

हज़रत थानवी और वक़्त की क़द्र

मेरे शैख़ हज़रत डाक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि अल्लाह तआ़ला उनके दरजात बुलन्द फ़रमाए, आमीन। फ़रमाते हैं कि मैंने ख़ुद हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि को देखा कि मर्ज़ुल मौत में जब बीमार और बिस्तर पर थे, और मुआ़लिजों और डाक्टरों ने मिलने जुलने से माना कर रखा था, और यह भी कह दिया था कि ज़्यादा बात न करें। एक दिन आंखें बन्द करके बिस्तर पर लेटे हुए थे, लेटे लेटे अचानक आंख खोली, और फ़रमाया कि भाई! मौलवी शफ़ी साहिब को बुलाओ। चुनांचे बुलाया गया, जब वह तश्रीफ़ लाए तो फ़रमाया कि आप "अह्कामुल क़ुरआन" लिख रहे हैं, मुझे अभी ख़्याल आया कि क़ुरआने करीम की जो फ़लां आयत है, उससे फ़लां मस्अला निकलता है, और यह मस्अला इससे

पहले मैंने कहीं नहीं देखा, मैंने आपको इसलिये बता दिया कि जब आप इस आयत पर पहुंचे तो इस मस्अले को भी लिख लीजियेगा। यह कह कर फिर आंखें बन्द करके लेट गए। थोड़ी देर के बाद फिर आंखें खोलीं और फ़रमाया कि फ़लां शख़्स को बुलाओ। जब वह साहिब आ गये तो उनसे मुताल्लिक़ कुछ काम बता दिया। जब बार बार ऐसा किया तो मौलाना शब्बीर अ़ली साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि जो हज़रत की ख़ानक़ाह के नाज़िम थे, और हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि से बे-तकल्लुफ़ थे, उन्हों ने हज़रत से फ़रमाया कि हज़रत! डाक्टरों और हकीमों ने बात चीत करने से मना कर रखा है मगर आप लोगों को बार बार बुला कर उनसे बातें करते रहते हैं, ख़ुदा के लिए आप हमारी जान पर तो रहम करें। उनके जवाब में हज़रते वाला ने क्या अ़जीब जुम्ला इर्शाद फ़रमाया। फ़रमाया कि बात तो तुम ठीक कहते हो, लेकिन मैं सोचता हूं कि ज़िन्दगी वे लम्हे किस काम के जो किसी की ख़िदमत में ख़र्च न हों, अगर किसी की ख़िदमत के अन्दर उमर गुज़र जाए तो यह अल्लाह तआ़ला की नेमत है।

हज़रत थानवी और निज़ामुल औक़ात (टाइम टेबल)

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के यहां सुबह से लेकर शाम तक पूरा निज़ामुल औक़ात मुक़र्रर था, यहां तक कि आपका यह मामूल था कि अ़सर की नमाज़ के बाद अपनी बीवियों के पस तशरीफ़ ले जाते थे। आपकी दो बीवियां थीं, दोनों के पास अ़सर के बाद अ़द्ल व इन्साफ़ के साथ उनकी ख़ैर व ख़बर लेने के लिए और उनसे बात चीत करने के लिए जाया करते थे। और यह हक़ीक़त में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत थी। हदीस में आता है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अ़सर की नमाज़ पढ़ने के बाद एक एक करके तमाम बीवियों के पास उनकी ख़बर गीरी के लिये तशरीफ़ लेजाते थे, और आपका रोज़ाना का मामूल था। अब देखिये कि दुनिया के सारे काम हो रहे हैं, जिहाद भी हो रहे हैं, तालीम भी हो रही है, पढ़ाना भी हो रहा है, दीन के सारे काम भी हो रहे हैं।

और साथ में पाक बीवियों के पास जाकर उनकी दिलजोई भी हो रही है। और हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने अपनी ज़िन्दगी को नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत पर ढाला हुआ था। और इसी इत्तिबा–ए–सुन्नत में आप भी अ़सर के बाद अपनी दोनों बीवियों के पास जाया करते थे। लेकिन वक़्त मुक़र्रर था, जैसे पन्द्रह मिनट एक बीवी के पास बैठेंगे, और पन्द्रह मिनट दूसरी बीवी के पास बैठेंगे। चुनांचे आप घड़ी देख कर दाख़िल होते, और घड़ी देख कर बाहर निकल आते। यह नहीं हो सकता था कि पन्द्रह मिनट के बजाए सोलह मिनट हो जाएं, या चौदह मिनट हो जाएं। बल्कि इन्साफ़ के तक़ाज़े के मुताबिक़ पूरे पन्द्रह पन्द्रह मिनट तक दोनों के पास तशरीफ़ रखते, तौल तौल कर, एक एक मिनट का हिसाब रख कर ख़र्च किया जा रहा है।

देखिए! अल्लाह तआ़ला ने वक़्त की जो नेमत अ़ता फ़रमाई है, उसको इस तरह ज़ाया न करें। अल्लाह तआ़ला ने यह बड़ी ज़बरदस्त दौलत दी है, एक एक लम्हा क़ीमती है, और यह दौलत जा रही है, यह पिघल रही है। किसी ने ख़ूब कहा है कि:

हो रही है उमर मिस्ले बर्फ़ कम
चुप्के चुप्के रफ़्ता रफ़्ता दम ब–दम

जिस तरह बर्फ़ हर लम्हे पिघलती रहती है, इसी तरह इन्सान की उमर हर लम्हे पिघल रही है, और जा रही है।

"सालगिरह" की हक़ीक़त

जब उमर का एक साल गुज़रता है तो लोग "सालगिरह" मनाते हैं, और उसमें इस बात की बड़ी ख़ुशी मनाते हैं कि हमारी उमर का एक साल पूरा हो गया, और उसमें मोम बत्तियां जलाते हैं, और केक काटते हैं और ख़ुदा जाने क्या क्या ख़ुराफ़ात करते हैं। इस पर अक्बर इलाहाबादी मरहूम ने बड़ा हकीमाना शेर कहा है, वह यह कि:

जब सालगिरह हुई तो उक़्दा यह खुला
यहां और गिरह से एक बरस जाता है

"उक़्दा" भी अ़र्बी में "गिरह" को कहते हैं। मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला ने गिरह में ज़िन्दगी के जो बरस दिए थे, उसमें से एक और कम हो गया। अरे यह रोने की बात है या ख़ुशी की बात है? यह तो अफ़सोस करने का मौक़ा है कि तेरी ज़िन्दगी का एक साल और कम हो गया।

गुज़री हुई उमर का मर्सिया

मेरे वालिद माजिद रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने अपनी उमर के तीस साल गुज़रने के बाद सारी उमर इस पर अ़मल फ़रमाया कि जब उमर के कुछ साल गुज़र जाते तो एक मर्सिया कहा करते थे। आ़म तौर पर लोगों के मरने के बाद उनका मर्सिया कहा जाता है। लेकिन मेरे वालिद साहिब अपना मर्सिया ख़ुद कहा करते थे। और उसका नाम रखते थे "मर्सिया उमरे रफ़्ता" यानी गुज़री हुई उमर का मर्सिया, अगर अल्लाह तआ़ला हमें समझ अ़ता फ़रमाए तब यह बात समझ में आए कि वाक़िआ़ यही है कि जो वक़्त गुज़र गया, वह अब वापस आने वाला नहीं, इसलिये इस पर ख़ुशी मनाने का मौक़ा नहीं है, बल्कि आइन्दा की फ़िक्र करने का मौक़ा है कि बाक़ी ज़िन्दगी का वक़्त किसी तरीक़े से काम में लग जाए।

आज हमारे मुआ़शरे में सब से ज़्यादा बे क़ीमत चीज़ वक़्त है, इसको जहां चाहा खो दिया और बरबाद कर दिया। कोई क़दर व क़ीमत नहीं, घन्टे, दिन, महीने बे फ़यादा कामों में और फ़ुज़ूलियात में गुज़र रहे हैं जिसमें न तो दुनिया का फ़ायदा, न दीन का फ़ायदा।

कामों की तीन क़िस्में

हज़रत इमामे ग़ज़ाली रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि दुनिया में जितने भी काम हैं, वे तीन क़िस्म के हैं। एक वे हैं जिनमें कुछ नफ़ा और फ़ायदा है, चाहे दीन का फ़ायदा हो या दुनिया का फ़ायदा हो। दुसरे वे काम हैं, जो मज़र्रत वाले और नुक़्सान देने वाले हैं। उनमें या तो दीन का नुक़्सान है, या दुनिया का नुक़्सान है। और तीसरे काम वे

हैं, जिनमें न नफ़ा है न नुक़सान है, न दुनिया का नफ़ा, न दीन का नफ़ा, न दीन का नुक़सान, न दुनिया का नुक़सान। बल्कि फ़ुज़ूल काम हैं। इसके बाद इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जहां तक उन कामों का ताल्लुक़ है जो नुक़सान देने वाले हैं, ज़ाहिर है कि उनसे तो बचना ज़रूरी है, और अगर ग़ौर से देखो तो कामों की यह जो तीसरी क़िस्म है, जिसमें न नुक़सान है और न नफ़ा है, वे भी हक़ीक़त में नुक़सान–देह हैं। इसलिये कि जब तुम ऐसे काम में अपना वक़्त लगा रहे हो, जिसमें कोई नफ़ा नहीं है, हालांकि उस वक़्त को तुम ऐसे काम में लगा सकते थे जिसमें नफ़ा हो, तो गोया कि तुमने उस वक़्त को बरबाद कर दिया। और उस वक़्त के नफ़े को ज़ाया कर दिया।

यह भी हक़ीक़त में बड़ा नुक़सान है

इस की मिसाल यों समझें कि फ़र्ज़ करें कि एक शख़्स एक जज़ीरे (टापू) में गया और उस जज़ीरे में एक सोने का टीला है, उस टीले के मालिक ने उस शख़्स से कहा कि जब तक तुम्हें हमारी तरफ़ से इजाज़त है उस वक़्त तक तुम इसमें से जितना सोना चाहो, निकाल लो, वह सोना तुम्हारा है। लेकिन हम किसी भी वक़्त तुम्हें अचानक सोना निकालने से मना कर देंगे, कि बस अब इजाज़त नहीं। लेकिन हम तुम्हें यह नहीं बतायेंगे कि किस वक़्त तुम्हें सोना निकालने से मना कर दिया जायेगा। और उसके बाद जब्रन तुम्हें इस जज़ीरे से निकलना पड़ेगा। क्या वह शख़्स कोई लम्हा ज़ाया करेगा? क्या वह शख़्स यह सोचेगा कि अभी तो बहुत वक़्त है, पहले थोड़ी सी तफ़रीह करके आ जाऊं, फिर सोना निकाल लूंगा, वह हरगिज़ ऐसा नहीं करेगा, बल्कि वह तो एक लम्हा ज़ाया किए बग़ैर यह कोशिश करेगा कि इसमें से जितना ज़्यादा से ज़्यादा सोना निकाल सकता हूं वह निकाल लूं, इसलिये कि जो निकाल लूंगा, वह मेरा हो जायेगा, अब अगर वह शख़्स सोना निकालने के बजाए एक तरफ़ अलग होकर बैठ गया, तो बज़ाहिर इसमें न तो नफ़ा है न नुक़सान है। लेकिन हक़ीक़त में वह बहुत बड़ा

नुक़सान है, वह नुक़सान यह है कि जो बहुत बड़ा नफ़ा हासिल होना था, वह सिर्फ़ अपनी ग़फ़लत से छोड़ दिया।

एक ताजिर का अनोखा नुक़सान

मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अलैहि के पास एक ताजिर आया करते थे। उनकी बहुत बड़ी तिजारत थी। एक मर्तबा वह आकर कहने लगे कि हज़रत क्या अर्ज़ करूं, कोई दुआ फ़रमा दें, बहुत सख़्त नुक़सान हो गया है। वालिद साहिब फ़रमाते हैं कि मुझे यह सुन कर बड़ा दुख हुआ कि यह बेचारा पता नहीं किस मुसीबत में गिरफ़्तार हो गया, पूछा कि कितने का नुक़सान हो गया। उसने कहा कि हज़रत! करोड़ों का नुक़सान हो गया। वालिद साहिब ने फ़रमाया कि ज़रा तफ़्सील से बताओ कि किस क़िस्म का नुक़सान हुआ, किस तरह हुआ? जब उन्हों ने उस नुक़सान की तफ़्सील बताई तो मालूम हुआ कि करोड़ों का सौदा होने वाला था वह नहीं हो पाया। बस उसके अलावा जो लाखों पहले से आ रहे थे, वे अब भी आ रहे हैं। उसमें कोई कमी नहीं हुई, लेकिन एक सौदा होने वाला था, वह नहीं हुआ, उसके न होने के बारे में बताया कि यह बहुत ज़बरदस्त नुक़सान हो गया। हज़रत वालिद साहिब फ़रमाते हैं कि उस शख़्स ने नफ़ा न होने को नुक़सान से ताबीर कर दिया। यानी जिस नफ़े की उम्मीद थी, वह नहीं हुआ, इसका मतलब यह है कि बहुत बड़ा नुक़सान हो गया।

इस वाक़िए के बयान के बाद वालिद साहिब फ़रमाते हैं कि काश! यह बात वह दीन के बारे में सोच लेता, कि अगर इस वक़्त को ढंग के काम में लगाता, तो इसके ज़रिये दीन का और आख़िरत का इतना बड़ा फ़ायदा होता, वह रह गया, जिसकी वजह से यह नुक़सान हो गया।

एक बनिए का क़िस्सा

एक बात है तो हंसी की, लेकिन अगर अल्लाह तआला समझने वाली अक़्ल दे तो इसमें से भी काम की बातें निकलती हैं। हमारे एक बुज़ुर्ग जो मशहूर हकीम हैं, उन्हों ने एक दिन यह क़िस्सा सुनाया कि

एक बनिया अत्तार था, जो दवायें बेचा करता था, उसका बेटा भी उसके साथ दुकान पर बैठता था। एक दिन उसको किसी ज़रूरत से कहीं जाना पड़ा तो उसने अपने बेटे से कहा कि बेटा! मुझे ज़रा एक काम से जाना है, तू ज़रा दुकान की देख भाल करना, और एहतियात से सौदा वग़ैरह फ़रोख़्त करना, बेटे ने कहा बहुत अच्छा। और बनिए ने अपने बेटे को हर चीज़ की क़ीमत बता दी कि फ़लां चीज़ की यह क़ीमत है, फ़लां चीज़ की कीमत यह है। यह कह कर वह बनिया चला गया। थोड़ी देर के बाद एक गाहक आया, और शर्बत की दो बोतलें उसने ख़रीदीं। बेटे ने वे बोतलें सौ सौ रुपये की फ़रोख़्त कर दीं। थोड़ी देर के बाद जब बाप वापस आया तो उसने बेटे से पूछा कि क्या बिक्री हुई? बेटे ने बता दिया कि फ़लां फ़लां चीज़ें बेच दीं। और ये दो बोतलें भी बेच दीं। बाप ने पूछा कि ये बोतलें कितने में बेचीं? बेटे ने कहा कि सौ सौ रुपये की बेच दीं। यह जवाब सुनकर बाप सर पकड़ कर बैठ गया, और बेटे से कहा कि तुमने मेरा कबाड़ा कर दिया। यह बोतलें तो दो हज़ार की थीं, तूने सौ सौ रुपये की बेच दीं! बड़ा नाराज़ हुआ। अब बेटा भी ग़मगीन हुआ कि अफ़्सोस, मैंने बाप का इतना बड़ा नुक़सान कर दिया और बैठ कर रोने लगा, और बाप से माफ़ी मांगने लगा कि अब्बा जान मुझे माफ़ कर दो, मुझ से बड़ी ग़लती हो गई, मैंने आपका बहुत बड़ा नुक़सान कर दिया। जब बाप ने यह देखा कि यह बहुत रन्जीदा, ग़मगीन और परेशान है, तो उसने बेटे से कहा कि बेटा! इतनी ज़्यादा फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं, इसलिये कि तूने ये बोतलें सौ सौ रुपये की बेचीं, इस सौ रुपये में से अट्ठानवे रुपये अब भी नफ़े के हैं, बाक़ी अगर तुम ज़्यादा होशियारी से काम लेते तो एक बोतल पर दो हज़ार रुपये मिल जाते, बस यह नुक़सान हुआ, बाक़ी घर से गया कुछ नहीं।

बहर हाल! ताजिर को अगर नफ़ा न होतो वह कहता है कि बहुत नुक़सान है, तो भाई! जब दुनिया की तिजारत में यह उसूल है कि नफ़ा न होना नुक़सान है, तो इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि दीन के बारे में यह सोच लो, अगर ये ज़िन्दगी के लम्हात ऐसे काम

में लगा दिए जिसमें नफ़ा नहीं हुआ तो हक़ीक़त में यह भी नुक़्सान है, नफ़े का सौदा नहीं, बल्कि नुक़्सान का सौदा है, इसलिये कि अगर तुम चाहते तो इससे आख़िरत का बहुत बड़ा नफ़ा हासिल कर लेते इस तरह अपनी ज़िन्दगी गुज़ार कर देखो।

मौजूदा दौर और वक़्त की बचत

और यह भी ज़रा सोचा करो कि अल्लाह जल्ल जलालुहू ने हमें इस दौर में कितनी नेमतें अता फ़रमाई हैं, और ऐसी ऐसी नेमतें हमें दे दीं कि जो हमारे बाप दादाओं के तसव्वुर में भी नहीं थीं। जैसे पहले यह होता था कि अगर कोई चीज़ पकानी हो तो पहले लकड़ियां लाई जायें, फिर उनको सुखाया जाए, फिर उनको सुलगाया जाए, अब अगर ज़रा सी चाये भी बनानी है तो उसके लिये आधा घन्टा चाहिए, अब अल्हम्दु लिल्लाह, गैस के चुल्हे हैं, 'उसका ज़रा सा कान मरोड़ा और दो मिनट के अन्दर चाये तैयार हो गयी, अब सिर्फ़ चाये की तैयारी पर अट्ठाइस मिनट बचे, पहले यह होता था कि अगर रोटी पकानी है तो पहले गेहूं आयेगा, उसको चक्की में पीसा जायेगा, फिर आटा गूंदेंगे, फिर जाकर रोटी पकेगी, अब ज़रा सा बटन दबाया, अब मसाला भी तैयार है, आटा भी तैयार है, इस काम में भी बहुत वक़्त बच गया। अब यह बताओ यह वक़्त कहां गया? किस काम में आया? कहां ख़र्च हुआ, लेकिन अब भी औरतों से कहा जाए कि फ़लां काम कर लो, तो जवाब मिलता है कि फ़ुर्सत नहीं मिलती। पहले ज़माने में ये तमाम काम करने के बावजूद औरतों को इबादत की भी फ़ुर्सत थी। तिलावत की भी फ़ुर्सत थी। ज़िक्र करने की भी फ़ुर्सत थी। अल्लाह को याद करने की भी फ़ुर्सत थी। अब अल्लाह तआ़ला ने इन नये आलात (यंत्रों) की नेमत अता फ़रमा दी तो अब इन औरतों से पूछा जाए कि तिलावत की तौफ़ीक़ हो जाती है? तो जवाब मिलता है कि क्या करें, घर के काम धन्धों से फ़ुर्सत नहीं मिलती। पहले ज़माने में सफ़र या तो पैदल होता था या घोड़ों और ऊंटों पर होता था। उसके बाद तांगों और साइकिलों पर होने लगा, और जिस दूरी को तय करने में महीनों ख़र्च होते थे,

अब घन्टों में वह दूरी तय हो जाती है। अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से कल मैं मदीना मुनव्वरा में था, और कल ज़ोहर, असर, मग़रिब, इशा चारों नमाज़ें मदीना तय्यबा में अदा कीं। और आज जुमे की नमाज़ यहां आकर अदा कर ली। पहले कोई शख़्स क्या यह तसव्वुर कर सकता था कि कोई शख़्स मदीना मुनव्वरा से अगले दिन वापस लौट आए। बल्कि पहले तो अगर किसी को हरमैन शरीफ़ैन के सफ़र पर जाना होता तो लोगों से अपनी ख़ताएं माफ़ करा कर जाया करते थे। इसलिये कि महीनों का सफ़र होता था। अब अल्लाह तआला ने सफ़र को इतना आसान फ़रमा दिया है कि आदमी चन्द घन्टों में वहां पहुंच जाता है। जो सफ़र पहले एक महीने में होता था अब एक दिन में हो गया और उन्तीस दिन बच गये। अब इसका हिसाब लगाओ कि वे उन्तीस दिन कहां गये? और किस काम में ख़र्च हो गये? मालूम हुआ कि वे उन्तीस दिन ज़ाया कर दिए और अब भी वही हाल है कि फ़ुर्सत नहीं, वक़्त नहीं। क्यों वक़्त नहीं? वजह इसकी यह है कि अल्लाह तआला ने ये नेमतें इसलिये अता फ़रमाई थीं कि वक़्त बचा कर मुझे याद करो, और मेरी तरफ़ रुजू करो, और आख़िरत की तैयारी करो, और उसकी फ़िक्र करो।

शैतान ने टीप टाप में लगा दिया

शैतान ने यह सोचा कि यह जो वक़्त बच गया है, कही ऐसा न हो कि अल्लाह की याद में ख़र्च हो जाए, इसलिये उसने और धन्धे निकाल दिए। जैसे उसने हम लोगों को टीप टाप में लगा दिया। और यह ख़्याल दिल में डाला कि घर में फ़लां चीज़ होनी चाहिए, और फ़लां चीज़ होनी चाहिए। और अब चीज़ की ख़रीदारी के लिये पैसे भी होने चाहिएं और पैसे कमाने के लिए काम करना चाहिए। तो अब एक नया धन्धा शुरू हो गया। आज हम सब इसके अन्दर मुब्तला हैं, सब एक कश्ती के अन्दर सवार हैं, मिल कर बैठ गये तो अब गप–शप हो रही है, और एक बेकार काम में वक़्त गुज़र रहा है। उस वक़्त का कोई सही मसरफ़ (ख़र्च करने की जगह) नहीं है। ये सब वक़्त को

ज़ाया करने वाले काम हैं।

औरतों में वक़्त की ना क़द्री

वक़्त ज़ाया करने और टीप टाप करने का मर्ज़ ख़ास तौर पर औरतों में बे-इन्तिहा पाया जाता है। जो काम एक मिनट में हो सकता है, उसमें एक घन्टा ख़र्च करेंगी। और जब आपस में बैठेंगी तो लम्बी लम्बी बातें करेंगी, और जब लम्बी लम्बी बातें होंगी तो उसमें ग़ीबत भी होगी, झूठ भी निकलेगा, किसी का दिल दुखाना भी हो जायेगा। ख़ुदा जाने किन किन गुनाहों का जुर्म उस गुफ़्तगू में शामिल हो जायेगा। इसलिये हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमा रहे हैं कि मैंने उन लोगों को पाया है जो अपने लम्हाते ज़िन्दगी को सोने चांदी से ज़्यादा क़ीमती समझते थे कि कहीं ऐसा न हो कि ये बे फ़ायदा काम में ख़र्च हो जाएं।

बदला लेने में क्यों वक़्त ज़ाया करूं

यह क़िस्सा आप हज़रात को पहले भी सुनाया था कि एक शख़्स औलिया की निस्बत मालूम करने के लिए निकले। एक बुज़ुर्ग से मुलाक़ात की, और उनके सामने अपना मक़्सद बयान किया। उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि तुम फ़लां मस्जिद में जाओ। वहां तुम्हें तीन बुज़ुर्ग ज़िक्र करते हुए मिलेंगे। तुम जाकर पीछे से उन तीनों को एक घूंसा रसीद कर देना। वह साहिब मस्जिद में पहुंचे, देखा कि वाक़ई तीन बुज़ुर्ग ज़िक्र में मश्गूल हैं। उसने पीछे से जाकर एक बुज़ुर्ग को घूंसा रसीद कर दिया। तो उन बुज़ुर्ग ने मुड़ कर भी नहीं देखा और अपने ज़िक्र के अन्दर मश्गूल रहे। क्यों? इसलिये कि उन बुज़ुर्ग ने यह सोचा कि जितनी देर मैं पीछे मुड़ कर देखूंगा कि किसने मारा है, और उस से बदला लूंगा, उतनी देर में तो कई बार "सुब्हानल्लाह" कह लूंगा, और इससे जो फ़ायदा होगा बदला लेने से वह फ़ायदा हासिल नहीं होगा।

हज़रत मियां जी नूर मुहम्मद रह० और वक़्त की क़द्र

हज़रत मियां जी नूर मुहम्मद झिनझानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का यह हाल था कि जब बाज़ार में कोई चीज़ ख़रीदने जाते तो हाथ में पैसों की थैली होती, और चीज़ ख़रीदने के बाद खुद पैसे गिन कर दुकानदार को नहीं देते थे, बल्कि पैसों की थैली उसके सामने रख देते, और उससे कहते कि खुद ही इसमें से पैसे निकाल लो। इसलिये कि अगर मैं निकालूंगा, और उनको गिनूंगा, तो वक़्त लगेगा। इतनी देर में सुब्हानल्लाह कई मर्तबा कह लूंगा।

एक मर्तबा वह अपने पैसों की थैली उठाए हुए जा रहे थे कि पीछे से एक उचक्का आया और वह थैली छीन कर भाग खड़ा हुआ। हज़रत मियां जी नूर मुहम्मद ने मुड़ कर भी नहीं देखा कि कौन ले गया, और कहां गया......और घर वापस आ गए, क्यों? इसलिये कि उन्हों ने सोचा कि कौन इस चक्कर में पड़े कि उसके पीछे भागे, और उसको पकड़े। बस अल्लाह अल्लाह करो। बहर हाल, इन हज़रात का मिज़ाज यह था कि हम अपनी ज़िन्दगी के वक़्तों को क्यों ऐसे कामों में ख़र्च करें जिस में आख़िरत का फ़ायदा न हो।

मामला तो इससे ज़्यादा जल्दी का है

हक़ीक़त में यह नबी–ए–करीम सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एक इरशाद पर अ़मल था। जब मैं इस हदीस को पढ़ता हूं तो मुझे बड़ा डर लगता है। मगर चूंकि बुज़ुर्गों से इस हदीस की तशरीह भी सुनी हुई है इसलिये बेताबी नहीं होती। लेकिन बहर हाल, यह बड़ी इब्रत की हदीस है। वह यह है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर फ़रमाते हैं कि मेरी एक झोंपड़ी थी, हदीस में लफ़्ज़ "ख़स" आया है "ख़स" अ़र्बी में झोंपड़ी को कहते हैं। उस झोंपड़ी में कुछ टूट फूट हो गयी थी, इसलिये एक दिन मैं उस झोंपड़ी की मरम्मत कर रहा था। उस वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरे पास से

गुज़रे और मुझ से फ़रमाया कि क्या कर रहे हो? मैंने जवाब में कहा कि:

"خص لنا وهى فتخن نصلحه"

या रसूलुल्लाह हम तो अपनी झोंपड़ी को ज़रा दुरुस्त कर रहे हैं आपने फ़रमाया:

"ما ارى الا مر الا اعجل من ذلك"

भाई! मामला तो इससे भी ज़्यादा जल्दी का है। मतलब यह था कि अल्लाह तआ़ला ने उमर के जो लम्हे अ़ता फ़रमाये हैं, यह पता नहीं कब ख़त्म हो जायें और मौत आ जाए, और आख़िरत का आ़लम शुरु हो जाए, ये लम्हे जो इस वक़्त मयस्सर हैं यह बड़ी जल्दी का वक़्त है। इसमें तुम यह कहां अपने घर की मरम्मत का फ़ुज़ूल काम ले बैठे? (अबू दाऊद शरीफ़)

अब देखिए कि वह सहाबी कोई बड़ा आलीशान मकान नहीं बना रहे थे। या उसकी सजावट और संवारने का काम नहीं कर रहे थे। बल्कि सिर्फ़ अपनी झोंपड़ी की मरम्मत कर रहे थे। उस पर आप ने फ़रमाया कि मामला इससे भी ज़्यादा जल्दी का है। हज़राते उलमा ने इस हदीस की शरह में फ़रमाया कि इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन सहाबी को इस काम से मना नहीं फ़रमाया कि तुम यह काम मत करो, यह काम गुनाह है। इसलिये कि वह काम गुनाह नहीं था, मुबाह और जायज़ था। लेकिन आपने उन सहाबी को इस तरफ़ तवज्जोह दिला दी कि कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी सारी तवज्जोह, सारा ध्यान, सारी कोशिश और सारी दौड़ धूप इसी दुनिया के इर्द गिर्द रह जाए।

बहर हाल! अगर हम सौ फ़ीसद इन बुज़ुर्गों की इत्तिबा नहीं कर सकते तो कम से काम यह तो कर लें कि हम जो फ़ुज़ूल कामों में अपना वक़्त बरबाद कर रहे हैं, इससे बच जाएं। और अपने ज़िन्दगी के लम्हात को काम में लायें। और हक़ीक़त यह है कि आदमी इस ज़िक्र की बदौलत ज़िन्दगी के एक एक लम्हे को आख़िरत की तैयारी

के लिये ख़र्च कर सकता है। चल रहा है, फिर रहा है, मगर ज़बान पर अल्लाह जल्ल जलालुहू का ज़िक्र जारी है। और हर काम करते वक़्त अपनी नियत दुरुस्त कर लो तो यह वक़्त बे मसरफ़ और बेकार ज़ाया नहीं होगा।

हुज़ूरे पाक का दुनिया से ताल्लुक़

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब आप रात को बिस्तर पर सोते थे तो आपके जिस्मे पाक पर निशान पड़ जाया करते थे, तो एक मर्तबा मैंने आपके बिस्तर की चादर को दोहरा कर के बिछा दिया, ताकि निशान न पड़ें और ज़्यादा आराम मिले। जब सुबह को जागे तो आपने फ़रमाया कि ऐ आयशा, इसको दोहरा मत किया करो, इसको इकहरा ही रहने दो।

एक मर्तबा हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने दीवार की सजावट के लिये एक पर्दा लटका दिया था। जिस पर तसवीरें थीं, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसी वक़्त सख़्त नाराज़गी का इज़्हार फ़रमाया। और फ़रमाया कि मैं इस घर में उस वक़्त तक दाख़िल नहीं हूंगा जब तक कि यह पर्दा नहीं हटा दोगी, इसलिये कि इसमें तसवीर है।

और एक मर्तबा ज़ीनत और सजाने के लिये ऐसा पर्दा लटका दिया जिसमें तसवीर तो नहीं थी, लेकिन उसको देख कर आपने इरशाद फ़रमाया कि ऐ आयशाः

"مالی والدنیا، ماانا والدنیاالا کراکب استظل تحت شجرۃ ثم راح وترکھا" (ترمذی شریف)

अरे, मेरा दुनिया से क्या काम, मेरी मिसाल तो एक सवार की सी है, जो किसी पेड़ की छाओं में थोड़ी देर के लिए साया लेता है, और फिर उस साये को छोड़ कर आगे चला जाता है, मेरा तो हाल यह है। बहर हाल! उम्मत को इन चीज़ों से मना नहीं किया, लेकिन अपने अमल से इस उम्मत को यह सबक़ दिया कि दुनिया के अन्दर ज़्यादा दिल न लगाओ। इस पर ज़्यादा वक़्त ख़र्च न करो, और आख़िरत की

तैयारी में लगो।

दुनिया में काम का उसूल

एक जगह इरशाद फ़रमाया:

"اعمل لدنیاك بقدر بقائك فيها، واعمل لآخرتك بقدر بقائك فيها"
(ترمذی شریف)

यानी दुनिया के लिये इतना काम करो, जितना दुनिया में रहना है। और आख़िरत के लिये उतना काम करो जितना आख़िरत में रहना है। अब हमेशा तो आख़िरत में रहना है, इसलिये उसके लिये काम ज़्यादा करो, और दुनिया में चूंकि कम रहना है, इसलिये इसके लिये काम कम करो। यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम है।

बहर हाल! मैं यह अर्ज़ कर रहा था कि अगरचे इतनी ऊंची परवाज़ न सही कि हम हज़रत मियां जी नूर मुहम्मद रह० के मक़ाम तक या इन दूसरे बुज़ुर्गों के मक़ामात तक पहुंच जायें। लेकिन कम से कम इतना तो हो जाए कि दुनिया से दिल लगा कर आख़िरत से ग़ाफ़िल और बे–परवाह तो न हो जाएं, और अपनी ज़िन्दगी के वक़्तों को किसी तरह आख़िरत के काम के लिए इस्तेमाल कर लो।

वक़्त से काम लेने का आसान तरीक़ा

और इसका आसान तरीक़ा यह है कि दो काम कर लो। एक यह कि हर काम के अन्दर नियत की दुरुस्ती और उसके अन्दर इख़्लास हो कि जो काम भी करूंगा अल्लाह की रिज़ा की ख़ातिर करूंगा। जैसे खाऊंगा तो अल्लाह की रिज़ा के लिए खाऊंगा। कमाऊंगा तो अल्लाह की रिज़ा के लिए कमाऊंगा। घर में अगर बीवी बच्चों से बातें करूंगा तो अल्लाह की रिज़ा की ख़ातिर करूंगा, और इत्तिबा–ए–सुन्नत की नियत से करूंगा। दूसरे यह कि अल्लाह का ज़िक्र कसरत से हो। इसमें क्या ख़र्च होता है कि आदमी चलते फिरते "सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वला इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर" पढ़ता रहे।

क्या इसके पढ़ने में कोई मेहनत लगती है? कोई रुपया पैसा ख़र्च होता है? या ज़बान घिस जाती है? लेकिन अगर इन्सान यह ज़िक्र करता रहे तो उसकी ज़िन्दगी के लम्हात काम में लग जायेंगे।

अपने औक़ात (समय) का चिट्ठा बनाओ

तीसरे यह कि फ़ुज़ूलियात से बचो और औक़ात को ज़रा तौल तौल कर ख़र्च करो। और इसके लिये एक निज़ामुल औक़ात (टाइम टेबल) बनाओ। और फिर उस निज़ामुल औक़ात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारो। मेरे वालिद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि हर ताजिर अपना चिट्ठा तैयार करता है कि कितना रुपया आया था और कितना ख़र्च हुआ और कितना नफ़ा हुआ? इसी तरह तुम भी अपने वक़्तों का चिट्ठा बनाओ। अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें चौबीस घन्टे अ़ता फ़रमाये थे। उसमें से कितना वक़्त अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के कामों में ख़र्च हुआ, और कितना वक़्त ग़लत कामों में ख़र्च हुआ। इस तरह अपने नफ़े व नुक़्सान का हिसाब लगाओ, अगर तुम ऐसा नहीं करते तो इसका मतलब यह है कि यह तिजारत घाटे में जा रही है, क़ुरआने करीम का इरशाद है:

"يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ، تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ"

(سورة الصف:١٠)

ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत बाताऊं जो तुम्हें एक दर्दनाक अ़ज़ाब से नजात अ़ता कर दे। वह तिजारत यह है कि अल्लाह पर ईमान रखो, और उसके रसूल पर ईमान रखो। और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करो।

यह भी जिहाद है

लोग "जिहाद" का मतलब सिर्फ़ यह समझते हैं कि एक आदमी तलवार और बन्दूक़ लेकर मैदाने जिहाद में जाए, बेशक वह जिहाद का एक आला फ़र्द है, लेकिन जिहाद इसमें मुन्हसिर नहीं।.जिहाद का एक

फ़र्द यह भी है कि आदमी अपने नफ़्स से जिहाद करे, अपनी ख़्वाहिशात से जिहाद करे, अपने जज़्बात से जिहाद करे। दिल में अगर अल्लाह तआ़ला के हुक्म के ख़िलाफ़ कोई जज़्बा पैदा हो रहा है तो उसको रोके, यह भी जिहाद है। और आख़िरत की तिजारत है। जिस का नफ़ा और फ़ायदा आख़िरत में मिलने वाला है। और मैंने अपने वालिद साहिब से हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का यह इरशाद सुना कि जो शख़्स अपना निज़ामुल औक़ात नहीं बनाता और अपने औक़ात का हिसाब नहीं रखता कि कहां ख़र्च हो रहे हैं। हक़ीक़त में वह आदमी ही नहीं। अल्लाह तआ़ला मुझे भी इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, और आप हज़रात को भी इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

नेक काम को मत टलाओ

हज़रत हसन बसरी रह० का दूसरा इरशाद यह है कि:

"ابن آدم ایاك والتسويف"

ऐ आदम के बेटे, टाल मटोल से बचो। यानी इन्सान का नफ़्स हमेशा नेक अ़मल को टालता रहता है कि अच्छा यह काम कल से करेंगे, परसों से करेंगे। ज़रा फ़ुर्सत मिलेगी तो कर लेंगे। ज़रा फ़लां काम से फ़ारिग़ हो जायें तो फिर कर लेंगे। यह टलाना अच्छा नहीं। इसलिये फ़रमाया कि किसी नेक काम को मत टलाओ। इसलिये कि जिस काम को टला दिया वह टल गया। काम करने का तरीक़ा यह है कि आदमी उस काम के लिए एह्तिमाम करे।

दिल में अहमियत हो तो वक़्त मिल जाता है

मेरे एक उस्ताज़ ने अपना वाक़िआ़ सुनाया कि हज़रत मौलाना ख़ैर मुहम्मद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि जो हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के बड़े ख़ुलफ़ा में से थे। एक मर्तबा उन्हों ने मुझ से शिकायत की कि आप कभी हमारे पास आते ही नहीं। न राबता रखते हैं और न ख़त लिखते हैं। तो जवाब में मैंने कहा कि हज़रत, फ़ुर्सत नहीं मिलती। हज़रत मौलाना ख़ैर मुहम्मद साहिब ने फ़रमाया

कि देखो, जिस चीज़ के बारे में यह कहा जाता है कि फ़ुर्सत नहीं मिली। इसका मतलब यह है कि उस चीज़ की और उस काम की अहमियत दिल में नहीं। क्योंकि जिस काम की अहमियत दिल में होती है आदमी उस काम के लिये वक़्त और फ़ुर्सत ज़बरदस्ती निकाल ही लेता है। और जो शख़्स यह कहे कि मैंने फ़लां काम इसलिये नहीं किया कि फ़ुर्सत नहीं मिली, तो मतलब यह है कि उस काम की अहमियत दिल में नहीं।

अहम काम को फ़ौकियत दी जाती है

हमेशा यह बात याद रखो कि जब आदमी के पास बहुत सारे काम जमा हो जाएं तो अब ज़ाहिर है कि एक वक़्त में वह काम एक ही करेगा। या उसे करेगा या इसे करेगा। सब काम तो एक साथ कर नहीं सकता। तो उस वक़्त आदमी उसी काम को पहले करेगा जिसकी अहमियत दिल में ज़्यादा होगी। या एक शख़्स एक काम कर रहा था उस वक़्त उसके पास कोई दूसरा काम आ गया, जो पहले काम से ज़्यादा अहम है, तो वह पहले काम को छोड़ कर दूसरे काम में लग जायेगा। जिसका मतलब यह है कि जिस काम की अहमियत दिल में होती है, आदमी उस काम के लिए वक़्त निकाल ही लेता है। जैसे आप बहुत से कामों में मश्गूल हैं, उस वक़्त प्रधान मन्त्री का पैग़ाम आ जाए कि आपको बुलाया है, तो क्या उस वक़्त भी यह जवाब दोगे कि बहुत मसरूफ़ हूं, मुझे फ़ुर्सत नहीं। वहां तो यह जवाब आप नहीं देंगे, क्यों? इसलिये कि आपके दिल में उसकी अहमियत है। और जिस चीज़ की अहमियत होती है आदमी उसके लिए वक़्त और फ़ुर्सत निकाल ही लेता है। इसलिये नेक आमाल को फ़ुर्सत पर टलाना कि जब फ़ुर्सत मिलेगी तो करेंगे, तो इसका मतलब यह है कि उसकी अहमियत दिल में नहीं। जिस दिन दिल में अहमियत आयेगी उस दिन सब फ़ुर्सत मिल जायेगी, इन्शा–अल्लाहु तआला।

तुम्हारे पास सिर्फ़ आज का दिन है

आगे क्या अजीब जुम्ला इरशाद फ़रमायाः

"فانك يومك ولست بغد فان يكن غدلك فكس فى غد كما كست فى اليوم"

यानी आज का दिन तुम्हारे पास यक़ीनी है कल का दिन तुम्हारे पास यक़ीनी नहीं। क्या किसी को इस बात का यक़ीन है कि कल ज़रूर आयेगी? जब कल का दिन यक़ीनी नहीं है तो जो काम ज़रूरी है वह आज ही के दिन कर लो, पता नहीं कल आयेगी या नहीं। और यह यक़ीन मत करो कि कल ज़रूर आयेगी। बल्कि यह मान कर काम करो कि कल नहीं आनी है। इसलिये जो भी ज़रूरी काम करना है वह आज ही करना है। अगर कल का दिन मिल जाए, और कल आ जाए तो कल के दिन भी ऐसे ही हो जाओ, जैसे आज हुए थे। यानी उस दिन के बारे में यह यक़ीन कर लो कि यह आज का दिन मेरे पास है कल का दिन नहीं है। और अगर वह कल न आई तो कम से कम तुम्हें यह पछतावा नहीं होगा कि मैंने कल का दिन ज़ाया कर दिया। इसलिये हर दिन को अपनी ज़िन्दगी का आख़री दिन ख़्याल करो।

शायद यह मेरी आख़री नमाज़ हो

इसलिये नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब तुम नमाज़ पढ़ो तो इस तरह नमाज़ पढ़ो कि जैसे दुनिया से रुख़्सत होने वाला नमाज़ पढ़ता है। और उसको यह ख़्याल होता है कि मालूम नहीं कि कल को मुझे नमाज़ पढ़ने का मौक़ा मिले या न मिले। ताकि जो कुछ हस्रत और जज़्बा निकालना है, वह इसी में निकाल लूं। क्या पता कि अगली नमाज़ का वक़्त आयेगा या नहीं?

(इब्ने माजा शरीफ़)

बहर हाल! ये सारी बातें जो हज़रत हसन बसरी रह्मतुल्लाहि अलैहि ने इरशाद फ़रमायीं, ईमान और यक़ीन के दर्जे में हर मुसलमान को मालूम हैं। कि कल का पता नहीं आज यक़ीनी है, लेकिन वह इल्म किस काम का जिस पर इन्सान का अमल न हो। इल्म तो वह है जो इन्सान को अमल पर आमादा करे। तो इन बुज़ुर्गों की बातों में यह बरकत होती है कि अगर इनको तलब के साथ पढ़ा जाए तो अल्लाह

तआला उसकी वजह से अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देते हैं।

तक़रीर का ख़ुलासा

ख़ुसला यह निकला कि अपनी ज़िन्दगी के एक एक लम्हे को ग़नीमत समझो, और उसको अल्लाह के ज़िक्र और उसकी इताअत में ख़र्च करने की कोशिश करो। ग़फ़लत, बे-परवाई और वक़्त की फ़ुज़ूल ख़र्ची से बचो। किसी ने ख़ूब कहा है कि:

यह कहां का फ़साना-ए-सूद व ज़ियां
जो गया सो गया जो मिला सो मिला।
कहो दिल से कि फ़ुर्सते उमर है कम
जो दिला तो ख़ुदा ही की याद दिला।

अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से हमारा और आपका यह हाल बना दे कि अपनी ज़िन्दगी के वक़्तों को अल्लाह के ज़िक्र और उसकी याद, और आख़िरत के काम और नेकी के कामों में ख़र्च करें। और बेकार बातों और चीज़ों से बचें। और अल्लाह तआला इन बातों पर हम सब को अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

وآخردعوانا ان الحمد للہ رب العالمین

इस्लाम और इन्सानी हुकूक़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْماً كَثِيْرًا كَثِيْرًا۔ اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَا نَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَ ذَكَرَاللّٰهَ كَثِيْرًا۔

آمنت بالله صدق الله مولاناالعظيم، وصدق رسوله النبى الكريم ونحن على ذلك من الشاهدين والشاكرين، والحمد لله رب العالمين.

आप का ज़िक्रे मुबारक

हमारे लिये यह बड़ी सआदत और मसर्रत का मौक़ा है कि आज इस महफ़िल में जो नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुबारक ज़िक्र के लिये मुनअ़क़िद (आयोजित) है, हमें शिरीक होने की सआदत हासिल हो रही है। और वाक़िआ यह है कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्रे जमील इन्सान की इतनी बड़ी सआदत है कि इसके बराबर कोई सआदत नहीं। किसी शायर ने कहा है:

ज़िक्रे हबीब कम नहीं वस्ले हबीब से

और हबीब का ज़िक्र भी हबीब के विसाल के क़ायम मक़ाम होता है और इसी वजह से अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इस ज़िक्र को यह फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमायी है कि जो शख़्स एक मर्तबा नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद भेजे तो अल्लाह तबारक व तआ़ला की तरफ़ से उस पर दस रहमतें नाज़िल होती हैं। तो जिस महफ़िल का आयोजन इस मुबारक तज़किरे के लिये हो उसमें शिर्कत

एक मुक़र्रिर और बयान करने वाले की हैसियत से हो या सुनने वाले की हैसियत से, एक बड़ी सआ़दत है। अल्लाह तबारक व तआ़ला इस की बरकतें हमें और और आपको अ़ता फ़रमाये। आमीन

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़ूबियां और कमालात

तज़किरा है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरते तैयबा का और सीरते तैयबा एक ऐसा मौज़ू है कि अगर कोई शख़्स इसके सिर्फ़ एक ही पहलू को बयान करना चाहे तो पूरी रात भी उसके लिये काफ़ी नहीं हो सकती, इसलिये की सरकारे दो आ़लम के मुबारक वजूद में अल्लाह जल्ल शानुहू ने तमाम इन्सानी कमालात, जितने तसव्वुर में हो सकते हैं वे सारे के सारे जमा फ़रमाये, यह जो किसी ने कहा था कि:

हुस्ने यूसुफ़ दमे ईसा यदे बैज़ा दारी
आंचे ख़ूबां हमा दारंद तू तन्हा दारी

यानी दूसरे नबियों को अलग अलग जो कमालात अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से दिये गये थे, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ाते मुबारक उन सब की जामे थी।

यह कोई मुबालग़े की बात नहीं थी सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस इन्सानियत के लिये अल्लाह जल्ल शानुहू की तख़्लीक़ का एक ऐसा शाहकार बन कर तशरीफ़ लाये थे कि जिस पर किसी भी हैसियत से, किसी भी नुक़्ता–ए–नज़र से ग़ौर कीजिये तो वह कमाल ही कमाल का पेकर है, इसलिये आपकी सीरते तैयबा के किस पहलू को आदमी बयान करे, किस को छोड़े इन्सान कश–मकश में मुब्तला हो जाता है।

ज़ फ़र्क़ ता ब–क़दम हर कुजा कि मी नग्रम
करिश्मा दामने दिल मी कशद कि जा ईं जा अस्त

और ग़ालिब मरहूम ने कहा था।

गालिब सना-ए-ख़्वाजा बह यज़ां गुज़ाश्तेम
कां ज़ाते पाक मरतबा दाने मुहम्मद अस्त

आजकी दुनिया का प्रोपैगन्डा

इन्सान के तो बस ही में नहीं है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तारीफ़ व तौसीफ़ का हक़ अदा कर सके, हमारे ये नापाक मुंह, ये गन्दी ज़बानें इस लायक़ नहीं थीं कि इनको नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम भी लेने की इजाज़त दी जा सकती, लेकिन यह अल्लाह जल्ल शानुहू का करम है कि उसने न सिर्फ़ इजाज़त दी बल्कि इससे रहनुमायी और फ़ायदा हासिल करने का भी मौक़ा अता फ़रमाया, इसलिये मौज़ूआत तो सीरत के बेशुमार हैं लेकिन मेरे मख़दूम और मुह्तरम हज़रत मौलाना ज़ाहिद राशिदी साहिब अल्लाह तआला उनके फ़ैज़ को जारी व सारी फ़रमाये, उन्हों ने हुक्म दिया कि सीरते तैयबा के इस पहलू पर गुफ़्तगू की जाये कि नबी करीम सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन्सानी हुक़ूक़ के लिये क्या रहनुमायी और हिदायत लेकर तशरीफ़ लाये, और जैसा कि उन्होंने अभी फ़रमाया कि इस मौज़ू को इख़्तियार करने की वजह यह है कि इस वक़्त पूरी दुनिया में इस प्रोपैगन्डे का बाज़ार गर्म है कि इस्लाम को अमली तौर पर नाफ़िज़ करने से इन्सानी हुक़ूक़ (Human rights) मजरूह होंगे, और यह पब्लिसिटी की जा रही है कि गोया इन्सानी हुक़ूक़ का तसव्वुर पहली बार मग़रिब के ऐवानों से बुलन्द हुआ और सबसे पहले इन्सान को हुक़ूक़ देने वाले ये अह्ले मग़रिब हैं, और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लायी हुई तालीमात में इन्सानी हुक़ूक़ का "अल्लाह की पनाह" कोई तसव्वुर मौजूद नहीं। यह मौज़ू जब उन्हों ने गुफ़्तगू के लिये अता फ़रमाया तो उनके हुक्म की तामील में इसी मौज़ू पर आज अपनी गुफ़्तगू को सीमित रखने की कोशिश करूंगा, लेकिन मौज़ू थोड़ा सा इल्मी क़िस्म का है और ऐसा मौज़ू है कि इसमें ज़रा ज़्यादा तवज्जोह और ज़्यादा हाज़िर दिमाग़ी की ज़रूरत है, इसलिये आप हज़रात से दरख़्वास्त है

कि मौज़ू की एहमियत के पेशे नज़र इसकी नज़ाकत को मद्देनज़र रखते हुए मेहरबानी फ़रमा कर तवज्जोह के साथ सुनें, शायद अल्लाह तआ़ला इस सिलसिले में हमारे दिल में कोई सही बात डाल दे।

इन्सानी हुकूक़ का तसव्वुर

सवाल यह पैदा होता है, जिसका जवाब देना मन्ज़ूर है कि आया इस्लाम में इन्सानी हुकूक़ का कोई जामे तसव्वुर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात की रोशनी में है या नहीं? यह सवाल इसलिये पैदा होता है कि इस दौर का अ़जीब व ग़रीब रुझान है कि इन्सानी हुकूक़ का एक तसव्वुर पहले अपनी अ़क़्ल, अपनी फ़िक्र, अपनी सोच की रोशनी में ख़ुद मुताय्यन कर लिया कि ये इन्सानी हुकूक़ हैं और इनकी हिफ़ाज़त ज़रूरी है और अपनी तरफ़ से ख़ुद बनाया हुआ जो सांचा इन्सानी हुकूक़ का ज़ेहन में बनाया उसको एक मेयारे हक़ क़रार देकर हर चीज़ को उस मेयार पर परखने और जांचने की कोशिश की जा रही है। पहले से ख़ुद मुताय्यन कर लिया कि फ़लां चीज़ इन्सानी हक़ है और फ़लां चीज़ इन्सानी हक़ नहीं है, और यह मुताय्यन करने के बाद अब देखा जाता है कि आया इस्लाम यह हक़ देता है कि नहीं? मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह हक़ दिया या नहीं दिया? अगर दिया तो गोया हम किस दरजे में इसको मानने को तैयार हैं, अगर नहीं दिया तो हम मानने के लिये तैयार नहीं हैं। लेकिन इन मुफ़क्किरीन और दानिश्वरों से और इन फ़िक्र व अ़क़्ल के सूरमाओं से मैं एक सवाल करना चाहता हूं कि यह जो आपने अपने ज़ेहन से इन्सानी हुकूक़ के तसव्वुरात मुरत्तब किये, ये आख़िर किस बुनियाद पर किये? यह जो आपने यह तसव्वुर किया कि इन्सानी हुकूक़ का एक पहलू यह है, हर इन्सान को यह हक़ ज़रूर मिलना चाहिए, यह आख़िर किस बुनियाद पर आपने कहा कि मिलना चाहिए।

इन्सानी हुकूक़ बदलते आये हैं

इन्सानियत की तारीख़ पर नज़र दौड़ा कर देखिये तो शुरू से

लेकर आज तक इन्सान के ज़ेहन में इन्सानी हुकूक़ के तसव्वुरात बदलते चले आये हैं। किसी दौर में इन्सान के लिये एक हक़ लाज़मी समझा जाता था, दूसरे दौर में उस हक़ को बेकार क़रार दे दिया गया, एक इलाक़े में एक हक़ क़रार दिया गया, दूसरी जगह उस हक़ को नाहक़ क़रार दिया गया। तारीख़े इन्सानियत पर नज़र दौड़ा कर देखिये तो आपको यह नज़र आयेगा कि जिस ज़माने में भी इन्सानी फ़िक्र ने हुकूक़ के जो सांचे तैयार किये, उनका प्रोपैगन्डा, उनकी पब्लिसिटी इस ज़ोर व शोर के साथ की गयी कि उसके ख़िलाफ़ बोलने को जुर्म क़रार दिया गया।

हुज़ूर नबी करीम सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस वक़्त दुनिया में तशरीफ़ लाये उस वक़्त इन्सानी हुकूक़ का एक तसव्वुर था और वह तसव्वुर सारी दुनिया के अन्दर फैला हुआ था, और उसी तसव्वुर को हक़ का मेयार क़रार दिया जाता था, ज़रूरी क़रार दिया जाता था कि यह हक़ लाज़मी है। मैं आपको एक मिसाल देता हूं कि उस ज़माने में इन्सानी हुकूक़ के ही के हवाले से यह तसव्वुर था कि जो शख़्स किसी का ग़ुलाम बन गया तो ग़ुलाम बनने के बाद सिर्फ़ जान व माल और जिस्म ही उसका मम्लूक नहीं होता था, बल्कि इन्सानी हुकूक़ और इन्सानी मफ़ादात के हर तसव्वुर से वह ख़ाली हो जाता था, आक़ा का यह बुनियादी हक़ था कि चाहे वह अपने ग़ुलाम की गर्दन में तौक़ डाल दे और उसके पांव में बेड़ियां पहनाये, यह एक तसव्वुर था। जिन्हों ने इसको जस्टीफ़ाई (Justify) करने के लिये और इन्साफ़ पर आधारित क़रार देने के लिये फ़ल्सफ़े पेश किये थे, उनका पूरा लिट्रेचर आपको मिल जायेगा, आप कहेंगे कि यह दूर की बात है, चौदह सौ साल पहले की बात है, लेकिन अभी सौ डेढ़ सौ साल पहले की बात ले लीजिये, जब जर्मनी और इटली में फ़ाशिज़म ने और नाज़ी–इज़्म ने सर उठाया था, आज फ़ाशिज़म और नाज़ी–इज़्म का नाम गाली बन चुका है, और दुनिया भर में बदनाम हो चुका है, लेकिन आप उनके फ़ल्सफ़ों को उठा कर देखिये जिस बुनियाद पर

उन्होंने फ़ाशिज़्म का तसव्वुर पेश किया था और नाज़ी-इज़्म का तसव्वुर पेश किया था उस फ़ल्सफ़े को अगर ख़ालिस अक़्ल की बुनियाद पर आप रद्द करना चाहें तो आसान नहीं होगा। उन्हों ने यह तसव्वुर पेश किया था कि जो ताक़तवर है उसका ही यह बुनियादी हक़ है कि वह कमज़ोर पर हुकूमत करे, और यह ताक़तवर के बुनियादी हुक़ूक़ में शामिल होता है और कमज़ोर के ज़िम्मे वाजिब है कि वह ताक़तवर के आगे सर झुकाये। यह तसव्वुर अभी सौ डेढ़ सौ साल पहले की बात है। तो इन्सानी फ़िक्र की तारीख़ में इन्सानी हुक़ूक़ के तसव्वुरात एक जैसे नहीं रहे, बदलते रहे। किसी दौर में किसी एक चीज़ को हक़ क़रार दिया गया और किसी दौर में किसी दूसरी चीज़ को हक़ क़रार दिया गया, और जिस दौर में जिस क़िस्म के हुक़ूक़ के सेट को यह कहा गया कि यह इन्सानी हुक़ूक़ का हिस्सा है उसके ख़िलाफ़ बात करना ज़बान खोलना एक जुर्म क़रार पाया। तो इस बात की क्या ज़मानत है कि आज जिन ह्यूमैन राइट्स (इन्सानी हुक़ूक़) के बारे में यह कहा जा रहा है कि इन इन्सानी हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त ज़रूरी है, यह कल को तब्दील नहीं होंगे, कल को इनके दरमियान इन्क़िलाब नहीं आयेगा, और कौन सी बुनियाद है जो इस बात को दुरुस्त क़रार दे सके?

सही इन्सानी हुक़ूक़ का मुताय्यन करना

हुज़ूर नबी करीम सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इन्सानी हुक़ूक़ के बारे में सब से बड़ा कन्ट्रीब्यूशन (Contribution) यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन्सानी हुक़ूक़ के मुताय्यन करने की सही बुनियाद फ़राहम फ़रमायी, वह बुनियाद फ़राहम फ़रमायी जिसकी बुनियाद पर यह फ़ैसला किया जा सके कि कौन से इन्सानी हुक़ूक़ क़ाबिले तहफ़्फ़ुज़ हैं और कौन से इन्सानी हुक़ूक़ हिफ़ाज़त के क़ाबिल नहीं हैं, अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रहनुमायी और आपकी हिदायत को बुनियाद तस्लीम न किया जाये तो फिर इस दुनिया में किसी के पास कोई बुनियाद नहीं है

जिसकी बुनियाद पर वह कह सके कि फ़लां इन्सानी हुकूक़ लाज़मी तौर पर हिफ़ाज़त के क़ाबिल हैं।

फ़िक्र की आज़ादी का झन्डा उठाने वाला इदारा

मैं आपको एक लतीफ़े की बात सुनाता हूं, कुछ वक़्त पहले एक दिन मैं मग़रिब की नमाज़ पढ़ कर घर में बैठा हुआ था, तो बाहर से कोई साहिब मिलने के लिये आये, कार्ड भेजा तो देखा कि उनके कार्ड पर लिखा था कि यह सारी दुनिया में एक मशहूर इदारा है जिसका नाम ऐमनेस्टी इन्टरनेशनल है जो सारे इन्सानी बुनियादी हुकूक़ की हिफ़ाज़त का अ़लम–बरदार (झन्डा बुलन्द करने वाला) है, इस इदारे के एक डायरेक्ट्र पेरिस से पाकिस्तान आये हैं, और वह आप से मिलना चाहते हैं, ख़ैर मैंने अन्दर बुला लिया, पहले से कोई अपॉइन्टमेंट नहीं थी, कोई पहले से वक़्त नहीं लिया था, अचानक आ गये और पाकिस्तान के विदेश मन्त्रालय के एक ज़िम्मेदार अफ़सर भी उनके साथ थे। आपको यह मालूम है कि ऐमनेस्टी इन्टरनेशनल वह इदारा है जिसको इन्सानी हुकूक़ के तहफ़्फ़ुज़ के लिये और तक़रीर व तहरीर की आज़ादी के लिये अ़लम–बरदार इदारा कहा जाता है, और पाकिस्तान में जो बाज़ शरओ़ क़वानीन नाफ़िज़ हुए जैसे क़ादयानियों के सिलसिले में पाबन्दियां आ़यद की गयीं तो ऐमनेस्टी इन्टरनेशनल की तरफ़ से इस पर एतिराज़ व एहतिजाज का सिलसिला रहा। बहर हाल! यह साहिब तशरीफ़ लाये तो उन्होंने आकर मुझ से कहा कि मैं आपसे इसलिये मिलना चाहता हूं कि मेरे इदारे ने मुझे इस बात पर मुक़र्रर किया है कि मैं तहरीर व तक़रीर की आज़ादी और इन्सानी हुकूक़ के सिलसिले में साऊथ ईस्ट ऐशया के मुल्कों की राये आ़म्मा का सर्वे करूं, यानी यह मालूम करूं कि दक्षिण पूर्वी ऐशिया के मुसलमान इन्सानी हुकूक़, तहरीर व तक़रीर की आज़ादी और इज़्हारे राये की आज़ादी के बारे में क्या ख़्याल रखते हैं, और वे किस हद तक इस मामले में हमसे तआ़वुन (सहयोग) करने पर आमादा हैं। इसका सरवे करने के लिये मैं पेरिस से आया हूं और इस सिलसिले में आपसे

इन्टरव्यू करना चाहता हूं, साथ ही उन्हों ने माज़िरत भी की कि चूंकि मेरे पास वक़्त कम था इसलिये मैं पहले से वक़्त नहीं ले सका, लेकिन मैं चाहता हूं कि मेरे चन्द सवालात का आप जवाब दें ताकि उसकी बुनियाद पर मैं अपनी रिपोर्ट तैयार कर सकूं।

आज कल का सर्वे

मैंने उन साहिब से पूछा कि आप कब तशरीफ़ लाये हैं? कहा कि मैं कल ही पहुंचा हूं, मैंने कहा आइन्दा क्या प्रोग्राम है? फ़रमाने लगे कि कल मुझे इस्लामाबाद जाना है, मैंने कहा उसके बाद? कहा कि इस्लामाबाद में एक या दो दिन ठहर कर फिर देहली जाऊंगा, मैंने कहा वहां कितने दिन क़ियाम फ़रमायेंगे? कहा दो दिन, मैंने कहा फिर उसके बाद? कहा कि मुझे उसके बाद मलेशिया जाना है, तो मैंने कहा कि कल आप कराची तशरीफ़ लाये और आज शाम को इस वक़्त मेरे पास तशरीफ़ लाये, कल सुबह आप इस्लामाबाद चले जायेंगे, आजका दिन आपने कराची में गुज़ारा, तो क्या आपने कराची की राये आम्मा का सर्वे कर लिया? तो इस सवाल पर वह बहुत सट्पटाए, कहने लगे इतनी देर में वाक़ई पूरा सर्वे तो नहीं हो सकता था लेकिन मैंने इस मुद्दत के अन्दर काफ़ी लोगों से मुलाक़ात की और थोड़ा बहुत मुझे अन्दाज़ा हो गया, तो मैंने कहा कि आपने कितने लोगों से मुलाक़ात की? कहा कि पांच अफ़राद से मैं मुलाक़ात कर चुका हूं, छटे आप हैं, मैंने कहा कि छः अफ़राद से मुलाक़ात करने के बाद आपने कराची का सर्वे कर लिया, अब इसके बाद कल इस्लामाबाद तशरीफ़ ले जायेंगे और वहां एक दिन क़ियाम फ़रमायेंगे, छः आदमियों से आपकी वहां मुलाक़ात होगी, छः आदमियों से मुलाक़ात के बाद इस्लामाबाद की राये आम्मा का सर्वे हो जायेगा। उसके बाद दो दिन देहली तशरीफ़ ले जायेंगे, दो दिन देहली के अन्दर कुछ लोगों से मुलाक़ात करेंगे तो वहां का सर्वे आपका हो जायेगा, तो यह बतायें कि यह सर्वे का क्या तरीक़ा है? तो वह कहने लगे कि आपकी बात माकूल है, हक़ीक़त में जितना वक़्त मुझे देना था उतना वक़्त मैं दे नहीं पा रहा, मगर मैं क्या करूं

मेरे पास वक़्त कम था, मैंने कहा कि माफ़ करना अगर वक़्त कम था तो किस डाक्टर ने आपको मश्विरा दिया था कि आप सर्वे करें? इसलिये कि अगर सर्वे करना था तो फिर ऐसे आदमी को करना चाहिये जिसके पास वक़्त हो, जो लोगों के पास जाकर मिल सके, लोगों से बात कर सके, अगर वक़्त कम था तो फिर सर्वे की ज़िम्मेदारी लेने कि क्या ज़रूरत थी? तो कहने लगे कि बात तो आपकी ठीक है लेकिन बस हमें इतना ही वक़्त दिया गया था इसलिये मैं मजबूर था. मैंने कहा की माफ़ कीजिये मुझे आपके इस सर्वे की संजीदगी पर शक है, मैं इस सर्वे को संजीदा नहीं समझता, इसलिये मैं इस सर्वे के अन्दर कोई पार्टी बनने के लिये तैयार नहीं हूं और न ही आपके किसी सवाल का जवाब देने के लिये तैयार हूं, इसलिये कि आप पांच छः आदमियों से गुफ़्तगू करने के बाद यह रिपोर्ट देंगे कि वहां की राये आम्मा यह है, इस रिपोर्ट की क्या क़दर व क़ीमत हो सकती है? लिहाज़ा मैं आपके किसी सवाल का जवाब नहीं दे सकता, वह बहुत सट्पटाए और कहा कि आपकी बात वैसे टैक्निकली सही है लेकिन यह कि मैं आपके पास एक बात पूछने के लिये आया हूं तो आप मेरे कुछ सवाल के जवाब ज़रूर दे दें, मैंने कहा कि नहीं, मैं आपके किसी सवाल का जवाब नहीं दूंगा, जब तक मुझे इस बात का यक़ीन न हो जाये कि आपका सरवे हक़ीक़त में इल्मी क़िस्म का है और संजीदा है, उस वक़्त तक मैं इसके अन्दर कोई पार्टी बनने के लिये तैयार नहीं हूं, आप मुझे माफ़ फ़रमायें, आप मेरे मेहमान हैं मैं आपकी जो ख़ातिर तवाज़ो कर सकता हूं वह करूंगा, बाक़ी किसी सवाल का जवाब नहीं दूंगा।

क्या फ़िक्र की आज़ादी का नज़रिया बिल्कुल मुत्लक़ है?

मैंने कहा कि अगर मेरी बात में कोई ग़ैर माकूलियत है तो मुझे समझा दीजिये कि मेरा मौक़फ़ (stand) ग़लत है और फ़लां बुनियाद पर ग़लत है, कहने लगे बात तो आपकी माकूल है लेकिन मैं आपसे वैसे बिरादराना तौर पर यह चाहता हूं कि आप कुछ जवाब दें, मैंने कहा कि मैं जवाब नहीं दूंगा, अल्बत्ता मुझे इजाज़त दें तो मैं आपसे कुछ सवाल

करना चाहता हूं, कहने लगे कि सवाल तो मैं करने के लिये आया था लेकिन आप मेरे सवाल का जवाब नहीं देना चाहते तो ठीक है आप सवाल कर लें, आप क्या सवाल करना चाहते हैं? मैंने कहा कि मैं आप से इजाज़त तलब कर रहा हूं अगर आप इजाज़त देंगे तो मैं सवाल कर लूंगा, अगर इजाज़त नहीं देंगे तो सवाल नहीं करूंगा और हम दोनों की मुलाकात हो गयी बात ख़त्म हो गयी। कहने लगे नहीं आप सवाल कर लीजिये, तो मैंने कहा कि मैं आपसे यह सवाल करना चाहता हूं कि आप राये के इज़्हार की आज़ादी और इन्सानी हुकूक़ का झन्डा लेकर चले हैं तो मैं एक बात आपसे पूछना चाहता हूं कि यह राये के इज़्हार की आज़ादी जिसकी आप तब्लीग़ करना चाहते हैं और कर रहे हैं यह राये के इज़्हार की आज़ादी (Absolute) यानी मुत्लक़ है, इस पर कोई क़ैद कोई पाबन्दी और कोई शर्त आयद नहीं होती या यह कि राये के इज़्हार की आज़ादी पर कुछ क़ैदें व कुछ शर्तें भी आयद होनी चाहियें? कहने लगे मैं आपका मतलब नहीं समझा? तो मैंने कहा कि मतलब तो अल्फ़ाज़ से वाज़ेह (स्पष्ट) है, मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं कि आप जिस राये के इज़्हार की आज़ादी की तब्लीग़ करना चाहते हैं तो क्या वह ऐसी है कि जिस शख़्स की जैसी राये हो उसका वैसे ही खुलेआम इज़्हार करे, उसकी ऐलानिया तब्लीग़ करे, ऐलानिया उसकी तरफ़ दावत दे और उस पर कोई रोक टोक, कोई पाबन्दी आयद न हो, यह मक़्सद है? अगर यह मक़्सद है तो फ़रमाइये कि अगर एक शख़्स यह कहता है कि मेरी राये यह है कि इन दौलत मंद लोगों ने बहुत पैसे कमा लिये और ग़रीब लोग भूखे मर रहे हैं, इसलिये इन दौलत मंदों के यहां डाका डाल कर और इनकी दुकानों को लूट कर ग़रीबों को पैसा पहुंचाना चाहिये, अगर कोई शख़्स दियानत दारी से यह राये रखता है और इसकी तब्लीग़ करे और इसका इज़्हार करे, और लोगों को दावत दे कि आप आइये और मेरे साथ शामिल हो जाइये और ये जितने भी दौलत मंद लोग हैं रोज़ाना इन पर डाका डाला करेंगे, उनका माल लूट कर ग़रीबों में तक़्सीम करेंगे, तो आप ऐसी राये के इज़्हार की आज़ादी के हामी होंगे या

नहीं? और इसकी इजाज़त देंगे या नहीं? कहने लगे इसकी इजाज़त नहीं दी जायेगी कि लोगों का माल लूट कर दूसरों में तक़सीम कर दिया जाये। तो मैंने कहा कि यही मेरा मतलब था कि अगर इसकी इजाज़त नहीं दी जायेगी तो इसके मायने यह हैं कि राये के इज़्हार की आज़ादी इतनी मुत्लक़ नहीं है कि इस पर कोई क़ैद, कोई शर्त, कोई पाबन्दी आयद न की जा सके, कुछ न कुछ क़ैद और शर्त लगानी पड़ेगी।

कहने लगे हां कुछ न कुछ तो लगानी पड़ेगी, तो मैंने कहा कि वह क़ैद किस बुनियाद पर लगायी जायेगी और कौन लगायेगा? किस बुनियाद पर यह तय किया जायेगा कि फ़लां क़िस्म की राये का इज़्हार करना तो जायज़ है और फ़लां क़िस्म की राये का इज़्हार करना ना जायज़ है? फ़लां क़िस्म की तब्लीग़ करना जायज़ है और फ़लां क़िस्म की तब्लीग़ करना जायज़ नहीं है? इसको मुताय्यन कौन करेगा, और किस बुनियाद पर करेगा? इस सिलसिले में आपके इदारे ने कोई इल्मी सर्वे किया है और इल्मी तह्क़ीक़ की हो तो मैं उसको जानना चाहता हूं, कहने लगे इस नुक़्ता-ए-नज़र पर हमने इससे पहले ग़ौर नहीं किया, तो मैंने अर्ज़ किया कि देखिये! आप इतने बड़े मिशन को लेकर चले हैं, पूरी इन्सानियत को राये के इज़्हार की आज़ादी दिलाने के लिये, उनको हुक़ूक़ दिलाने के लिये चले हैं लेकिन आपने बुनियादी सवाल नहीं सोचा, आख़िर राये के इज़्हार की आज़ादी किस बुनियाद पर तय होनी चाहिये? क्या उसूल होने चाहियें? क्या शर्तें और क्या क़ैदें होनी चाहियें? तो कहने लगे अच्छा आप ही बता दीजिये, तो मैंने कहा कि मैं तो पहले अर्ज़ कर चुका हूं कि मैं किसी सवाल का जवाब देने बैठा ही नहीं, मैं तो आपसे पूछ रहा हूं कि आप मुझे बतायें कि क्या क़ैदें और शर्तें होनी चाहियें और क्या नहीं, मैंने तो आपसे सवाल किया है कि आपके नुक़्ता-ए-नज़र से और आपके इदारे के नुक़्ता-ए-नज़र से इसका क्या जवाब होना चाहिये?

आपके पास कोई मेयार नहीं है

कहने लगे कि मेरे इल्म में अभी तक कोई ऐसा फ़ारमूला नहीं है, एक फ़ारमूला ज़ेहन में आता है कि ऐसी राये के इज़्हार की आज़ादी जिसमें वाईलेंस हो जिसमें दूसरे के साथ तशद्दुद हो तो ऐसी इज़्हारे राये की आज़ादी नहीं होनी चाहिये, मैंने कहा कि यह तो आपके ज़ेहन में आया कि वाईलेंस की पाबन्दी होनी चाहिये, किसी और के ज़ेहन में कोई और बात भी आ सकती है कि फ़लां किस्म की पाबन्दी भी होनी चाहिये, यह कौन तय करेगा और किस बुनियाद पर तय करेगा कि किस किस्म की राये के इज़्हार की खुली छूट होनी चाहिये और किस की नहीं? इसका कोई फ़ारमूला और कोई मेयार होना चाहिये, कहने लगे आपसे गुफ़्तगू के बाद यह अहम सवाल मेरे ज़ेहन में आया है और मैं अपने ज़िम्मेदारों तक इसको पहुचाऊंगा और उसके बाद इस पर अगर कोई लिट्रेचर मिला तो आपको भेजूंगा, तो मैंने कहा इन्शा-अल्लाह मैं मुन्तज़िर रहूंगा कि अगर आप इसके ऊपर कोई लिट्रेचर भेज सकें और इसका कोई फ़ल्सफ़ा बता सकें तो मैं एक तालिब इल्म की हैसियत में इसका मुश्ताक हूं, जब वह चलने लगे तो मैंने उस वक़्त उनसे कहा कि मैं संजीदगी से आपसे कह रहा हूं यह बात मज़ाक़ की नहीं है, संजीदगी से चाहता हूं कि इस मसले पर ग़ौर किया जाये, इसके बारे में आप अपना नुक़्ता-ए-नज़र भेजें लेकिन एक बात मैं आपको बता दूं कि जितने आपके नज़रियात और फ़ल्सफ़े हैं उन सब को मद्दे नज़र रख लीजिये, कोई ऐसा मुत्तफ़िक़ा फ़ारमूला आप पेश कर नहीं सकेंगे, जिस पर सारी दुनिया मुत्तफ़िक़ हो जाये कि फ़लां बुनियाद पर इज़्हारे राये की आज़ादी होनी चाहिये और फ़लां बुनियाद पर नहीं होनी चाहिये। तो मैं यह आपको बता देता हूं और अगर पेश कर सकें तो मैं मुन्तज़िर हूं, आज डेढ़ साल हो गया है कोई जवाब नहीं आया।

इन्सानी अक़्ल महदूद है

हक़ीक़त यह है कि यह मुज्मल नारे, कि साहिब! इन्सानी हुकूक़

होने चाहियें, राये के इज़्हार की आज़ादी होनी चाहिये तहरीर व तक़रीर की आज़ादी होनी चाहिये इनकी ऐसी कोई बुनियाद जिस पर सारी दुनिया मुत्तफ़िक़ हो सके यह किसी के पास नहीं है और न हो सकती है। क्यों, इसलिये कि जो कोई भी ये बुनियादें तय करेगा वह अपनी सोच और अपनी अक़्ल की बुनियाद पर करेगा, और कभी दो इन्सानों की अक़्ल एक सी नहीं होती, दो ग्रुपों की अक़्ल एक जैसी नहीं होती, दो ज़मानों की अक़्लें एक जैसी नहीं होतीं, इसलिये उनके दरमियान इख़्तिलाफ़ रहा है और रहेगा, और इस इख़्तिलाफ़ को ख़त्म करने का कोई रास्ता नहीं, वजह इसकी यह है कि इन्सानी अक़्ल अपनी एक लिमीटेशन (Limitation) रखती है, इसकी हदें हैं उससे आगे वह बढ़ नहीं पाती, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस पूरी इन्सानियत के लिये सबसे बड़ा एहसाने अज़ीम यह है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन तमाम मामलात को तय करने की जो बुनियाद फ़राहम (जमा) की है वह यह है कि वह ज़ात जिसने इस पूरी दुनिया को पैदा किया, वह ज़ात जिसने इन्सानों को पैदा किया उसी से पूछो कि कौन से इन्सानी हुक़ूक़ काबिले हिफ़ाज़त हैं और कौन से इन्सानी हुक़ूक़ क़ाबिल हिफ़ाज़त नहीं हैं? वही बता सकते हैं उसके सिवा कोई नहीं बता सकता।

इस्लाम को तुम्हारी ज़रूरत नहीं

जो लोग कहते हैं कि पहले हमें यह बताओ कि इस्लाम हमें क्या हुक़ूक़ देता है फिर हम इस्लाम को मानेंगे, मैंने कहा इस्लाम को तुम्हारी ज़रूरत नहीं, अगर पहले अपने ज़ेहन में तय कर लिया कि ये हुक़ूक़ जहां मिलेंगे वहीं जायेंगे और उसके बाद ये हुक़ूक़ चूंकि इस्लाम में मिल रहे हैं इस वास्ते मैं जा रहा हूं, तो याद रखो इस्लाम को तुम्हारी ज़रूरत नहीं, इस्लाम का मफ़्हूम यह है कि पहले यह अपनी आजिज़ी दरमांदगी और शिकस्तगी पेश करो कि इन मसाइल को हल करने में हमारी अक़्ल आजिज़ है और हमारी सोच आजिज़ है, हमें वह बुनियाद चाहिये जिसकी बुनियाद पर हम मसाइल को हल करें, जब

आदमी इस नुक़्ता-ए-नज़र से इस्लाम की तरफ़ रुजू करता है तो फिर इस्लाम हिदायत और रहनुमाई पेश करता है, هدى للمتقين "यह हिदायत मुत्तक़ीन के लिये है," मुत्तक़ीन के क्या मायने हैं? मुत्तक़ीन के यह मायने हैं कि जिसके दिल में तलब यह हो कि हम अपनी आजिज़ी का इक़रार करते हैं, दरमांदगी का ऐतराफ़ करते हैं, फिर अपने मालिक और ख़ालिक़ के सामने रुजू करते हैं कि आप हमें बतायें कि हमारे लिये क्या रास्ता है?

इसलिये यह जो आजकी दुनिया के अन्दर एक फ़ैशन बन गया कि साहिब! पहले यह बताओ की इन्सानी हुक़ूक़ क्या मिलेंगे, तब इस्लाम में दाख़िल होंगे, तो यह तरीक़ा इस्लाम में दाख़िल होने का नहीं है।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब इस उम्मत को इस्लाम का पैग़ाम दिया, दावत दी तो आपने जितने ग़ैर मुस्लिमों को दावत दी किसी जगह आपने यह नहीं फ़रमाया कि इस्लाम में आ जाओ तुम्हें फ़लां फ़लां हुक़ूक़ मिल जायेंगे, बल्कि यह फ़रमाया कि मैं तुमको अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ दावत देता हूं।

ऐ लोगो! لا اله الا الله (ला इला-ह इल्लल्लाहु) कह दो कामयाब हो जाओगे। इसलिये माद्दी मुनाफ़ा, माद्दी मसलिहतों, माद्दी ख़्वाहिशात की ख़ातिर अगर कोई इस्लाम में आना चाहता है तो वह दर हक़ीक़त इख़्लास के साथ सही रास्ता इख़्तियार नहीं कर रहा है, इसलिये पहले वह अपनी आजिज़ी का इज़हार करे कि हमारी अक़्लें इन मसाइल को हल करने से आजिज़ हैं ।

अक़्ल के काम का दायरा

याद रखिये कि यह मौज़ू बड़ा लम्बा है कि इन्सानी अक़्ल बेकार नहीं है, अल्लाह तआला ने हमें जो अक़्ल अता फ़रमायी यह बड़ी कार आमद चीज़ है, मगर यह उस हद तक कार आमद है जब तक इसको इसकी हदों में इस्तेमाल किया जाये, और अगर हदों के बाहर इसका इस्तेमाल करोगे तो वह ग़लत जवाब देना शुरू कर देगी, इसके बाद अल्लाह तबारक व तआला ने एक और इल्म का ज़रिया अता फ़रमाया

है, उसका नाम "वही–ए–इलाही" (ख़ुदाई पैग़ाम) है जहां अ़क्ल जवाब दे जाती है और कार आमद नहीं रहती "वही–ए–इलाही" उस जगह पर आकर रहनुमायी करती है।

हवास के काम का दायरा

देखो! अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हमें आखें दीं, कान दिये, यह ज़बान दी, आंख से देख कर हम बहुत सी चीज़ें मालूम करते हैं, कान से सुन कर बहुत सारी चीज़ें मालूम करते हैं, ज़बान से चख कर बहुत सारी चीज़ें मालूम करते हैं, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने हर एक का अपना एक फ़ंकशन रखा है। हर एक का अपना अ़मल है, उस हद तक वह काम देता है, उससे बाहर काम नहीं देता। आंख देख सकती है सुन नहीं सकती, कोई शख़्स यह चाहे कि मैं आंख से सुनूं तो वह अहमक़ है। कान सुन सकता है देख नहीं सकता, कोई शख़्स यह चाहे कि कान से मैं देखने का काम लूं तो वह बे–वक़ूफ़ है, इस वास्ते कि वह उस काम के लिये नहीं बनाया गया, और एक हद ऐसी आती है जहां न आंख काम देती है, न कान काम देता है, न ज़बान काम देती है, उस मौक़े के लिये अल्लाह तआ़ला ने अ़क्ल अ़ता फ़रमायी, वहां अ़क्ल इन्सान की रहनुमायी करती है।

तन्हा अ़क्ल काफ़ी नहीं

देखिये यह कुर्सी हमारे सामने रखी है आंख से देख कर मालूम किया कि इसके हैन्डिल पीले रंग के हैं, हाथ से छू कर मालूम किया कि ये चिकने हैं, लेकिन तीसरा सवाल यह पैदा होता है कि यह आया ख़ुद ब–ख़ुद वजूद में आ गयी या किसी ने इसको बनाया? तो वह बनाने वाला मेरी आंखो के सामने नहीं है, इस वास्ते मेरी आंख भी इसका जवाब नहीं दे सकती, मेरा हाथ भी इस सवाल का जवाब नहीं दे सकता, इस मौक़े के लिये अल्लाह तबारक व तआ़ला ने तीसरी चीज़ अ़ता फ़रमायी जिसका नाम अ़क्ल है, अ़क्ल से मैंने यह सोचा कि यह जो हैन्डिल है यह बड़े क़ायदे का बना हुआ है, यह ख़ुद से वजूद में नहीं आ सकता किसी बनाने वाले ने इसको बनाया है, यहां अ़क्ल ने

मेरी रहनुमायी की है, लेकिन एक चौथा सवाल आगे चल कर पैदा होता है कि इस कुर्सी को किस काम में इस्तेमाल करना चाहिये, किस में नहीं करना चाहिये? कहां इसको इस्तेमाल करने से फ़ायदा होगा और कहां नुक़सान होगा? इस सवाल को हल करने के लिये अ़क्ल भी नाकाम हो जाती है, इस मौक़े पर अल्लाह तआ़ला ने एक चौथी चीज़ अ़ता फ़रमायी जिसका नाम "वही–ए–इलाही" है। वह अल्लाह तबारक व तआ़ला की तरफ़ से "वही" होती है, वह ख़ैर और शर (अच्छे और बुरे) का फ़ैसला करती है, वह नफ़े और नुक़्सान का फ़ैसला करती है। जो बताती है कि इस चीज़ में ख़ैर है, इस में बुराई है, इसमें नफ़ा है इसमें नुक़्सान है, "वही" आती ही उस मक़ाम पर है जहां इन्सान की अ़क्ल की परवाज़ ख़त्म हो जाती है।

इसलिये जब अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हुक्म आ जाये और वह अपनी अ़क्ल में न आये, समझ में न आये तो इस वजह से उसको रद्द कर देना कि साहिब मेरी तो अ़क्ल में नहीं आ रहा है लिहाज़ा मैं इसको रद्द करता हूं, यह दर हक़ीक़त इस अ़क्ल की और "वही–ए–इलाही" की हक़ीक़त ही से जहालत का नतीजा है, अगर समझ में आता तो "वही" आने की ज़रूरत क्या थी? "वही" तो आयी ही इसलिये कि तुम अपनी तन्हा अ़क्ल के ज़रीये इस मक़ाम तक नहीं पहुंच सकते थे, अल्लाह तबारक व तआ़ला ने "वही" के ज़रिये तुम्हारी मदद फ़रमायी है। अगर अ़क्ल से ख़ुद ब–ख़ुद कोई फ़ैसला होता तो अल्लाह तआ़ला एक हुक्म नाज़िल कर देते बस, कि हमने तुम्हें अ़क्ल दी है, अ़क्ल के मुताबिक़ जो चीज़ अच्छी लगे वह करो और जो बुरी लगे उससे बच जाओ, न किसी किताब की ज़रूरत, न किसी रसूल की ज़रूरत, न किसी पैग़म्बर की ज़रूरत, न किसी मज़्हब और दीन की ज़रूरत। लेकिन जब अल्लाह ने इस अ़क्ल को देने के बावजूद इस पर बस नहीं फ़रमाया बल्कि रसूल भेजे, किताबें उतारीं, "वही" भेजी, तो इसके मायने यह हैं कि तन्हा अ़क्ल इन्सान की रहनुमायी के लिये काफ़ी नहीं थी। आज कल लोग कहते हैं कि

साहिब हमें चूंकि इसका फ़ल्सफ़ा समझ में नहीं आया, इसलिये हम नहीं मानते, तो दर हक़ीक़त दीन की हक़ीक़त से ना वाक़िफ़ हैं, हक़ीक़त से जाहिल हैं, समझ में आ ही नहीं सकता।

और यहीं से एक और बात का जवाब मिल जाता है जो आज कल बड़ी कस्रत से लोगों के ज़ेहनों में पैदा होता है। सवाल यह पैदा होता है कि कुरआने करीम ने चांद पर जाने का कोई तरीक़ा नहीं बताया, ख़ला को फ़तह करने का कोई फ़ारमूला मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नहीं बताया। ये सब क़ौमें इस क़िस्म के फ़ारमूले हासिल करके कहां से कहां पहुंच गयीं और हम कुरआन बग़ल में रखने के बावजूद पीछे रह गये, तो कुरआन और सुन्नत ने हमें ये फ़ारमूले क्यों नहीं बतलाये?

जवाब इसका यही है कि इसलिये नहीं बताया की वह चीज़ अ़क्ल के दायरे की थी, अपनी अ़क्ल से अपने तर्जुबे और अपनी मेहनत से जितना आगे बढ़ोगे उसके अन्दर तुम्हें इन्किशाफ़ात होते चले जायेंगे, वह तुम्हारे अ़क्ल के दायरे की चीज़ थी, अ़क्ल उसका शऊर कर सकती थी, इस वास्ते इसके लिये नबी भेजने की ज़रूरत नहीं थी, इसके लिये रसूल भेजने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन किताब और रसूल की ज़रूरत वहां थी जहां तुम्हारी अ़क्ल आ़जिज़ थी, जैसे की ऐमनेस्टी इन्टरनेशनल वाले आदमी की अ़क्ल आ़जिज़ थी कि बुनियादी हुक़ूक़ और तहरीर व तक़रीर की आज़ादी के ऊपर क्या पाबंदियां होनी चाहियें, क्या नहीं होनी चाहियें। इस मामले में इंसान की अ़क्ल आ़जिज़ थी इसके लिये मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये।

हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त किस तरह हो?

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बताया कि फ़लां हक़ इन्सान का ऐसा है जिसकी हिफ़ाज़त ज़रूरी है और फ़लां हक़ ऐसा है जिसकी हिफ़ाज़त की ज़रूरत नहीं है, इसलिये पहले यह समझ लो कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इन्सानी हुक़ूक़ के सिलसिले में सब से बड़ा कन्ट्रीब्यूशन यह है कि इन्सानी हुक़ूक़ के

तअ़य्युन (मुताय्यन करने) की बुनियाद फ़राहम (इकट्ठी) फ़रमायी, कि कौन सा इन्सानी हक़ पाबन्दी के क़ाबिल है और कौन सा नहीं। यह बात अगर समझ में आ जाये तो अब देखिये कि मुहम्मद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कौन से हुक़ूक़ इन्सान को अ़ता फ़रमाये, किन को रिकगनाईज़ (Recognize) किया, किन हुक़ूक़ को मुताय्यन फ़रमाया, और फिर उसके ऊपर अ़मल करके दिखाया। आज कल की दुनिया में रिकगनाईज़ करने वाले तो बहुत और उसका ऐलान करने वाले बहुत और उसके नारे लगाने वाले बहुत, लेकिन जब उन नारों पर, उन हुक़ूक़ पर अ़मल करने का सवाल आ जाये तो वही ऐलान करने वाले जो यह कहते हैं कि इन्सानी हुक़ूक़ क़ाबिले हिफ़ाज़त हैं, जब उनका अपना मामला आ जाता है, अपने मफ़ाद से टकराव पैदा हो जाता है तो देखिये फिर इन्सानी हुक़ूक़ किस तरह पामाल होते हैं।

आजकी दुनिया का हाल

इन्सानी हुक़ूक़ का एक तक़ाज़ा यह है कि अक्सरियत की हुकूमत होनी चाहिये, प्रजा तंत्र, सैकूलर डेमोकरेसी। आज अमेरिका की एक किताब दुनिया भर में बहुत मश्हूर हो रही है "दि एन्ड ऑफ़ हिस्ट्री एन्ड दि लास्ट मैन" (The end of History and the last man) आज कल के सारे पढ़े लिखे लोगों में मश्हूर हो रही है, इसका सारा फ़ल्सफ़ा यह है कि इन्सान की हिस्ट्री का ख़ात्मा जमहूरियत (प्रजा तंत्र) के ऊपर हो गया, और अब इन्सानियत की तरक़्क़ी और कामयाबी के लिये कोई नया नज़रिया वजूद में नहीं आयेगा, यानी ख़त्मे नुबुव्वत पर हम आप यक़ीन रखते हैं अब यह "ख़त्मे नज़रियात" हो गया, यह कि डेमोकरेसी के बाद कोई नज़रिया इन्सानी फ़लाह का वजूद में आने वाला नहीं है।

एक तरफ़ तो यह नारा है कि अक्सरियत जो बात कह दे वह हक़ है, उसको कुबूल करो, उसको मानो, लेकिन वही अक्सरियत अगर "जज़ाइर" में कामयाब हो जाती है और चुनाव में अक्सरियत हासिल कर लेती है तो उसके बाद जमहूरियत बाक़ी नहीं रहती, फिर उसका वजूद जमहूरियत के लिये ख़तरा बन जाता है। तो नारे लगा लेना और

बात है लेकिन उसके ऊपर अ़मल करके दिखाना मुश्किल है।

ये नारे लगा लेना बहुत अच्छी बात है कि सब इन्सानों को उनके हुकूक़ मिलने चाहियें, उनको राये के इज़्हार की आज़ादी होनी चाहिये, लोगों को खुद इरादी का हक़ मिलना चाहिये, और यह सब कुछ सही लेकिन दूसरी तरफ़ लोगों का खुद इरादी का हक़ पामाल करके उनको जबर और तशद्दुद की चक्की में पीसा जा रहा है, उनके बारे में आवाज़ उठाते हुए ज़मीन थर्राती है और वही जमहूरियत (प्रजा तंत्र) और आज़ादी की मुनादी करने वाले उनके खिलाफ़ कार्रवाइयां करते हैं। तो बात सिर्फ़ यह नहीं है कि ज़बान से कह दिया जाये कि इन्सानी हुकूक़ क्या हैं? बात यह है कि जो बात ज़बान से कहो उसको करके दिखाओ और यह काम किया मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कि आपने जो हक़ दिया उस पर अ़मल करके दिखाया।

वादे की खिलाफ़ वर्ज़ी (उल्लंघन) नहीं हो सकती

ग़ज़वा–ए–बदर का मौक़ा है और हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपने वालिद माजिद के साथ सफ़र करते हुए मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत के लिये मदीने मुनव्वरा जा रहे हैं, रास्ते में अबू जहल के लश्कर से टकराव हो जाता है और अबू जहल का लश्कर कहता है, हम तुम्हें मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास जाने नहीं देंगे, इस लिये कि तुम जाओगे तो हमारे खिलाफ़ उनके लश्कर में शामिल होकर जंग करोगे, ये बेचारे परेशान होते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत के लिये जाना था और इन्हों ने रोक लिया, आखिर कार उन्होंने कहा कि तुम्हें इस शर्त पर छोड़ेंगे कि हम से वादा करो, कि जाओगे और जाने के बाद उनके लश्कर में शामिल नहीं होगे, हम से जंग नहीं करोगे, अगर यह वादा करते हो तो हम तुम्हें छोड़ते हैं, हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु और उनके वालिद ने वादा कर लिया कि हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सिर्फ़

ज़ियारत करेंगे उनके लश्कर में शामिल होकर आपसे लड़ेंगे नहीं। चुनांचे उन्होंने उनको छोड़ दिया, अब ये दोनों हज़रात हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंच गये, जब कुफ़्फ़ार के साथ जंग का वक़्त आया और कैसी जंग, एक हज़ार मक्का मुकर्रमा के हथियार बंद सूरमा और उसके मुक़ाबले में 313 निहत्ते जिनके पास आठ तलवारें, दो घोड़े, सत्तर ऊंट, आठ तलवारों के सिवा तीन सौ तेरह आदमियों के पास और तलवार भी नहीं थी, किसी ने लाठी उठायी हुई है, किसी ने पत्थर उठाया हुआ है, इस मौक़े पर एक एक आदमी की क़ीमत थी, एक एक इन्सान की क़ीमत थी, किसी ने कहा या रसूलल्लाह ये नये आदमी आये हैं, आपके हाथ पर मुसलमान हुए हैं और इनसे ज़बरदस्ती समझौता कराया गया है, यह वादा ज़बरदस्ती लिया गया है कि तुम जंग में शामिल नहीं होंगे, तो इस वासते इनको इजाज़त दीजिये कि जिहाद में शामिल हो जायें और जिहाद भी कौन सा? "यौमुल फुरक़ान" जिसके अन्दर शामिल होने वाला हर फ़र्द "बदरी" बन गया, जिसके बारे में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि अल्लाह तआ़ला ने "बदर वालों" के सारे अगले पिछले गुनाह माफ़ फ़रमाये हैं। इतना बड़ा ग़ज़वा हो रहा है, हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु चाहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ शामिल हो जायें, सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जवाब यह है कि नहीं, जो अबू जहल के लश्कर से वादा करके आये हो कि जंग नहीं करोगे तो मोमिन का काम वादे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं है, इसलिये तुम इस जंग में शामिल नहीं हो सकते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जंग में शामिल होने से रोक दिया। यह है कि जब वक़्त पड़े उस वक़्त इन्सान उसूल को निभाए, यह नहीं कि ज़बान से तो कह दिया कि हम इन्सानी हुक़ूक़ के अ़लम-बरदार (झंडा बुलन्द करने वाले) हैं और हीरोशिमा और नागासाकी पर बे-गुनाह बच्चों को, बे-गुनाह औरतों को तबाह व बर्बाद कर दिया कि उनकी नस्लें तक माज़ूर पैदा हो रही हैं,

और जब अपना वक़्त पड़ जाये तो उसमें कोई अख़्लाक़, कोई किर्दार देखने वाला न हो।

तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन्सानी हुक़ूक़ बताए भी और उन पर अ़मल करके भी दिखाया। क्या हुक़ूक़ बताये? अब सुनिये:

इस्लाम में जान की हिफ़ाज़त

इन्सानी हुक़ूक़ में सब से पहला हक़ इन्सान की जान का हक़ है, हर इन्सान की जान की हिफ़ाज़त इन्सान का बुनियादी हक़ है कि कोई उसकी जान पर दस्त दराज़ी ना करे:

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ

यानी किसी की भी जान के ऊपर हाथ नहीं डाला जा सकता। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह हुक्म दे दिया, और क्या हुक्म दे दिया कि जंग में जा रहे हो, कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला है, दुश्मन से मुक़ाबला है इस हाल में भी तुम्हें किसी बच्चे पर हाथ उठाने की इजाज़त नहीं है, किसी औ़रत पर हाथ उठाने की इजाज़त नहीं है, किसी बूढ़े पर हाथ उठाने की इजाज़त नहीं है। बिल्कुल जिहाद के मौक़े पर भी पाबन्दी लागू कर दी गयी है। यह पाबन्दी ऐसी नहीं है कि सिर्फ़ ज़बानी जमा ख़र्च हो, जैसा कि मैंने अभी बताया कि साहिब ज़बानी तौर पर तो कह दिया और तहस नहस कर दिया। सारे बच्चों को भी और औ़रतों को भी, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के जां–निसार सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने उस पर अ़मल करके दिखाया, उनका हाथ किसी बूढ़े पर, किसी औ़रत पर, किसी बच्चे पर नहीं उठा, यह है जान की हिफ़ाज़त।

इस्लाम में माल की हिफ़ाज़त

माल की हिफ़ाज़त इन्सान का दूसरा बुनियादी हक़ है:

لَا تَأْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ

यानी बातिल के साथ नाहक़ तरीक़े से किसी का माल न खाओ।

इस पर अ़मल करके कैसे दिखाया? यह नहीं है कि तावील करके तौजीह करके माल खा गये, कि जब तक अपने मफ़ादात वाबस्ता थे उस वक़्त तक बड़ी ईमानदारी थी, बड़ी अमानत थी, लेकिन जब मामला जंग का आ गया, दुश्मनी हो गयी तो अब यह है कि साहिब तुम्हारे एकाउन्टस् मुन्जमिद कर दिये जायेंगे, जब मुक़ाबला हो गया तो उस वक़्त में हुक़ूक़े इन्सानी ग़ायब हो गये, अब माल की हिफ़ाज़त कोई हक़ीक़त नहीं रखती।

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो मिसाल पेश की वह अ़र्ज़ करता हूं। ग़ज़्वा–ए–ख़ैबर है, यहूदियों के साथ लड़ाई हो रही है, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के साथ ख़ैबर के ऊपर हमला कर रहे हैं और ख़ैबर के क़िले के गिर्द घिराव किये हुए हैं, आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की फ़ौज ख़ैबर के क़िले के इर्द गिर्द पड़ी हुई है, ख़ैबर के अन्दर एक बेचारा छोटा सा चर्वाहा उज्रत पर बकरियां चराया करता था, उसके दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि ख़ैबर से बाहर आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लश्कर पड़ा हुआ है जाकर देखूं तो सही, आपका नाम तो बहुत सुना है "मुहम्मद" सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क्या कहते हैं और कैसे आदमी हैं? बकरियां लेकर ख़ैबर के क़िले से निकला और आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तलाश में मुसलमानों के लश्कर में दाख़िल हुआ, किसी से पूछा कि भाई मुहम्मद कहां हैं? (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) लोगों ने बताया कि फ़लां ख़ेमे के अन्दर हैं, वह कहता है कि मुझे यक़ीन नहीं आया कि उस ख़ेमे के अन्दर, यह खजूर का मामूली सा ख़ेमा झोंपड़ी, इसमें इतना बड़ा सरदार, इतना बड़ा नबी वह इस ख़ेमे के अन्दर है? लेकिन जब लोगों ने बार बार कहा तो उसमें चला गया, अब जब दाख़िल हुआ तो सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे, जाकर कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! आप क्या पैग़ाम लेकर आये हैं, आपका पैग़ाम क्या है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुख़्तसर

तौर पर बताया, तौहीद के अक़ीदे की वज़ाहत (खुलासा) फ़रमाई, कहने लगा अगर मैं आपके इस पैग़ाम को कुबूल कर लूं तो मेरा क्या मक़ाम होगा? आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हम तुम्हें सीने से लगायेंगे, तुम हमारे भाई हो जाओगे और जो हुकूक़ दूसरों को हासिल हैं वे तुम्हें भी हासिल होंगे।

कहने लगा आप मुझ से ऐसी बात करते हैं, मज़ाक़ करते हैं, एक काला भुजंग चरवाहा हब्शी, मेरे बदन से बदबू उठ रही है, इस हालत के अन्दर आप मुझे सीने से लगायेंगे और यहां तो मुझे धुतकारा जाता है, मेरे साथ अपमान भरा बर्ताव किया जाता है, तो आप यह जो मुझे सीने से लगायेंगे तो किस वजह से लगायेंगे? सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया! अल्लाह की मख़्लूक़ अल्लाह की निगाह में सब बराबर हैं, इस वास्ते हम तुम्हें सीने से लगायेंगे। कहा कि अगर मैं आपकी बात मान लूं, मुसलमान हो जाऊं तो मेरा अन्जाम क्या होगा, तो सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर इसी जंग के अन्दर मर गये तो मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह तबारक व तआ़ला तुम्हारे चेहरे की सियाही को रोशनी से बदल देगा और तुम्हारे जिस्म की बदबू को ख़ुश्बू से बदल देगा, मैं गवाही देता हूं। सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब यह फ़रमाया उस अल्लाह के बन्दे के दिल पर असर हुआ, कहने लगा कि अगर आप यह फ़रमाते हैं तो:

"अश्हदु अल्ला इला–ह व अश्हदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह"

अ़र्ज़ किया मैं मुसलमान हो गया, अब जो हुक्म देंगे वह करने को तैयार हूं, सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सब से पहला हुक्म उसको यह नहीं दिया कि नमाज़ पढ़ो, यह नहीं दिया कि रोज़ा रखो, पहला हुक्म यह दिया कि जो बकरियां तुम चराने के लिये लेकर आये हो ये तुम्हारे पास अमानत हैं, पहले इन बकरियों को वापस देकर आओ और उसके बाद आकर पूछना कि क्या करना है? बकरियां किस की, यहूदियों की, जिनके ऊपर हमला कर रहे हैं, जिनके साथ

जंग छिड़ी हुई है, जिनका माले ग़नीमत छीना जा रहा है, लेकिन फ़रमाया कि यह माले ग़नीमत जंग की हालत में छीनना तो जायज़ था लेकिन तुम लेकर आये हो एक समझौते के तहत, और उस समझौते का तक़ाज़ा यह है कि उनके माल की हिफ़ाज़त की जाये। यह उनका हक़ है, लिहाज़ा उनको पहुंचा कर आओ। उसने कहा कि या रसूलल्लाह बकरियां तो उन दुश्मनों की हैं जो आपके ख़ून के प्यासे हुए हैं और फिर आप वापस लौटाते हैं, फ़रमाया कि हां! पहले इनको वापस लौटाओ, चुनांचे बकरियां वापस लौटायी गयीं।

कोई मिसाल पेश करेगा कि ऐन मैदाने जंग में ऐन हालते जंग के अन्दर इन्सानी माल की हिफ़ाज़त का हक़ अदा किया जा रहा हो? बकरियां वापस कर दीं तो आकर पूछा कि अब क्या करूं? फ़रमाया कि न तो नमाज़ का वक़्त है कि तुम्हें नमाज़ पढ़वाऊं, न रमज़ान का महीना है कि रोज़े रखवाऊं, न तुम्हारे पास माल है कि ज़कात दिलवाऊं। एक ही इबादत इस वक़्त हो रही है जो कि तलवार की छांव के नीचे अदा की जाती है, वह है जिहाद, इसमें शामिल हो जाओ, चुनांचे वह उसमें शामिल हो गया, उसका अस्वद राई नाम आता है। जब जिहाद ख़त्म हुआ तो आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामूल था कि जंग ख़त्म होने के बाद देखने जाया करते थे कि कौन ज़ख़्मी हुआ, कौन शहीद हुआ, तो देखा की एक जगह सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का मज्मा लगा हुआ है, आपस में सहाबा-ए-रज़ियल्लाहु अन्हुम पूछ रहे हैं कि यह कौन आदमी है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा कि क्या मामला है? तो सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने बताया कि यह ऐसे शख़्स की लाश मिली है कि जिसको हम में से कोई नहीं पहचानता। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़रीब पहुंच कर देखा और फ़रमाया तुम नहीं पहचानते मैं पहचानता हूं और मेरी आंखे देख रही हैं कि अल्लाह तबारक व तआला ने इसको जन्नतुल फ़िरदौस के अन्दर कौसर व तस्नीम से गुस्ल दिया है और इसके चेहरे की सियाही को

नूर और रोशनी से बदल दिया है, इसकी बदबू को ख़ुशबू से तब्दील फ़रमा दिया है।

बहर हाल! यह बात कि माल की हिफ़ाज़त हो सिर्फ़ कह देने की बात नहीं, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने करके दिखाया, काफ़िर के माल की हिफ़ाज़त दुश्मन के माल की हिफ़ाज़त जो समझौते के तहत हो यह माल की हिफ़ाज़त है।

इस्लाम में आबरू की हिफ़ाज़त

तीसरा इन्सान का बुनियादी हक़ यह है कि उसकी आबरू महफ़ूज़ हो, आबरू की हिफ़ाज़त का नारा लगाने वाले बहुत हैं लेकिन यह पहली बार मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बताया कि इन्सान की आबरू का एक हिस्सा यह भी है कि पीठ पीछे उसकी बुराई न की जाये, ग़ीबत न की जाये, आज बुनियादी हुकूक़ का नारा लगाने वाले बहुत, लेकिन कोई इस बात का एहतिमाम करे कि किसी का पीठ के पीछे ज़िक्र बुराई से न किया जाये, ग़ीबत करना भी हराम है, ग़ीबत सुनना भी हराम है। और फ़रमाया कि किसी इन्सान का दिल न तोड़ा जाये, यह इन्सान के लिये बड़ा गुनाह है, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु जो मसाइल का इल्म रखने वाले बड़े सहाबा में से हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ बैतुल्लाह का तवाफ़ फ़रमा रहे हैं, तवाफ़ के दौरान आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने काबा शरीफ़ से ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि ऐ बैतुल्लाह! तू कितना मुक़द्दस है, कितना एहतिराम वाला है, फिर अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि ऐ अ़ब्दुल्लाह! यह अल्लाह का काबा बड़ा मुक़द्दस, बड़ा मुकर्रम है, लेकिन इस कायनात में एक चीज़ ऐसी है कि उसकी पाकीज़गी इस अल्लाह के काबे से भी ज़्यादा है, और वह चीज़ क्या है? एक मुसलमान की जान, माल और अबरू कि उसका तक़द्दुस काबे से भी ज़्यादा है। अगर कोई शख़्स दूसरे की जान पर, माल पर, आबरू पर नाहक़ हमला करता है तो सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं

कि वह काबे के ढा देने से भी ज़्यादा बड़ा जुर्म है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह हक़ दिया।

इस्लाम में मआ़श की हिफ़ाज़त

जो इन्सान के बुनियादी हुकूक़ हैं वे हैं जान, माल और आबरू, इनकी हिफ़ाज़त ज़रूरी है, फिर इन्सान को दुनिया में जीने के लिये मआ़श (रोज़ी, रोज़गार और जीविका) की ज़रूरत है। रोज़गार की ज़रूरत है, इसके बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः किसी इन्सान को इस बात की इजाज़त नहीं दी जा सकती है कि वह अपनी दौलत के बल बूते पर दूसरों के लिये मआ़श (रोज़ी, रोज़गार और जीविका) के दरवाज़े बन्द करे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह उसूल बयान फ़रमाया। एक तरफ़ तो यह फ़रमाया जिसको कहते हैं फ़्रीडम ऑफ़ कॉन्ट्रेक्ट (Freedom of Contract) समझौते की आज़ादी, जो चाहे समझौता करो लेकिन फ़रमाया कि हर वह समझौता जिसके नतीजे में दूसरे आदमी पर रिज़्क का दरवाज़ा बन्द होता हो वह हराम है। फ़रमायाः

لا يبع حاضر لباد

कोई शहरी किसी देहाती का माल फ़रोख़्त न करे। एक आदमी देहात से माल लेकर आया, जैसे ज़मीनी पैदावार तरकारियां लेकर शहर में फ़रोख़्त करने के लिये आया तो कोई शहरी उसका आढ़ती न बने, उसका वकील न बने, सवाल पैदा होता है कि इसमें क्या हर्ज है? लेकिन नबी करीम सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बताया कि इसका नतीजा यह होगा कि वह जो शहरी है वह माल लेकर बैठ जायेगा, तो जमाख़ोरी करेगा और बाज़ार के ऊपर अपनी इजारा दारी क़ायम करेगा, इस इजारा दारी क़ायम करने के नतीजे में दूसरे लोगों पर रोज़गार और जीविका के दरवाज़े बन्द हो जायेंगे, इस वास्ते फ़रमायाः

لا يبع حاضر لباد

तो रोज़ी कमाने का हक़ हर इन्सान का है, कि कोई भी शख़्स

अपनी दौलत के बल बूते पर दूसरे के लिये रोज़ी और रोज़गार के दरवाज़े बन्द न करे, यह नहीं कि सूद खा–खा कर जुआ खेल–खेल कर गैम्बलिंग कर–कर के सट्टा खेल–खेल कर आदमी ने अपने लिये दौलत के अंबार जमा कर लिये और दौलत के अंबारों के ज़रिये से वह पूरे बाज़ार के ऊपर क़ाबिज़ हो गया। कोई दूसरा आदमी अगर रोज़ी कमाने के लिये दाख़िल होना चाहता है तो उसके लिये दरवाज़े बन्द हैं, यह नहीं बल्कि रोज़ी कमाने और रोज़गार की हिफ़ाज़त नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तमाम इन्सानों का बुनियादी हक़ क़रार दिया और फ़रमायाः

دعوا الناس يرزق الله بعضهم ببعض

यानी लोगों को छोड़ दो कि अल्लाह उनमें से बाज़ को बाज़ के ज़रिये रिज़्क़ अ़ता फ़रमायेंगे, यह रोज़ी और रोज़गार की हिफ़ाज़त है। जितने हुक़ूक़ अ़र्ज़ कर रहा हूं ये नबी करीम दोनों जहां के सरदार सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुताय्यन फ़रमाये और मुताय्यन फ़रमाने के साथ साथ इन पर अ़मल भी करके दिखाया।

ईमान और अ़क़ीदे की हिफ़ाज़त

अ़क़ीदे और दियानत के इख़्तियार करने की हिफ़ाज़त, कि अगर कोई शख़्स कोई अ़क़ीदा इख़्तियार किये हुए है तो उसके ऊपर कोई पाबन्दी नहीं है कि कोई ज़बरदस्ती जाकर मजबूर करके उसे दूसरा दीन इख़्तियार करने पर मजबूर करेः

لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ

यानी दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं, दीन के अन्दर कोई जब्र नहीं, अगर एक ईसाई है तो ईसाई रहे, एक यहूदी है तो यहूदी रहे, क़ानूनन् उस पर कोई पाबन्दी आ़यद नहीं की जा सकती, उसको तब्लीग़ की जायगी, दावत दी जायगी, उसको हक़ीक़ते हाल समझाने की कोशिश की जायगी, लेकिन उसके ऊपर यह पाबन्दी नहीं है कि ज़बरदस्ती उसको इस्लाम में दाख़िल किया जाये, लेकिन हां अगर एक बार इस्लाम में दाख़िल हो गया और इस्लाम में दाख़िल होकर इस्लाम की

अच्छाइयां और ख़ूबियां उसके सामने आ गयीं तो अब उसको इस बात की इजाज़त नहीं दी जा सकती कि दारुल इस्लाम (इस्लामी हुकूमत) में रहते हुए वह इस दीन को ऐलानिया छोड़ कर दीन से फिर जाने का रास्ता इख़्तियार करे, इस वास्ते कि अगर वह दीन से फिर जाने का रास्ता इख़्तियार करेगा तो इसके मायने यह हैं की मुआशरे में फ़साद (ख़राबी और बिगाड़) फैलायेगा और फ़साद का इलाज ऑप्रेशन होता है, इसलिये इस फ़साद का ऑप्रेशन कर दिया जायेगा और मुआशरे में उसको फ़साद (ख़राबी और बिगाड़) फैलाने की इजाज़त नहीं दी जाएगी।

बहर हाल! किसी की अक़्ल में बात आए या न आए, किसी की समझ में आए या न आए मैं पहले कह चुका हूं कि इन मामलात के अन्दर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बुनियाद फ़राहम (जमा और एकत्र) फ़रमायी है, हक़ वह है जिसे अल्लाह माने, हक़ वह है जिसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मानें, इससे बाहर हक़ नहीं है। इसलिये हर शख़्स अक़ीदे को इख़्तियार करने में शुरू में आज़ाद है वर्ना अगर मुर्तद होना (यानी दीन से फिर जाना) जुर्म न होता तो इस्लाम के दुश्मन इस्लाम को बच्चों का खेल बना कर रख देते, कितने लोग तमाशा दिखाने के लिये इस्लाम में दाख़िल होते और निकलते, कुरआने करीम में है कि लोग यह कहते हैं कि सुबह को इस्लाम में दाख़िल हो जाओ और शाम को काफ़िर हो जाओ, तो यह तमाशा बना दिया गया होता, इस वास्ते दारुल इस्लाम में दाख़िल रहते हुए दीन से फिर जाने की गुंजाइश नहीं दी जायगी। अगर हक़ीक़त में दियानत दारी से तुम्हारा कोई अक़ीदा है तो फिर दारुल इस्लाम से बाहर जाओ, बाहर जाकर जो चाहो करो लेकिन दारुल इस्लाम (इस्लामी हुकूमत) में रहते हुए फ़साद (ख़राबी और बिगाड़) फैलाने की इजाज़त नहीं है।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का अमल

बहर हाल! यह मौज़ू तो बड़ा लम्बा है लेकिन पांच मिसालें मैंने

आप हज़रात के सामने पेश की हैं (1) जान की हिफ़ाज़त (2) माल की हिफ़ाज़त (3) आबरू की हिफ़ाज़त (4) अक़ीदे की हिफ़ाज़त (5) रोज़ी कमाने और रोज़गार की हिफ़ाज़त। ये इन्सान की पांच बुनियादी ज़रूरियात हैं, ये पांच मिसालें मैंने पेश कीं लेकिन इन पांच मिसालों में जो बुनियादी बात ग़ौर करने की है वह यह है कि कहने वाले तो इसके बहुत हैं लेकिन इसके ऊपर अ़मल करके दिखाने वाले मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और आपके ग़ुलाम हैं। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दौर का वाक़िआ है कि बैतुल मुक़द्दस में ग़ैर मुसलिमों से टैक्स वुसूल किया जाता था, इसलिये कि उनके जान व माल व आबरू की हिफ़ाज़त की जाये। एक मौक़े पर बैतुल मुक़द्दस से फ़ौज बुला कर किसी और महाज़ पर भेजने की ज़रूरत पेश आयी, ज़बरदस्त ज़रूरत सामने थी, हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि भाई बैतुल मुक़द्दस में जो काफ़िर रहते हैं हमने उनकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ली है, अगर फ़ौज को यहां से हटा लेंगे तो उनकी हिफ़ाज़त कौन करेगा? हमने उनसे इस काम के लिये जिज़्या (टैक्स) लिया है, लेकिन ज़रूरत भी शदीद है चुनांचे उन्हों ने सारे ग़ैर मुसलिमों को बुला कर कहा कि भाई हमने तुम्हारी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ली थी, उसकी ख़ातिर हमने तुम से यह टैक्स भी वुसूल किया था, अब हमें फ़ौज की ज़रूरत पेश आ गयी है जिसकी वजह से हम तुम्हारी हिफ़ाज़त पूरे तौर पर हक़ अदा नहीं कर सकते और फ़ौज को यहां नहीं रख सकते, इसलिये फ़ौज को हम दूसरी जगह ज़रूरत की ख़ातिर भेज रहे हैं तो जो टैक्स तुम से लिया गया था वह सारा तुमको वापस किया जाता है।

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु का अ़मल

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु वह सहाबी हैं जिन पर कहने वाले ज़ालिमों ने कैसे कैसे बोह्तानों की बारिश की है, उनका वाक़िआ अबू दाऊद में मौजूद है कि रूम के साथ लड़ाई के दौरान जंग बन्दी का समझौता हो गया, जंग बन्द हो गयी, एक ख़ास तारीख़ तक यह

तय हो गया कि जंग बन्द रहेगी, कोई आपस में एक दूसरे पर हमला नहीं करेगा। हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अ़न्हु बड़े दानिश–मंद बुज़ुर्ग थे, उन्हों ने यह सोचा कि जिस तारीख़ को समझौता ख़त्म हो रहा है उस तारीख़ को फ़ौजें लेजा कर सर्हद के पास डाल दें, ताकि इधर सूरज ग़ुरूब होगा और तारीख़ बदलेगी उधर हमला कर देंगे, क्योंकि उनका ख़्याल यह था कि दुश्मन को यह ख़्याल होगा कि जब जंग बन्दी की मुद्दत ख़त्म होगी कहीं दूर से चलेंगे तो वक़्त लगेगा, इस वास्ते उन्हों ने सोचा कि पहले फ़ौज लेजा कर सर्हद पर डाल दें। चुनांचे सर्हद पर फ़ौज लेजा कर डाल दी और इधर उस तारीख़ का सूरज ग़ुरूब हुआ जो जंग बन्दी की तारीख़ थी और उधर उन्हों ने हमला कर दिया, रूम के ऊपर यलग़ार कर दी और वे बे–ख़बर और ग़ाफ़िल थे, इसलिये बहुत तेज़ी के साथ फ़तह करते चले गये, ज़मीन की ज़मीन ख़ित्ते के ख़ित्ते फ़तह हो रहे हैं। जाते जोते जब आगे बढ़ रहे हैं तो पीछे से देखा कि एक शख़्स घोड़े पर सवार सर–पट दौड़ा चला आ रहा है और आवाज़ लगा रहा है: अल्लाह के बन्दों रुको! अल्लाह के बन्दों रुको! हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अ़न्हु रुक गये, देखा तो मालूम हुआ कि हज़रत अ़मर बिन अ़ब्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं, हज़रत अ़मर बिन अ़ब्सा रज़ि० जब क़रीब तशरीफ़ लाये तो फ़रमाया: मोमिन का शेवा वफ़ादारी है ग़द्दारी नहीं। हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि मैंने तो कोई ग़द्दारी नहीं की, जंग बन्दी की तारीख़ ख़त्म होने के बाद हमला किया, तो हज़रत अ़मर बिन अ़ब्सा रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने इन कानों से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है:

من كان بينه و بين قوم عهد فلا يحلنه ولا يشد له حتى يمضى امله او ينبذ عليهم على سواء

(ترمذی شریف)

जब किसी क़ौम के साथ कोई समझौता हो तो उस समझौते के अन्दर कोई ज़रा सा भी तग़य्युर न करे, न खोले न बांधे, यहां तक कि उसकी मुद्दत न गुज़र जाये, और या उनके सामने खुल कर बयान कर

दें कि आज से हम तुम्हारे समझौते के पाबन्द नहीं हैं। और आपने समझौते के दौरान सर्हद पर लाकर फ़ौजें डाल दीं और शायद अन्दर भी थोड़ा घुस गये हों, तो इस वास्ते आपने यह समझौते की ख़िलाफ़ वर्ज़ी (उल्लंघन) की और यह जो आपने इलाक़ा फ़तह किया है यह अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ नहीं है। अब अन्दाज़ा लगाइये हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़तह के नशे में जा रहे हैं, इलाक़े के इलाक़े फ़तह हो रहे हैं, लेकिन जब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद सुना तो सारी फ़ौज के लिये हुक्म जारी कर दिया कि सारी फ़ौज वापस लौट जाए और यह फ़तह किया हुआ इलाक़ा ख़ाली कर दिया जाए। चुनांचे पूरा फ़तह किया हुआ इलाक़ा ख़ाली कर दिया। दुनिया की तारीख़ इसकी मिसाल पेश नहीं कर सकती कि किसी फ़ातेह ने अपने फ़तह किये हुआ इलाक़े को इस वास्ते ख़ाली किया हो कि उसमें समझौते की पाबन्दी के अन्दर ज़रा सी कमी रह गयी थी, लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग़ुलाम थे उन्हों ने यह करके दिखाया।

बात तो जितनी भी लम्बी की जाये ख़त्म नहीं हो सकती, लेकिन ख़ुलासा यह है कि सब से पहली बात यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन्सानी हुक़ूक़ की बुनियादें फ़राहम की हैं कि कौन इन्सानी हुक़ूक़ को मुताय्यन करेगा, कौन नहीं करेगा। दूसरी बात यह है कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो हुक़ूक़ बयान फ़रमाये उन पर अमल करके दिखाया, हुक़ूक़ ही वे मुताय्यन किये गये जिन पर अमल किया जाये।

आज कल के ह्यूमैन राइट्स

आज कहने के लिये ह्यूमैन राइट्स (इन्सानी हुक़ूक़) के बड़े शानदार चार्टर छाप कर दुनिया भर में तक़सीम कर दिये गये कि ये ह्यूमैन राइट्स (इन्सानी हुक़ूक़) चार्टर हैं लेकिन यह इन्सानी हुक़ूक़ के चार्टर के बनाने वाले अपने मफ़ाद की ख़ातिर मुसाफ़िरों को लेजाने वाले जहाज़ जिसमें बे गुनाह अफ़राद सफ़र कर रहे हैं, उसको गिरा दें

उसमें उनको कोई डर नहीं होता, और मज़्लूमों के ऊपर ज़ुल्म व सितम के शिकन्जे कसे जायें इसमें कोई डर नहीं होता। इन्सानी हुकूक़ उस जगह पर मजरूह होते नज़र आते हैं जहां अपने मफ़ादात के ऊपर कोई चोट पड़ती है, और जहां अपने मफ़ादात के ख़िलाफ़ हो तो वहां इन्सानी हुकूक़ का कोई तसव्वुर नहीं आता। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे इन्सानी हुकूक़ के क़ायल नहीं हैं। अल्लाह तबारक व तआला अपनी रहमत से हमें इस हक़ीक़त को सही तौर पर समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और यह जो बातिल प्रोपैगन्डे हैं इनकी हक़ीक़त पहचानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। याद रखिये कि बाज़ लोग इस प्रोपैगन्डे से मरऊब होकर, मग़लूब होकर माज़िरत चाहने के अन्दाज़ में हाथ जोड़ कर यह कहते हैं कि नहीं साहिब! हमारे यहां तो यह बात नहीं है, हमारे यहां तो इस्लाम ने फ़लां हक़ दिया है और इस काम के लिये कुरआन को, सुन्नत को तोड़ मरोड़ कर किसी न किसी तरह उनकी मर्ज़ी के मुताबिक़ बनाने की कोशिश करते हैं। याद रखिये:

وَلَنْ تَرْضٰی عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَ لَا النَّصَارٰی حَتّٰی تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ، قُلْ اِنَّ هُدَی اللّٰهِ هُوَالْهُدٰی۔

यानी यह यहूद और ईसाई आप से हरगिज़ उस वक़्त तक नहीं खुश होंगे जब तक आप उनके दीन की इत्तिबा नहीं करेंगे।

इसलिये जब तक इस पर नहीं आओगे कि कितना ही कोई एतिराज़ करे, लेकिन हिदायत तो वही है जो अल्लाह तबारक व तआला ने अता फ़रमाई, जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेकर आये उस वक़्त तक कामयाब नहीं हो सकते। इसलिये कभी इन नारों से मरऊब और मग़लूब न हों। अल्लाह तबारक व तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, आमीन।

واٰخر دعوانا ان الحمد للّٰہ رب العالمین

शबे बरात की हक़ीक़त

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْماً كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّا بَعْدُ:

शाबान का महीना शुरू हो चुका है और इस महीने में एक मुबारक रात आने वाली है, जिसका नाम "शबे बरात" है। चूंकि इस रात के बारे में बाज़ हज़रात का ख़्याल है कि इस रात की फ़ज़ीलत क़ुरआन व हदीस से साबित नहीं, और इस रात में जागना, और इस रात में इबादत को ख़ुसूसी तौर पर बाइसे अज्र व सवाब समझना बे बुनियाद है। बल्कि बाज़ हज़रात ने इस रात में इबादत को बिद्अ़त से ताबीर किया है, इसलिये लोगों के ज़ेहनों में इस रात के बारे में मुख़्तलिफ़ सवालात पैदा हो रहे हैं। इसलिये इसके बारे में कुछ अ़र्ज़ कर देना मुनासिब मालूम हुआ।

दीन इत्तिबा का नाम है

इस सिलसिले में मुख़्तसर तौर पर गुज़ारिश यह है कि मैं आप हज़रात से बार बार यह बात अ़र्ज़ कर चुका हूं कि जिस चीज़ का सुबूत क़ुरआने करीम में या सुन्नत में या सहाबा-ए-किराम के आसार में, या ताबिअ़ीन और बुज़ुर्गाने दीन के अ़मल में न हो, उसको दीन का हिस्सा समझना बिद्अ़त है। और मैं यह भी कहता रहा हूं कि अपनी तरफ़ से एक रास्ता घड़ कर उस पर चलने का नाम दीन नहीं है, बल्कि दीन इत्तिबा का नाम है। किस की इत्तिबा? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इत्तिबा, आपके सहाबा-ए-किराम की इत्तिबा, ताबिअ़ीन और बुज़ुर्गाने दीन की इत्तिबा, अब अगर हक़ीक़त में यह बात दुरुस्त हो कि इस रात की कोई फ़ज़ीलत साबित नहीं तो

बेशक इस रात को कोई ख़ुसूसी अहमियत देना बिद्अ़त होगा, जैसा कि मेराज के बारे में अ़र्ज़ कर चुका हूं कि शबे मेराज में किसी इबादत का ज़िक्र कुरआन व सुन्नत में मौजूद नहीं।

इस रात की फ़ज़ीलत बे बुनियाद नहीं

लेकिन हक़ीक़त यह है कि शबे बरात के बारे में यह कहना बिल्कुल ग़लत है कि इसकी कोई फ़ज़ीलत हदीस से साबित नहीं, हक़ीक़त यह है कि दस सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से हदीसें मर्वी हैं, जिनमें नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस रात की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई, उनमें से बाज़ हदीसें सनद के एतिबार से बेशक कमज़ोर हैं और उन हदीसों के कमज़ोर होने की वजह से बाज़ उलमा ने यह कह दिया कि इस रात की फ़ज़ीलत बे असल है, लेकिन हज़राते मुहद्दिसीन और फ़ुक़हा का यह फ़ैसला है कि अगर एक रिवायत सनद के एतिबार से कमज़ोर हो, लेकिन उसकी ताईद बहुत सी हदीसों से हो जाए तो उसकी कमज़ोरी दूर हो जाती है, और जैसा कि मैंने अ़र्ज़ किया कि दस सहाबा-ए-किराम से इसकी फ़ज़ीलत में रिवायात मौजूद हैं। इसलिये जिस रात की फ़ज़ीलत में दस सहाबा-ए-किराम से रिवायात मर्वी हों उसको बे बुनियाद और बे असल कहना बिल्कुल ग़लत है।

शबे बरात और "ख़ैर का ज़माना"

उम्मते मुस्लिमा के जो "ख़ैरुल क़ुरून" हैं, यानी सहाबा-ए-किराम का दौर, ताबिअ़ीन का दौर, तबे ताबिअ़ीन का दौर, उसमें भी इस रात की फ़ज़ीलत से फ़ायदा उठाने का एहतिमाम किया जाता रहा है। लोग इस रात के अन्दर इबादत का ख़ुसूसी एहतिमाम करते रहे हैं। इसलिये इसको बिद्अ़त कहना, या बे बुनियाद और बे असल कहना दुरुस्त नहीं। सही बात यही है कि यह फ़ज़ीलत वाली रात है, इस रात में जागना, इस रात में इबादत करना अज्र व सवाब का सबब है, और इसकी ख़ुसूसी अहमियत है।

कोई ख़ास इबादत मुकर्रर नहीं

लेकिन यह बात दुरुस्त है कि इस रात में इबादत का कोई ख़ास तरीक़ा मुक़र्रर नहीं कि फ़लां तरीक़े से इबादत की जाए। जैसे बाज़ लोगों ने अपनी तरफ़ से एक तरीक़ा घड़ कर यह कह दिया कि शबे बरात में इस ख़ास तरीक़े से नमाज़ पढ़ी जाती है। जैसे पहली रक्अ़त में फ़लां सूरत इतनी मर्तबा पढ़ी जाए और दूसरी रक्अ़त में फ़लां सूरत इतनी मर्तबा पढ़ी जाए वग़ैरह वग़ैरह। इसका कोई सुबूत नहीं। यह बिल्कुल बे बुनियाद बात है। बल्कि नफ़्ली इबादतें जिस क़दर हो सके, वे इस रात में अंजाम दी जाएं, नफ़्ली नमाज़ पढ़ें, क़ुरआने करीम की तिलावत करें, ज़िक्र करें, तस्बीह पढ़ें, दुआ़एं करें ये सारी इबादतें इस रात में की जा सकती हैं। लेकिन कोई ख़ास तरीक़ा साबित नहीं।

इस रात में क़ब्रिस्तान जाना

इस रात में एक और अ़मल है, जो एक रिवायत से साबित है, वह यह कि हुज़ूर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जन्नतुल बक़ी (मदीना पाक के क़ब्रिस्तान) में तशरीफ़ ले गये, अब चूंकि हुज़ूरे पाक इस रात में जन्नतुल बक़ी में तशरीफ़ ले गये थे, इस लिये मुसलमान इस बात का एहतिमाम करने लगे कि शबे बरात में क़ब्रिस्तान जायें। लेकिन मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि एक बड़ी काम की बात बयान फ़रमाया करते थे, हमेशा याद रखनी चाहिए। फ़रमाते थे कि जो चीज़ रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से जिस दर्जे में साबित हो, उसी दर्जे में रखना चाहिए। उससे आगे नहीं बढ़ाना चाहिए। इसलिये सारी ज़िन्दगी मुबारक में रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से एक मर्तबा जन्नतुल बक़ी जाना मर्वी है, कि आप शबे बरात में जन्नतुल बक़ी में तशरीफ़ ले गये। चूंकि एक मर्तबा जाना मर्वी है, इसलिये तुम भी अगर ज़िन्दगी में एक मर्तबा चले जाओ तो ठीक है, लेकिन हर शबे बरात में जाने का एहतिमाम करना, पाबन्दी करना और इसको ज़रूरी

समझना, और इसको शबे बरात के अर्कान में दाख़िल करना, और इसको शबे बरात का लाज़मी हिस्सा समझना, और इसके बग़ैर यह समझना कि शबे बरात नहीं हुई, यह इसको इसके दर्जे से आगे बढ़ाने वाली बात है। इसलिये अगर कभी कोई शख़्स इस नुक़्ता-ए-नज़र से क़ब्रिस्तान चला गया कि हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले गये थे, मैं भी आपकी इत्तिबा में जा रहा हूं तो इन्शा-अल्लाह अज्र व सवाब मिलेगा, लेकिन इसके साथ यह करो कि कभी न जाओ, इसलिये एहतिमाम और पाबन्दी न करो, यह हक़ीक़त में दीन की समझ की बात है कि जो चीज़ जिस दर्जे में साबित हो, उसको उसी दर्जे में रखो, उससे आगे मत बढ़ाओ। और उसके अलावा दूसरी नफ़्ली इबादतें अदा कर लो।

नावाफ़िल घर पर अदा करें

मैंने सुना है बाज़ लोग इस रात में और शबे क़दर में नफ़्लों की जमाअत करते हैं, पहले सिर्फ़ शबीना जमाअत के साथ था, अब सुना है कि "सलातुस् तस्बीह" की भी जमाअत होने लगी है। यह सलातुस् तस्बीह की जमाअत किसी तरह भी साबित नहीं, ना जायज़ है। इसके बारे में उसूल सुन लीजिए जो नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाया कि फ़र्ज़ नमाज़ के अलावा और उन नमाज़ों के अलावा जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बा जमाअत अदा करना साबित हैं, जैसे तरावीह, कुसूफ़ (सूरज, चांद ग्रहण के वक़्त की नमाज़) और इस्तिस्क़ा (बारिश के लिए दुआ करने) की नमाज़ इनके अलावा हर नमाज़ के बारे में अफ़्ज़ल यह है कि इन्सान अपने घर में अदा करे, सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ की ख़ुसूसियत सह है कि उसके अन्दर सिर्फ़ अफ़्ज़ल नहीं बल्कि सुन्नते मुअक्कदा जो वाजिब के क़रीब है कि उसको मस्जिद में जाकर जमाअत से अदा करे। लेकिन सुन्नत और नफ़िल में असल क़ायदा यह है कि इन्सान अपने घर में अदा करे। लेकिन जब फ़ुक़हा ने यह देखा कि लोग घर जाकर कभी कभी सुन्नतों को छोड़ देते हैं, इसलिये उन्हों ने यह भी फ़रमा दिया कि

अगर सुन्नतें छूटने का ख़ौफ़ हो तो मस्जिद में ही पढ़ लिया करें। ताकि छूट न जाएं, वर्ना असल क़ायदा यही है कि घर में जाकर अदा करें, और नफ़िल के बारे में तमाम फ़ुक़हा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि नफ़िल नमाज़ में अफ़ज़ल यह है कि अपने घर में अदा करे, और नफ़्लों की जमाअ़त हनफ़िया के नज़दीक मक्रूहे तह्रीमी और ना जायज़ है। यानी अगर जमाअ़त से नफ़िल पढ़ लिए तो सवाब तो क्या मिलेगा उल्टा गुनाह मिलेगा।

फ़र्ज़ नमाज़ जमाअ़त के साथ अदा करें

बात असल में यह है कि फ़रायज़ दीन का शिआ़र हैं, दीन की अ़लामत हैं इसलिये उनको जमाअ़त के साथ मजिस्द में अदा करना ज़रूरी है, कोई आदमी यह सोचे कि अगर मैं मिस्जद में जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ूंगा तो इसमें दिखावे का अन्देशा है, इसलिये मैं घर में ही नमाज़ पढ़ लूं। उसके लिये ऐसा करना जायज़ नहीं, उसको हुक्म यह है कि मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ो, इसलिये कि उसके ज़रिये दीन इस्लाम का एक शिआ़र ज़ाहिर करना मक़्सूद है, दीन इस्लाम की एक शौकत का मुज़ाहरा मक़्सूद है, इसलिये उसको मस्जिद ही में अदा करो।

नवाफ़िल में तन्हाई मक़्सुद है

लेकिन नफ़िल एक ऐसी इबादत है, जिसका ताल्लुक़ बस बन्दे और उसके परवर्दिगार से है, बस तुम हो और तुम्हारा अल्लाह हो, तुम हो और तुम्हारा परवर्दिगार हो, जैसा कि हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के वाक़िए में आता है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनसे पूछा कि तिलावत इतनी आहिस्ता से क्यों करते हो? उन्हों ने जवाब में फ़रमाया कि:

"اسمعت من ناجيت" (ابوداؤد شریف)

यानी जिस ज़ात से यह मुनाजात कर रहा हूं, उसको सुना दिया, अब दूसरों को सुनाने की क्या ज़रूरत है? इसलिये नफ़्ली इबादत का

तो हासिल यह है कि वह हो और उसका परवरदिगार हो, कोई तीसरा शख़्स दरमियान में रुकावट न हो, अल्लाह तआ़ला यह चाहते हैं कि मेरा बन्दा बराहे रास्त मुझ से ताल्लुक़ क़ायम करे, इसलिये नफ़्ली इबादतों में जमाअ़त और इज्तिमे को मक्रूह क़रार दे दिया, और यह हुक्म दे दिया कि अकेले आओ, तन्हाई और ख़ल्वत में आओ, और हम से बराहे रास्त् राबता क़ायम करो, यह ख़ल्वत और तन्हाई कितना बड़ा इनाम है, ज़रा ग़ौर तो करो, बन्दे को कितने बड़े इनाम से नवाज़ा जा रहा है, कि ख़ल्वत और तन्हाई में हमारे पास आओ।

तन्हाई में हमारे पास आओ

बादशाह का एक आ़म दरबार होता है। इसी तरह जमाअ़त की नमाज़ अल्लाह तआ़ला का आ़म दरबार है, दूसरा ख़ास दरबार होता है। जो ख़ल्वत और तन्हाई का होता है, यह अल्लाह तआ़ला का इनाम है कि वह फ़रमाते हैं कि जब तुम हमारे आ़म दरबार में हाज़री देते हो, तो अब हम ख़ल्वत और तन्हाई का भी मौक़ा देते हैं। अब अगर कोई शख़्स इस तन्हाई के मौक़े को जल्वत (आ़म हालत) में तब्दील कर दे, और जमाअ़त बना दे तो ऐसा शख़्स उस ख़ास दरबार की नेमत की ना–क़दरी कर रहा है, इसलिये अल्लाह तआ़ला तो यह फ़रमा रहे हैं कि तुम तन्हाई में आओ, हम से मुनाजात करो, हम तन्हाई में तुम्हें नवाज़ेंगे। लेकिन तुम एक भीड़ इकट्ठी करके लेजा रहे हो।

तुमने उस नेमत की ना–क़द्री की

जैसे अगर कोई बादशाह है, तुम उससे मुलाक़ात के लिये दरबार में गये, वह बादशाह तुम से यह कहे कि आज रात नौ बजे तन्हाई में मेरे पास आ जाना, तुम से कुछ ख़ास बात करनी है, जब रात के नौ बजे तो आपने अपने दोस्तों की एक भीड़ इकट्ठी कर ली, और सब दोस्तों को लेकर बादशाह के दरबार में हाज़िर हो गये। बताइये कि आपने उस बादशाह की क़दर की या ना–क़दरी की? उसने तुम्हें यह मौक़ा दिया था कि तुम तन्हाई में मेरे पास आओ, और अपने साथ राबता और ताल्लुक़ क़ायम करना था। और तुम पूरी एक जमाअ़त बना

कर उसके पास गये, तो यह तुमने उसकी ना क़दरी की।

इसलिये इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि नफ़्ली इबादतों की इस तरह ना–क़दरी न करो, नफ़्ली इबादतों की क़दर यह है कि तुम हो, और तुम्हारा अल्लाह हो, तीसरा कोई न हो। इसलिये नफ़्ली इबादतें जितनी भी हैं, उन सब के अन्दर उसूल यह बयान फ़रमा दिया कि तन्हाई में अकेले इबादत करो, उसकी जमाअ़त मक्रूहे तहरीमी है। इसलिये कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तो यह निदा दी जा रही है कि:

"الاهل من مستغفرفاغفرله"

यानी कोई है जो मुझ से मग़फ़िरत तलब करे तो मैं उसकी मग़फ़िरत करूं? यहां लफ़्ज़ "मुस्तग़फ़िर" मुफ़रद का सीग़ा इस्तेमाल किया। यानी कोई तन्हाई में मग़फ़िरत तलब करने वाला है, तन्हाई में मुझ से रहमत तलब करने वाला है। अब अल्लाह तआ़ला तो यह फ़रमा रहे हैं कि तन्हाई में मेरे पास आकर मुझ से मांगो, लेकिन हमने यह किया कि शबीने का इन्तिज़ाम किया, चिराग़ां किया, और लोगों को इसकी दावत दी कि मेरे पास आकर मेरी इस तन्हाई में शरीक हो जाओ। हक़ीक़त में यह अल्लाह तआ़ला के इनाम की ना–क़दरी है, इसलिये शबीना हो या सलातुस् तस्बीह की जमाअ़त हो, या कोई और नफ़्ली जमाअ़त हो, यह सब ना जायज़ है।

गोशा–ए–तन्हाई के लम्हात

ये फ़ज़ीलत वाली रातें शोर व शग़ब की रातें नहीं हैं, मेले ठेले की रातें नहीं, ये इज्तिमा की रातें नहीं, बल्कि ये रातें इसलिये हैं कि गोशा–ए–तन्हाई में बैठ कर तुम अल्लाह तआ़ला के साथ ताल्लुक़ात क़ायम कर लो, और तुम्हारे और उसके दरमियान कोई रुकावट न हो:

मियाने आशिक़ व माशूक़ रमज़ेस्त
किरामन कातिबीं रा हम ख़बर नेस्त

यानी आशिक़ और माशूक़ के बीच ऐसी बातें और इशारे भी होते हैं कि आमाल लिखने वाले फ़रिश्तों तक को ख़बर नहीं होती।

लोग यह उज़्र करते हैं कि अगर तन्हाई में इबादत करने बैठते हैं तो नींद आ जाती है। मस्जिद में शबीना और रोशनी होती है और एक मजमा होता है, जिसकी वजह से नींद पर क़ाबू पाने में आसानी हो जाती है। अरे, इस बात पर यक़ीन करो कि अगर तुम्हें चन्द लम्हात गोशा—ए—तन्हाई में अल्लाह तआला से हम—कलाम होने के मयस्सर आ गये तो वे चन्द लम्हात उस रात से ब—दर्जहा बेहतरीन हैं जो तुमने मेले में गुज़ारी। इसलिये कि तन्हाई में जो वक़्त गुज़रा वह सुन्नत के मुताबिक़ गुज़रा, और मेले में जो वक़्त गुज़रा वह सुन्नत के ख़िलाफ़ गुज़रा, वह रात इतनी क़ीमती नहीं, जितने वे चन्द लम्हात क़ीमती हैं, जो आपने इख़्लास के साथ दिखावे के बग़ैर गोशा—ए—तन्हाई में गुज़ार लिए।

वहां घन्टे नहीं गिने जाते

मैं हमेशा कहता रहता हूं कि अपनी अ़क़्ल के मुताबिक़ काम करने का नाम दीन नहीं, अपना शौक़ पूरा करने का नाम दीन नहीं, बल्कि उनके कहने पर अ़मल का नाम दीन है, उनकी पैरवी और इत्तिबा का नाम दीन है। यह बताओ कि क्या अल्लाह तआ़ला तुम्हारे घन्टे शुमार करते हैं कि तुमने मस्जिद में कितने घन्टे गुज़ारे? वहां घन्टे शुमार नहीं किए जाते, वहां तो इख़्लास देखा जाता है। अगर चन्द लम्हात भी इख़्लास के साथ अल्लाह तआ़ला के साथ राबते में मयस्सर आ गये, तो वे चन्द लम्हात ही इन्शा—अल्लाह बेड़ा पार कर देंगे। लेकिन अगर आपने इबादत में कई घन्टे गुज़ार दिए, मगर सुन्नत के ख़िलाफ़ गुज़ारे तो उसका कुछ भी हासिल नहीं।

इख़्लास मतलूब है

मेरे शैख़ हज़रत डाक्टर अ़ब्दुल हई रहमतुल्लाहि अ़लैहि बड़ी मस्ती के आ़लम में फ़रमाया करते थे कि जब तुम लोग सज्दे में जाते हो तो सज्दे में "सुब्हा—न रब्बियल आला" कई मर्तबा कहते हो, लेकिन मशीन की तरह ज़बान पर यह तस्बीह जारी हो जाती है, लेकिन अगर

किसी दिन यह कलिमा "सुब्हा–न रब्बियल आला" एक मर्तबा इख़्लास के साथ दिल से निकल गया तो यक़ीन कीजिए कि अल्लाह तआला उस एक मर्तबा "सुब्हा–न रब्बियल आला" की बदौलत बेड़ा पार कर देंगे।

इसलिये यह मत ख़्याल करो कि अगर तन्हा घर में रह कर इबादत करेंगे तो नींद आ जायेगी। इसलिये अगर नींद आ जाए तो सो जाओ, लेकिन चन्द लम्हे जो इबादत में गुज़ारो, वे सुन्नत के मुताबिक़ गुज़ारो। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत यह है, फ़रमाते हैं कि अगर क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते पढ़ते नींद आ जाए तो सो जाओ, और सोकर थोड़ी सी नींद पूरी कर लो, और फिर उठ जाओ, इसलिये कि कहीं ऐसा न हो कि नींद की हालत में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते हुए तुम्हारे मुंह से कोई लफ़्ज़ ग़लत निकल जाए। इसलिये एक आदमी सारी रात सुन्नत के ख़िलाफ़ जाग रहा है, और दूसरा आदमी सिर्फ़ एक घन्टे जागा, लेकिन सुन्नत के मुताबिक़ जागा, और अपने परवरदिगार के हुक्म के मुताबिक़ जागा। तो यह दूसरा शख़्स पहले शख़्स से कई दर्जे बेहतर है।

हर इबादत को हद पर रखो

इसलिये कि अल्लाह तआला के यहां आमाल की गिन्ती नहीं है, बल्कि आमाल का वज़न है, वहां तो यह देखा जायेगा कि इस अ़मल में कितना वज़न है? इसलिये अगर तुमने गिन्ती के एतिबार से आमाल तो बहुत कर लिए, लेकिन वज़न पैदा नहीं किया तो उसका कोई फ़ायदा नहीं। इसलिये फ़रमाया कि नींद आ जाए तो पड़ कर सो जाओ, और अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे तो उठ कर फिर इबादत में लग जाओ, लेकिन सुन्नत के ख़िलाफ़ काम न करो। इसलिये जो इबादत जमाअ़त के साथ जिस हद तक साबित हो, उसी हद तक करो। जैसे फ़र्ज़ की जमाअ़त साबित है, रमज़ानुल मुबारक में तरावीह की जमाअ़त साबित है, रमज़ान में वित्र की जमाअ़त साबित है, इसी तरह नमाज़े जनाज़ा की जमाअ़त वाजिब अ़लल् किफ़ाया है, दोनों ईदों की नमाज़ जमाअ़त

के साथ साबित है, नमाज़े इस्तिस्क़ा और नमाज़े कुसूफ़ अगर्चे सुन्नत हैं, लेकिन इन दोनों में चूंकि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से जमाअ़त साबित है, और इस्लाम के शआ़इर में से हैं, इसलिये इनको जमाअ़त से अदा करना जायज़ है। इनके अ़लावा जितनी नमाज़ें हैं, उनमें जमाअ़त नहीं है, उनमें अल्लाह तो यह चाहते हैं कि बन्दा मुझ से तन्हाई में मुलाक़ात करे, अल्लाह तआ़ला ने तन्हाई में मुलाक़ात का जो ऐज़ाज़ बख़्शा है, यह मामूली ऐज़ाज़ नहीं है, इस ऐज़ाज़ की क़दर करनी चाहिए।

औ़रतों की जमाअ़त

एक मस्अला औ़रतों की जमाअ़त का है, मस्अला यह है कि औ़रतों की जमाअ़त पसन्दीदा नहीं है, चाहे वह फ़र्ज़ नमाज़ की जमाअ़त हो या सुन्नत की हो या नफ़िल की हो। इसलिये कि अल्लाह तआ़ला ने औ़रतों को यह हुक्म दिया है कि अगर तुम्हें इबादत करनी है तो तन्हाई में करो, जमाअ़त औ़रतों के लिये पसन्दीदा नहीं, जैसा कि मैंने अ़र्ज़ किया कि दीन असल में शरीअ़त की इत्तिबा का नाम है, अब यह मत कहो कि हमारा इस तरह इबादत करने को दिल चाहता है, इस दिल के चाहने को छोड़ दो। इसलिये कि दिल तो बहुत सारी चीज़ों को चाहता है और सिर्फ़ दिल चाहने की वजह से कोई चीज़ दीन में दाख़िल नहीं हो जाती, जिस बात को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पसन्द नहीं किया, उसको सिर्फ़ दिल चाहने की वजह से न करना चाहिए।

शबे बरात और हल्वा

बहर हाल! यह शबे बरात अल्हम्दु लिल्लाह, फ़ज़ीलत की रात है और इस रात में जितनी इबादत की तौफ़ीक़ हो, उतनी इबादत करनी चाहिए, बाक़ी जो और फ़ुज़ूलियात इस रात में हल्वा वग़ैरह पकाने की शुरू कर ली गई हैं, उनको बयान करने की ज़रूरत नहीं, इसलिये कि शबे बरात का हल्वे से कोई ताल्लुक़ नहीं। असल बात यह है कि शैतान हर जगह अपना हिस्सा लगा लेता है, उसने सोचा कि इस शबे

बरात में मुसलमानों के गुनाहों की मग़फ़िरत की जायेगी, चुनांचे एक रिवायत में आता है कि इस रात में अल्लाह तआला इतने इन्सानों की मग़फ़िरत फ़रमाते हैं जितने क़बीला "कलब" की बकरियों के जिस्म पर बाल हैं।

शैतान ने सोचा कि अगर इतने सारे आदमियों की मग़फ़िरत हो गयी फिर तो मैं लुट गया, इसलिये उसने अपना हिस्सा लगा दिया। चुनांचे उसने लोगों को यह सिखा दिया कि शबे बरात आए तो हल्वा पकाया करो, वैसे तो सारे साल किसी दिन भी हल्वा पकाना जायज़ और हलाल है, जिस शख़्स का दिल चाहे पका कर खा ले, लेकिन शबे बरात से इसका क्या ताल्लुक़? न क़ुरआन में इसका सुबूत है, न हदीस में इसके बारे में कोई रिवायत, न सहाबा के आसार में, न ताबिअ़ीन के अ़मल में, और बुज़ुर्गाने दीन के अ़मल में कहीं इसका कोई तज़किरा नहीं, लेकिन शैतान ने लोगों को हल्वा पकाने में लगा दिया, चुनांचे सब लोग पकाने और खाने में लग गये। अब यह हाल है कि इबादत का इतना एहतिमाम नहीं, जितना एहतिमाम हल्वा पकाने का है।

बिद्अ़तों की ख़ासियत

एक बात हमेशा याद रखने की है, वह यह कि मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि बिद्अ़तों की ख़ासियत यह है कि जब आदमी बिद्अ़तों के अन्दर मुब्तला हो जाता है, तो फिर उसके बाद असल सुन्नत के कामों की तौफ़ीक़ कम हो जाती है। चुनांचे आपने देखा होगा कि जो लोग सलातुस् तस्बीह की जमाअ़त में देर तक खड़े रहते हैं, वे पांच वक़्त की फ़र्ज़ जमाअ़तों में कम नज़र आयेंगे। और जो लोग बिद्अ़तें करने के आ़दी होते हैं। जैसे हल्वा मांडा करने और कूंडे में लगे हुए हैं, वे फ़राइज़ से ग़ाफ़िल होते हैं, नमाज़ें क़ज़ा हो रही हैं, जमाअ़तें छूट रही हैं। इसकी तो कोई फ़िक्र नहीं, लेकिन यह सब कुछ हो रहा है।

अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तो सब से ज़्यादा ताकीद इसकी फ़रमाई थी कि जब किसी का इन्तिक़ाल

हो जाए तो उसकी मीरास शरीअत के मुताबिक़ जल्दी तक़्सीम करो, लेकिन अब यह हो रहा है कि मीरास तक़्सीम करने की तरफ़ तो ध्यान नहीं है, मगर तीजा हो रहा है, दसवां हो रहा है, चालीसवां हो रहा है, बर्सी हो रही है। इसलिये बिद्अतों की ख़ासियत यह है कि जब इन्सान इनके अन्दर मुब्तला होता है तो सुन्नत से दूर हो जाता है, और सुन्नत वाले आमाल करने की तौफ़ीक़ नहीं होती। अल्लाह तआला हमें महफ़ूज़ रखे, आमीन। बहर हाल! इन फ़ुज़ूल चीज़ों और बिद्अतों से बचना चाहिए, बाक़ी यह रात फ़ज़ीलत की रात है, और इस रात के बारे में बाज़ लोगों ने यह जो ख़्याल ज़ाहिर किया है कि इस रात में कोई फ़ज़ीलत साबित नहीं, यह ख़्याल सही नहीं है।

पन्द्रह शाबान का रोज़ा

एक मस्अला शबे बरात के बाद वाले दिन यानी पन्द्रह शाबान के रोज़े का है। इसको भी समझ लेना चाहिए, वह यह कि सारे हदीस के ज़ख़ीरे में इस रोज़े के बारे में सिर्फ़ एक रिवायत है कि शबे बरात के बाद वाले दिन रोज़ा रखो। लेकिन यह रिवायत कमज़ोर है। इसलिये इस रिवायत की वजह से ख़ास इस पन्द्रह शाबान के रोज़े को सुन्नत या मुस्तहब क़रार देना बाज़ उलमा के नज़दीक दुरुस्त नहीं। लेकिन पूरे शाबान के महीने में रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत साबित है। यानी पहली शाबान से सत्ताईस शाबान तक रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत साबित है। लेकिन 28 और 29 शाबान को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोज़ा रखने से मना फ़रमाया है कि रमज़ान से एक दो दिन पहले रोज़ा मत रखो। ताकि रमज़ान के रोज़ों के लिए इन्सान ताज़गी के साथ तैयार रहे। लेकिन पहली शाबान से 27 शाबान तक हर दिन रोज़ा रखने में फ़ज़ीलत है, दूसरे यह कि यह पन्द्रह तारीख़ "अय्यामे बीज़" में से है और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर महीने के अय्यामे बीज़ में तीन रोज़े रखा करते थे। यानी 13-14-15 तारीख़ को, इसलिये अगर कोई शख़्स इन दो वजह से 15 तारीख़ का रोज़ा रखे, एक इस वजह से कि यह शाबान का दिन है, दूसरे इस

वजह से कि यह 15 तारीख़ अय्यामे बीज़ में दाख़िल है, अगर इस नियत से रोज़ा रख ले तो इन्शा-अल्लाह अज्र का सबब होगा, लेकिन ख़ास पन्द्रह तारीख़ की ख़ुसूसियत के लिहाज़ से इस रोज़े को सुन्नत क़रार देना बाज़ उलमा के नज़दीक दुरुस्त नहीं। इसी वजह से फ़ुक़हा-ए-किराम ने जहां मुस्तहब रोज़ों का ज़िक्र किया है, वहां मुहर्रम की दस तारीख़ के रोज़े का ज़िक्र किया है, यौमे अ़रफ़ा के रोज़े का ज़िक्र किया है, लेकिन पन्द्रह शाबान के रोज़े का अलग से ज़िक्र नहीं किया, बल्कि यह फ़रमाया है कि शाबान के किसी भी दिन रोज़ा रखना अफ़्ज़ल है, बहर हाल! अगर इस नुक़्ता-ए-नज़र से कोई शख़्स रोज़ा रख ले तो इन्शा-अल्लाह उस पर सवाब होगा। बाक़ी किसी दिन की कोई ख़ुसूसियत नहीं।

जैसा कि मैंने पहले अ़र्ज़ किया था कि हर मामले को उसकी हद के अन्दर रखना ज़रूरी है, हर चीज़ को उसके दर्जे के मुताबिक़ रखना ज़रूरी है, दीन असल में हदों की हिफ़ाज़त ही का नमा है। अपनी तरफ़ से अ़क्ल लड़ा कर आगे पीछे करने का नाम दीन नहीं। इसलिये अगर इन हदों की रियायत करते हुए कोई शख़्स रोज़ा रखे तो बहुत अच्छी बात है, इन्शा-अल्लाह उस पर अज्र व सवाब मिलेगा, लेकिन इस रोज़े को बा क़ायदा सुन्नत क़रार देने से परहेज़ करना चाहिए।

बहस व मुबाहसे से परहेज़ करें

यह शबे बरात और उसके रोज़े के अह्काम का ख़ुलासा है, बस इन बातों को सामने रखते हुए अ़मल किया जाए, बाक़ी इसके बारे में बहुत ज़्यादा बहस व मुबाहसे में नहीं पड़ना चाहिए। आज कल यह मस्अला खड़ा हो गया कि अगर किसी ने कोई बात कह दी तो उस पर बहस व मुबाहसा शुरू हो गया। हालांकि होना यह चाहिए कि जब किसी ऐसे शख़्स से कोई बात सुनी है जिस पर आपको एतिमाद और भरोसा है, तो उसी पर अ़मल कर लो, कोई दूसरा शख़्स दूसरी बात कहता है तो फिर बहस में मत पड़ो, इसलिये कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बहस में पड़ने से मना फ़रमाया है।

चुनांचे इमाम मालिक रह्मतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि:

"المراء يطفئ نور العلم"

यानी इस किस्म के मामलात में आपस में लड़ाई झगड़ा करना या बहस व मुबाहसा करना इल्म के नूर को ख़त्म कर देता है, हमारे एक शायर अकबर इलाहाबादी मरहूम गुज़रे हैं, इस बारे में उनका एक शेर बड़ा अच्छा है, वह कहते हैं कि:

मज़्हबी बहस मैंने की ही नहीं
फालतू अ़क्ल मुझ में थी ही नहीं

यह मज़्हबी बहस जिसमें फुज़ूल वक़्त ज़ाया हो, उससे कुछ हासिल नहीं। और जिन लोगों के पास फालतू अ़क्ल होती है वे इस किस्म के मुबाहसे में पड़ते हैं। इसलिये हम तो यह कहते हैं कि जिस पर तुमको भरोसा हो उसके कहने पर अ़मल कर लो। इन्शा-अल्लाहु तआ़ला तुम्हारी नजात हो जायेगी, अगर कोई दूसरा आ़लिम कोई दूसरी बात कह रहा है, तो फिर तुम्हें उसमें उलझने की ज़रूरत नहीं, बस सीधा रास्ता यही है।

रमज़ान के लिए पाक साफ़ हो जाओ

बहर हाल! हक़ीक़त यह है कि इस रात की फ़ज़ीलत को बे असल कहना ग़लत है, और मुझे तो ऐसा लगता है कि अल्लाह तआ़ला ने यह शबे बरात रमज़ानुल मुबारक से दो हफ़्ते पहले रखी है, यह हक़ीक़त में रमज़ानुल मुबारक का इस्तिक़बाल है, रमज़ान की रिहर्सल हो रही है, रमज़ान की तैयारी कराई जा रही है कि तैयार हो जाओ, अब वह मुक़द्दस महीना आने वाला है, जिसमें हमारी रह्मतों की बारिश बरसने वाली है, जिसमें हम मग़फ़िरत के दरवाज़े खोलने वाले हैं, इसलिये ज़रा तैयार हो जाओ।

देखिए! जब आदमी किसी बड़े दरबार में जाता है, तो न जाने कितनी मर्तबा पहले अपने आपको पाक व साफ़ करता है, नहाता धोता है, कपड़े वग़ैरह बदलता है। इसलिये जब अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ीम दरबार रमज़ान की सूरत में खुलने वाला है तो उस दरबार में हाज़िरी

से पहले एक रात दे दी, और यह फ़रमाया कि आओ, हम तुम्हें इस रात के अन्दर नहला धुला कर पाक व साफ़ कर दें। गुनाहों से पाक व साफ़ करें, ताकि हमारे साथ तुम्हारा ताल्लुक़ सही मायने में क़ायम हो जाए, और जब यह ताल्लुक़ क़ायम होगा, और तुम्हारे गुनाह धुलेंगे तो उसके बाद तुम रमज़ानुल मुबारक की रहमतों से सही मायने में फ़ैज़ उठाने वाले हो जाओगे, इस ग़र्ज़ के लिये अल्लाह तआ़ला ने हमें यह रात अ़ता फ़रमाई, इसकी क़दर पहचाननी चाहिए। अल्लाह तआ़ला हमें इस मुबारक रात की क़दर करने और इस रात में इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين